कटरा बी आर्ज़ू

राही मासूम रज़ा

राजकमल प्रकाशन
नयी दिल्ली पटना

मूल्य रु० २०.००

© नय्यर रज़ा

प्रथम संस्करण १९७८

प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
८ नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली ११०००२

मुद्रक [illegible] प्रिंटर्स, १५६० गली हीरासिंह
नवीन शाहदरा, दिल्ली ११००३२

आवरण चांद चौधरी

बयान

मन कि राही मासूम रज़ा पुत्र स्वर्गीय हाजी सैयद बशीर हसन आब्दी, एकरार करता हूँ कि यह एक झूठी कहानी है। इसके पात्र झूठे हैं, जगहों के नाम गलत हैं। घटनाएँ गढ़ी हुई हैं।—परन्तु यह झूठ बोलने पर मैं शर्मिन्दा नहीं हूँ।

राही मासूम रज़ा

१०-देवदूत,
बण्डस्टैण्ड, बान्द्रा,
बम्बई-४०००५०

अपने दो दोस्तो, विमल दत्त और अजीज कैसी, के नाम कि लगभग दो बरस पहले उन्होंने फिल्म राइटर्ज एसोसियेशन की भरी सभा मे उस प्रस्ताव का विरोध करने में मेरा साथ दिया था जो श्रीमती गांधी की खुशामद मे फिल्म राइटर्ज पर थोपने की कोशिश की जा रही थी। इन दोनो यारो ने इस शाम उसी प्रस्ताव के विरोध मे मेरे साथ सभा से वाक-आउट करने की हिम्मत भी की थी।

और उस रात के नाम जो उस शाम के बाद आयी थी और जेल के डर मे गुजरी थी।

राही मासूम रज़ा

भूमिका

रोशनाई के लिए अपने को बेचा किये हम
ताकि सिर्फ़ इसलिए कुछ लिखने से बाक़ी न रहे
कि क़लम खुश्क थे और लिखने से मजबूर थे हम

राही मासूम रज़ा

के० बी० ए० फाइल

वास्तव मे उस कटरे का नाम 'कटरा बी आर्ज़ू' नही था। उसका असली नाम 'कटरा मीर बुलाकी' था। कारपोरेशन के कागजो मे भी उसका यही नाम लिखा हुआ था। वह तो हुआ यू कि जिस दिन शहनाज और मास्टर बद्रुल हसन 'नायाब' मछली शहरी की शादी तै हुई उसी रात उन्होने इस कटरे का नाम बदलकर 'कटरा बी आर्ज़ू' रख दिया। यू भी वह बहुत दिनो से देखते चले आ रहे थे कि उनके कटरेवालो के पास और तो कुछ नही पर आर्ज़ूएँ बहुत हैं।

गली के नुक्कड पर जहाँ 'गली द्वारिकाप्रसाद' का बोड लगा हुआ था वही, बल्कि उसी बोड पर, कटरेवालो मे से किसी ने पहले ही से 'कटरा मीर बुलाकी' लिख छोडा था। नायाब मछली शहरी ने उसी के नीचे, जेब मे पडी हुई चाकू के टुकडे से, *'कटरा बी आर्ज़ू' लिख दिया।*

उधर से हर रोज गुजरनेवाले एक पत्रकार ने यह नया नाम पढा और पसन्द किया। उसने इस नये नाम पर एक लेख लिख डाला जो सम्पादक को पसन्द आया और उसने एक सीरियल लिखने की फरमाइश जड दी। उस पत्रकार के पास उन दिनो कोई खास काम नही था इसलिए वह उस 'सीरियल' मे जुट गया।

परन्तु सरकारी तौर पर चूकि कोई 'कटरा बी आर्ज़ू' था ही नही, इसलिए शहर की सरकार को परेशानी हुई कि कही यह सरकार का तख्ता उलटने की किसी साजिश का 'कोड नाम' न हो। तो, खुफिया पुलिस के कार्यालय मे एक 'के० बी० ए०' फाइल खुल गयी।

उस पत्रकार बिचारे को इस साजिश की खबर नही थी। वह तो गरीब

लोगो के एक महल्ले के बारे म एक सीरियल लिखने के लिए उन लोगो मे हमेशा से ज्यादा उठने बठने लगा था। वह दिन-भर और कभी कभी गयी रात तक कटरे के लोगो का पीछा किया करता और अपने हिसाब से उनकी आर्जूएँ जमा करता रहता था। उनकी जिन्दगी के एक एक क्षण को कलम की नाक पर रख-कर अपनी चेतना की तेज रोशनी म घुमा फिराकर हर तरफ मे देखन की कोशिश किया करता था। और उसे इस काम मे इतना मजा आ रहा था कि इस तरफ उसका ध्यान ही नही गया कि सी० आई० डी० के लोग उसका पीछा कर रहे हैं

थोडे दिना बाद शहर की सरकार को यकीन हो गया कि 'कटरा मीर बुलाकी' मे यकीनन सरकार का तख्ता उलटने की कोई गहरी साजिश हो रही है। उसके खयाल म वह पत्रकार उस साजिश का सरगना था। जो एसा न होता तो उस पत्रकार का सारा समय उसी कटरे के आसपास और उसी कटर के लागा के बीच न गुजरता। तो धीर धीरे 'के० बी० ए०' फाइल म शाखें फूटने लगी और चूकि रिपोर्टों म 'कटरा मीर बुलाकी' के लोगो के नाम बार बार आ रह थे इसलिए शाखें उन्ही के नामो की फूटी।

एक दिन डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने सोचा कि यह बला वह अपन सर पर क्यो मोल ले। तो उसने लखनऊ सरकार को लिख दिया कि उसका खयाल है कि 'कटरा मीर बुलाकी' मे सरकार का तख्ता उलटने की कोई साजिश हो रही है जिसका कोड नाम कटरा बी आजू' है। लखनऊ सरकार ने उस रिपोट को ध्यान से पढा और यह फसला किया कि के० बी० ए० फाइल दिल्ली की तरफ बढा देने की फाइल है, चुनांचे उसने उसे दिल्ली की तरफ सरका दिया और नम्बर एक सफदरजग ने वह फाइल खुर्शीद आलम खा को दी जो उसी दिन दिल्ली से इलाहाबाद के लिए रवाना हो गये और दिल्ली साँस रोके उनकी रिपोट की राह देखने लगी।

उन दिनों चूकि यही सरकारी तरीका हो गया था कि यदि किसी के बारे म कुछ पता न चले तो उसे सरकार का दुश्मन मान लिया जाये। और उस पत्रकार का नाम तो यू भी सरकार के दुश्मना मे लिखा हुआ था। इसलिए उसे 'मीसा' मे धर दबोचने के लिए पूछताछ शुरू की गयी।

उस पत्रकार का नाम आशाराम था।

आशाराम 'कटरा मीर बुलाकी' का रहनेवाला नही था। लेकिन यह कटरा उसके बचपन से लेकर उसकी जवानी तक, हर रास्ते मे आया। इसी रास्ते पर चलकर उसने अपनी पढाई खत्म की थी। इसी रास्ते पर चलती हुइ राजनीतिक

चेतना उसके पास आयी थी । इसी रास्ते पर चलकर वह साप्ताहिक 'नेशन' के कार्यालय जाया करता था जिसके सम्पादक उसके दादा श्री बाबूराम 'आज़ाद' के दोस्त थे और इसी दोस्ती के कारण वह 'नेशन' मे काम सीखने के लिए लगा दिया गया था ।

'कटरा मीर बुलाकी' के नुक्कड पर दाहिनी तरफ पहलवान भोलेनाथ उर्फ भोल पहलवान का जो चायखाना था उसमे आशाराम ने खरीदकर चाय की पहली प्याली पी थी। उस चाय का मज़ा वह कभी न भूल सका । चूंकि पहलवान भी बाबूराम के यार थे, इसलिए उन्होने उसकी प्याली मे अपने हाथ से बालायी की एक मोटी तह ऊपर से डाल दी थी जो उसके मुह मे जाकर पिघल गयी थी और उसका सारा मुह एक मीठी नर्मी से लबालब भर गया था। तब वह फिफ्थ क्लास मे पढा करता था। पहलवान ने चाय का दाम लेने के बाद उसे लौटा दिया था। और उस दिन के बाद से उसकी दो प्याली चाय बँध-सी गयी थी। एक प्याली जाते समय और दूसरी आते समय। और इस चाय मे चीनी की तरह घुलकर उसने यह फैसला किया था कि पढने के बाद वह कुश्ती लडेगा और चाय की एक दूकान रखेगा और मुफ्त मे बालायीवाली चाय पिया करेगा। परन्तु श्री बाबूराम 'आजाद' आजादी मे पहले के कांग्रेसी थे। अपने इकलौते पोते के बारे मे उन्होने बिल्कुल ही दूसरी तरह के सपने देख रखे थे। वह चाहते थे कि आशाराम साहित्यकार न बन सके तो पत्रकार बने क्योकि साहित्यकार के बाद पत्रकार ही देश की आत्मा और उसकी सच्चाई का रखवाला होता है । तो उन्होंने पहलवान को मना कर दिया कि वह आशाराम को चाय न पिलायें। उन्होंने आशाराम को भी समझाया कि चाय पीने के लिए जिन्दगी पडी है। अभी तो उसे साहित्यकार या पत्रकार बनने के लिए अपनी शिक्षा की तरफ ध्यान देना चाहिए। उनकी बात सुनकर उसका दिल कुढा तो बहुत, पर वह कर ही क्या सकता था ! परन्तु चूकि वह अपने दादा को अपने से ज्यादा समझदार मानता चला आ रहा था, इसलिए उसने यह भी मान लिया कि पत्रकारी पहलवानी से ज्यादा अच्छा काम है। लेकिन पहलवान की चाय मे उसकी दिलचस्पी कम न हुई। कभी कोई यार दोस्त होता तो उसके 'कहने' से वह चाय पीने के लिए रुक ही जाता। सडक पर बिछी हुई मोढियो पर बैठकर लोगो की बातें सुनने मे उसे बडा मजा आता। दूकान मे तरह-तरह की बातें हुआ करती थी। सडक मे बहुरूपी जिन्दगी गुजरती ही रहती थी और यू पहलवान की दूकान पर जिन्दगी से उसका परिचय हुआ।

ऐसे ही एक दिन अपने से दो-तीन साल बडी बिल्लो और पाँच-सात साल

बड़े देश से उसकी पहली मुलाकात भी पहलवान के चायखाने ही पर हुई। देश कोई बारह चौदह बरस का रहा होगा और बिल्लो नौ दस बरस की। बिल्लो तब भी नाक पर मक्खी नहीं बैठने दिया करती थी। और देश को तब भी बड़े-बड़े सपने देखने का शौक था।

देश ने 'नेशनल गैरेज' में शम्सू मियाँ के नीचे काम सीखना शुरू कर दिया था और बिल्लो भी यह तै कर चुकी थी कि बड़ी होते ही फज्जू धोबी से उसकी लाण्डरी खरीद लेगी। उसे यह काम पसन्द था। फज्जू की लाण्डरी का नाम 'जनता लाण्डरी' नहीं था, 'द मून लाइट लाण्डरी' था। और हालाँकि 'कटरा मीर बुलाकी' में अंग्रेज़ी जाननेवाले मुश्किल से एक ही आध थे, पर फज्जू लाण्डरी का नाम रोमन अक्षरों में लिखा हुआ था। उस लाण्डरी के छज्जे तले इतवारी बाबा रात को अपना बिस्तर डालके सोया करते थे।

इतवारी बाबा तब इतने बूढ़े नहीं थे। चालीस पैंतालीस के फेंटे में रहे होंगे। पर वह उन दिनों भी भीख ही माँगा करते थे। हफ्ते में छः दिन भीख माँगने के बाद सातवें दिन आराम किया करते थे और शायद यही कारण है कि लोग उन्हें इतवारी बाबा कहने लगे।

'कटरा मीर बुलाकी' में इतवारी बाबा का असली नाम किसी को याद नहीं था। शायद खुद इतवारी बाबा भी अपना नाम भूल चुके थे। सन सैंतालीस के बाद में वह बाकायदा इनकम टैक्स भी भरते थे

इतवारी बाबा के ठाठ देखकर कई बार आशाराम का दिल गुजगुजाया कि *उनका काम भी बुरा नहीं। पर अपने दादा को यह बात बताने की उसकी हिम्मत* न हुई और धीरे धीरे यह खयाल उसके दिल से निकल गया।

और अपने बारे में यह बात उसे काफी दिनों के बाद मालूम हुई कि वह मार्क्सवादी हो गया है। यह उन दिनों की बात है जब वह एफ़० ए० का इम्तिहान देकर अपने मामा के घर गर्मी की छुट्टियाँ मनाने गया हुआ था। वहाँ वह कामरेड माबूद से मिला और उन्होंने उसकी काया ही पलट दी। पर उसने इस परिवर्तन की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। मज़े में छुट्टियाँ काटके जब वापस आया तो बाबूराम जी ने यह महसूस किया कि उसकी भाषा बदल गयी है। वह बात-बात में चीन और रूस और रूमानिया और फ्रांस की क्रान्ति और अमरीका की सिविल वार का तज़किरा करने लगा है। उसकी बुक शेल्फ में कम्युनिस्ट मैनिफ़ेस्टो और गोर्की का उपन्यास 'माँ' आ गया है। बाबूराम विचारों को या विचारधारा को बुरा नहीं समझते थे, परन्तु मार्क्सवाद तो उनकी पिछली पूरी ज़िन्दगी को अर्थहीन बनानेवाला विचार था।

मतलब उन्होंने कुछ किया ही नही। उनके सपनो के पाव के नीचे जैसे कभी कोई जमीन ही नही रही हो यहां से दादा और पोते के बीच की दूरी बढने लगी।

यह दूरी आशाराम की माँ रामदयी ने महसूस की। पर वह एक नासमझ औरत थी। राजनीति का मतलब केवल यह समझती थी कि उसमे जेल जाना पडता है। उसकी समझ मे आजादी और क्रान्ति जसे शब्द आते ही नही थे। वह कीमतो की भाषा समझती थी। अरवी कल इस भाव बिक रही थी, आज इस भाव बिक रही है। भिण्डी का दाम कल यह था और आज यह हो गया है। गेहूँ कल रुपये का इतने सेर था और आज इतने सेर है खादी कल इस हिसाब मिलती थी और आज इस हिसाब से मिल रही है। और बहुत-सी चीजें तो मिल ही नही रही हैं। अमरीका—रूस—चीन—क्यूबा—वाशिंगटन—देहली—रामदयी के लिए यह केवल नाम थे जिनका उसकी जिन्दगी से कोई तअल्लुक नही था। पर जब इन्ही नामा के लेते हुए उसके ससुर और उसके वेटे की आवाजें ऊँची होने लगी तो उसे सोचना पडा कि शायद इन नामो का कोई मतलब है—कुछ नाम जैसे दोस्त हैं। और कुछ नाम जैसे दोस्त नही हैं। कुछ नामा को आशाराम प्यार से लेता है और कुछ नामो को बाबूराम। रामदयी बिना कुछ समझे हुए वेटे के साथ हो गयी। और बाबूराम चुप हो गये।

आशाराम के घर तरह-तरह के लडके आने लगे। कोई आसिफ असारी है। कोई बशीर है। कोई तेग इलाहाबादी है—इन लडको की आवाजा मे एक अजीब भल्लाहट और आखा मे एक अजीब चमक थी। रामदयी को आवाजो की यह खनक और आखा की यह चमक अच्छी लगने लगी और यू राजनीति के एक दोराहे पर आशाराम अपने दादा बाबूराम से बिछुड गया।

आशाराम को काग्रेस सरकार पर बिल्कुल भरोसा नही था। सरकार चाहे नेहरू की हो, चाहे लालबहादुर की, चाहे मिसेज गाधी की—काग्रेस सरकार पूजीवाद की दलाल और जनता की दुश्मन है। बजट चाहे मुरारजी बनायें चाहे सुब्रामनियम—काग्रेस सरकार का हर बजट जनता को लूटनेवाला और पूजी के बड घरानो का मददगार है और फिर एक दिन आशाराम ने अपने कमरे से गाधीजी की तस्वीर हटा दी। उसकी जगह कास्ट्रो की तस्वीर ने ले ली।

दादा और पोते के बीच का तनाव यहा तक बढा कि सन बासठवाले चुनाव मे जब बाबूराम को काग्रेस का टिकट मिला तो आशाराम ने उनके खिलाफ काम किया और उसी साल उसने पहली बार मोटर मिकैनिक्स की यूनियन बनायी और यू वह 'नेशनल गैरेज' के मालिक बाबू गौरीशकर लाल पाण्डेय से

सीधे टकराव मे आ गया।

यह बाबू गौरीशकर लाल काग्रेसी एम० पी० थे और बाबू कमलापति त्रिपाठी के खास आदमी थे। मन्त्री होते होते रह गये थे। समाजवाद पर प्रान्तीय काग्रेस म उनसे अच्छी तकरीर करनेवाला कोई नही था, इसीलिए जहाँ जहाँ सोशलिस्टो और कम्युनिस्टो का ज़ोर था वहाँ-वहा बाबू गौरीशकर की बडी माँग थी। इलाहाबाद से पूरब का सारा उत्तर प्रदेश उनके काग्रेसी चाज मे था और कल का लौण्डा आशा राम उन्ही के बकरो को समाजवाद सिखाने की बेवकूफी कर रहा था। उन्होने बाबूराम से शिकायत भी की, पर बाबूराम ने साफ कह दिया कि वह अपने पोते की विचारधारा के लिए ज़िम्मेदार नही हैं।

बाबूराम दिल-ही दिल मे और काग्रेस के भीतर-भीतर बाबू गौरीशकर पाण्डेय और उन जसे पेशावर नेताओ के विरोधी थे और इसीलिए वह काग्रेस मे अपना कोई दल न बना सके और किसी दल न भी उन्ह स्वीकार नही किया। आज़ादी के बाद से काग्रेस मे ईमानदार लोगो की खपत यू भी कम हो गयी थी। बाबू गौरीशकर-जैस लोग तो टिकटो की औलादें हैं। जहाँ टिकट बँटता है, वहाँ यह लोग पैदा हो जाते हैं। बाबू गौरीशकर पहला और दूसरा चुनाव काग्रेस के टिकट पर जीते। फिर जब चरणसिंह काग्रेस से अलग हुए तो वह भी अलग हो गय। और जब चरणसिंह की सरकार टूटी तो वह फिर काग्रेस मे लौट आये। बाबूराम यह राजनीतिक कबड्डी नही खेल सकते थे। उन्हें यह अच्छा भी नही लगता था। काग्रेस मे यह उनकी तीसरी पीढी थी। आशाराम भी काग्रेसी होता तो चौथी पीढी हो जाती। उनकी वफादारियाँ काग्रेस से जकडी हुई थी। काग्रेस से अलग हटकर वह न कुछ सोच सकते थे, न समझ सकते थे। काग्रेस उनके विचारा और उनकी आत्मा और उनकी ज़िन्दगी का ओढना-बिछौना थी। फिर भी जब बाबू गौरीशकर लाल पाण्डेय ने उनसे आशाराम की बात की तो वह डर गये।

बाबूराम ने आशाराम से तो कुछ नही कहा, पर अपनी बहू रामदयी को समझाया कि वास्तव मे खराबी सरकार मे नही, सरकारी नौकरा मे है। यदि आशाराम-जसे ईमानदार लडके सरकारी नौकरियो मे जाने लगें तो सब ठीक हो जायेगा।

रामदयी ने यह बात आशाराम से कही।

आशाराम ने कहा कि वह किसी जनता-दुश्मन सरकार की मशीन का पुरजा नहीं बनना चाहता।

रामदयी ने यह बात बाबूराम को बता दी।

बाबूराम चुप हो गये। पर उनके दिल मे डर का अँधेरा कुछ घना हो गया।

आशाराम अपने रास्ते पर चलता रहा। मोटर मिकेनिक्स यूनियन ने पहली हड़ताल बाबू गौरीशंकरलाल पाण्डेय एम० पी० के नेशनल गैरेज म की। महँगाई भत्ता, मजदूरियो म बढती और बोनस के सवाल पर यह हड़ताल शुरू हुई।

'नेशनल गैरेज' की दीवारो पर लाल झण्डे लहराने लगे और आशाराम ने गैरज के कम्पाउण्ड म पहली पब्लिक तकरीर की। उसके सामने तीस पतीस आदमी थे। शम्भू मिया अध्यक्षता के फराएज अजाम दे रहे थे और आशाराम को मालूम था कि शम्भू मियाँ अन्दर से कितने सहमे हुए है। उसके सामने भी जो लोग थे उनमे कई आखो म डर था। कई निडर भी थी। निडर आखो मे एक जोडी देशराज की आखो की भी थी।

आशाराम जानता था कि सामने बैठे हुए लोग यह सोच रहे है कि वह उनके दुखो, उनकी भूख, उनकी जरूरता को खत्म करने का कोई टोटका बतायेगा और आख झपकते दुनिया बदल जायेगी और बाबू साहब मुस्कुराते हुए आयेंगे और मजदूरिया बढ जायेंगी, महँगाई भत्ता बढ जायेगा और बोनस मिल जायेगा।

शम्भू मिया तो अपने डर के बावजूद बोनस का बजट भी बना चुके थे। उनके चश्मे का नम्बर बदल गया है। वह सोच रहे थे कि अभी बोनस मिल जाये तो घर जाते-जाते किसी चश्मेवाले की दूकान पर पल भर रुककर वह एक नया चश्मा खरीद लेंगे। देशराज सोच रहा था कि हाउस-फण्ड मे चार सौ अस्सी की कमी रह गयी है। तब से जमीन लेकर घर का काम शुरू कर दूगा। और फिर तो बिल्लो से शादी करने के लिए तैयार होना ही पडेगा मुरली अपने लिए ट्राजिस्टर खरीदने का प्रोग्राम बना रहा था गरज कि जितने आदमी थे उतनी आर्जुएँ थी और आशाराम अकेला था। यह उसकी पहली राजनीतिक तकरीर थी और जो लोग हड़ताल करनेवाले थे उनकी पहली राजनीतिक लडाई थी। किसी को ठीक से इस लडाई के कायदे-कानून मालूम नही थे।

आशाराम घबरा गया। घबराया तो उसकी तकरीर सरल से मुश्किल हो गयी। फिर इतनी मुश्किल हो गयी कि खुद उसके लिए अपनी तकरीर समझना दुश्वार हो गया। और तब देशराज उठा और उसने कहा

"भाइयो और बहनो—हत तेरे की। बहनो हैं कहाँ " लोग हँस दिये और उस हँसी के साथ ही जैसे वह अनजाना डर भी खत्म हो गया। 'कामरेड की बात कामरेडे की समझ मे ना आ रही तो हम लोग का समझेंगे? भाइयो, बात ई है कि कामरेड तो कभी फाका किहिन ना हैं। तो ऊ समझेयें कैयसे कि फाका होता का है! और हम लोग को फाका समझाये की जरूरत का है? हम लोग को तो बाप दादा के जमाने से परटिटस है फाका करे की। बाकी हम लोग आज ई ते कर रहे हैं कि आज से फाका नही करेंगे। फाका करने म कोई मजा नही है। पेट भरकर खाना खाना फाका करे से कहीं जियादा मजेदार काम है। और जो फाका करना ही है तो बाबू गौरीशकरलाल पाण्डेय भी करेंग। ई ता कोई बात ना भई साब, कि हम तो भुक्खे मरें और बाबू साहब हमरे पसीने मा बोर-बोरके पूरी खायें। "

यह भाषा सबकी समझ म आयी। आशाराम ने भी समझी और उस दिन उसे यह मालूम हुआ कि फाके की एक अपनी भाषा होती है जो पेट भरो के लिए जरा मुश्किल पडती है। और उसी दिन वह देशराज से छोटा हो गया।

हडताल तो टूट गयी। यूनियन भी टूट गयी। आशाराम जेल भी हो आया और वही जेल मे देशराज से उसकी गहरी दोस्ती हो गयी और वह यह समझ पाया कि मध्य वग के नेतत्व मे आयी हुई क्रान्ति अपना रास्ता बार-बार भूलती हुई सी क्यो लगती है। बात यह है कि तमाम बातें किताबा म लिखी हुई नही होती। असली बातें तो देशराजो और शम्मू मियाओ और मुरलिया को मालूम होती है।

जेल से वह तप के निकला।

"आ गये?" बाबूराम ने पूछा।

"जी हाँ।" उसने कहा, "जो आपके गाधीजी आज जिन्दा रहे होत तो हो सकता है कि जेल मे मेरा उनका साथ भी हो गया होता।"

जाहिर है कि यह सुनकर बाबूराम चुप हो गये। इधर कुछ दिना से यू भी उन्हें अपने आप पर थोडा-थोडा शक हो चला था कि जैसे वह जो कुछ सोच रहे हैं उसमे कहीं-न कहीं कुछ गडबडी है। कहीं-न-कहीं कोई गलती हो रही है। कहीं-न-कहीं से सपन टूट रहे हैं। आदश चिटक रहा है। विचार से रुके हुए बन्द पानी की तरह विसांध आने लगी है वह यह सोचते तो काँप जाते और दीवार पर टँगी हुई गाधीजी की तस्वीर की तरफ देखते जिसम उन्होने बाबूराम के गले म बाँह डाल रखी थी और मुस्कुरा रहे थे। वही मशहूर पोपली मुस्कुराहट। गाधीजी की बगल म जवाहरलाल नेहरु थे, मौलाना आज़ाद थे,

रफी अहमद किदवई थे, सरदार पटेल थे, राजगोपालाचार्य थे, नरेंद्र देव थे—यह तमाम तस्वीरें आटोग्राफ की हुई थीं। बाबूराम इन तस्वीरों की तरफ देखते तो उन्हें लगता जैसे यह तमाम लोग साथ हैं और वह अकेले नहीं हैं।

उनके कमरे में बस एक तस्वीर आटोग्राफ की हुई नहीं थी। और वह तस्वीर थी श्रीमती गांधी की। नेहरू की बेटी से उन्हें बड़ा प्यार था। उन्हें लगता जैसे वह उनकी अपनी बेटी हो। और जब मिसेज़ गांधी ने मुरारजी-ऐंड-कम्पनी को धता बता दिया तो बाबूराम बहुत खुश हुए कि अब बेरोकटोक गांधीजी और नेहरू के सपनों के फलने फूलने का युग आरम्भ होता है।

यही वे दिन हैं जब आशाराम ने 'नगर' में काम शुरू किया।

आशाराम को अपने बाप के सपनों से कोई मतलब नहीं था, क्योंकि उसकी निगाह में मुरारजी और श्रीमती गांधी में कोई खास फर्क नहीं था। चोरों में लड़ाई होने का मतलब यह है कि पहले एक चोरी हुआ करती थी अब दो चोरियां होंगी। और इस बात पर तो उसे पक्का यकीन था कि मुरारजी भाई और उस थैली के तमाम चट्टे-बट्टे जनसंघ से गठजोड़ करके प्रगतिशील ताकतों के खिलाफ मोर्चा बनायेंगे। और एक मंज़िल पर जमाअत इसलामी और इस तरह की दूसरी तमाम मुस्लिम साम्प्रदायिक पार्टियां भी उसी बड़े गठजोड़ का हिस्सा बन जायेंगी। अपनी ये परेशानियां वह किससे कहता क्योंकि खुद उसकी पार्टी दो हिस्सों में बंट चुकी थी। एक तो मिसेज़ गांधी का दुमछल्ला बन गयी थी और दूसरी मार्क्सवाद लेन के लिए जनसंघ और बी-के-डी और अकाली और जमाअत जैसी जन-दुश्मन पार्टियों से गठजोड़ करने पर तैयार थी। आसिफ अंसारी वकालत में लग गये थे। गंगा दिल्ली चले गये थे और सुप्रीम कोर्ट में प्रैक्टिस करने लगे थे। बशीर पार्टी से निकाल दिये गये थे। प्रकाशचन्द्र गुप्त मर चुके थे।

आशाराम था। अकेला रह गया था।

मोटर मिकेनिक्स यूनियन टूट चुकी थी। और आशाराम सवालिया निशानों के एक घने जंगल में अपनी परछाइयों के साथ अकेला था। अकेला रह गया था। और इस अकेलेपन ने उसकी आंखों की चमक और बढ़ा दी थी और उसकी आवाज़ की कड़वाहट तेज़ कर दी थी।

वह आते-जाते अब भी गुरु भोलू पहलवान के चायखाने पर रुकता। चाय पीता। वहां की बातें सुनता और देखता कि बैंकों के नेशनलाइज़ होने से कटरा मीर बुलाकी के लोगों की जिन्दगी में तो कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ। पर अपनी यह मालूमात वह अपने ही पास रखता। क्योंकि बात करने के लिए कोई

था ही नही।

अपनी इन उलझनो म वह यह भी भूल गया कि देशराज और बिल्लो की शादी एक घर की वजह से रुकी हुई है, कि दोना अपनी सारी बचत पोस्ट-आफिस म जमा कर रहे हैं, कि छोटी सी वह ज़मीन खरीदी जा सके जिस पर बिल्लो अपना घर बनाना चाहती है। बिल्लो और देशराज दोनो ही बे-पढे लिखे थे। इसलिए हाउस फण्ड का सारा हिसाब किताब आशाराम किया करता था। शाम को वह बिल्लो की जनता लाण्डरी म जाता और बिल्ला अपनी पासबुक यू उठाती जैसे वह पासबुक न हा, गीता हो, जिसम खास उसके लिए कृष्ण ने अपना पयाम लिख भेजा हो। देश भी आ जाता और घण्टे दो घण्टे उस घर के सपनो म बीत जाते। देश एक लम्बे चौडे घर के सपन देखा करता था। संगे-मरमर के खम्बा और मेहराबावाले घर के सपने। घर, जिसके सामने का बाग खुसरूबाग से बडा होगा। पर बिल्लो हमेशा एक छोटे-से घर का सपना देखा करती थी। छोटा-सा आगन जिसम तीन चार पलग आ जायें। दो कमरे। एक दालान दोना मे सपना के इसी टकराव मे झगडा हो जाता और आशाराम का बीच बचाव करवाना पडता। और बीच मे इतवारी बाबा आ जाते और वह सिरे से घर के सपने ही का विरोध करते, कहते "अरे घर का चक्कर छाडो तू लाग। जब शाहजहा ताजमहल बनवाइन रहा तब सस्ती का जमाना रहा। अब तो क्रिया-कम म पहले के सादी बिआह से दूना तिनगुना खरच हो जाता है। चले है घर बनाय।" इतवारी बाबा की बात सुनकर मोर्चा बदल जाता। बिल्ला और देश दाना इतवारी बाबा से भिड जाते कि घर तो वह ज़रूर बनवायेंगे।

देशराज और बिल्ला दानो ही आशाराम स बडे थे, पर इन दोना से उसकी दात काटी दोस्ती हो गयी थी। और यह दोस्ती इतनी आगे बढ गयी थी कि बाबू गौरीशकरलाल पाण्डेय ने चुपके चुपके यह तक उडवाना शुरू कर दिया कि बिल्ला आशाराम स फँस गयी है।

पर कटरा मीर बुलाकी म यह बात किसी ने न मानी क्योकि वहा के लोग बिल्लो और देश के प्रेम को जस हमेशा हमेशा से जानते चले आ रहे थे। और जो एसा होता तो आशाराम की बतीसी गुरु ने बुढौती म भी उसके पेट म उतार दी होती। पहलवान के डर से तो आस-पास के नौजवान बिल्लो से कोई ऐसा-वैसा मजाक करते भी डरते थे कि कही पहलवान कोई उल्टा-सीधा मतलब न निकाल लें। जगदम्बाप्रसाद इक्का सटेविल तक का एक दिन उन्होने जान स मारते मारत छोडा। उसका कुसूर सिफ इतना था कि तमाम पुलिसवालो की तरह उसे भी यह नही मालूम था कि बेजान चीजा के मा बाप नहीं हुआ करते।

एक दिन अपनी वर्दी की डाट पर इस्त्री देखकर वह बिल्लो से पूछ बैठा, "यह बहनचोद कमीज इस्त्री की हुई है ?"

यह बात भोलेनाथ पहलवान ने सुन ली। वह जनता लाण्डरी में घुस आये और जगदम्बाप्रसाद से बोले 'बहनचोद कमीज नहीं तुम हो! बिल्लो, मतलब लड़की जात, के सामने गाली बकते सरम नहीं आती? हेड कानिसटिबिली गाँड में घुसेड़ देंगे।"

वह तो खैरियत यह हुई कि ठीक उसी समय शम्सू मियाँ आ गये और वह गुरु भोलेनाथ के गुरु उस्ताद करीमुद्दीन खाँ के दोस्त और खुद गुरु भोलेनाथ पहलवान के दोस्त थे। शम्सू मियाँ ने गुरु को डाँट पिलायी कि जगदम्बाप्रसाद को गाली बकने पर डाँटने में खुद गुरु बड़े फर्राटे से गालियाँ बक रहे हैं। और यहाँ गुरु भी कायल हो गये और बात खतम हो गयी। वह दिन इमरजेंसी के भी नहीं थे कि जगदम्बाप्रसाद गुरु को मीसा में अन्दर करवा देते, इसलिए वह भी इस बात को पी गये और 'कटरा मीर बुलाकी' में सबने एक मत होकर यह बात मानी कि जो ठीक वक्त पर शम्सू मियाँ न आ गये होते तो बात बहुत बढ़ गयी होती क्योंकि जगदम्बाप्रसाद उस्ताद करीमुद्दीन के मुखालिफ अखाड़े के थे।

शम्सू मियाँ की बात कटरा मीर बुलाकी में यूँ भी कोई नहीं टालता था, क्योंकि उनकी गिनती कटरे के बड़े-बूढ़ों में होती थी। वह यूँ भी बड़े नेक आदमी थे और कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है कि वह अपने नेक बन्दों का इम्तिहान लेता है और उसके इम्तिहान में न घूस खिलाकर पचा आउट होता है और न घूस खिलाकर पासिंग मार्क्स लिये जाते हैं। पचा तो उसने खुद ही आउट कर दिया है। फरमाता है कि हम तुम्हारा इम्तिहान लेंगे—जान, माल, बाग-बगीचे और आल औलाद से। शम्सू मियाँ के पास न जान थी न माल था। मतलब यह कि जो जान थी उसकी गिनती जब वह खुद ही जान में नहीं किया करते थे तो अल्लाह मियाँ उसे जान में क्या गिनते! रहा माल, तो वह उनके बाप-दादा तक ने नहीं देखा था। बाग-बगीचा था नहीं। तो अब बची औलाद। एक बेटा था। अब्दुल हक। वह अपनी बीवी के बहकावे में आकर पाकिस्तान चला गया था। शम्सू मियाँ ने अब्दुल और देश दोनों को साथ-साथ मोटर मिके-निकी का काम सिखाना शुरू किया था। जो आज वह हिन्दुस्तान में होता तो देश और अब्दुल दोनों की ही मिकेनिकी को कोई हाथ नहीं लगा सकता था। पर उसकी जवानी पाकिस्तान चली गयी और शम्सू मियाँ की बुढ़ापी ने वहाँ जान से इनकार कर दिया और अब्दुल के हिस्से का जो प्यार बचा था वह भी देश ही को देकर छुट्टी की। अब बची महनाज और शहनाज। सहनाज की शादी ए०-जी०

आफ़िस में एक क्लर्क सा हो गयी। तनख्वाह तो ज्यादा नहीं थी, पर अल्ला के फज्ल से ऊपर की आमदनी अच्छी थी। बड़े-बड़े ठेकेदार किस्म के लोग उसके घर ईद और दीवाली पर फल फलहरी लाया करते थे। महनाज बहुत खुश थी। फिर एक दिन, कि अल्लाह मिया ने वह दिन शम्मू मियाँ के इम्तिहान के लिए तै कर रखा था, महनाज़ बेवा हो गयी। यमराज कालरे के रूप में आये और उसके मियाँ को ले गये। उसका बेवा हो जाना खुद अपनी जगह शम्मू मियाँ के लिए अफसोस की बात थी पर सेर पर सवा सेर यह हो गया कि महनाज अपनी दो बच्चियों के साथ मायके आ गयी क्योंकि उसकी सुसरालवालों ने उसे रखने से इनकार कर दिया था। आमदनी वही। महँगाई बढ़ी हुई और ऊपर से तीन पेट और बढ़ गये।

अल्लाह मियाँ यहीं तक इम्तिहान लेकर बस करते तब भी गनीमत होता। पर वह कहाँ रुकनेवाले हैं पूरा इम्तिहान लिये बिना! उन्होंने शहनाज को कालरे या टायफॉएड या टी०बी० या कैंसर में मार डालने की जगह उसे जवान कर दिया।

जवान होना या जवान न होना शहनाज के बस में तो था नहीं। अगर कोई जत का लड़का नहीं मिल रहा है तो इसमें भी उसका कोई कुसूर नहीं था। फिर भी सकीना बी उर्फ मुक्कन उठते-बैठते अल्लाह मियाँ को अपनी तरफ से समझाती रहती थीं कि महनाज़ मर गयी होती तो अच्छा होता। अब भी मर जाये तो बुरा नहीं। पर अल्लाह मियाँ ने तो जैसे अपने कान में तेल डाल रखा था। मुक्कन का यही खयाल था और इसीलिए न सिर्फ यह कि शहनाज़ मरी नहीं बल्कि बीमार पड़-पड़के इलाज में पैसे ऊपर से खर्च करवाने लगी।

शहनाज़ में जो डबल खराबी थी वह यह थी कि उसे पढ़ने का शौक था। और कुछ न मिलता तो जाखन के यहाँ से आनेवाली पुड़िया के कागज सँभालती फिरती जो आम तौर से पुराने अखबार के टुकड़े होते। कभी-कभार स्कूल की कापियों का कागज़ निकलता। रूलदार कागज़ पर लिखे हुए खत भी निकल आते कभी कभार। वह उन्हीं को पढ़ती रहती और मुक्कन के कोसने की तरफ से उन क्षणों में उसके कान बन्द हो जाते।

एक दिन वह इसी तरह का कोई खत पढ़ रही थी। किसी लड़के ने मीना कुमारी को लिखा था कि वह उस पर एक जान छोड़ हज़ार जान से आशिक है। सातवें दर्जे में पढ़ता है और बम्बई आना चाहता है कि अपने मन मन्दिर की देवी मीना कुमारी के दर्शन कर सके। मुक्कन ने वह खत छीन लिया और माँ-बेटी में पहली लड़ाई हुई। शहनाज ने पहली बार माँ को तुर्की-ब-तुर्की

जवाब दिया और उस दिन कटरा मीर बुलाकी मे यह बात तै हो गयी कि शहनाज़ जवान हो गयी है।

उसी समय देश आ गया। सकीना बी से बोला, "यह आप अम्मा को डाँट क्यो रही हैं चाची ?'

शहनाज़ तो उसे घूरकर रह गयी पर सुक्कन चमक के बोली "खुद पूछ ल्यो ई हेड मास्टर होयेवाली हैं।' फिर वह शहनाज़ की तरफ मुडी और बोली, "ए धिया, उतना गुमान करो जो सपड जाये। दू वखत की रोटी तो जुडती नही। सिलाई-कढाई का शौक न भया कि घर मे दू पैसा आये। रोग लगाइन हैं पढे का "

सुक्कन बेतकान बोलती चली गयी और उसकी आवाज की आग मे शहनाज मोम की गुडिया की तरह पिघल गयी। वह रोने लगी। देश शहनाज को रोता नही देख सकता था। बोला, "देखिए चाची ! अम्मा को आप रुला नही सकती हैं ए तरह। साफ बात है। हम मास्टर बदर का ट्युशन लगवाये देते हैं। रोज आके पढा जाया करिह। मुदा बिल्लो को पता न चले।' फिर वह शहनाज़ के पास गया, "ए अम्मा, चलो, अब हँस दो "

शहनाज वाकई हँस दी और खुशी मे यह भी भूल गयी कि 'अम्मा' पुकारने पर वह देश को बचपन से कोसती चली आ रही है। वह हुआ यू था कि देश एक दिन चिलचिलाती दोपहर मे आया। तब देश भी इतना बडा नही था। और शहनाज तो बहुत ही छोटी थी। शम्सू मिया इतने बूढे नही थे। वह एक खुर्रे पलग पर लेटे खर्राटे ले रहे थे और शहनाज अकेली बैठी अपनी गुडिया से खेल रही थी। दिल ही-दिल मे वह गुडिया की मा बनी हुई थी और आज ही उसने एक अहीरिन को देखा था कि वह अपने बच्चे को दूध पिला रही थी। इसलिए वह भी अपनी गुडिया को दूध पिलाना चाहती थी। शम्सू मिया की तरफ पीठ करके उसने अपना कुरता उठाया और गुडिया का मुह अपने सीने से लगा दिया। और ठीक उसी वक्त आवाज आयी, "अम्मा" और उसने जो पलट के देखा तो यह देखा कि आगन मे देश खडा है। वह देश से झेंप गयी और झेंप मिटाने के लिए लगी उसे कोसने। शम्सू मिया की आख खुल गयी। उन्होंने बीच बचाव करवाना चाहा, पर वह इस डर से नही रुकी कि कही देश अब्बा को यह बता न दे कि वह कर क्या रही थी

उसी दिन से देश उसे अम्मा पुकारने लगा और उसकी देखा देखी अब्दुल हक भी उसे अम्मा पुकारने लगा। फिर वह सारे मुहल्ले मे अम्मा कही जाने लगी और उसका लगभग सारा समय लोगो को कोसने मे गुजरने लगा

वह साल मे बस एक दिन, और वह भी एक पल के लिए, बहन बनती। राखी के दिन राखी बाधते समय। पर उस दिन भी देश आता तो अम्माँ ही कहकर उसे आवाज देता। परन्तु उस दिन वह कोसने सुनाती नहीं आती। वह कलाई बढाता। वह राखी बाध देती। फिर उसके मुह मे मिठाई का एक टुकडा रखती और दिल-ही दिल मे अल्लाह मियाँ से कहती "अल्ला मियाँ! चाहे अम्मा पुकारे चाहे कुछ, पर मेरे भैया को सलामत रखना।"

और सच्ची बात यह है कि खुद देश को पूरा पूरा पता नहीं था कि उसकी जिन्दगी मे इस बीमार बीमार सी शहनाज की असली जगह क्या है? वह कितना प्यार करता है? उसके बिना जिन्दगी कुछ कम-कम सी लगती। जैसे कुछ छिपाके बैठ गयी हो। ऐसा लगते ही वह सीधा शम्सू मियाँ के घर जाता और हाँक लगाता, "अम्माँ।" और घर के किसी-न किसी कोने से शहनाज के कोसनों की आवाज आने लगती और देश को इत्मीनान हो जाता कि जिन्दगी मे कोई गडबड नहीं है। सब ठीक ठाक है।

देश को यह भी नहीं मालूम था कि शहनाज रोती हुई कैसी लगती है। उसने उसे रोते हुए देखा ही नहीं था। उसने तो उसे जब देखा कोसते हुए देखा, इसीलिए जब पढाई की बात पर उस दिन सुक्खन की डाँट पर शहनाज रोयी तो देश घबरा गया और उसे पता चला कि वह सबकुछ देख सकता है पर शहनाज को रोता हुआ नहीं देख सकता और इसीलिए उसने तै किया कि शहनाज पढना चाहती है तो वह उठायेगा उसकी पढाई का खर्च। पर बिल्लो से डरता भी था। मास्टर बदर की तनख्वाह जाहिर है कि हाउस फण्ड ही से निकलेगी और उसे हजार झूठ बोलने पडेंगे

और यूँ देश की वजह से मास्टर बदर और शहनाज की पहली मुलाकात हुई। मास्टर बदर पर्दे के बाहर। शहनाज पर्दे के अन्दर। इश्क तो लोहे की दीवार न माने, टाट के एक पर्दे मे क्या रखा है! शहनाज ने पुडिया को पढना छोड दिया। 'माटसाब' उसे लिखने का काम बहुत देने लगे। वह दिन-भर माटसाब के लिए लिखने का काम करती रहती। और चूँकि सुक्खन और शहनाज दोनो ही लिखना-पढना नहीं जानती थी, इसलिए खतो के जरिये इश्क चलता रहा, यहाँ तक कि एक दिन बद्रुलहसन यानी माटसाब ने पिक्चर देखने का प्रोग्राम बना डाला। मैटनी शो ही देखा जा सकता था। दोनो अलग-अलग निकले। अलग अलग रिक्शे पर बैठे। अलग अलग रवाना हुए और सिनेमा हाउस मे मिल गये। पहुचने मे जरा देर हो गयी। फिल्म शुरू हो चुकी थी। पर फिल्म देखना किसे था! वह दोनो तो साथ रहने के लिए आये

थे। यह बात उन्हें इण्टरवल में मालूम हुई कि उनके पासवाली कुर्सियों पर बिल्लो और देश हैं।

देश या बिल्लो ने कुछ नहीं कहा। बिल्लो ने उन दोनों को आइसक्रीम खिलायी। देश मजे में खूब भुनी हुई मूंगफलियाँ खाता रहा और पुड़िये में मिला हुआ नमक चाटता रहा फिल्म के बाद शहनाज को बिल्लो ने अपने रिक्शे पर बिठा लिया। मास्टर बदर को देश ने अपने रिक्शे पर लिया।

"देखो भैया माटसाब, सौ की सीधी एक। शहनाज हमरे दोस्त की बहिन और हमरे उस्ताद की बेटी है। बिग्राह हो सकता है। चक्कर नहीं चल सकता। का इरादा है ?"

तीसरे दिन शहनाज और मास्टर बद्रुलहसन की शादी तै हो गयी। यही वह मास्टर बद्रुलहसन हैं जिन्होंने एक रात 'कटरा मीर बुलाकी' के नीचे चाक से 'कटरा बी आर्ज़ू' लिख दिया और यह सारा चक्कर चल पड़ा।

सबसे पहले यह बात हेडकान्सटेबिल जगदम्बाप्रसाद ने थाना कोतवाली के इनचार्ज अश्फाकुल्लाह खाँ एस० आई० को बतायी कि आशाराम आजकल कटरा मीर बुलाकी के चक्कर बहुत लगा रहा है। खाँ साहब ने यह बात डी०एस०पी० सूरजनाथ सिंह को बतायी। सूरजनाथ सिंह ने डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट से कहा। डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने डी०आई०एस० को चौकन्ना कर दिया और सरकारी पहिया चल पड़ा और 'के-बी ए' फाइल खुल गया।

आशाराम अपना सीरियल न लिख सका।

वह काम मैं कर देना चाहता हूँ ताकि सनद रहे और वक्त पर काम आये।

कटरा मीर बुलाकी

कारपोरेशन के कागजा मे यह बात जरूर लिखी होगी कि यह कटरा मीर बुलाकी किसने बनवाया था। पर कारपोरेशन कौन जाये और सच पूछिए तो बनवानेवाले से हमे लेना दना क्या ! किसी न किसी ने बनवाया ही होगा।

कारपोरेशन मे इसका नक्शा भी होगा। मैंने उसे देखने का चक्कर भी नही चलाया, क्योंकि उस नक्शे से भी हमे क्या लेना-देना ! लेकिन एक बात बिल्कुल साफ है कि अपने असली नक्शे स अब कटरा मीर बुलाकी का कोई खास तअल्लुक नही रह गया है, क्योकि लगता है कि असली कटरे के चारो तरफ यह कटरा उगता चला गया। लेकिन यह फैली हुई चीज भी कटरा मीर बुलाकी ही कही जाती रही। असली कटरे की चौहददी की दीवारो का गायब हुए भी एक जमाना हो गया। और अब तो यह तै करना भी सम्भव नहीं कि असली कटरा कहा खत्म होता है और 'टालडा' कटरा कहाँ से शुरू होता है। समय इन चाहदिदयो को नही मानता। कारपोरेशन मानती हो तो माना करे। सरकारी तौर पर इसीलिए गली के साथ सडक तक आ जानेवाला कटरा 'गली द्वारिकाप्रसाद' के नाम से जाना जाता था, पर आम लोग उसे कटरा मीर बुलाकी ही कहा करते थे और डाकखानेवालो को भी यही नाम याद था, चुनाचे कोई ट्रेनी पोस्टमैन होता तो गुरु उस पते की यह बात बताना न भूलता कि वह 'गली द्वारिकाप्रसाद' के चक्कर मे न पडे क्योकि कोई खत लिखनेवाला पते मे 'गली द्वारिकाप्रसाद' नही लिखता।

यह बात अपनी जगह दुरुस्त है कि स्वर्गीय द्वारिकाप्रसाद सन '४२ के एक

यहीं के और मीर कुनाजी, कहते हैं कि, ताज़ा में मरे थे इसलिए कटरेवालों का ख़्यालबुलन्दों ही का नाम देना चाहिए था। कुछ जनसंघियों ने यह पता भी चलाया कि यह मीर कुनाजी कहाँ गिरके रहते हैं हर नगर और हर सरकारी कागज़ पर और खास तौर से जब मीर कुनाजी के परवारे पाकिस्तान भी जा चुके हैं। पर कटरेवालों ने कहा कि यह राजनीति के चक्कर में नहीं पड़ता। किसी के पाकिस्तान चले जाने से कहीं का नाम क्या बदल दिया जाय! नाम ही बदलना है तो गुरु भागराम पहलवान, शम्भू मियाँ, मानी गुँराती, जग दम्बा प्रसाद सिरीगंरवाल, बशीर हलवाई, पन्नालाल मिस्त्री, सभी का नाम बदला जाय। जनसंघियों के पास इसका जवाब नहीं था। पर अब पार्टी के दफ्तर पेश गयी थी तो मैं सुना कि उस सड़क का नाम शालिग्रामप्रसाद मार्ग रख दिया जाय जो कटरेवाली गली का रूठी हुई चाल चली जाती है और जिस पर आग लगाकर बाबू गोरीशंकरलाल पाण्डेय की कोठी थी।

बाबूजी को जब यह पता चला कि जनसंघी यह चक्कर चला रहे हैं तो उनकी कांग्रेसी रग फड़की और उन्होंने एक प्रेस कान्फ्रेंस बुलाकर बता दिया कि सर मुसलीम के वहशियों से जनसंघ का क्या मतलब, उनकी पार्टी कांग्रेस और भारत कांग्रेस है। और यदि सड़क का नाम बदलना ही है तो महात्मा गाँधी मार्ग, या नेहरू रोड क्यों न रखा जाए। पर उन्हीं दिन की बात यह है कि यह अपने स्वर्गीय पिता के नाम पर इस सड़क का नाम पण्डित शिवशंकर पाण्डेय मार्ग रखवाना चाहते थे। यह बात दूसरे कांग्रेसियों ने उठायी और जिला कमेटी ने प्रस्ताव पास कर दिया कि इस सड़क का नाम 'पण्डित शिवशंकर पाण्डेय मार्ग' रखा जाना चाहिए। यह पण्डित शिवशंकर पाण्डेय नायब तहसीलदार थे और सन बयालीस के आन्दोलन से उनका कोई तअल्लुक नहीं था, सिवा इसके कि मौका गनीमत जानकर उन्होंने अपने आदमियों से सरकारी खज़ाना लुटवा लिया और बाद में उन्हीं पैसों से उन्होंने दूसरा कारोबार शुरू किया जिसमें भगवान की दया से दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की हुई और जहाँ कच्चा घर था वहाँ तीन माले की पक्की कोठी खड़ी हो गयी। यह बात कोई छिपी-ढँकी नहीं थी इसीलिए मुहल्ला कांग्रेस कमेटी से लेकर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी तक, किसी कमेटी ने उन्हें कोई सम्मान देने की कोई बात नहीं चलायी। पर अब सन बयालीस की बात पुरानी हो चुकी है इसलिए बाबू गोरीशंकरलाल पाण्डेय अपने पिता को देशभक्त साबित करने पर तुले हुए थे क्योंकि यही एक बात उन्हें विज़ारत की कुर्सी से दूर किये हुए थी।

तो, पहले एक मौलवी शमीमुल हसन महरारी को शीशे में उतारा गया।

यह मोल्वी शमीमुल हसन ग्रहरारी स्वर्गीय पण्डितजी (पण्डित नेहरू नही, पण्डित शिवशकर पाण्डेय) के दोस्त थे और आज सरकार स जेल-याना की पेंशन पा रह थे। शमीम साहब ने 'सन बयालीस—एक ग्रापबीती' लिखी। इस ग्रापबीती म उन्होने यू ही एक जगह पण्डित शिवशकर पाण्डेय का जिक्र निकाल दिया और लिखा यह बात वह अपने जाती तजरबे की बुनियाद पर कह सकते हैं कि उनके बार म यह बात बिल्कुल गलत उडायी गयी है कि सरकारी खजान का पैसा उन्होंने खुद-बुद किया। वह दो लाख अस्सी हजार रुपय उन्होने खुद मोल्वी साहब के सामने मरहूम डाक्टर लोहिया और आचाय नरेन्द्रदेव को दिये थे

यह किताब छपी तो हगामा खडा हो गया। सोशलिस्टो ने ग्रासमान सर पर उठा लिया। पर मौलाना अपनी बात पर डटे रहे और उन्ह झुठलाने के लिए न लोहियाजी का बुलाया जा सकता था न आचायजी को।

इस बहस मे बाबू गौरीशकरलाल पाण्डेय नही पडे। किताब लिखवाने और छपवाने मे कुल दस हजार खच हुए थे। दस हजार उनके लिए कोई चीज नही। पर वह बैठ नही गये। उन्होने दिल्ली के एक पजाबी पत्रकार को अपन पिता की जीवनी लिखने का काम सुपुद कर दिया। उसने दस हजार लिये। हफ्ते भर मे किताब लिख दी। उस जीवनी ने साबित कर दिया कि स्वर्गीय पण्डितजी कैसे जबरदस्त देशभक्त थे!

इन दोनो किताबो से लस होकर जिला काग्रेस कमेटी ने प्रस्ताव पास किया कि स्वर्गीय पण्डितजी की गिनती देशभक्तो मे होनी चाहिए और उनके नाम का डाकटिकट निकलना चाहिए। टिकट निकल गया। और जब नाम का टिकट निकल गया तो एक मुसरी सडक की क्या हैसियत! सडक का नाम 'पण्डित शिव शकर पाण्डेय माग' रख दिया गया और जनसघी कुछ न कर सके। यू भारतीय सेकुलरइज्म ने भारतीय साम्प्रदायिकता को सरे मैदान हरा दिया। (एक चुनाव की तकरीर म बाबूजी ने यही कहा था।)

पर बिचारे सन बयालीस के असली शहीद द्वारिकाप्रसाद जहाँ-के-तहाँ रह गय और इसलिए कारपारेशन न फैसला किया कि कटरा मीर बुलाकी स जो गली शिवशकर पाण्डेय माग तक जाती है उसका नाम तो गली 'द्वारिकाप्रसाद' रख ही दिया जाय, चाह लाग यह नाम याद करें या न करें।

गली के मुक्कड पर टीन का बोड लग गया जिस पर देवनागरी मे लिखा हुआ था गली द्वारिकाप्रसाद। उसी के नीचे बटरेवाला ने फारसी और देवनागरी मे लाल रग से कटरा मीर बुलाकी भी लिख दिया ताकि कुछ बरसों के बाद आने-

याला यह नया नाम देना र नरा न जाये।

इस गली में गुजरते पर अगर कटरे की तरफ मुँह करके खड़ा हुआ जाय तो दाहिनी तरफ और जो कटरे की तरफ पीठ की जाय तो बायीं तरफ भालू पहलवान का घायगारा था।

पहलवान का पूरा नाम भोलेनाथ सिंह था। पर वह जाते थे भोला या भोनू पहलवान। अपने उस्ताद पहलवान अब्दुल करीम के देहान्त के बाद अखाड़े की पगड़ी भोनू पहलवान को मिली। नागपंचमी के दिन गुरु का पगड़ी बाँधी जाती। यह पगड़ी उस्ताद अब्दुल करीम खाँ के बेटे नम्मू मियाँ बाँधा करते थे। फिर बड़ी धूमधाम से पहलवान का जुलूस निकलता और उस्ताद बाजे गाजे से साथ अखाड़े में ले जाये जाते और वहाँ वह हर पट्ठे के बदन पर अखाड़े की मिट्टी लगाते और फिर सारा अखाड़ा 'या अली' के नारा से गूँज जाता।

पहलवान ने शादी नहीं की।

आशाराम ने अपनी डायरी में पहलवान के कुँवारे रह जाने के बारे में जो लिखा है मैं नीचे उसका हिन्दी अनुवाद पेश करता हूँ

"कटरा मीर बुलाकी में कोई खुल के तो यह नहीं कहता, पर कई लोगों ने दबी जबान इशारे में यह अवश्य कहा कि पहलवान अपने गुरु उस्ताद अब्दुल करीम खाँ की बेटी स्समन बीबी पर आशिक हो गये थे। जाहिर है कि इसमत बीबी से उनकी शादी नहीं हो सकती थी, इसलिए इसमत बीबी तो कुछ खा कर मर गयी और पहलवान ने कसम खा ली कि वह जिन्दगी भर बियाह ही नहीं करेंगे।"

मैं आशाराम की इस राय से सहमत नहीं हूँ और उसका कारण यह है कि भालू पहलवान-जैसे लोग अगर अपने उस्ताद की बेटी पर आशिक होंगे तो उन्हें ऐसा लगेगा जैसे वह अपनी बहन पर आशिक हो गये हैं और नतीजे में कुँवारे नहीं रह जायेंगे, आत्महत्या करके मर जायेंगे।

इसलिए मैंने अपनी तरफ से छानबीन शुरू की तो पता चला कि देशराज सिंह के पिता रतनकुमार पहलवान के दोस्तों में थे। दाँत काटी दोस्ती थी। यह खायें तो उनका पेट भर जाता था और वह पियें तो प्यास इनकी बुझती था। देश की माँ मुनिया पहलवान को राखी भी बाँधती थी। फिर ऐसा हुआ कि एक साल मुहर्रम होली के साथ आ गया। इन दोनों के साथ आने में भरत का कोई कुसूर नहीं था। मुनिया ने बूढ़े ताजिये पर मन्नत मान रखी थी कि जो बेटा होगा तो वह फूल की चादर चढ़ायेगी। तो भरत मुनिया को लेकर चादर चढ़ाने गया। बलवा शुरू हो गया और वह दोनों मियाँ-बीवी मारे गये।

जाते समय वह बच्चा पहलवान के हवाले कर गये थे कि घर मे कोई था नही तो पहलवान ने उस बच्चे को फिर अपने आपमे जुदा नही किया। उन दिना एक बडे अच्छे और खाते पीते घराने म उनकी शादी की बात भी चल रही थी। पर पहलवान न सोचा कि जो उन्होन शादी की तो बच्चा हागा और शायद अपना बच्चा हो जाय तो देश की तरफ से उनका ध्यान हट जाये। इस लिए उन्हाने शादी न करने का फैसला कर लिया। फिर थोडे दिन बाद जब उनकी बहन रुक्मनी बेवा होकर घर मे आ गयी तो शादी का सवाल बिल्कुल ही खत्म हो गया क्योकि रुक्मनी, उसकी बेटी बिल्लो और देश ही को पालना मुश्किल था तो घर मे एक पेट और क्या बढाते ! रुक्मनी ने बहुत जोर डाला पर वह न माने और थक हारकर रुक्मनी भी चुप हो गयी। फिर वह हैज़े मे मर गयी तो घर मे पहलवान की शादी की बात करनेवाला ही कोई न रह गया और पहलवान के दिमाग मे फिर शादी की बात ही नही आयी। हाँ, देश और बिल्लो की शादी वह अलबत्ता बडे धूमधाम से करना चाहते थे और उसी के लिए एक एक पैसा जोड रहे थे।

चाहते तो वह यह भी थे कि उनके बाद अखाडे की पगडी देश के सर बँधे, पर कुश्ती मे देश का जी ही नही था। उसे तो मोटरें फैसिनेट करती थी। इसलिए उसे शम्सू मिया उडा लें गये। शम्सू मिया की जगह अगर किसी और ने यह हरकत की होती तो शायद पहलवान बवाल खडा कर देते, पर शम्सू मिया उनके उस्ताद के बेटे थे। बस, यही सोचकर वह दिल और ज़बान मार गये।

चूंकि बचपन ही से बिल्लो और देश की शादी की बात चल रही थी इस-लिए उन दोनो ने भी इस बात को मान लिया था।

बिल्लो बडे दिल की लडकी थी पर ज़रा कजूस थी। एक एक पैसे को दाँत से पकडती थी और हमेशा इसी बात पर देश से उसका झगडा होता था कि देश की हथेली मे तो जसे छेद था, पैसा टिकता ही नही था।

देश और बिल्लो ने बचपन ही से अपना एक घर बनवाने का फैसला कर रखा था और बचपन ही से डाकखाने मे हाउस फण्ड का सेविंग बक अकाउण्ट खुल गया था। उन्होंने एक ज़मीन भी पसन्द कर रखी थी। यह ज़मीन पहलवान के चायखाने के दूसरे हाथ पर न जाने कब से खाली पडी थी। छोटी सी जमीन थी। बिल्लो के सपने के लिए काफी और देश के सपन के लिए नाकाफी। और चूंकि बिल्लो की जबान के आगे कटरा मीर बुलाकी मे किसी की नही चलती थी तो भला देश की क्या चलती ! इसलिए वह भी इस बात पर राजी हो गया था कि उनका घर उसी जमीन पर बनेगा। उनके घर मे एक कमरा पहल-

वान के लिए भी बननेवाला था और तै यह हुआ था कि पुराना घर, जो साढे तीन रुपये माहवार किराये पर था, शम्सू मियाँ को दे दिया जायेगा क्योंकि धीरे-धीरे उनका घर न रहने लायक होता जा रहा था और उसकी मरम्मत करवाना उनके बस मे नही था।

फज्जू की बेनाम लाण्डरी शम्सू मिया की बाहरी बैठक मे थी जिसका साढे सात रुपया किराया आता था। जब से यह लाण्डरी बिल्लो ने ले ली थी, किराया दस रुपये कर दिया गया था। बिल्लो ने अपनी लाण्डरी का नाम 'जनता लाण्डरी' रखा था।

पहलवान को बिल्लो का यह काम बिल्कुल पसन्द नही था, पर दो दिन जो खाना पानी छोडा तो पहलवान झट से समझ गये कि काम मे क्या बुराई है।

पर बिल्लो पहलवान या देश के कपडे भी मुफ्त नही धोती। उनके लिए रेट भी कम नही करती थी और उधार काम तो वह करती ही नही थी।

इसी जनता लाण्डरी के छज्जे तले रात को इतवारी बाबा सो लिया करते थे।

दिसम्बर की एक ठण्डी सुबह को सूरज के दात बज रहे थे और वह कुहर का कम्बल ओढे अपनी यात्रा शुरू करने के बारे मे सोच रहा था। कटरा मीर बुलाकी मे सन्नाटा था। कुहरे के टपकने की आवाज के सिवा कोइ आवाज नही थी। पहलवान का चायखाना अभी नही खुला था। जोखन की दुकान अभी बन्द थी। जगदम्बाप्रसाद ने अभी सुबह की पूजा शुरू नही की थी। बस, जनता लाण्डरी का एक दरवाजा जरा-सा खुला हुआ था और एक अँगीठी पर अलमूनियम की पुरानी केतली रखी हुई थी और अन्दर बिल्लो ने कपडा पर इस्त्री करने का काम शुरू कर दिया था। वह धीरे धीरे गुनगुना रही थी

मोको खरच दयि जाना पिया जब जाना बिदेसवा रे
ननद मोरी री बडी री लडाका
वँ को खमम कर जाना पिया जब जाना बिदेसवा रे
मोको खरच दयि जाना पिया

वह उठी। केतली मे पानी खौलने लगा था। उसने कक्कर के एक प्याले मे केतली से चाय उँडेली और उसे फूक-फूककर पीने लगी। अभी उसका प्याला खत्म नही हुआ था कि इतवारी बाबा आ गये। उनके दात बज रहे थे। और अपने आपको गम रखने के लिए वह अपने दोनो हाथा को तेजी से मल रहे थे।

बाले, "बाप रे बाप ! का सर्दी है आज ! कुलफी जम गयी।"

बिल्लो ने कहा, "केतली मे चाय है। पी लीजिए एक पियाला।"

यह कहकर बिल्लो ने इस्त्री सँभाल ली और इतवारी बाबा ने अपने लिए चाय उँडेलकर चुसकियाँ लेना शुरू किया। जब गम गम चाय हलक से नीचे उतरी तब वह बोले, 'चाय भी क्या चीज बनायी है भगवान ने !"

बिल्लो बोली, "अरे भगवान का जानें चाय बनाना ! हम बनाया है।".

लाण्डरी में सन्नाटा हो गया। बिल्ला इस्त्री करती रही और इतवारी बाबा चाय की चुसकियाँ लेत रह। थोडी देर के बाद इस्त्री करत करते बिल्लो ने कहा, 'जब हम लोग का घर बन जायेगा तो लाण्डरी भी वही चली जायेगी। चाय पीये के वास्ते आपको चल के आये को पडेगा।"

"अरे ई घर वर का चक्कर छोड बेटा ! उ जमाना ससती का रहा जब साहजहा बादसाह ने आगरे मे ताजमहल खडा कर दिया रहा। ई जमाना और है। पहले जेतना खरच सादी बियाह मे होता रहा आज ओसे दुना तिनगुना खरच किया-कम मे हो जा है।'

"जब बोलोगे जहरे बोलोगे।"

'एमे जहर वाले की ता काई बात ना है बेटा ! जिन्दगी के तजरबे की बात बाल रह। जमाना कुरग है।"

बिल्लो जल के कोई सख्त बात कहने ही वाली थी कि बच्चो के शोर की आवाज आने लगी और उसका ध्यान उस शोर की तरफ चला गया।

"लाट साहेब निकल आये घर से !" बिल्लो ने कहा, "इ लौण्डन के पेट मे भगवान घडी बाध दिहिन हैं जयसे। ऊ घर से निकला नही कि इ्ह पता चला नहीं। कम स कम चार आने रोज का लेमचूस बँटा जाता है। साढे सात रुपया महीना बचा लें तो साल भर म '

इतवारी बाबा हँस पडा।

बिल्लो बिगड गयी, "एमे हँसे की का बात है?"

"अरे बेटा, साढे सात रुपये की आज हैसियत का ! हमरे लडकपन मे पाच रुपय म चार परानी का पूरा घर चल जाता रहा इज्जत से और मजे में। आज साढे सात रुपये में एक दिन ना चल सकता। रुपया तो बस अब नाम का रह गया है। जेब जितनी जियादा होती जा रही पयसा कम होता जा रहा। पहिले लाग हमरी तरफ आके भीक देते रहे। अब हम्में दखके सडक की पटरी बदल लेहैं। बहुत स लोगन स ता भीक माँगना छोड दिया है, केह मारे कि हम्में उनके घर का हाल मालूम है '

बच्चा का शार पास आता जा रहा था। बिल्लो ने झल्ला के इस्त्री पत्थर पर टिका दी और बाहर की तरफ देखने लगी। जाखन की दुकान नजर आ

रही थी। देश के साथ बच्चे जोखन की दुकान तक आ गये थे।

देश ने बच्चों को डाटा, "बस, हुल्लड़ बन्द। कुड़ी हो जाव लोग।"

बच्चे लेमनड्राप्स चुभलाते 'कुड़ी हो गये। और अब उसने जोखन दुकानदार की तरफ देखा जो जगदम्बाप्रसाद हेड क्लासटेबिल से कह रहे थे, "एक दिन तो हम बाबू गौरीशंकरलाल पाण्डेय से साफ साफ कह दिया "

देश ने पूछा, "का कह दिया जोखन चा?"

'एही' जोखन ने कहा, 'कि सोसलइज्म के आये मे बहुत देरी हो रही है। बिटिया रानी से बोलिए कि तनी जल्दी करें। देस मे नही बन सकती तो दसावर से मँगायें। फारेन मे आडर दें। तिस पर वह बहुत जोर से हँसे।"

"हम्म एक बण्डल लाल मुहम्मद देकर बाकी कहानी सुनाइए।" देश ने कहा।

"अल्ला कसम, हम मजाक ना कर रहे देशराज।" जोखन ने कहा।

"सोसलइज्म मे यही तो डबल खराबी है कि फारेन मे नहीं बन सकती। कपडे की तरह बदन के नाप की काटे को पड़ती है।" देश ने कहा।

"एही तो बाबू साहब भी बोले। फिर कहे लगे, जोखन मिया। तुमको तो सेण्टर मे मिनिस्टर होना चाहिए। यंग टरक लोग सिरीमती गाँधी को बहुत परीशान कर दिये हैं। तिस पर हम कहा, बाबू साहेब। ई ससुर लोग यंग टरक कहा से हो गये। एक्को जन पचास से कम ना है। और भई, टरक हैं तो टरकी जायें।"

शम्सू मिया आ गये।

"सलाम उस्ताद।" देश ने कहा।

"जीते रहो बेटा।"

"एतना सवेरे-सवेरे कहा चल दिये साहब?"

"का बतायें बेटा!" शम्सू मिया ने कहा, "कल तारे चले आये के बाद अशफाकुल्लाह साँ कोतवाल की फटफटिया आ गयी रही सरविस के वास्ते। नौ बजे माँगिन हैं।"

उन्हे आगे बढ़ता देखकर जोखन ने कहा, 'बीडी ना लीहो का शम्सू भाई?"

"ना। हम दस दिन के वास्ते बीडी छोड़ दिया है। खाँसी बहुत आ रही।" शम्सू मिया चले गये।

"ए देसराज।" जगदम्बाप्रसाद बोले, "हम सुन रहे कि शम्सू मिया महनाज का रिश्ता तोड़े की सोच रहे।"

"सुना तो हम भी है।" देश ने कहा। फिर वह जोखन की तरफ मुड़ा। "आपसे तो दूर-पास की रिस्तेदारी है। कहिए ना कि "

"ना साहब।" जोखन ने बात काटी, 'अव्वलन तो हम कोई के मामले मे

बोलते ही नही। काई बात पर दिल ढेर कुढता है तो हम खडे हो जा हैं निमाज पर। माना कि महनाज बेवा हो गयी। पर उमिर का है बिवारी की! और अल्ला मियाँ रजिस्टर पोस्ट से तो रिश्ता भेजैवाले नही हैं। जरा-सी तल-बिचल हो गयी तो महल्ले-भर की नाक कट जायगी।"

"गरीब महल्ले के मुह पर नाक अच्छी भी ना लगती जोखन चा! हम तो एक दिन आसाराम से साफ साफ पूछ लिया कि भाई मिनिस्टर लोग तो घूस खाके जी लीह, पर जनता बेचारी का खाये! ऊ लगे लेक्चर भाडे कि माक्स-वाद ई और माक्सवाद ऊ। तो हम कहा, बस रह दिजिए। लेक्चर से पेट भर सकता तो हम लेक्चर देसावर भेजते। लेक्चरे की ता पैदावार इफरात है अपने मुलुक म। बीडी दिजिए।"

जोखन ने उसे चुपचाप लाल मुहम्मद बीडी का एक बण्डल दे दिया और वह साइकिल लिये आगे बढ गया। तब जगदम्बाप्रसाद न कहा, "इ दूनो की *शादी कब होगी आखिर?"*

'मैदाने हसर म।" जोखन ने कहा, "न घर बनिहे न शादी होइह। न नौ मन तेल होइहे न राधा नचिह—ओही किस्सा है।"

किस्सा सचमुच यही हो गया होता, पर कहावत बनानेवाला का बिल्लो की जिद से परिचय नही था। वह इसीलिए बडे-बडे सपने देखती नही थी कि जिन्हें पूरा करना ही सम्भव न हो। वह अपनी आँख के नाप के सपने दखती थी और इसीलिए अब कोई उससे शादी की बात नही करता था। सब जानत थे कि घर बनवाये बिना वह शादी नही करेगी। और इस घर के सपने ने उसे ऐसा जकड रखा था कि वह किसी और बात के बारे मे सोचती भी नही थी। और इसीलिए देश का खिलण्डपन कभी-कभी उसे खल जाया करता था। वह जानती थी कि साढे सात रुपये की रकम कोई ऐसी रकम नही होती कि उसके लिए जमीन आसमान एक किया जाये। पर जो यह साढे सात रुपय महीने-के-महीने पोस्ट आफिस म जमा होते रहते तो घर कुछ पास ही आ जाता। पर वह भी जानती थी कि देश फिर देश है। वह बदल नही सकता। और उसे यह पता नही था कि यदि देश बदल जाये और पैसे को दाता से पकडने लगे तो उसे अच्छा लगेगा या नही। और वह देश के बारे मे कोई रिस्क लेना नही चाहती थी। इसीलिए दिल ही दिल म ता उसने कटरे के बच्चा की मिठाई का बजट पास कर रखा था, पर इस खर्चे पर देश को डाटन स बाज नही आया करती थी। वह जानती थी कि अगर डाट डपट बन्द हो गयी तो देश इसी तरह के और खर्चे भी निकाल लेगा।

इसीलिए देश ने जैसे ही दुकान मे कदम रखा, वह साँस लेकर अपनी महा-भारत के लिए तैयार हो गयी। पर इसके पहिले कि वह बोले, देश इतवारी बाबा से लग गया।

"इ का भाई! इतवारी बाबा आज घीर को कैयसे देखाई दे रह?"

"हम आज से, का कहते हैं चौदह दिन की ऊ वाली छुट्टी को जो सरकारी लोग ले हैं, ओही छुट्टी पर है।" इतवारी बाबा ने कहा।

"कैजुवल लीव।" देश ने कहा।

'हाँ।" बाबा ने कहा, "अपनी जगह को चार रुपये रोज पर उठा दिया है।"

"चार रुपये रोज पर!" बिल्लो ने कहा, "तो ऊ बेचारे को का मिलेगा?"

"इलाहाबाद जैयसे शहर मे भी, कोई अच्छा फकीर होय, तो तीस-चालिस रुपया रोज कमा सकता है।"

"तीस-चालिस रुपया रोज कि तीस चालिस रुपया महीना?" देश ने पूछा।

"महीना ना, रोज।" इतवारी बाबा ने कहा, "परसाल हम खुद आठ हजार पर इनकमटैक्स दिया रहा।"

बिल्लो इस बीच मे पोस्ट आफिस की पासबुक और रूमाल मे लिपटे हुए कुछ रुपये लायी और देश की तरफ बढाकर बोली, "बाबा को इनकमटकस भरे दयो। अरे जो सरकार हमसे रोज एक हजार बेयमानी करती है ओसे हम साल-भर मे एकको बेयमानी ना करें! हम त ना देंगे इनकमटक्स। एक सौ बारह रुपया है। जमा कर देना।"

"अच्छा।" देश ने रूमाल ले लिया।

"अपने हिस्से का निकालो।" बिल्लो ने हुक्म दिया।

देश सर खुजलाने लगा।

"सिर मे जूयी पड गयी है का?" बिल्लो चमकी।

"ऊ बात ना है।"

"फिर का बात है?"

"रात हम ऐसे ही चले गये उस्ताद के घर। मोली खैराती आज जायेवाले हैं उनके घर। उस्ताद को पता नही है। पर खैराती मियाँ यह पूछने जा रह कि यह कैसे उड रही है कि महनाज की सादी टूट गयी। उस्ताद के घर मे एक पैयसा न रहा तो "

"और तुम तो हो राजा हरिसचन्दर और वाडिया मोवीटोन के सगी हातिम के जुडवाँ औतार।" बिल्लो ने बात काटकर कहा।

"दस रुपया पचास पैयसा बचाया है।" देश ने जल्दी से कहा।

"दस रुपया पचास पैसा! बाप-रे-बाप! एतन म तो घर के दूना कमरन की छत पड जैयहे।" फिर बिल्लो ने माथा ठोंक लिया, "कौयसे पागल आदमी से पाला पडा है। मामा ठीके कहती हैं। जाते-जात मिलत जाना उनसे। कहते रहे कि कोई जरूरी काम है।"

देश जनता लाण्डरी स निकल आया।

बाहर जाडे की धूप थी। बच्चे खेल रहे थे। देश के अन्दर बिल्लो के प्यार की धूप थी। सपने खेल रहे थे। वह यह सोचकर मुस्कुरा दिया कि लड झगड कर आखिर बिल्लो ने इतना पैसा जमा ही कर लिया कि घरवाली जमीन खरीदी जा सके। मामा ने यही बात करने को बुलाया होगा कि जमीन खरीदने के बाद शादी हो जानी चाहिए। अरे, देश का बस चलता तो कल की जगह आज शादी कर लेता। पर होगा तो वही ना जो बिल्लो चाहेगी और बिल्लो घर बनाये बिना शादी करना नही चाहती!

घर।

यह सपना बिल्लो बचपन से देखती चली आ रही थी। देश को तो ऐसा लगता था कभी-कभी जैसे बिल्लो आँखो म यह सपना लिये हुए पैदा ही हुई थी। शायद उसे वह चार साढेचार साल की बिल्लो अब भी जैसे जबानी याद थी जिस उसकी मा अपनी बेवगी, टीन के एक ट्रक, बाँस की ढक्कनदार एक झापी और गठरिया के साथ लेकर भाई के घर आयी थी और भाई से लिपटकर रोने लगी थी। पहलवान भी रोने लगे। पहलवान को रोता देखकर वह हँस पडा। पर उसने हँसी रोककर बिल्लो से पूछा, 'इ लोग रो काहे को रहे हैं?'

बिल्लो ने कहा, "हमरे अब्बा मर गये हैं ना।"

"हमरहू अब्बा मर गये हैं।" देश ने कहा, "हमरी तो अम्माँ भी मर गयी है।' उसने बिल्लो पर रोब डाल दिया, 'मामा कहते हैं कि इह हमरे अब्बा भी है और हमरी अम्मा भी है। अम्माँ तो जनाना होती है। जैसे तोरी अम्माँ हैं। तो फिर मामा कैयसे हो सकत है हमरी अम्मा?'

यह सवाल देश को बहुत दिनो से परेशान कर रहा था और बिल्लो को अपने राज और अपनी परेशानी म शरीक करने के बाद जैसे उसका जी हल्का हो गया। और जब तक पहलवान भाई-बहन का रोना धोना खतम हो बिल्लो और देश मे दोस्ती हो गयी। मामा आँसू पोछकर पलटे तो वह देश को समझा रही थी कि बढकर सबसे पहले वह घर बनायेगी, क्योकि जो उसका अपना घर होता तो उसकी दादी उसे यू घर स निकाल तो नही सकती थी ना और यह सुनकर देश कह रहा था कि वह दोनो मिलकर घर बनायेंगे। इस पर बिल्लो

ने कहा कि उसके पास दू रुपया पन्दरह पैंयसा जमा है घर बनाये के वास्ते, देश ने कितना जमा किया है। देश के पास केवल चालीस पसे थे। तो बिल्लो ने कहा कि चलो यही सही। और यू पहली ही मुलाकात मे वह बिल्लो के सपने मे साभेदार हो गया था और उसी दिन से बिल्लो उससे एक-एक पैंसे का हिसाब ले रही थी और वह उसे एक-एक पैंसे का हिसाब देकर खुश हो रहा था और उससे दो चार पैंसो की चोरी करने मे सफल होने पर भी खुश होता चला आ रहा था। वैसे उसे यह खुशी मुश्किल ही से नसीब होती थी। और जिस दिन मामा न बिल्लो और देश की शादी का सपना देखा और बिल्लो की मा उस सपने मे शरीक हो गयी और बिल्लो को यह पता चल गया तो देश पर उसका हक जैसे मुसल्लम हो गया

दोनो जब अकेले होत तो शादी शादी खेलते। 'अम्मा' यानी शहनाज 'पण्डिन' बनती। महनाज बराती भी बनती और घराती भी और शादी होती। मिट्टी की मिठाई बाटी जाती। डालडा के डिब्बे का ढोल बजता—धीरे-धीरे कटरे के तमाम बच्चो को पता चल गया और वह देशरानी कही जाने लगी।

पर बिल्लो मे एक बात जरूर थी। वह लडाका थी। भल्ली थी। पर बडी चाहनेवाली भी थी। इसीलिए जब दोनो बडे हुए तो सारा कटरा उन दोना पर आशिक था और उन दोनो की शादी की राह देख रहा था। पर उनकी शादी के रास्ते मे घर का सपना दीवार बन गया था और बिल्लो की इस जिद का इलाज तो हकीम लुकमान के पास भी शायद ही रहा हो।

पहलवान ने भी उसे उसके हाल पर छोड दिया था, एक दिन यह कह के कि जब घर का रुपया जमा हो जाये तो तार से खबर कर देना

वह दुकान आते। पहलवानो की तस्वीरो को साफ करते, उन्ह अगर की धूनी देते। हनुमानजी की तस्वीर से माथा लगाते और फिर उस लौण्डे को माँ-बहन की गाली देना शुरू करते जो अँगीठी जलाने, गाहको को चाय देने और चाय की प्यालियाँ धोने पर नौकर था। और इतने मे कोई गाहक आ जाता और उन्ह छेडने को कह देता, "इ सब तो ठीक गुरु, पर आप अपनी दुकान पर इस मियाँ पहलवान की फोटो काहे को लगाय हैं ?" पहलवान को मालूम था कि गाहक उन्हे छेड रहा है। वह अपने हर गाहक को बचपन से जानते थे। कुछ को अपने बचपन से। कुछ का उनके बचपन से।

उस दिन भी वह अपनी तकरीर के बीच मे थे कि आशाराम आ गये।

"क्या बात है मामा ?" आशाराम ने साइकिल से उतरते हुए कहा।

आशाराम ने पूछा लेकिन उसे पूछते समय भी मालूम था कि बात क्या है।

मामा ने जवाब देना शुरू किया, हालांकि उन्हें पता था कि आशाराम को बात मालूम है। बोले "अरे, बात वही पुरानी है भैया, कि हम्मे आधा पंजाब, आधा बंगाल, सिंध बिलोचिस्तान जाये का गम नहीं है। गम इस बात का है कि सिंध बिलोचिस्तान के साथ गामा पहलवान भी चले गये पाकिस्तान में।"

"और सुना है कि बिचारे वहां बड़ी तकलीफ से मरे।" आशाराम ने कहा।

"आप तो नेता हो भैया," पहलवान ने कहा, "बाकी ई बात हमसे सुन लिजिए कि परदेस में कोई आरामों से मरे तब्बो तकलीफे की बात है। हमसे अभई ई बल के लौण्डे पूछते रहे कि हम अपनी दुकान में गामा पहलवान की तस्वीर काहे को टांगे हैं। हम कहा, बेटा! हम साइदन छ नहीं ता सात बरस के रहे होंगे तब जब गामा पहलवान हिया एलाहाबाद में दंगल लड़े आये। उस्ताद हम्मे ले जाके उनके पैरन में डाल दिया और कहा, इ बच्चे को दुआ दो पहलवान! गामा अखाड़े की एक मुट्ठी मट्टी लेके हमरे बदन में मल दिहिन और बोले, बेटा ऐ मट्टी दी लाज रखना। जब ऊ ना कहिन कि हम हिंदू लौण्डे को अखाड़े की मट्टी ना लगायेंगे तो हम कैंयसे कह कि ऊ मुसलमान रह, एह मारे हम अपनी दुकान में उनकी तस्वीर ना टांगेंगे? हिंदू मुसलमान होना और चीज है। पहलवान होना और चीज है।"

आशाराम हँस पड़ा। बोला, "हिंदुस्तान में हिंदू मुसलमान कम हो जाय और पहलवान ज्यादा हो जायें तो कैसा मजा आय! आपकी बातों का जवाब नहीं है मामा!"

मामा ने कहा, "अरे, हम का बात करेंगे भैया? बात तो किया करते रहे स्वर्गीय पिताजी। ऊ जो बाबू गौरीशंकरलाल हैं ना, नैसनल गैरजवाले? जहाँ आपका दोस्त देव काम करता है?"

"क्या हाल है देव का?" आशाराम ने बात बदल दी।

"ओही रफ्तार बेढंगी जो पहिले थी सो अब भी है।" मामा ने कहा, "हम तो ओको कुस्ती सिखा के पछता रहे। अरे हम कहत हैं भैया, मोटर मिकानिक बने में का बड़ाई है। ओही टके के तीन। आज तक कोई मोटर मिकानिक का फोटो छपा है कोई पत्र-पत्रिका में?"

"अरे शादी कर दीजिए, खुद ही ठीक हो जायगा।"

"भैंसा की बात। जब तक ताजमहल नहीं बन जायगा तब तक कटरा मीर बुलाकी की मुम्ताजमहल भला बिआह कैंयसे कर सकें हैं।"

"अरे कामरेड!" देव की आवाज आयी। फिर वह भी आ गया, "कब आये?"

"बस, चला ही आ रहा हूँ।"

"जीनत अमान या रेखा से चक्कर चलाया कि नहीं ?"

आशाराम हँस दिया।

"का हाल है बम्बई का ?"

"बम्बई म हर चीज़ मिलती है, पर मामा की चाय नही मिलती। मैं ता हुड़ुप गया इस चाय के वास्त।"

मामा ने मूछा पर ताव दिया।

"तुम्हारे क्या हाल हैं ?" आशाराम न दश से पूछा।

"अरे, हमरा का क्र सस्ती है सिरीमती गाँधी ! बाकी बद्रुल का हाल पतला है। पिछले महीने तन्खाह नही मिली बिचारे का। आपके सिवा कोई और लीडर से तो हमरी दुआ सलाम है नही। तनी पूछिए न एक दिन बिटियारानी से की इ का आफ्त जात हुए हैं।'

"ए नरेना, चाय बना आशाराम बाबू के वास्त। ऊपर से मलाई डाल देवे।" पहलवान ने हाक लगायी। फिर वह देश की तरफ मुडे और बोले, "मास्टर बद्रुल को छोडो जरा। हम आशारामजी के सामने कह रहे कि हमरी जिन्दगी मा का भरोसा ! आज मरे कल दुसरा दिन "

देश ने बात काटी "अरे नही मामा। का बात करते हैं आप ! बुढौती मे भी यमराज से तगडे पडियेगा।

"सुन रहें अपन दोस की बात !" पहलवान ने आशाराम से कहा, "अब यह तरीका निकला है गुर स बात कर का। हम सोचते रह भैया, कि इ दुकान इनके सपुर्द करके हम जिन्दगी से पिनसिन ल लेंगे। पर शम्भू भाई को का कहे हम, जैसा तबाह किया है उन्हाने हमरे पटठे को !"

आशाराम जवाब देने से बच गया क्याकि ठीक उसी वक्त नारायण ने उसके हाथ म गम गुलाबी चाय की एक प्याली रख दी, जिसकी खुशबू आशाराम के बदन मे समा गयी।

"अब तो कही बाहर जाये का प्रोगिराम ना है ना ?" देश ने पूछा।

"नही भई," आशाराम ने कहा, "हम कहाँ जायेंगे ! और राजनराएन के एलेक्शन पेटिशन का फैसला सुने बिना ता कही जाने का सवाले नही है।"

देश ने कहा, "फसला हम सुना देते है। अरे मुरारजी जैसे तिसमार खाव को दूध की मक्खी की तरह सरकार से निकाल के यू फेंक दिया जिस औरत ने, उसके खिलाफ फसला देवे की हिम्मत है कोई जज म ! '

पहलवान ने इस बातचीत म शामिल होन का फैसला किया, क्योकि राजनीति

का उन्हें बड़ा शौक था। बोले, "अरे, जज ससुर का करेंगे हिम्मत! हिम्मत तो किया करते थे स्वर्गीय पिताजी। एक दफे का जिक्र है "

"हम्मे देर हो जायेगी मामा।" देश ने कहा।

"अभी बैठो। साढ़े आठ ही बजे देर होने लगी?" आशाराम ने कहा।

"जो बात मामा सुनायेवाले हैं ओम पक्का तीन घण्टा लगता है। हम कै मरतबा सुन चुके हैं।"

मामा ने उसे घूरना शुरू किया।

"दरोगा असफाकुल्ला खा की फटफटिया ठीक करे को है। उस्ताद को अब कुछ दिखायी तो देता नहीं। जो कुछ तल विचल हो गयी तो दरोगाजी उन्हें पन्ड के बन्द कर दिहें सीसा मे।"

देश साइकिल पर सवार होकर चल पड़ा।

देश इस सड़क को 'पण्डित शिवशंकर पाण्डेय मार्ग' होने के बहुत पहले से जानता था। तब तो इस पर ठीक से रोशनी नहीं होती थी। पर नाम पड़ जाने के बाद से रात को जगर जगर करने लगी थी। और देश ने सोचा था कि पाण्डेयजी ने खजाना लुटवा के लोहियाजी को पैसा दिया रहा हो या न दिया रहा हो पर सड़क पर रोशनी तो जम के करवा दी उन्होंने। पर आज उसके पास पाण्डेयजी के बारे म सोचने का समय नहीं था। वह सोच रहा था कि बिल्लो को चकमा देके उस्ताद के नये चश्मे-भर पैसे का बन्दोबस्त तो करना ही पड़ेगा किसी दिन, नहीं तो बाबू गौरीशंकर को कोइ अनाड़ी मिकेनिक समझ के उस्ताद किसी दिन मा-बहन की शुरू हो जायेंगे और उसी दिन छुट्टी हो जायगी उनकी। पाण्डेयजी वह हड़ताल भूले थोड़ी होंगे! वह तो जो मामा ने उनके पास जाकर साफ साफ न कह दिया होता कि शम्मू मिया एक आदमी नहीं एक महल्ला हैं उन्हें अलग किया तो कटरा मीर बुलाकी मे एक वोट नहीं मिलेगा, तो शम्मू मिया कबके निकाले जा चुके होते।

कटरा मीर बुलाकी म दो हजार वोटर थे और बाबूराम आजाद के असर मे थे, और हर चुनाव मे आखें बन्द करके कांग्रेस का वोट दे आया करत थे। जब गौरीशंकर का टिकट मिला तो बाबूराम खुश नहीं हुए क्योंकि वह जानते थे कि गौरीशंकर भी अपने बाप ही की तरह बेईमान आदमी हैं। पर पार्टी ने उन्हें टिकट दिया था इसलिए बाबूराम ने उन्हीं का साथ दिया, हालांकि उनके खिलाफ सोशलिस्टो ने जो आदमी खड़ा किया था वह बड़ा ईमानदार और जनता की सेवा करनेवाला आदमी था। उसका बाप बाबूरामजी के साथ कई बार जेल म रह चुका था। पर राजनीति दोस्ती और रिश्तेदारी नहीं मानती। जिसकी

राजनीति ग़लत हो वह न दोस्त न रिश्तेदार। बाबूराम तो वह कट्टर आदमी थे कि नेशनल गरेज की स्ट्राइकवाले मुकदमे मे आशाराम के खिलाफ गवाही दे आये थे कि उन्होंने खुद अपने कान से सुना था कि आशाराम अपने कुछ साथियो से कह रहा था कि आग लगा देनी चाहिए उस गैरेज मे और उन्ही की इस गवाही की बुनियाद पर आशाराम की सज़ा हो गयी थी।

मतलब यह कि बाबूरामजी की उस इलाके म बडी इज्जत थी। लगभग पूजे जाते थे। और शम्सू मियाँ मे बचपन की दोस्ती थी। दाँत-काटी दोस्ती। ज़बरदस्त प्यार। पर जब पहलवान ने उनसे कहा कि वह गौरीशकरलाल से शम्सू मियाँ की सिफारिश कर दें तो उन्होंने साफ इनकार कर दिया था कि वह सिफारिश नही करेंगे। और तब पहलवान ने कहा था कि वह अपनी सिफारिश तह करके काग्रेस की गाँड मे रख दें। वह खुद जा सकते है बाबू गौरीशकर के पास

उस दबाव मे आकर शम्सू मियाँ की नौकरी बची थी। और यह अशफाकुल्लाह खाँ तो 'लम्बर एक का हरामी' है। हो सकता है कि गौरीशकर के इशारे पर उसने अपनी फटफटिया भेजी हो और इस बहाने से उस्ताद को निकालना चाहता हो

यह खयाल आते ही वह जल्दी-जल्दी पैडिल मारने लगा।

नेशनल गैरेज नखासकुहना मे था। और पुराने शहर मे इतना बडा कोई दूसरा गैरेज नही था। और चूंकि इस गैरेज के मालिक एक काग्रेसी एम० पी० थे, इसलिए दूर-दूर की कारें मरम्मत के लिए यहा आती थी। बाबू साहब ने धीरे-धीरे यू० पी० के लगभग हर शहर मे गैरेज की एक शाख खोल दी थी। हर शाख मे पेटरोल पम्प भी था। इन गैरेजो मे पुरानी कारो को खरीदने और बेचने का काम भी होता था। पाँच बरस तक बाबू साहब पुरानी कारें खरीदते रहते थे औने पौने। चुनाव के दिनो मे वही गाडिया ठीक ठाक करके काग्रेसी कण्डिडेटो और कभी कभार अपोजीशनवालो के हाथ भी बेच दी जाया करती थी। और इसीलिए बाबू साहब आनेवाले चुनाव का बडी बेचैनी से इन्तज़ार कर रहे थे। उनके पास लगभग सौ पुरानी कारें जमा हो गयी थी जिनमें उनका लगभग सवा लाख रुपया फँसा हुआ था। तो एक फिक्र उन्हे आनेवाले चुनाव की थी और दूसरी फिक्र उन्हे इसकी थी कि 'पण्डित शिवशकर पाण्डेय मार्ग' बहुत पतला है और उसके दोना तरफ बहुत फटीचर लोग रहते हैं और उनकी वजह से उन्हे बडे आदमियो को अपने घर बुलाते शर्म आती ह। वह यह चाहते थे कि सडक के दोनो तरफ की बस्ती पचास-पचास फीट पीछे सरका

दी जाये और सडक पर दोनो तरफ अच्छा सा बाजार बन जाये या छोटे छोटे बँगले बन जायें जिनके सामने छोटे छोटे बागीचे हो कि कोई वी० आई० पी० गुजरे तो खुशबू से उसका दिमाग बस जाये। कारपोरेशन के चीफ ऐडमिनिस्ट्रेटर को एक रात खाने पर बुलाकर वह अपना प्लान समझा भी चुके थे और उसने कहा था कि यह करने की हिम्मत उसमे नही है, ऊपर से आर्डर मँगवा दीजिए तो बुलडोजर चलवा दूगा। पर वह यह बात अपने मुह से निकालना नही चाहते थे क्योकि उन्हें उसी क्षेत्र से चुनाव लडना था। चुनाव ही के डर से तो उन्होने शम्मू मियाँ को भी अलग नही किया था, हालाँकि उन्होंने शम्मू मियाँ को यह नही बताया था। उनसे तो उन्होने यह कहा था कि अगर वह उनके पिता पण्डित शिवशकर के जमाने के आदमी न होते तो आशाराम के चक्कर म पडकर अपनी नौकरी से कबका हाथ धो चुके होते। शम्मू मिया खुद भी यह बात जानते थे और इसीलिए वह बाबू साहब के एहसानमन्द थे कि यह उनकी मेहरबानी थी कि शम्मू मिया आधा पेट खा रहे थे और जी रहे थे। आशाराम ने तो कोई कसर छोडी नही थी।

"अरे बेटा सियासत पेट भरा का काम है।" शम्मू मियाँ ने अशफाकुल्लाह खाँ दरोगा कोतवाली की फटफटिया को स्टाट करते हुए कहा।

"दिल दुखाये की बात मत किया किजिए उस्ताद।" देश ने ग्रीस भरे सूत के लच्छे से हाथ साफ करते हुए कहा, "राजनीति पेट भरो का काम जरुर होगी मुदा भुक्खडो की तो जिन्दगी है। अरे लडेंगे नही तो आधा पेट खाना भी नही मिलेगा।'

शम्मू मियाँ उदास हो गये। नौजवानो म यही तो खराबी है कि बात समझने की कोशिश नही करते। उन्होने देश की तरफ देखा—पौने पाँच हाथ से कम तो लम्बा नही होगा। हाथ-पाव भी ओही हिसाब से है। इहाँ से निकाल भी दिया गया तो मेहनत मजूरी कर लेगा। और कुछ दिन कुछ न भी किया तो क्या होगा। बिल्लो की लाण्डरी चल रही है। पहलवान की दुकान चल रही है। सिर पर कोई जिम्मेवारी नही। और इहा महनाज, सहनाज, बीबी, महनाज की दूनो बटिया और खुद अपनी बुढौती। का करेंगे जो निकाल दिय गये !

'जेहल बहुत बुरी चीज है बटा !" शम्मू मियाँ ने कहा।

का बुरी चीज है ?' एक मिकनिक ने कहा, 'इहा दिन भर काम करो और पेट न भर। उहाँ दिन भर काम करो तो पेट-भर खाना तो जरूरे मिलता है। हम तो सोच रहे कि कउनो तरकीब करके जेले चले जायें।

उस लडके का नाम रामअवतार था। बदन रहा होगा चौबीस पच्चीस का। आत्मा थी सौ दो सौ बरस की। बूढी। लपूस। न सोचने का हौसला न लडने की सकत। न आँखों मे कोई सपना। बस, एक मुसतकिल भूख भभोडती हुई। जरूरतें टेंटवे से पकडे हुए बाप दमे का मरीज और बेकार। माँ की आँखो म ममता की जगह मोतिया। बीवी का बच्चे पैदा करने की लत। बडा भाई कलकत्ते से लौटा हुआ। चटकल मे कटे हुए हाथ लेकर। बेकार। उसके तीन बच्चे। बदजबान बीवी।—और एक अकेला रामअवतार कमानेवाला। बोला, "हम तो कल के जाते आज लाल भण्डा फहराते जेल चले जायें उस्ताद! पर फिर घरवालन का का होगा? सिरीमती गाँधी गरीबी हटाव का नारा दिया था। गरीबी तो ना हट रही। गरीब हटे जा रह। थाडे दिन मे गरीब लोग मर-बिला जैयह् तो गरीबी खुद-ब-खुद खतम हो जैयहे।"

वहाँ सन्नाटा हो गया। उसकी बात का किसी के पास जवाब नही था।

"असफाकुल्ला खाँ की गाडी मे का निकला उस्ताद?" देश ने बात बदलने को कहा।

"ठेंगा निकला।" शम्सू मियाँ ने कहा, "अरे बेटा, बाप का गैरिज है। भेज दिया सफाई के वास्ते। अब लोग शान के मारे मोटर रखते हैं। सौक ना है काई को। पहिले के लोग औलाद की तरह रखते रहे गाडी। ऊ जो जीरो रोड वाले बेनी बाबू बारिस्टर है, का मजाल कि आज भी उनकी गाडी को हमरे सेवाय कोई और हाथ लगा दे! उनका बेटा खासुलखास फोड कम्पनी से माटर मिकानिकी की डिग्री लेके आया। पर बाबू साहेब साफ बाल दिये कि बेटा, मेरी गाडी को तो शम्सूये मियाँ हाथ लगायेंगे।"

वातावरण का तनाव खत्म हो गया।

मनोहर, एक और जूनियर मिकैनिक बोला, "और वो जो चीफ जस्टिस गिरेस साब की बेटी आसिक हो गयी रही आप पर?"

शम्सू मिया झेंपकर हँस दिये। बोले, "अरे ना बेटा। पैदाइसी हँसमुख रही। बस, लोग बात का बतगड बना दिया। तारी चच्ची आज तक ताना दे हैं।"

"कोई-न-कोई बात ता जरूर रही होगी केह मारे कि लाग राई का परबत बनाये हैं। राई न हा ता परबत कैसा?" देश ने कहा।

"अच्छा ढेर बत्तमीजी जिन करो देश, नही तो देंगे तोउन लप्पड कि मुह फिर जयहे।" शम्सू मियाँ ने कहा।

सारे मिकैनिक, जो उनकी औलाद की तरह थे, जार-जोर से हँसन लगे

और लच की घण्टी वज गयी और कारो, ट्रको और बसो के नीचे से मिकैनिक निकलने लगे जैसे पहिले पानी के बाद जमीन से कीडे मकोडे निकलने लगत हैं। ग्रीस भरे सूत के लच्छा से हाथ मुह पाछते सब अपने अपने डिब्बो की तरफ गये। हर डिब्बे मे उस परिवार की भूख आयी थी। देश ने अपना डिब्बा निकाला।

"आपका खाना कहाँ है ?" देश न पूछा।

'हमरा रोजा है।" शम्सू मियाँ ने कहा।

"रोजा ?"

"अब हम हर महीन की पच्चीस से तीस तक रोजा रक्खे लगे हैं।'

"यह लीजिए।' देश ने कहा, "आजे रोजा रखना था। हम तो आपके वास्ते आलू का भरता, वसन की रोटी और मिरचे का अचार "

शम्सू मियाँ के मुह मे पानी आ गया। बाले, "अरे तो कोई वाजिब रोजा थोडे है।"

दोना ने खाना शुरु कर दिया।

दश को इन रोजा का हाल मालूम था, इसलिए वह दो आदमिया का खाना लाया था। पर वह अपन उस्ताद से यह कह तो सकता नही था कि उसे मालूम था कि आज उनके घर फाका है, इसलिए वह अपने साथ उनके लिए भी खाना लाया है।

"तुमसे का पर्दा वेटा !" खाते-खात शम्सू मिया ने कहा, "आम्दनी ओही दू सौ अट्ठाइस और बजार का हाल ई कि हरा धनिया जाफरान के भाव। पहिले के जमान मे महीने की तीस और पहली में फरक हाता रहा। अब जैसी तीस, वैसिय पहली। कलण्डर तो खाली दीवार सजाये के काम आता है।"

देश न कुछ नही कहा। वह कहता भी क्या। वस, चुपचाप खाता रहा। शम्सू मियाँ ही फिर बोले, "पहले आदमी पट भर खाये और इज्जत से जीये के वास्ते मेहनत मजूरी करता रहा। अब काह को करता है! पेट भरता ना और मुकवे पेट इज्जतो कडुई लगती है।"

"महनाज क रिश्त का का भया ?" देश ने बात बदलने की कोशिश की।

"वही जो हमेशा हाता है। शम्सू मियाँ ने कहा, ' लडकी पसन्द आयी। लडकी का बाप पसन्द ना आया। उन सभन का कहना भी ठीक है। कुआरी लड- कियाँ रद्दी के भाव मिल रही तो वेवा लडकी और ऊ भी दू बच्चे की माँ से काई काहे को मुफुत म बिआह करे? और भैया, हम हाथघडी रेडियो कहाँ स दें जहज मे ?"

फिर सन्नाटा हो गया।

"लडका करता क्या है ?" देश न पूछा।

"नौकरी साजे का काम कर रहा है आजकल। हड कानिसटिबली से रिटायर भया है दू बरस पहले।'

"आप ता सम्धी की बात करे लगे। हम लडके को पूछते रह।"

"हम लडक्व की बात कर रहें बेटा।

सन्नाटा हो गया। देश किसी और तरफ देखन लगा कि वह अपने उस्ताद का शर्मिन्दा नही दखना चाहता था।

"पर वह जो एक ऊ साहब से बात चलती रही जो दुआह तो जरूर हैं पर उमिर का एतना फरक नही है ?'

"ऊ हाथघडी और रेडियो के साथ एक ठो साइकिला मागते है।'

"ऐयसा करते हैं।' देश न कहा, "घडी हम दे देंगे अपनी बहिन को। साइकिल और रेडियो का बन्दोबस्त जरूर करना पडेगा।"

उस्ताद शम्सू रो पडे। बाले, 'एक तो ऐनक का नम्बर गलत। फिर आख म आसू होयँ ता कुछ देखाइए ना देता।'

"पर बिल्लो को खबर न हो। एक एक पैसे को दात से पकडती है।"

शम्सू आसू पाछकर चश्मा साफ करन लगे। और अब्दुल हक को याद करन लगे जो पाकिस्तान मे ऐश कर रहा है।

पाकिस्तान मे यही तो एक खास बात है। जिसकी खबर आती है, यही आती है कि वह वहा ऐश कर रहा है, कि दो हजार स कम किसी की तनख्वाह नही, कि वहाँ की नदियो मे पानी की जगह पैसा बहता है—अब्दुल हक के बारे म भी उन्होंने यही सुना था। जबकि हकीकत यह थी कि अब्दुल उस ममलिकते इसलामिया यानि पाकिस्तान मे उसी तरह भूखा था जिस तरह शम्सू मिया भूखे थे। पाकिस्तान अब भी उसका वतन नही हुआ था। वह आज भी वहा शरणार्थी था। लालूखेत की एक झुग्गी मे रह रहा था और उर्दू बोल रहा था और आम की फस्ल मे आम के लिए तरस रहा था। और सावन की झडी के लिए उसकी आत्मा प्यासी थी। और वह सगम पर डुबकी लगाने के लिए हुडुक रहा था। और अपनी रामलीला और हिन्दू मुस्लिम दगो को याद करके रो रहा था और उसके बच्चे उसका दद नही समझ पा रहे थे, क्याकि वह पाकिस्तान म पैदा हुए थे और वही पले-बढे थे। उन्ह पता ही नही था कि सावन के बादल कसे होत हैं, और कोयल कैसे बालती है, और आमो पर किस रग का मौर आता है, और रामलीला क्या होती है और हिन्दू मुसलमान दग कैसे होते है क्याकि

पाकिस्तान मे तो केवल शीया सुन्नी दगे होते हैं।—यह एक तरह से अच्छा ही था कि शम्सू मिया को यह वात नही मालूम थी और वह यह साच-सोच कर खुश थे कि अब्दुल हक वहाँ खुश है।—पर जो वह आज यहाँ होता तो क्या वह महनाज़ के दहेज की घडी देश से खरीदवाते ?—इस सवाल पर वह रुक गये। उन्होने देश की तरफ देखा जो चुपचाप खाने मे लगा हुआ था—शम्सू मिया ने अपने आपमे कहा, 'काहे न खरिदवाते भाई! सागिद भी बेटे से कम नही होता।' और यह जवाब देकर उन्हे लगा कि वह बूढे तो जरूर हो गये है पर अकेले नही हैं।

उस दिन वह घर पहुचे तो उसी नशे म थे।

"का बात है मामू ?' बिल्लो ने पूछा। वह शम्सू मियाँ को कटरे के रिश्ते से मामू ही कहा करती थी।

"आज हम महनाज की सादी तै कर दिया है। लडके की उमिर सत्ताइस अट्ठाइस से जियादा नही है। एक स्कूल म पढाता है अल्ला के फजल से।"

सकीना ने चौककर देखा।

"साइकिल, घडी और रेडियो कहा से दीहो ?" सकीना ने पूछा, "तोर मे एही खराबी है। बेला सोचे-समझे जबान दे आये होगे। अब का हम्मे बेच के जहेज बनाओगे ? वेह मारे कि घर मे बेचे लाएक कोई और चीज तो दखाई ना दे रही।"

"आप परेसान काहे को होती हैं ममानी ? भगवान साइकिल और घडी सबका बन्दोबस्त कर देंगे, कही-न-कही से।" बिल्लो ने कहा।

महनाज रोन लगी। पर किसी ने उसकी तरफ न देखा। सकीना बाली, "भगवान की साइकिल की फक्टरी होती तब थाडे परेसानी होती धीया! पर भगवान बिचारू का करें ? अब बचे अल्ला मिया। ऊ न घडी बाधें, न रेडियो सुनें, न साइकिल पर चढें। त उन्हे भला काहे को याद आय कि मह नाज माटीमिली का बिआह एही तीन चीजन के मारे टलता जा रहा।"

बिल्लो ने कहा, "आप तो बेला वजहे कोसे लगती हैं। ऐसा करते हैं, पर मिकैनिक साहब को पता न चले, नही तो चिल-पो मचाये लगेंगे कि हाउसफण्ड म काहे को हाथ डाला। साइकिल का बन्दोबस्त हम कर देंगे जोड-बटोरके।' यह कहते-कहते वह खडी हो गयी, 'अच्छा, हम चल रहें। मास्टर बद्रुल आते होगे लाण्डरी का हिसाब लिखे।'

बद्रुलहसन का नाम सुनकर बावरचीखाने मे चुपचाप बैठी हुई महनाज मुस्कुरा दी। और बिल्लो चल पडी।

लाण्डरी मे आते ही उसने देखा कि जगदम्वाप्रसाद एक दीवार की तरफ मुह किये बैठे पेशाव कर रहे हैं।

"हम देख रह कि आप इ महल्ले की दु-चार दिवार गिराये विना ना मानियेगा।" बिल्लो ने कहा।

जगदम्वाप्रसाद घवराकर खडे हो गये। झेंपी हुई हँसी के साथ बोले, "का बतायें बिल्लो। इधिर कुछ जियास्ती हो गयी है पिसाव मे। डाक्टर साहेब बोले ह कि नमक और चीनी कम कर दो।"

"चीनी-नमक जरूर कम करिए पर घूस खाना एकदम्मे छोड दिजिए। ठीक हो जाइएगा।" बिल्लो ने कहा।

"हम्मे घूस खाये का सौक ना है। पर करें का! साढे सत्तानव रुपये तनख्वाह मे का खायें, का पीयें, का ले परदेस जायें। हमारी तनख्वाह ले लिया कर पहली की पहली और चला दिया कर हमरा घर। भगवान का पाकेट एडीसन मत बन। समभी! वरदी पर इसतिरी किया कि नही?'

"कर दिया।" बिल्लो ने कहा।

जगदम्वाप्रसाद भी दुकान मे आ गये। बिल्लो ने इस्त्री की हुई वर्दी उनकी तरफ बढाते हुए कहा, "एक रुपया।"

"का?' जगदम्वाप्रसाद हैरान रह गये, "अभइ पिछले हफ्ते तो आठ आने रेट रहा।"

"और पिछले हफ्ते दाल-चावल का का रेट रहा?' बिल्लो ने पूछा।

"हम तो ना देंगे एक रुपया।'

"आपकी मरजी।"

यह कहकर बिल्लो ने वर्दी को गुजुल मुजुल दिया।

"अरे-अरे अरे। इ का कर रही है?"

"अपनी इसतिरी वापिस लिया है।" बिल्लो ने कहा, "कही और जाके इसतिरी करवा लिजिए। जनता लाण्डरी मे आज सवेरे से आठ आना फी कपडा रेट लग गया है इसतिरी का। वनयाइन का चार आना।"

"तो तुम बताया क्यो नही था?'

"हम रेडियो सिलान ना हैं कि चिल्लाते रह दिन भर," बिल्लो चमकी। "हिन्दी-उर्दू मे लिखवाके टाग दिया है रेट।"

"ठीक है देख लेंगे।"

"अरे, जाव-जाव। बहुत देखा है देखेवाले। अँखिया फोड ना देंगे दखेवालन की!"

आशाराम आ गया।

"यह क्या भई ! हवलदार साहेब को भी डाट पिला दी।"

"हवलदारी दिखायें जावें अपनी हवलदारिन को। बिल्लो नही आनवाली रोज म। हम का डरते हैं कि फोकट मे इसतिरी कर दें।" फिर उसे यकायक पुराना हिसाब याद आ गया और वह लपकी जगदम्बाप्रसाद पर, "निकालिए पाच रुपया चालिस पैयसा जो बाकी है।'

"देख बिल्लो, यह जबानदराजी बहुत महँगी पडेगी।"

सस्ती कौन चीज रह गयी है कि जवानदराजी की फिक्रि करें ! निकालिए पाच रुपया चालिस पैयसा।"

आप देख रह आशा बाबू, एकी जियादती। अरे, हम का घर से रोकडा लेके निकल है कि निकाल दें।" यह कहते हुए वह दुकान से निकल जाना चाहते थे। पर बिल्लो रास्ता रोककर खडी हो गयी।

"हम कह रह, हट जा रस्ते स।"

'हटाके देखो हवलदार साहब !" देश की आवाज़ आयी।

जगदम्बाप्रसाद सन्नाटे मे आ गये। देश की आखो म खून उतरा हुआ था। आशाराम बीच मे आ गया।

जाने दो यार।'

"जाने कयसे दें भाई ?"

"हा, तो क्या कर लोगे ?" जगदम्बाप्रसाद ने कहा।

"का कर लेंगे ?" दश बोला, "यह जो तोरी सात हाथ की जवान है न हवलदार, ओटी को खीचके, फाँसी लटका देग तुमको उसी मे।'

वह हवलदार पर लपका। आशाराम ने उस पकड लिया।

'पागल हो गये हो !"

बिल्लो उसी तरह रास्ता रोके खडी थी। बोली, "हम जाये न देंग आज अपना पाच रुपया चालिस पैयसा लिये बिना।

दुकान के बाहर भीड लग गयी।

"अच्छा, आज मेरे कहन से इन्ह एक दिन की मुहलत दे दो बिल्लो !'

बिल्लो जमीन पर थूककर दरवाजे स हट गयी और जगदम्बाप्रसाद दिल-ही दिल मे बिल्लो और देश की माँ-बहन एक करत हुए चले गय और बिल्लो एकदम से खिलखिलाकर हँस पडी। और दुकान के अन्दर का तनाव खतम हो गया और दुकान के बाहर की भीड छँट गयी।

यह क्या हरकत थी ? आशाराम ने कहा।

'बात का रही ! हमरा पयसा बाकी हा तो न मागें ?" बिल्लो ने कहा।

"न," इतवारी बाबा आ गया, "उधार पैंयसा न मागो।"

"काहे ना मागें ?" यह सवाल देश न किया।

"मागने से फायदा का ! भीक मागे मे सबसे बडा फायदा एही है कि कोई न दे तो बुरा नही लगता। अपना पैंयसा मागे मे ई खराबी है कि कोई न दे तो खून खौलन लगता है।'

'यार बाबा," देश झल्ला गया, 'तुम अपना फलसफा साला अपने पास रखा करो। जब बालोगे जहर बोलोगे। अरे मिटठा बोले म का पैंयसा खरच होता है?"

इतवारी बाबा हँस पडा।

"बात ई है आसा बाबू, कि नौजवान लोग गुस्स म रह तो हम्मे अच्छे लगे हैं। हम तो एयसे धन्धे म है कि गुस्सा करे नही सकते। ई दूना को परट्टिस कराते रहत है।' इतवारी बाबा ने आखें भरके आशाराम की तरफ देखा, "देस तो एतना गरम हो रह कि केतली धर दो तो चाय का पानी तैयार हो जाय मिलट-भर मे "

अब आशाराम हँस पडा और देश को भी अपनी भन्नाहट पर हँसी आ गयी।

'मैं इस वक्त यह कहन आया था कि लाण्ड्री वकर्ज की एक यूनियन बनने जा रही है। सोचता हू कि बिल्लो को अध्यक्ष बना दिया जाय।'

"हम बरकर नही हैं।" बिल्लो ने कहा, हम जनता लाण्डरी की मालिक हैं।"

"फिर भी जो तुम लोगा की यूनियन होती तो हवलदार इस वक्त इतनी अकड नही दिखात।"

"अरे जाये दिजिए।' बिल्लो न कहा, 'आप न पड गये रहे होते बीच मे तो हवलदार का सारा कलफ निकाल देत हम।"

"तुम आसा बाबू के साथ यूनियन बनाव अराम से। हम इ कह आ गये रहे कि दीवार का टिकट ना मिला। और एक ठो गाडी भी आ गयी है सरबिस के वास्ते। फिर कोई दिन चलेंगे।" देश यह कहता हुआ चला गया। वह इस वक्त बिल्लो से बहस करना नही चाहता था क्योकि पूरा झूठ अभी तैयार नही हुआ था। उससे तो वह एक पक्की रिहरसल करने के बाद ही झूठ बोला करता था क्योकि वह थी बडी काइयां। झट से ताड लेती थी और इस बार देश अपने झूठ को पकडवाना नही चाहता था। वह महनाज के होनेवाले मियाँ के लिए घडी देखने जा रहा था ताकि यह अन्दाजा लगा सके कि कितना बडा और किस तरह

का झूठ बोलना पडेगा।

वह जसे ही घडिया की दुकान म घुसा, अल्लावाले[1] घडीसाज़ ने उसकी तरफ मुस्कराकर दखा।

'फरमाइए।' अल्लावाले ने कहा।

फरमाना का है साहब। जरा एक ठो घडी दखाइए।" देश न कहा।

'जरा क्यो साहब ! पूरी घडी दखिए। सुइटजरलण्ड स कल ही पारसल आया है। वह मुस्कुराय, "कैसी दिखाऊँ।'

"एक सादी मे दूल्हा को देना है।"

अल्लावाले न अलमारी स घडिया निकाल निकालकर उसके सामन सजाना शुरू किया। फिर एक घडी देश के सामने नचाकर बोला, 'यह देखिए। आटा-मेटिक ह। दिन-तारीख भी बताती है। ओमगा कम्पनी की है। बाप ले तो वसीयत करनी पडे कि उसके मरन के बाद यह घडी किस बेटे की औलाद को मिले। दाम भी कुछ ज्यादा नही। पन्दरह सौ चौरानब रुपये पछत्तर पैस।"

'बहुत महँगी है।'

"देखन का किराया थोडी माग रहा हू जनाब। अल्लावाले न कहा, 'यह देखिए। यह भी आटोमेटिक है। रामर कम्पनी की। दाम साढे सात सौ।"

कोई और दखलाइए।

'यह लीजिए।" अल्लावाल न तीसरी घडी उठायी, 'आटोमटिक यह भी है। दाम सिफ साढ तीन सौ। सौ सवा सौ की घडिया भी है मगर शादी-ब्याह का म्आमला है '

नहीं नहीं।' देश न बात काटी, 'चीज अच्छी हा। इ साढे तीन सौ वाली का ठीक ठीक दाम बताइए।"

'दाम तो ठीक ही बताया था।' अल्लावाल घडीसाज़ ने कहा, अच्छा चलिए आपको पसन्द है ता दस रुपया कम कर दीजिए। समझूगा, एक घडी बे मुनाफा बेच दी। स्टील का पटटा भी लगा दू ? चमडे के पटट का तो अब फशन नहा रह गया है। मतीस रुपय का हागा।'

"कुल कितना हुआ ?'

तीन सौ सतहत्तर। चलिए सात और कम कर दीजिए। तीन सौ सत्तर। उन्होंने कशमिमा अपनी तरफ सरकाया पेंसिल सभाली, फिर केशमिमो

---

१ उनके घर पर सिमण्ट स एक बहुत बडा अल्लाह लिखा था इमीलिए वह अल्लावाले कहे जाते थे।

को दूर सरका दिया, "नहीं, कैशमेमो नहीं बनाते । बिल्लो वजह सेल्स टैक्स लग जायेगा आप पर ।"

"परसों ले जाऊंगा ।' देश ने कहा ।

'अरे, तो परसों ही देख भी लेता ।" अल्लावाले ने जलकर कहा और उसके जाने का इन्तजार किये बिना वह घड़ियों को शो-केस में रखने लगे ।

तीन सौ सत्तर रुपये । यह समस्या थी देश की ।

दो सौ चालीस रुपये । यह समस्या थी बिल्लो की ।

बिल्लो लाण्ड्री में अकेली बैठी यही सोच रही थी कि देश से क्या झूठ बोले कि देश मुंह लटकाये आ गया ।

'दुकान बन्द नहीं किया अब तक ?" देश ने पूछा ।

"क्यों, बन्द काहे नहीं किया । हम तो घर जाके सो भी गये ।" वह देश को घूरने लगी 'सुझाई ना दे रहा कि दुकान खुल्ली है ?"

"आज हम्मे कुछ सुझाई ना दे रहा ।" देश ने कहा, "जे गाडी की सरविसिंग करते रहे ओका एक ठो पुरजा टूट गया । तीन सौ सत्तर की चोट पडी ।"

बिल्लो हत्थे से उखड गयी, 'तीन सौ सत्तर से कम का पुरजा नहीं तोड सकत रह तुम ! लाट साहेबी में फरक न आये । पुरजा भी तोडोगे तो तीन सौ सत्तर का ।"

"हम कोई जान के तोडा है ।'

"आज का दिने बुरा है ।' बिल्लो ने कहा, "इसतिरी करे म दू सौ चालिस की साडी जल गयी । दू सौ चालिस और तीन सौ सत्तर केतना भया ?"

छ सौ दस ।" देश ने कहा "घबराती काहे का है । छ सौ दस तो हम कमाके यू जमा कर देंगे, यू ।'

"चल जमिनिया देख आयें ।" बिल्लो ने कहा ।

'जमीन कहां भागी जा रही है ? जमीन वहीं है और खैरियत म है । देखना का है ।' देश ने हँसकर कहा ' जमीन को का कोई चुरा ले जायेगा ?"

"हमरी जरा-सी बात नहीं मान सकता ।"

अच्छा बाबा चल ।" देश मान गया ।

बिल्लो जल्दी-जल्दी दुकान बन्द करने लगी और देश ने बीडी सुलगा ली ।

वह जमीन ।

वह जमीन बहुत छोटी सी थी । उस पर कोई ताजमहल नहीं बन सकता था । उस पर कोई आगा खां पैलेस या बिरला भवन भी नहीं बन सकता था । उस पर कोई सुपर मार्केट या शॉपिंग सेंटर भी नहीं बन सकता था । उस पर

तो बस एक छोटा सा घर बन सकता था। दो कोठरियां और एक छोटे से आँगनवाला घर।

वह ज़मीन पण्डित शिवशंकर पाण्डेय मार्ग पर थी। उस पर सामने की तरफ से सड़क का उजाला था और कटरे की तरफ से कटरे का अँधेरा। वहाँ कभी कोई घर ज़रूर रहा होगा, क्योंकि लहौरी ईंटों का एक टूटा हुआ चबूतरा अब भी मौजूद था, जिस पर नागफनी उग आयी थी और बरसात में जिस पर कुकर-मुत्ते भी उग आया करते थे। एक कोने में दो कदमचे भी थे। एक बड़ा और एक बचकाने साइज़ का। इसका मतलब यह हुआ कि कभी जो लोग उस घर में रहा करते थे वह बाल बच्चेवाले थे। बाकी ज़मीन पर मलबा बिखरा हुआ था जिसे न जाने कितनी बरसातों की उगायी हुई घास पात ने बिल्कुल ढक रखा था। एक कोने में जंगली आम का एक बड़ा पेड़ भी था, जिसकी कैरियां कटरेवालों के खाने को मज़ेदार बनाती थीं।

देश ने कहा, "जयसा फिलिम में होता है। बीच कमरे से उप्पर लकड़ी की सीढ़ी जाये। बैंसिय सीढ़ी लगवायेंगे। हम जब काम पर से लौटें तो देखें कि तू सीढ़ी पर खड़ी हमरा इन्तिजार कर रही हो।'

'हम्मे कोई काम ना है का कि इंतिजार करेंगे!" बिल्लो ने कहा।

'तुम तो साला सपना भी नहीं देखने नहीं देतीं।"

"अरे तो कोई वायदे का सपना देखो न। एयसा सपना देखे से का फायदा कि जो पूरा ही न हो।" बिल्लो ने कहा।

"ठीक है। तो चल ऐयसा सपना देखें जो हमरे-तोरे बस में है। मुन्नी के बिआह का सपना देखा जाय।'

"हम हजार बेर कह चुके हैं कि मुन्नी टुन्नी ना होगी। मुन्ना होगा।"

"तो हमसे एक हजार एक मरतबा सुन ल्यो कि मुन्ना टुन्ना न होगा। मुन्नी होगी।"

"मुन्ना होगा।"

"हमरे बगैर ही हो जायगा।'

वह शर्मा गयी।

"उतनी दूर खड़ी होके सर्माये में का मजा! इहाँ हमरे पास बैयठ के सर्माव अराम से।' देश ने हाथ पकड़के उसे अपनी तरफ खींचना चाहा।

'ई खींचा-तानी हम्मे अच्छी ना लगती। अच्छी भली इसतिरी की हुई सारी खराब हो गयी।"

'फिक्र नाट डार्लिंग।" देश ने बड़ी शान से कहा, 'जनता लाण्डरी की

माल्किन से हमरा अफेयर चल रहा। हाफ रेट पर धुलवा देंगे।"

'का चल रहा तोरा ?'

"अफेयर। अंग्रेजी मे प्रेम करने को अफेयर कहते है।"

"ई माटी मिली अंग्रेजी कहा से आ गयी हमरे-तोरे बीच मे।" उसन घूर के सवाल किया और फिर कहा, 'और कान खोलके सुनल्यो। हम अफेयर-टफेयर ना करेंग। सीधे सीधे बिआह करेंगे, बिआह।"

"बस, चालू हा गयी।" देश ने बीडी निकालते हुए कहा, "कभी कभी तो हम इ सोच मे पड जात है कि तोरा दिल ढेर बडा है कि तोरी जवान। जवान जरा छोटी होती तो सवा लाख रुपये की औरत होती त।"

'और अब केतने की है ?"

"अब ? अब तो त सवा दू लाख की है। चलाये जा जबान अपनी। सच पूछ तो अपने लोग की जिन्दगी म तेरी जवान के सिवा चलता क्या है! घडी चलती नही। खरचा चलता नही "

"एक ठो नयी घडी काहे ना ले लेत।"

"अरे टाल घडी-ओडी को।" देश ने कहा, 'टाइम देखके जिय म का मजा! सवा चार बज गया। मुस्कुराये का टम है। रात का डेढ बज गया। थक्थकाके सपना देखे का टैम है। घडी बिल्कुल फजूल चीज है।'

"इ तो तुम उल्लूपने की बात कर रहे हो। घडी रहे से आदमी सब काम बखत पर कर लेता है।"

"सूरज के हाथ मे कौन ओमेगा आटोमेटिक बँधी है। दाम, पन्दरह सौ चौरानव रुपया पचहत्तर पैसा। या चाद के हाथ मे कौन रोमर कम्पनी की आटोमेटिक घडी बधी है। दाम साढे सात सौ। "

"तुह भात-भात की घडी का नाम और दाम कयसे मालुम हो गया ?"

"अरे भाई, घडी न बाधें तो क्या रुआब डाले के वास्ते दाम भी न जानें! नाम और दाम हर चीज का मालुम रहे को चहिए। का पता कहा कौन चीज की बात निकल आय।"

"घडी पर याद आया। महनाज का बिआह घडी, रेडियो और साइकिल पर रुक गया है।' बिल्लो ने कहा।

"कुछ फरज तो हम लोग का भी है। घडी और रेडियो हम लोग दे दें।"

'घडी मे बहुत पयसा लगगा।" देश ने कहा, "रेडियो और साइकिल दे दें।"

"न। घडी और रेडिया।' बिल्लो ठन गयो।

'रेडियो और साइकिल।" देश ने कहा।

घडी और रेडियो।"

"अच्छा ऐयसा किया जाय। न तोरी। न हमरी। त घडी और रेडियो कह रही। हम रेडियो और साइकिल कह रह। रेडियो देवे की राय हम दूनो की है। बाकी चीजा का इतिजाम कर लें उस्ताद खूद कही स।"

कमाल करते हो।' बिल्लो बोली, "बिचारे गरीब आदमी है घडी और साइकिल दू चीज कहा से खरीदग ? रेडियो और घडी हम लाग दे दें।"

"फिर वही मुर्गी की एक टाग। घडी देवे की कोई जरूरत नही। साइकिल काम की चीज है।'

देखा, बात मत बढाव। हम कह दिया कि साइकिल नही देंगे तो नही देंगे।"

'अच्छा बमक मत। उस्ताद से पूछ लेत है। जो घडी का ब दोवस्त ना भया होगा तो घडी ले दग। हो गया होगा तो रेडियो और साइकिल ले देंगे। पर रेडियो ता खरीद लिया जाय। ऐयसा कर। कल चार बजे गैरिज आ जा। वही मे रेडियो खरीदते हुए लौट आयेंग।'

दूसरा दिन मगल का था। लाण्ड्री ब द रहती थी।

इतवारी बाबा एक सेठ का पीछा कर रह थे। इ हे जिद कि उससे कुछ लेके रहगे और शायद उसन कसम खा ली थी कि नही देगा। कि यकायक इतवारी बाबा की आखें भटक गयी। सामने साइकिल की दुकान म उ ह बिल्लो जैसी एक लडकी दिखायी दी। बिल्लो और साइकिल की दुकान ? वह चकरा गये और वह सठ गायब हो गया।

बिल्ला उनसे बेखबर रुपये गिन रही थी कि बाबा की आवाज आयी, 'अरे तुम का कर रही हो साइकिल की दुकान पर।'

बिल्लो रुपये छिपाती हुई पलटी।

'ना बाबा। क दिन से सोचत रहे कि एक ठो छोकरा और साइकिल रख लें। फिर सनीमा म सलाइड चलवा दें कि जनता लाण्डरी कटरा मीर बुलाकी, एलाहाबाद नम्बर-५, घर से मले कपडे ले आती है और घर पर साफ कपडे पहुचा दती है। बिजनिस मे बहुत फरक पड जायगा इससे।'

नही यह बात तो तुमन ठीक सोची।' बाबा ने कहा, 'हम भी देखते हैं। कोई अच्छा इमन्दार छोकडा मिल जाता है ता पकड लिआत हैं। तुह अभी देर लगिह ?'

'थोडी दर तो जरूर लगिह।'

'तो हम चल रह।'

इतवारी बाबा चले गय। दुकानदार मुस्कुराया और बिल्ला की तरफ

ज़रा मा भका और बाला 'आपकी अपनी लाण्ड्री है ?"

बिल्लो सर हिलाकर फिर रुपये गिनने लगी।

"तो एक दिन हम भी धो दो।" दुकानदार ने कहा।

बिल्लो ने उसकी तरफ देखा। पी गयी। रुपये बढाकर बोली, 'यह लो अपना दो सौ चालिस।

रुपये लेने मे दुकानदार ने उसका हाथ जरा सा दबा दिया और बिल्लो ने लप्पड जड दिया।

"हरामी ! मा का दल्ला—साला। त हम्मे समझा का रहा " वह उसे मारने लगी।

"बहनजी "

"अरे तेरी बहनजी गयी तेल बेचे। "

कुछ लोग आ गये दुकान मे।

"क्या हुआ बहनजी ?" एक ने पूछा।

"एही से पूछिए। हाथ पकडता है। कहता रहा कि हम्मे भी धो दा। तो धुलाई करते रहे इसकी।"

लोगो ने दुकानदार को देखा। दुकानदार घिघिया गया।

क्या वे " एक आदमी उसकी तरफ बढा।

"अब हम साईकिल का दू सौ दस से बेसी एक पैसमा ना देंगे।"

'ठीक है बहनजी।' दुकानदार ने कहा। तब बिल्लो लोगो की तरफ मुडी।

"जाय दिजिए। एक बेरी हाथ पकडे के बदले म, भगवान भूठ न बुलावे, चार-पाच लप्पड तो हमी मार चुके हैं।" फिर वह दुकानदार की तरफ मुडी, "साइकिल पहुच जाय ठीक पते पर नही तो ' अपनी बात खत्म किये बिना, दो सौ चालीस से दस-दस के तीन नोट निकालने के बाद बाकी पसे दुकानदार के मुँह पर फेंककर वह दुकान स चली गयी।

बाहर पूरा शहर था। सजी हुई दुकाना और खाली जेबोवाला शहर। साइकिल रिक्शे थे। उनकी घण्टिया थी। उन पर बैठी हुई हल्की भारी सवारिया थी। बिल्लो पैदल ही चल पडी। दुकानें दखती हुई। अपन घर के लिए छोटी-मोटी चीज़ें पसन्द करती हुई। मोल-तोल करती हुई। देश के बारे मे सोचती हुई। दिल-ही दिल मे हिसाब लगाती हुई कि अब शायद इतना रुपया जमा हो गया है कि जमीन खरीदकर एक कमरा और दालान बन जाये। दूसरा कमरा बाद मे बनता रहेगा। अब देश के साथ रहने के बाद भी उससे अलग रहना बिल्लो को बहुत खल रहा था

वह गरेज पहुची ता देश इन्तिजार करता मिला। दोना चल ही रहे थे कि बाबू साहब की कार आ गयी।

अरे भई जरा देखना। साइलेंसर म क्या हो गया है। बाबू साहब न कहा जो खुद ही कार ड्राइव कर रहे थे। फिर उनकी नज़र बिल्लो पर पड गयी। पूछन लगे, "यह कौन है ?"

'यह हमारी होनेवाली बाइफ है बाबू साहब।" दश न कहा।

अच्छा अच्छा। बाबू साहेब मुस्कुराय 'भई दश मैं तुमसे कुछ बातें भी करना चाहता था।'

'जरूर साहब। कहिए।' देश ने कहा।

इत्मीनान से करन की बातें हैं। मैंन शम्मू मियाँ से भी कह दिया है। भई, भारत एक प्रजातन्त्र है। मैं खुद जनता का आदमी हूँ। राजनीतिक मतभेद तो होता ही रहता है। इसका मतलब यह थोडी हो गया कि हम तुम दो हो गये। वह जो मसल है—लाठी मारे से कही पानी अलग होता है।

'बराबर होता है साहब। पाकिस्तान बन गया कि नही ? यह बिल्लो बोली।

देश न उस कुहनी मारी।

बाबू गौरीशकर पाण्डेय जोर से हँस पड।

'कुहनिया काहे को रह हो बिचारी को ?' बाबू साहेब न कहा, 'बिटिया ने तो बहुत समझदारी की बात कही। मर। कहने का मतलब यह था कि तुम यह न सोचना कि आशाराम के चक्कर म जो आ गये थे तुम लोग, तो हम खफा हो गय हाग तुम लोग स। अरे भई, यूनियन बनाना तो मज़दूरा का हक है। जब मैं मौजूद हू तो आशाराम क्या बनाये यूनियन ? और जो यूनियन उसने बनायी थी उसका नतीजा भी देख लिया। इसी खयाल स मैंने आज शम्मू को भी बुलाया है। तुम भी आ जाव। खाना भी वही खाना।

खाना।

देश चकरा गया।

उसने बिल्लो की तरफ देखा। बिल्लो ने आँखा स हा कह दिया। बाबू साहब यह सब तमाशा देख रहे थे पर अनजान बने खडे रहे।

'जी आ जाऊँगा।" देश न कहा साइलेंसर देख लू।'

'घर तक तो चली ही जायगी। बाबू साहब न कहा "तुम दोना की शाम क्यो खराब करूँ ?'

बाबू साहब चले गय।

'साइलेंसर की आवाज तो बिल्कुल ठीक लगती रही।" देश ने सर खुजाते हुए कहा "इ चक्कर का है आखिर ?"

"अरे जो भी हो चक्कर।' यिल्लो ने कहा, "तूह का लेना-देना।'

"इ भी ठीक है। चल।'

दोनों गैरेज से बाहर आ गय।

एक खाली रिक्शा जा रहा था। देश ने हाथ दिया। रिक्शा रुक गया।

"जीरो रोड का क्या लोगे ?" बिल्लो ने कहा।

"अरे मोल-भाल का कर रही है।' दश बैठन लगा।

"तै करे दयो।' बिल्ला न उसे रोक लिया।

'आठ आना।" रिक्शेवाले न कहा।

"देहली का किराया ना पूछ रहे।' बिल्लो ने कहा, "चार आना देंगे।"

देश ने रिक्शेवाले को आख मार दी। वह राजी हो गया। दानो बैठ गये।"

'चार आना बचाया ना।" बिल्लो न कहा।

"अर तरा तो जवाब नहीं है बिल्लो।' देश ने कहा।

रिक्शवाला नौजवान था। रिक्शा हवा स बातें करन लगा। बिल्लो बच्चो की तरह खुश हो गयी।

'जरा रोकना।' बिल्लो ने हाँक लगायी।

रिक्शेवाले ने ब्रेक लगाय। रिक्शा तेजी से रुका। बिल्ला रिक्शेवाले पर जा पडी और खिलखिलाकर हँस पडी।

'एको एही छोड देते ह। एक ठो फोटो खिचवाते चलते है।" वह उतर आयी।

सामने फोटोग्राफर था। फुटपाथ पर। स्ट्रीट का पर्दा लगाय हुए। बिल्लो की आख बचाकर देश ने रिक्शेवाले को एक चवन्नी और थमा दी। रिक्शेवाला मुस्कुराकर आगे चला गया।

"एक फोटो मे हम दूनो का हो जायेगा ना।" बिल्ला ने फोटोग्राफर मे पूछा।

"हागा कस नही।" वह बोला, "कार म बठियेगा कि हवाई जहाज पर ?"

'ऍं ?" बिल्ला चक्करा गयी।

"हवाई जहाज कहा स आयगा ?"

"वह मैं लाऊँगा।"

बिल्लो ने दश की तरफ देखा। इतना बडा फसला वह अपनी जिम्मेदारी पर नही करना चाहती थी।

"मोटर ठीक रहेगी। मोटर मिकानिक की बाइक मोटर पर अच्छी लगती।" देश ने कहा।

फाटोग्राफर ने कार का कट-आउट लगा दिया। देश बिल्लो को लेकर कट आउट के पार लगे हुए स्टूल पर बैठ गया। देश ने स्टयरिंग व्हील पर शान से हाथ रख लिया। गुजरनेवाले कुछ लोग यह तमाशा देखने को रुक गये।

"मुस्कुराइए।" फाटोग्राफर ने कहा।

"ए खाक पड़े तेरे मुह मे!" बिल्लो ने कहा, "हम काहे को मुस्कुरायें तोरे कहे से?"

"मुसकुराये बिना तस्वीर अच्छी ना आती।" देश ने कहा, "और तू मुस्कुराती बहुत अच्छी भी लगती है।"

"हट, बदमास कहीं का।" बिल्लो ने शर्मा कर कहा। पर वह मुस्कुरा भी दी।

'आधे घण्टे में ले लीजियेगा तस्वीर।'

"लौटत बखत ले लेंगे।" देश बोला।

दोनो खुश खुश आगे बढ़ गये।

खुश हो जाना कितना आसान लगता है।

सामने ही गजानन्द रेडियो हाउस था। दोनो उसमे चले गये।

गजानन्द दुकानदार ने जो यह सुना कि वह रेडियो खरीदेंगे तो उसने बड़ी आवभगत की। आजकल तो लोग ट्रांजिस्टर खरीदने आते हैं दो बैण्डवाला। वह खुश खुश उन्हें रेडियो दिखलाने लगा कि एक लौण्डा गजानन्द के लिए एक मैले गिलास में चाय लेकर आ गया। अब ज़ाहिर है कि वह गाहक के होते खुद तो चाय पी नहीं सकता था तो उसने जिद करके चाय का गिलास बिल्लो को दे दिया और लौण्डे से बोला कि दो चाय और लाये।

बिल्लो ने तीन सौ अठारह रुपये का एक रेडियो पसन्द कर लिया। चार सौ वह घर से लेकर चली थी। कपड़े के बटुवे से उसने नोटों की गड्डी निकाली और नये नोट बचा बचाकर गिनने लगी।

"यह क्या भया। ठीक से गिन लो।" उसने तीन सौ अठारह दुकानदार की तरफ बढ़ाये।

"रक्शे पर रखवा दें?"

"नाहीं जी। हम खुद उठा लेंगे।"

देश ने रेडियो उठा लिया। चलते चलते बिल्लो को याद आया कि गिलास की चाय खत्म नहीं हुई है, तो मुड़कर उसने गिलास उठाया और गटागट पी

गयी।

"इ का हरक्त है! का समझता होगा वह! सोचेगा क्यस दलिददर लोग हैं। कभी चाय नही पी है साएद।

"उ कुछ सोचे। कोई मुफुत म ना पिलाइस है। रेडिया के दाम म चाय का पैंसा भी सामिल कर लिया होगा।"

'जरा धीरे बोल।"

काहे को बोलें धीरे! बडा आया है दिल म सोचेवाला। अरे ई माटी मिले के दिल मे हम्म का लेना-देना?"

देश लगभग उस घसीटता हुआ दुकान स निकल गया।

'आफत की पुडिया है ई लडकी।" दुकानदार ने चायवाले लौण्डे मे कहा जो दो गिलास चाय लेकर आ गया था "एक गिलास त पी ले। जाडा बहुत है। पीछेवाली कोठरिया मे चलव?"

लौण्डा मुस्कुरा दिया। बोला, "तोहे हर बखत एही सूझता है। दीवार दिखलाव तो चलें।"

'हाँ-हाँ, दिखला देंगे ब।" गजानन्द न जल्दी से कहा और लौण्डे को घसीटते हुए पीछेवाली कोठरी मे ले गये।

दुकान अकेली रह गयी। /

भागी-भागी बिल्लो आ गयी। उसने दुकान का खाली देखकर हैरानी स इधर-उधर देखा।

'अरे।" फिर वह जोर से बोली, "कहा गये भाई!'

बाबू गजानन्द दिल ही दिल मे उसे हजारो गालिया दत पिछली काठरी से बाहर आय और उस देखते ही जल्दी स मुस्कुराने लगे।

"दफ्ती का डिब्बा ना दिया।' बिल्लो ने कहा।

लौण्डा पिछली कोठरी स निकला और बाबू गजानन्द की तरफ देखकर शरारत से मुस्कुराता हुआ बाहर चला गया। वह अपनी चवन्नी एडवास करवा चुका था। गजानन्द दिल मसोस कर रह गये। यह चवन्नी वसूल थोडी होगी!

बिल्लो काडबोड का डिब्बा लेकर बाहर आयी। देश फोटोग्राफर की दुकान पर अपनी और बिल्लो की तस्वीर देख रहा था। बिल्लो ता उस तस्वीर को देखकर निहालो निहाल हो गयी। लगता था जैसे वह असली मोटर पर दश के साथ बठी हुयी है।

'बिल्कुल अस्ली मोटर लगती है।" बिल्लो ने कहा।

"जब इसे अपन घर म टागोगी तो अस्ली ना लगेगी। पर फिकर क्या करती हो डार्लिंग ? हम तुम्हारे वास्ते अस्ली मोटर खडी कर देंगे एक दिन। "

विल्लो न जो देखा कि देश सपना के पख लगाकर उड रहा है तो उसने फौरन रिक्शे की तरफ इशारा किया जिस पर रेडियो रखा हुआ था और रिक्शेवाला आराम स बैठा बीडी पी रहा था।

"किराया चढ रहा।" बिल्लो ने कहा।

देश बेबसी से उसकी तरफ देखके मुस्कुरा दिया।

"सपना देखे मे का नुक्सान है ?' देश ने कहा।

'जागे के बाद बहुत तक्लीफ हो है।" बिल्लो यह कहती हुई रिक्शे पर जा बैठी और मजबूरन देश को भी आना पडा। बिल्ला ने अपनी गोद म काडबाड का डिब्बा खोला और देश ने रेडियो उसम उतार दिया और रिक्शा चल पडा और बाजार मे किसी ने न जाना कि वह एक सपना फुटपाथ पर फेंककर कटरा मीर बुलाकी जा रहे है।

रिक्शा जब 'गली द्वारिकाप्रसाद म मुडा तो पहल्वान न हाँक लगायी।

'इ का खरीद लिआये तुम लोग ?"

'उस्ताद महनाज के जहेज के वास्ते रेडियो खरीदि हैं।" बिल्लो न कहा।

रिक्शा नही रुका।

'क्या खरीद लिआय भाई ?" जोखन ने आवाज लगायी।

रेडियो है।" देश ने कहा, "उस्ताद मँगवाइन है महनाज के जहेज के वास्त।'

रिक्शा नही रुका।

डिब्बे मे का है बिल्लो ? इतवारी बाबा न पूछा।

महनाज बाजी के जहज का रेडियो है। मामू मँगवाइन है। तीन सौ अट्ठारह रुपय का। मलटक्स उप्पर से।'

रिक्शा नही रुका।

रिक्शा शम्सू मियाँ के घर के सामने रुका। बिल्लो की गोद स रेडिया लेकर देश खडा हो गया। बिल्ला न रिक्शेवाले को पस दिय। फिर दाना घर म चले गय।

छोटा-सा घर था। बिल्लो के सपनवाले घर के बराबर। कभी उस घर म भी सपना की रेल-पेल रही हागी पर अब सन्नाटा था। लगता था जैस इस घर की कभी आँख ही न लगी हो और उसकी दीवारा और आँगन और दिना और राता न कभी कोई सपना ही न देखा हो।

फत्तो उनके पाव पर मुक्किया मार रही थी और वह धीरे-धीरे कराह रह थे कि आगे-आगे देश रेडियो उठाये हुए और पीछे-पीछे बिल्लो साडी के खूट मे रिक्शेवाले से बची हुई रेजगारी बाधती हुई। शम्सू मिया उठ बैठे। फत्तो लपककर देश के पास आ गयी।

"ए मे का हा मामू ?"

"तोरी अम्मा का रेडियो है।" देश ने रेडियो को लकडी की वेपीठवाली कुरसी पर रखते हुए कहा और शम्सू मिया के पास जा बैठा और उनके बण्डल से एक बीडी निकालने लगा। शम्सू मिया ने कुछ नही कहा। देश ने उल्टी बीडी मुँह मे रखकर फूक मारी, फिर सीधी बीडी मुह मे रखी और उसे जलाने के बाद दियासलाई के शोले पर उसे सेंकने लगा। शम्सू मिया ने फिर भी कुछ नही कहा। अस्ल म उनके गले मे आसुओ ने गिरह डाल दी थी और उन्हे अब्दुल हक याद आ रहा था।

"इ बजता कैयस है ?" फत्तो की आवाज आयी।

'हाथ मत लगा माटी मिली।" महनाज की आवाज़ आयी, "बापे के साथ तै सब भी मर बिला गये होते तो तनी चैन मिलता हम्मे। खुद तो चले गये और हमरी छाती पर कोदो दले के वास्ते त सभन को छोड गय।"

"अरे-अरे-अरे !" बिल्लो ने कहा, "पागल हो गयी हो का बाजी ? बच्चन को कोस्ते सरम ना आती !"

"ई बच्ची है। हट माटी मिली।" महनाज ने फिर फत्तो को एक हाथ जड दिया।

"अल्ला मिया का गुस्सा फत्तो पर काहे उतार रही हो बेटा !" शम्सू मिया ने कहा।

नाना की हमदर्दी पाकर फत्तो ने रोना शुरू किया और उसी वक्त उम्मन आ गयी एक लॉली पॉप चूसती हुई।

"जोखन नाना दिहिन हैं।" उम्मन ने एलान किया।

"ए भाई इ जोखन चा ऐयसे सखी हातिम कबसे हो गये !" महनाज ने कहा, "हम छोटे रहे तो ऊ हम्मे तो कभी ना चुसाइन चुसनी।"

"आप कल कहते रहे कि साइकिल का बन्दोबस्त हो गया है। मतलब ई कि खाली घडी बची।" बिल्लो न कहा।

"बन्दोवस्त तो घडियो का हो गया रहा। पर आजे बूबू का खत आया है कि एल्लाक मियाँ मीसा मे बन्द हो गये '

घर म सन्नाटा हो गया।

कटरा था ही कितना बडा ! सबको पता चल गया कि मास्टर एस्लाक जा शम्सू मिया की खालाजाद बहन के बटे थे और जिनस महनाज़ की शादी तै थी, मीसा म बन्द हो गय। जोखन फौरन हमदर्दी करन आ गया। जोखन, जो शम्सू मिया स उम्र म कुछ ही छाटा रहा होगा और जिसे महनाज़ जोखन चा कहती थी और महनाज़ के बच्चे जोखन नाना।

थोडी देर हमदर्दी करन के बाद जोखन ने कहा, "अरे शम्सू भाई। बेऔरत का भी काई घर हो है। कब से सोच रह कि कोई सरीफ बेवा लडकी मिले ता निकाह कर ले। दू एक बच्चे भी हा उसके तो भी चलेगा

शम्सू मिया पी गये। उन्हाने जोखन की तरफ देखा। काला रग। चुस्क्का खिचडी दाढी, कि देख के मतली आने लग पुरानी दाद के कारण जांघो को लगातार खुजलात हुए और खुजलाने की लज्जत से तरह-तरह की आवाज़ निकाल्त हुए।

यह बात भी कटरा मीर बुलाकी म सबको मालूम हो गयी। फत्तो ने बच्चो को बताया कि जोखन नाना से उसकी माँ का व्याह हानवाला है। वह बहुत खुश थी क्याकि उसके लिए शादी का मतलब था हगामा। बाजा गाजा। गाना-बजाना पुलाव कोमा

और इस खबर न लोगो को इतना उलझाया कि लोग यह तक भूल गये कि शम्सू मिया और दश को बाबू गौरीशकर लाल पाण्डेय एम० पी० न रात को खान पर बुलाया है।

बाबू साहब की अपनी समस्याएँ थी। ऊपर' से हुक्म आया था कि किसी-न किसी तरह मजदूर आन्दोलन को कम्युनिस्टो के हाथ स निकाल लेना चाहिए। सी० पी० आई० ता फिर भी चल जायगी पर सी० पी० एम० का हर मोर्चे पर राजनीतिक हार का सामना करना ही चाहिए और यह बाबू साहब की बदनसीबी थी कि प्रदेश काग्रस न यह जिम्मेदारी उन्ह सौप दी। और यदि उन्ह केन्द्र म मन्त्री होना था ता यह पापड बेलना लगभग जरूरी हो गया। तो उन्हान अपन घर म पहले चिराग-बत्ती करन का फसला किया और यूँ देश और शम्सू मियाँ उनके घर रात के खाने पर बुलाय गय।

'भया हम मालिक वालिक नही हैं। जनता और मजदूर भाइया के सवक हैं बाबूजी न आलू के कबाबो की प्लट शम्सू मियाँ की तरफ सरकात हुए कहा।

अरे साहब, हम लाग आपक हुकुम स बाहर थोडे हैं !" शम्सू मिया न

कहा, "एक वेरी हम्म आसाराम चूतिया बना दिहिन तो " वह रुक गये। उन्हें पता नही था कि बाबू साहब जस लोगो के सामन 'चूतिया' जस शब्दो का प्रयोग करना चाहिए या नही। वैसे वह अपने घर और महल्ल म धडल्ले मे यही भापा बोलत और सुनत थे। पर बाबूजी का घर न उनका घर था और न ही उनके महल्ले मे था। बाबूजी ताड गय। जोर म हँसे और बाले, "अरे शम्मू मिया, इसमे चतिया बनने की क्या बात है।"

शम्मू मिया की जान म जान आ गयी।

"हम तो चाहते हैं कि यूनियन बन," बाबू साहब ने बात आगे बढायी, "पर भाई आशाराम से क्या मतलब ? हम कौन कि हम खवाहमख्वाह ! भइ आपसे क्या मतलब ? न आप माटर न आप मोटर मिकनिक। इस वास्ते खुद श्रीमती गाधी ने आदश भेजा है कि यूनियन बनायी जाय परतु उसम वकर, लोग काम कर। राजनीति न घुमन पाय। तो हमने यह फसला किया कि पहले ही की तरह शम्मू मिया ता प्रेसिडेण्ट हो जायें और देसराज सेक्रेट्री। बल्कि हम तो यहा तक सोच रह ह कि गरेज की तरफ से आफिस ब्यरर लोग को कुछ जेबखच भी मिलना चाहिए। इमसे वकज और मालिक के बीच एक नये रिश्ते की बुनियाद पडेगी "

शम्मू मिया तो जेबखच की बात सुनकर ढेर हो गये। वह यह भी भूल गय कि महनाज की शादी हात होत रह गयी है, कि शहनाज अब माशाअल्लाह स २८ साल की हो चुकी है और कवारी है, कि उनके चश्मे का नम्बर बदल गया है और वह दूसरा चश्मा नही खरीद पा रह है कि उन्हे हर महीन की बाइस चौबीस से 'सुन्नती' रोज़े रखने पडते है

जेबखच की बात पहली घटा की तरह झूमके उठी और उनके सपनो और जरूरतो की जमीन पर टूटकर बरसी और वह शराबोर हो गये और उनके नथन पेट-भर खान की खुशबू से बस गय

फिर भी उन्हाने 'हा' कहने से पहले चोरी चारी देस की तरफ दखना मुनासिब जाना, क्योकि उनके ख्याल म देस ज़रा ज्यादा समझदार था इन मामला मे।

दश बाबू साहब की तरफ देख रहा था। बाबू साहब मर झुकाये खा रहे थे। उनके चेहरे पर उसे कुछ दिखायी नही दिया ता अपनी प्लेट म निकली हुई खडी मसूर की दाल मे न जाने क्या तलाश करने लगा

"नाही बाबू साहब।" आखिर देस न कहा, "मजूर यूनियन मे आपका पयसा नही चलेगा।"

शम्सू मियाँ मायूस हो गये। उन्होंने गला साफ किया कि देश उनकी तरफ देखे तो वह इशारा करें। पर देश ने उनकी तरफ देखा ही नहीं। आखिर उन्हें बोलना पड़ा क्योंकि बाबू साहब उनकी तरफ देख रहे थे। तो उन्होंने कहा, "ई का बात भई! अरे भाई मालिक नहीं होयगा तो मजूर कहाँ से आयेंगे? हमको तो बाबू साहब की तजवीज, सच पूछो तो, बहुत पसन्द आयी।"

बाबू साहब मुस्कुरा दिये क्योंकि उन्होंने बाजी जीत ली थी।

"देखिए उस्ताद," देश ने कहा, "हम लोग बाबू साहब के गरेज में काम करते हैं और मजूरी लेते हैं। कहिए ठीक।"

"ठीक।" शम्सू मियाँ ने कहा।

"मतलब यह कि हम लोग बाबू साहब का नमक नहीं अपना पसीना खा रहे। कहिए ठीक।"

"फरज करो कह दिया।" शम्सू मियाँ कन्नी कटा गये। वह बाबू साहब के सामने इस बात पर ठीक कैसे कह देते।

"पर जेबखरच लेके हम लोग बाबू साहब के आदमी हो जायेंगे।" देश ने कहा, "कौन मुँह लेके अपने अधिकार की लड़ाई लड़ेंगे?"

"लड़ें की जरूरते का है?" शम्सू मियाँ ने कहा "बाबू साहब मालिक हैं, खुद खयाल रखते हैं। नहीं तो हड़ताल टूटे के बाद हम्म-तुहें कान पकड़के निकाल बाहर कर देते तो हम का बात टेढ़ा कर लेते इनका?"

नतीजा यह निकला कि शम्सू मियाँ बाबू साहब की बात मान गये और देश ने बाबू साहब की बात नहीं मानी और बाबू साहब का प्रोग्राम जरा-सा गड़बड़ हो गया। वह दरअस्ल चुपके से ट्रेड यूनियन आन्दोलन में घुसना चाहते थे, क्योंकि उत्तर प्रदेश में कोई बड़ा कांग्रेसी ट्रेड यूनियन लीडर नहीं था और उनका खयाल था कि यदि वह ट्रेड यूनियन लीडर हो जायें तो उन्हें केन्द्रीय सरकार में घुसना आसान पड़ेगा। वह एक 'नेहरू मजदूर सभा' की स्थापना करना चाहते थे और यह काम वह अपने 'नेशनल गरेज' से शुरू करना चाहते थे।

डिनर फ़ेल हो गया। पर जिस बात पर उस वक्त किसी ने ध्यान नहीं दिया, वह यह थी कि उस रात बाबू साहब के कमरे में शम्सू मियाँ का रास्ता देश के रास्ते से अलग हो गया जो उनकी अपनी साधारण और छोटी और मलगुजी जिन्दगी के लिए बहुत बड़ा हादसा था।

बाबू साहब की कोठी से दोनों साथ ही उठे। कटरा मीर बुलाकी वहाँ से बहुत दूर नहीं था। फिर भी देश शम्सू मियाँ को अपनी साइकिल के करियर

पर बिठलाने लाया था। वापसी भी उसी तरह हुई, पर रास्ते में कोई खास बातचीत नहीं हुई दिसम्बर की तेज ठिठुरानेवाली हवा हड्डियों में घुसी जा रही थी और शम्सू मियां उस पुराने आर्मीवाले ओवर कोट में सिमटे जा रहे थे जो उन्होंने कोई आठ बरस पहले पुराने कपड़ों की एक दुकान से खरीदा था।

रात चुप थी। रास्ता चुप था। और शम्सू मियाँ चुप थे। वह देश से अपने दिल की बात इसलिए नहीं कह रहे थे कि देश से उनके घर की हालत छिपी हुई नहीं थी और देश इसलिए चुप था कि वह उस्ताद के घर की हालत जानता था और यह भी जानता था कि 'जेबखर्च' से शम्सू मियां अपने सुन्नती रोज़ा से बच जाते शायद पर उसे इन शर्तों पर पेट-भर खाना मंजूर नहीं था।

ऐसा नहीं कि देश में बड़ी राजनीतिक और सामाजिक चेतना थी। आशाराम के साथ दिन बिताने और उसकी तकरीरें सुनने के बाद भी उसकी समझ पर कोई सियासी धार नहीं आयी थी। पर इज्जत और बेइज्जती की बात वह समझता था और इसलिए उस ठिठुरा देनेवाली रात में उसे शम्सू मियां इतने भारी लग रहे थे कि उसके लिए साइकिल चलाना दूभर हो गया था। फिर भी वह साइकिल चलाता रहा क्योंकि वह उस्ताद को बीच रास्ते में अकेला नहीं छोड़ सकता था।

उनके घर के सामने उसने साइकिल रोकी। शम्सू मियां उतर गये।

"अच्छा, हम जा रहे" शम्सू मियां यह कहते हुए अन्दर चले गये, क्योंकि दरवाज़ा उनके इन्तज़ार में खुला हुआ था और देश अपने साथ अकेला रह गया। उसने जनता लाण्ड्री के बोर्ड की तरफ देखा। वह भी रात में अकेला था पर उसे देश की तरह जाड़ा नहीं लग रहा था।

जमीन पर पांव टिकाये टिकाये देश ने बीड़ी सुलगायी

देश के चारों तरफ कटरा मीर बुलाकी सो रहा था। और रात जाग रही थी और आसमान बादलों से ढका हुआ था। मास्टर बद्रुल हसन 'नायाब' मछलीशहरी की बाहरी बैठक के सिवा कहीं रोशनी नहीं थी। बीड़ी का एक लम्बा कश लेने के बाद उसने साइकिल मास्टर की बैठक की तरफ मोड़ दी। बात यह है कि वह अपने साथ अकेला होना नहीं चाहता था

मास्टर बदर लिहाफ में दुबके 'शमा' का मुअम्मा भर रहे थे।

यह 'शमा' मुअम्मे किसी फेरीवाले की तरह खांचा सर पर धरे घर-घर सपने बेचते फिरते थे। बारह आने में हज़ार सपने। सपने एक अच्छे-से घर के, सपने उस लड़की के जिससे आप शादी करना चाहते हैं, सपने उस लड़के

के जिससे आप अपनी बेटी ब्याहना चाहते हैं, सपने एक रेडियो और एक मोटर और एक फ्रिज के, सपने कर्ज से निजात के और हर माल मिलेगा बारह आने।

मास्टर बदर बरमा से यह मुअम्मे हल कर रहा था। एक मरतबा तीन गलतियों पर दो रुपये चालीस पैसों का इनाम मिल भी चुका था। इसलिए हर बार अपने हल' भेजते वक्त उसे पक्का यकीन होता कि इस बार तो एक लाख का बम्पर इनाम या पचास हजार का अव्वल इनाम कहीं गया ही नहीं है। महीने भर वह इसी नशे में रहता। फिर पता चलता कि उसके 'हल' में चार गलतियाँ निकलीं और दो दिन वह अपने आपको गालियाँ देने में गुजारता कि 'मुहब्बत' लिखते लिखते वह 'मुरव्वत' क्या लिख गया। और फिर तीसरे दिन से वह नया मुअम्मा सँभाल लेता।

हर चीज के साथ मुअम्मों का भाव भी बढा। पहले दो कूपन बारह आने में मिल जाते थे। फिर एक रुपये में मिलने लगे। फिर सपनों का दाम डेढ रुपये हो गया। पर भला कोई सपनों का दाम देखता है!

इशारा था। बेमौका का इजहार भी कभी-कभी बना-बनाया काम बिगाड देता है।

मास्टर बदर कुकुरमुत्ता की तरह 'शमा' के चारों तरफ उग आनेवाली पत्रिकाओं में निकले हुए 'सही जवाब' देख रहा था[1]। तीन की राय में 'मुहब्बत' उचित था। दो की राय में मुरव्वत पर शक करना चाहिए। एक ने 'अदावत' को भी चांस दिया था। मास्टर बद्रुल हसन नायाब मछलीशहरी को यह तीनों ही शब्द उचित दिखायी दे रहे थे और वह उसी उधेड बुन में थे कि क्या भरें क्योंकि कल पहली डाक से उन्हें अपना 'हल' भेजना था। उन्हें इस बार पहले या कम-से-कम दूसरे इनाम की सख्त जरूरत थी क्योंकि शादी चाहे शहनाज ही से क्यों न हो मुफ्त में थोडी हो जाती है। वह मोल्वी खराती का इकलौता बेटा है। दोनों बाप-बेटे बरसों से दूसरों के घर वलीमे[2] खाते चले आ रहे हैं तो अब वह उसकी शादी का वलीमा गोल तो नहीं कर सकते थे। दो सौ आदमियों ने

---

१ दिल्ली से निकलनेवाली मासिक पत्रिका शमा हर महीने एक मुअम्मा निकालती है। और लगभग तीस चालीस पत्रिकाएं ऐसी निकलने लगी हैं जो उन मुअम्मों पर अपनी राय छापती है और मुअम्मा भरनेवालों को मुअम्मा भरने में मदद देती हैं कि किस जगह पर कौन सा शब्द भरना उचित होगा।

२ दूल्हन के पहली बार ससुराल आने पर जो दावत दी जाती है। इस्लाम इस दावत को जरूरी मानता है।

भी खाना खाया तो लगभग दो-ढाई हजार की चोट होगी। और वह जब भी मेहमानों की फेहरिस्त बनाने बैठता, वह तीन साढे तीन सौ से नीचे न रुकती। और जब वह झल्लाकर यह बात मोल्वी खैराती को बताता और उनसे कहता कि वह उसे कम करने की कोशिश करें और मोल्वी साहब बीडी सुलगाकर सुनने बैठ जाते, तो हमेशा उसे यह पता चलता कि वह लगभग तीस चालीस जरूरी लोगों को भूल गया है। वह उस फेहरिस्त को फाड डालता और आस्तीनें चढाकर फिर लग जाता। अपने दिल में उसने तै कर रखा था कि फेहरिस्त को दो सौ से आगे नहीं निकलने देगा। मगर फेहरिस्त उसके काबू में नहीं आ रही थी। तो उसने एक और तरकीब सोची। वह बाबू नानबायी की दुकान पर जाकर बैठ गया कि मीनू ही को कुछ घटा बढाके बजट ठीक कर लिया जाये।

बकरे का कोर्मा
बकरे का कलिया (आलू या अरवीवाला)
शीरमाल
ताबी रोटी
पुलाव
शाही टुकडे
मुजाफर

बाबू नानबायी ने पूछा "खायेंगे कितने लोग?" बद्रुल ने कहा, यही कोई साढे तीन चार सौ लोग। बाबू अपनी दाद को खुजलाने में लग गया। बद्रुल इन्तजार करते रहे। खुजली खत्म होते होते बाबू ने दिल ही दिल में हिसाब लगा लिया था।

बोला, "साढे तीन सौ जने खायेंगे तो समझ लीजिए कि सवा पाच हजार और चार सौ जने खानेवाले हैं तो छ सवा छ हजार।"

दूसरा मीनू बनने लगा।
बडे[1] का कोर्मा
बडे का कलिया
ताबी रोटी
शीरमाल
पुलाव
मुजाफर

---

1 गाय बैल भैंस के गोश्त को बडा गोश्त बोलते हैं।

वजट साढे तीन सौ आदमी चार हजार दो सौ।
चार सौ आदमी चार हज़ार आठ सौ।

तीसरा मीनू।

बड़े का कलिया

आबी रोटी

पुलाव

फीरिनी

वजट साढे तीन सौ के लिए दा हजार आठ सौ।
चार सौ के लिए तीन हज़ार दो सौ।

मास्टी बराती को बताये बिना उसन यह तीसरा मीनू पसन्द कर लिया था। और उसने यह भी तै कर लिया था कि अब्बा चाहे बुरा मानें चाह भला, मेहमानो की फेहरिस्त को खच तानकर वह तीन सौ तक तो ले ही आयगा।

और सच्ची बात यह है कि उसकी शादी उसकी तरफ से वलीमे के कारण रुकी हुई थी और शम्सू मिया की तरफ मे दहज के कारण। माना कि मास्टर के अब्बा सिफ लडकी माग रहे है पर फिर भी शम्सू मिया का भी तो कुछ फज था। दहज तो आ हजरत[1] ने अपनी बेटी को भी दिया था। कौन कहे कि मौला अली न कह दिया था कि दहेज नही मिलेगा तो बरात लौटा ले जायेंगे

और इस वलीमे और दहेज के चक्कर म मारी जा रही थी मास्टर बद्रुल हसन नायाब मछलीशहरी और शहनाज की मुहब्बत।

तो उधर शहनाज मुअम्मे हल कर रही थी और इधर मास्टर बद्रुल। इनाम किसी का नही मिल रहा था।

एक बार शहनाज ने सही मुअम्मा भर भी दिया तो उस बार दो हजार सही हल आ गय और शहनाज को साढे चौबीस रुपय का मनीआडर मिल गया और वह भी मनीआडर की फी काटने के बाद। यह साढे चौबीस रुपय दहेज और वलीमे के लिए काफी नही थे

तो शहनाज न दहाती और शहरी जिन्दगी के मुकाबले पर एक मजमून लिखा। मजमून यू था

"मुझे तो लगता है कि हमारी शादी शायद ही हो सके। दहज और वलीमा हमारी दुनिया म हमारी मुहब्बत से बडा है। तुमने मुगले आजम का वह गाना तो सुना हागा जब प्यार किया तो डरना क्या। मुझे निशान क्या नही ले

---

1 मुसलमान अपने पैग़म्बर को आँ-हज़रत कहते हैं।

जाते" इस 'मजमून' में उसने वह सारे फिल्मी गाने खपा दिये थे जो उसे याद थे। यह मजमून 'ठीक' होने के लिए मास्टर को खुद शम्सू मियां ने दिया। मास्टर सन्नाटे में आ गया। उसने उस मजमून को ठीक करने में कई दिन लगाये। आखिर सतरों के बीच में उसने अपना जवाब लिखकर कापी फत्तो के हाथ भिजवा दी। उसने लिखा "फिल्म और ज़िन्दगी में बड़ा फर्क होता है। फिल्म हीरो हीरोइन की शादी पर खत्म हो जाती है। शादी के बाद दोनों पर क्या गुज़रती है यह कोई नहीं जानता। मैं तुम्हें निकाल ला सकता हूँ। फिर कटरा मीर बुलाकी छोड़ना पड़ेगा। नौकरी से निकाल दिया जाऊँगा। नौकरी है तब तो खर्च चलता नहीं। नौकरी भी न होगी तो क्या करेंगे—मैंने नमाज़ पढ़नी शुरू कर दी है। तुम भी नमाज़ पढ़ा करो और दुआ माँगो कि एक बार 'शमा' का पहला इनाम मिल जाये।"

और वह दोनों फिर मुअम्मे भरने में लग गये

बे-मौका का इज़हार भी कभी-कभी बना-बनाया काम बिगाड़ देता है।

मुहब्बत।

मुरव्वत।

अदावत।

तीनों ही शब्द ठीक बैठते है। अब शमा का मुअम्मा बनानेवाला बिचारा क्या जाने कि उसके शब्दों की मायानगरी में वलीमे और दहेज की ज़ंजीरों में जकड़ा मास्टर बद्रुल और शहनाज का प्यार पड़ा है और इस मायानगरी की कुंजी इन शब्दों में से किसी एक शब्द के पास है

"का हो रहा है मास्टर?" देश ने बाहर ही से हाँक लगायी।

मास्टर हड़बड़ाके उठ बैठा। उसकी बनियाइन फटी हुई थी और मैली थी। देश अन्दर आ गया।

"लगे हो मुअम्मे में?"

"नींद नहीं आ रही थी तो सोचा कि मुअम्मा ही भर डालूँ का पता, लड़ी जाय टिप्पस।" मास्टर ने कहा, "दहने से बायें किलू ई है कि बेमौका डैश डैश का इज़हार भी कभी-कभार बना बनाया काम बिगाड़ देता है। मुहब्बत, कि अदावत कि मुरव्वत?"

"देखो भैया मास्टर बदर। मुहब्बत का तो बेमौका इज़हार होय नहीं सकता। हर बखत ओके इज़हार का बखत है। अब बची मुरव्वत। तो ऊ इज़हार की चीजे नहीं होती। अदावत ज़रूर मौका-बेमौका देखके करना चाहिए। हम अभइ इहे भूतियापन्ती करके चले आ रहे बाबूजी किहाँ से। उस्तादों

हमरी बात पर तनी सा टिनिख गये हैं।"

बद्रल न कोई जवाब नही दिया। वह जवाब दे भी क्या सकता था ! वह तो खुद ही अपने सवालों की फासी गले म डाले झूल रहा था। देश बठ गया। मास्टर के बण्डल से बीडी निकालकर सुलगात हुए उसन एकदम म कहा, "हम्मे लग रहा कि तू लोग का बिआह साइदे हो सके। न तुमको इनाम मिलिहे न तोरी बरात जैयह। भगा लिआव अम्मा को एक दिन जी कडा करके। फिर जो होइह, देख लिया जैयह।"

कमाल करते है आप।" बद्रुल ने कहा, 'यह कोई शिराफत हुई ?'

'हा तो बयठ के मुहब्बत, मुरव्वत और अदावत की चटनी चाटो। चल हैं पियार करे।

मेरा प्यार तो अभी मुशकिल से दो ढाई बरस का है। आप क्या नही करते शादी ?"

देश ने सुलगती हुई बीडी कमरे के कच्चे फश पर फेंक दी और बद्रुल डर गया। क्योकि देश की आखो म गुस्से की लपक आ गयी थी। पर वह गुस्सा पी गया और बोला हमरा बिआह दहेज और वलीमे की खूटी पर लटका धूप ना खा रहा। हम खुद ना कर रहे बिआह। दस-पाच दिन मे जमीन की रजिस्टरी हो जाये दो फिर सुन लेना सहनाई। " मास्टर के बण्डल से दूसरी बीडी सुलगाने के बाद वह खडा हो गया "तुम मुहब्बत अदावत का चक्कर चलाव। हम चले।"

'बैठिए ना थोडी देर।

"ना भाई। नीद आ रही। हम तो रोसनी देखके आ गये रहे मिनट भर के वास्ते।'

वह फिर कटरा मीर बुलाकी के अँधेरे म उतर गया।

बद्रुल स उसने यह तो झूठ कहा था कि उसे नीद आ रही है क्योकि नीद तो उसे बिल्कुल नही आ रही थी। उसे फिक्र लगी हुई थी कि जेबखचवाली बात पर बिल्लो क्या कहेगी। उसे लगभग यकीन था कि बिल्लो भी वही कहेगी जो उस्ताद ने नही कहा। जो उस्ताद की खामोशी ने कह दिया। तो इस वक्त वह चोरो की तरह घर मे जाकर पड रहना चाहता था कि बिल्लो को उसके आने का पता ही न चले। सवेरे की भीड-भाड म शायद वह बात भूल जाय।

पर उसकी बैठक म पहलवान और इतवारी बाबा शतरज खेल रह थे। वह बठक मे घुसा तो इतवारी बाबा कह रहे थ, 'लग रहा कि भगवान उप्पर बरफ की फक्टरी डाल लिहिन हैं। हमरे होस मे तो ऐयसा पाला कभी पडा

ना रहा। सह् बचो पहलवान।"

पहल्वान दाह बच गये। बोले, "हमरा तो खून खौल रहा सरे साम से।"

'केह बात पर ?" दन न पूछा।

"जोसन का मर्मो ना आयी महनाज के वास्त अपना पयाम दत।'

"ए मे खून खौलाय की का वात है ?" इतवारी ने कहा।

"है कैंयसे नही।' पहलवान टिक गये, 'जो सुनगा थू थू करेगा कि कटरा मीर बुनाकी म कैंयसे लोग रहत हैं।

"कोई ऊ थू थू थू ना करगा।' इतवारी ने कहा "आजकल हर महल्ले म एक आध ठो जोखन और महनाज हैं। जिन्दगिये मयली हो गयी है पहलवान!" बिल्लो चाय की दो प्यालियाँ लेकर आ गयी। इतवारी न गम चाय की पहली चुसकी लकर कहा, 'जो कपडे की तरह उतर लायक रहती नो बिल्लो से हम जरूरन कहते कि जिन्दगी का जनना लाण्डरी म धोके ठीक से इसतिरी कर दे।'

किसी ने कोई जवाब नही दिया। पहलवान न प्याली की आधी चाय तश्तरी मे उँडेलकर प्याली देश की तरफ बढ़ा दी। देश वही बठ गया और चाय की चुसकियाँ लेने लगा। बिल्लो की बनायी चाय का मजा ही कुछ और होता था। पर वह बिल्लो की तरफ देख नही रहा था कि कही वह पूछ न बठे कि बाबू साहब के यहाँ कसी गुजरी।

बिल्लो बोली, "कान खोलके सुन लें लोग "

सबने घबराकर उसकी तरफ दखा। देश ने फिर भी न देखा।

शम्सू मामू इन्कार ना किहिन हैं। महनाज बाजी उनकी बेटी है। कोई जने को बीच मे बोले का जरूरत ना है। ऊ चाहे तो महनाज को अन्धे कुए म फेंक दें।"

"का बात करती हो तुम," देश से चुप नही रहा गया, 'हमरे उस्ताद की बेटी हमरी बहन बराबर है। ओको उस्ताद उस भड़ूस से बिआहगे ता हम जरूर बोलेंगे। यू है हमरी जिन्दगी पर।"

"ए बेटा ," इससे पहले कि बिल्लो कुछ बोले, इतवारी बाबा बोल पड, 'अब थूके लाएक एतना काम होय लगा है ई मुलुक म कि थूक कम पडेवाला है। कोई मेठ-साहूकार को दूर की सुझिय। ऊ लैंसेस लेके अमरीका से थूक थोक मे खरीद लीहे और इहाँ बेचना सुर कर दिहे "

'ते पर सरकार खफा होवे थूक पर कण्ट्रोल कर दीह। और थूक मिले लगेगा रासन कारड पर।'

सब हँस पडे। तनाव कम हो गया। पहलवान न चाय का शडाका मारा

और देश गनगना गया और उसने शिकायत भरी निगाहों से पहलवान की तरफ देखा। पर पहलवान का पता ही न चला। बिल्लो अन्दर चली गयी।

"ए महीने हम्मे कुल मिलाके अेक सौ बाइस रुपय की खराब रेजगारी मिली है भीक म। जे खराब अठन्नी-चवन्नी को काई दुकन्दार हाथ न लगाय, थमा दया फकीर को और मुफुत म ने ल्यो असिरबाद। हम तो उर्दू हिन्दी मे अेक ठो तख्ती लिखवाके टागेवाले हैं अपने गले म कि कृप्या खराब अठन्नी चवन्नी मत दिजिए"

देश ने कहा, "आपकी सूझती है दूर की।

बाबा बोला "हम तो सोच रहे कि एक ठो आल इण्डिया भिक्मगा फडरेसन बना डालें। आखिर भिक्मगे लोग भी ओटर हं। और भगवान भूठ न बुलवाय, मुलुक म दू अढायी करोड स कम ना होंगे हम लोग। तो हम लोग काहे को ओट दें सरकार चाहे अपोजीसन को? हम लोगन की उन्नति के वास्ते कोई का किहिस है आज तक? और भया कोई ई बात भी नही कि हमरा ओट टाटा बिरला और लाल महम्मद बीडीवाले से कुछ कम है वजन म।'

'चुनाव लडे का सौक चर्रा रहा का?" पहलवान न पूछा।

"क्यो न चर्राय सौक?' बाबा ने पूछा, हम तो रायबरेली से चुनाव लडेंगे बिटिया रानी के खिलाफत म। कि हम उनहे इ बता सकें कि ए बिटिया तूह को, हटाये वास्ते, गरीबी ना देखायी दे रही तो ल्या हम महजूद है तुम्हारे सामने। हटा दयो हम्म।'

'हम तो कभयी ना देंगे तुमका ओट इन्द्राजी के खिलाफ। बिल्लो पहलवान के लिए पान का बीडा लकर आ गयी।

"तू रायबरेली मे ओटरे ना हो।' देश न कहा।

'होते तब्बो ना देते।" बिल्लो न कहा।

"ए ही तो साला मिशटेक है जिन्दगी मे बिल्ला।' देश न कहा 'जनता साली मछली माफिक है। नेता लोग सपनो का चारा लगाके जिन्दगी के तलाव म काटा फेंकत है और हम लोग गपागप चारे के साथ काटा निगल जाते है। और फिर पाच बरिस के बाद जिन्दा करके तलाव म फेंक दिये जात है"

इतवारी बाबा और पहलवान भिड गय बहस मे। बात इन्द्रा गाधी की निकल आयी। इतवारी बाबा की लाजिक सीधी-सादी थी कि इन्द्रा गाँधी गरीबी देखिने ना हैं तो हटाये के वास्त बिचारू गरीबी का पहचनिहै कयसे। बिल्लो इन्द्रा गाधी के साथ थी। और पहलवान बिल्लो के साथ थे। देश ने सोचा कि जान बचाने का इससे अच्छा मौका शायद ही मिले, तो वह चुपचाप सरक गया।

बिस्तर इतना ठण्डा था जैसे बफ की सिल। उसके दात बजने लगे। उसने गडाप से लिहाफ खीचा और सर ढक लिया और धीरे धीरे उसकी अपनी सास की गर्मी मे बिस्तर गम होने लगा और रगो म रेंगती हुई सर्दी पलग से नीचे उतर गयी। तब उसने बीडी सुलगाई। पासवाली बठक से पहल्वान और इसवारी बाबा के लडने की आवाज अब भी आ रही थी। दीवार पर सामने र्शामला टैगोर का एक फोटो टँगा हुआ था जो देश न किसी फिल्मी पत्रिका से काटकर दीवार पर चिपका दिया था। बिल्लो के बाद यदि कोई लडकी उस पसन्द थी ता वह शर्मीला टैगोर थी। उसके गाला के गडढे उसे बहुत अच्छे लगत थे। वैस उसकी कोठरी की दीवार पर जीनत अमान और रेखा की तस्वीरें भी थीं। तस्वीर तो खैर हेमा मालिनी की भी थी। पर हेमा मालिनी उसे पसन्द नही थी इसलिए उसन उसके चेहरे पर मूछें बना दी थी और वह भी पहलवान छाप। हमा की तस्वीर की तरफ देख कर वह मुस्कुरा दिया

"कयसी गुजरी बाबू साहब किहा ?" बिल्लो की आवाज आयी।

"क्या गजब करती हो तुम' देश ने कहा। "मामा ओमा जाग रह। तूहे इहा देख के का सोचेंगे।"

'मतलब यह कि बाबू साहब किहा कुछ गडबड हो गयी है।" बिल्लो ने उसकी बात का नोटिस लिये बिना कहा।

"अरे नही भई।' देश ने जसे मक्खी हँका दी। "गडबड का हो सकती है। खाया पीया, चले आये।'

'ऊ खान पर बुलाइन काह को रहा ?" बिल्लो ने पूछा। "इ ता हम मान ना सकत कि उनह एकदम से तोरी और मामू का बडा पियार आ गया।"

"यूनियन बनाये को बोले।"

'और तुम मान गये होगे।"

'हम्मे बिलकुल चूतिया समझती है का।' देश न कहा। हम भला फँसे वाले हैं उनके कम्मे मे। साफ मना कर दिया। तब तो ऊ मटपटा गये। बोले हम तुम दूनो की तनख्वाह कुछ बढा देंगे। हम तेपर भी ना फँस।"

"केतना बढाये को बोले ?"

"ई तो हम नही पूछा।"

"और का। ई पूछे की भला तुमको का जरूरत रही। केह मारे कि घर मे तो भगवान की दया से सबरे के बखत दस के नोट की और शाम के बखत पाच के नोट की बारिस होती है रोजाना।"

'बस शुरू हो जा।" देश ने कहा। 'अरे बिल्लो! बाबू साहब सखी हातिम

की पिलौंठी की औलाद तो हैं ना कि उनह् गरज के दू आदमियन पर रहम आ गया। गरीब तो हम सब हैं। फिर दू आदमी की तनख्वाह क्या बढ़े। आसाराम ने जिन्दगी म एक ही बात तो पत की वही कि पूंजीपति जहर दे तो समझो कि परेसानी की कोई बात नहीं, मुना ऊ माल पुवा खिलाय लग तो समझ लो कि कोई खतरे की बात जरूर है।'

'आसाराम की बात तो तुम मोसे करो मत।" बिल्लो न कहा। 'उनका बस चले तो गेराज बन्द करा दें अपने इनकलाब जिन्दाबाद के चक्कर म। मामा कहते रह कि ओझा न साहब जमीन का कागज तयार कर दिहिन ह्। कल छुट्टी है। परसा रजिसटरी करवा लिया जाय। चल तनी जमिनिया देख आयें।"

'इ कडकडात जाडे मे?' देश ने कहा। बिल्लो ने उसे घूरना शुरू किया। "अच्छा भाई आस मत निकाल। चल। मुदा जमीन कहीं भागी ना जा रही है। कल भी ओही रहगी और परसो भी।"

देश गम गम लिहाफ से निकला तो उसे झुरझुरी आ गयी। पास वाले कमरे से पहलवान और इतवारी बाबा की बहस की आवाज अब भी आ रही थी। इतवारी बाबा जब भी इन्द्रा गाधी के विरोधी थे और पहलवान अब भी इन्द्रा गाँधी की तारीफो के पुल बाधने मे लगे हुए थे—

"अरे भाई कोई जबरदस्ती है," पहलवान की आवाज़ आ रही थी। "क्यो मिलें परधान मनतरी कोई से। और मिलना ही होगा ता बरजनेफ से मिलेंगी। ए भाइ, का नाम है माउजेतुग से मिलेंगी। निक्सन स मिलेंगी—मिले के वास्त एकठो जयपरकासे बाबू रह गये हैं का?"

उन दोना ने इतवारी बाबा का जवाब नही सुना, क्योकि वह पिछले दर वाज़े से निकल गय।

बाहर रात घर के अन्दर से ज़्यादा ठण्डी थी। सर्दी की वजह से देश ने बिल्लो से लिपट जाना चाहा पर बिल्लो ने उसे डाट पिला दी। "हमे ई सब ना अच्छा लगता'—रात यह सुनकर मुस्कुरा दी। पास बैठा हुआ एक कुत्ता गुर्राया पर बिल्लो को पहचान कर चुप हो गया।

दोना चुपचाप चल पडे। रात के दान बजन लगे। कुहरा घना हो चुका था। सास के ज़रिए बदन मे उतरा जा रहा था।

"हम भी सोच रह कि जमीन लेते ही घर का काम शुरू करवा दिया जाय।" बिल्लो ने जाडे की तरफ से ध्यान हटाने के लिए बात शुरू की, 'एक ठो कमरा और दल्लान बन जाय ता हम अपने घर मे उठ जायें। बाकी घर अपना अराम से बनता रहिए।

"तुम तो ई बताव कि बिआह् कब होगा क्याकि हम्मे जाडा बहुत लग रहा।" देश न कहा।

"ढेर बौराव मत।" बिल्लो बोली। "बिआह बिना कौन काम रुका है तोरा। खाना वखत पर मिली जा है। कपडा धुला जा है—अरे हा, कपडे पर याद आया। छब्बिस रुपया पचास पयसा तारे पर धुलाई बाकी हे।"

'तुम अब बहुत बैयमानी करन लगी हो।' देश ने कहा। "छब्बिस रुपया पचास पैयसा कानी कहा से बाकी निकल आया। ठीक है। हम एक लाण्डरी वाली स विआह कर वाले है। तुम्हारी दुकान पर कपडा धुलवाना ही बन्द कर देंग।'

'ढर इतराव मत।" बिल्लो ने कहा। 'बिआह के बाद हम तोरा कपडा मुफुत मे ना धोय वाले हैं।" शायद वह कुछ और कहती पर सामने घर की जमीन पडी थी। उस देखकर वह चुप हो गयी जसे वह जमीन न हो, उसका भविष्य हा। उसके सपनो की कोपल हो।—"कैयसी अच्छी लग रही जमिनिया।'

देश खिलखिला के हँस पडा। पर बिल्लो ने उसे डाटा नही। उसने उसे घूर के भी नही देखा। वह शर्मा गयी क्याकि उसके हृदय मे शहनायी बजने लगी थी और उस महल्ले की तमाम औरतें ढोल पर गा रही थीं—

चेहरा न करियो उदास, मया मैं तो पास रहूगी।
अपने ससुर का मैं बाबा कहूंगी
तो बाबा न आयेंगे याद,
मया मैं तो पास रहूगी—

"कुछ बोने का एराम ना है का ?" देश न पूछा।

'का बोल ?' बिल्लो ने पूछा।

"हम्म पता होता तो पूछते ही काह को ?' देश बोला। 'फिल्मि का हिरो हीरोइन हाये म एही फायदा है कि कोई बात समझ म न आवे तो दन देना गान। शुरू कर देते हैं सब।'

"गाना दन दना याद कयसे आ जाता है सभन को ?"

'एही तो हम भी सोचते रहते हैं।"

'ना भया।' बिल्लो बोली। 'हम्मे फिलिमवाली जिन्दगी ना चहिए। रात दिन गाना गायेंग तो काम कब करेंगे। और काम ना करेंगे तो खायेंगे का।'

हर सपने के गले मे यही फन्दा है कि खायेंगे क्या। यह फन्दा अग्रेजो के

जमाने मे था। नहरू के जमाने म भी रहा। शास्त्री के जमाने म भी रहा। इन्द्रा गाधी के जमाने मे भी है।—लगता है आजादी म यही खाट है। कोई मिलावट है। इमिटेशन है। चावल पाँच रुपये किलो। शक्कर साढ़े सात रुपय किलो। अरहर की दाल साडे चार रुपय किलो। मिट्टी का तल कभी है कभी नही है। प्याज़ दो रुपय किलो। सपना—सपना तो खुले बाजार मे मिलता ही नही। चोर बाजार म जाव और सपना खरीदो। और वहाँ भी ठिकान म सपने मुशकिल ही से मिलत हैं। किसी का बाना भड़ा हुआ है। किसी की कगर भड़ी हुई है। कोई बीचोबीच स चिटका हुआ है—महनाज़ जोखन म ब्याह दी जाती है जो उसके बाप शम्मू मियाँ से उम्र म कुछ ही छोटा हागा। शहनाज और मास्टर बद्रुल हसन नायाब मछली शहरी की शादी टलती ही जा रही है क्योकि न शम्मू मिया दहज का बजट बना पात है, न बद्रुल हसन वलीमे का। —बहुत दिनो के बाद कटरा मीर बुलाकी म एक अच्छी बात हुई। देश और बिल्लो की शादी हो ही गयी—

आशाराम ने कलम रोक लिया। वह उस अच्छी बात का पूरा मजा लेना चाहता था।

देश और बिल्लो की शादी मे सारा कटरा मीर बुलाकी उमड आया था। बस महनाज़ नही आयी क्योकि जोखन मिया महल्ला यूथ काँग्रेस के अध्यक्ष हो गये थे और देश की शादी म शरीक होना राजनीतिक दृष्टिकोण से ठीक नहीं था क्योकि देश आशाराम का दोस्त था और आशाराम सरकार के दुश्मनो म गिना जाने लगा था। जोखन ने तो शम्मू मियाँ को भी यही मशविरा दिया कि वह भी इस शादी मे शरीक न हो क्योकि वह मोटर मिकेनिक्स यूनियन के अध्यक्ष हैं और देश उस यूनियन का विरोधी है। पर शम्मू मियाँ ने यह बात न मानी। देश से उनके तअल्लुकात वसे तो बाबू साहब के यहा खाना खान वाली रात ही गडबड हो गये थे। वैसे दोना मिलते उसी तरह पर अब शम्मू मियाँ देश के खाने म पहले की तरह शामिल न होत।—तो धीरे धीरे देश भी खिच गया। सलाम दुआ हो जाती पर दिलो के दरवाजे जसे बन्द हो गये थे। पर शहनाज़ को इन बातो से क्या मतलब था। वह माभा लायी। उसने ढोल पीटे। अपनी आवाज़ फँसायी। नेग पर खूब-खूब लडी और जब बिल्लो विदा होकर जाने लगी तो बाबुल गाते-गात महनाज़ रो पडी।—बाकी औरतें गाती रहीं—

दमडी का सेँनुर महग भइल बाबा,
चुनरी भइल अनमोल।
एही रे सेँनुरवा के कारन रे बाबा,

छुडल्यो मैं देस तुहार।
डालिया का वास पक्डे रोयें वीरन भैया
वहिना मोरी दूर देसी भई, परदेसी भई।
कौन लगयहु बजरिया मे आखिर वीरन के अँसुअन का मोल रे
बाबुल,
चुनरी भइल अनमोल—

जब यह गाना बना होगा तो "अनमोल" का मतलब कुछ और रहा होगा। पर अब "अनमोल" का मतलब सूखा, फीका और बेदद "अनमोल' ही है—चुनरी वाकई बहुत महगी हो गयी है—तमाम औरतें रो रही थीं और गा रही थी और देश दूल्हा बना हुआ था और बिल्लो दुल्हन और वह बिल्लो का अपने घर ले जा रहा था—अपने नये घर। वह अपनी नयी जिन्दगी अपने नये घर म शुरू करना चाहते थ।

वही लोग बराती थ। वही लोग घराती। पहलवान न चटी बिदा की और नये घर मे बहू उतारी।

घर म पहला कदम रखत ही बिल्लो ने चुपके म घूघट के अन्दर आख खोल दी। वह दखना चाहती थी कि उसका घर कसा लग रहा है। पतग के कागज की झण्डिया लहरा रही थी। आगन मे लगी हुई चमेली हवा म हाथापाई कर रही थी। या शायद सर उठा उठा कर आनेवाली नयी ज़िन्दगी को देखने की कोशिश कर रही थी।

शहनाज़ बिल्लो को घर के अकेल कमरे मे पहुचा गयी। कटरा मीर बुलाकी की तमाम जवान ब्याहता औरतें बिल्लो को तरह-तरह के मशविरे दे रही थी —फिर किसी बडी-बूढी, शायद सकीना बी न उन्हे डाट पिलायी और तमाम औरतें बिल्लो को अकेला छोडकर चली गयी और उस तक उसके दिल की धडकना की आवाज़ बिल्कुल साफ आने लगी जैस वह कही बिल्कुल पास ही धडक रहा हो।

"डर लगे तो हम्मे बुला लिहो।' बाहर स किसी की आवाज़ आयी और फिर एक कहक़हा गूजा जैसे कोई नारापाल छूट गया हो और हर तरफ उस कहकहे के फूल बिखर गय और कभी न शर्मानेवाली बिल्लो शर्मा गयी।

"अच्छा चल्त जा लोग।" किसी और की आवाज आयी, ढेर खी-खी करे की जरूरत ना है।"

कहकहा फिर पडा। फिर हँसने की आवाजें दूर होती गयी और फिर सन्नाटा हो गया और दरवाज़ा खुलने की आवाज़ आयी। यह आवाज भी इतन

पास से उभरी जसे दरवाजा आँगन के पास नहीं, ठीक उसके दिल के पास खुला हो।—फिर बदमा की आवाज़ आयी। इस आहट का वह खूब पहचानती थी। यह देश की चाप थी। उसन कनखिया स दरवाज़ की तरफ देखा। देश चौखट पर रुका हुआ उसे देख रहा था। उसन जल्दा स आर्खे बन्द कर ली।

सामन दीवार पर वह तस्वीर फ्रेम की हुई टँगी थी जो कई साल पहले फुटपाथ पर खिचवायी गयी थी और जिसम देश एक बडी सी कार ड्राइव कर रहा था और बिल्लो अकडी हुई उसके पास बैठी थी। उसने सास इस डर स रोक रखला था कि कही तस्वीर बिगड न जाये।

देश अन्दर आ गया। घबराया हुआ वह भी था। उसने कमरे का दरवाज़ा धीरे से बन्द करना चाहा पर सफल न हुआ। दरवाज़ा धड से बन्द हुआ और उसने घबराकर बिल्लो को देखा। उस यकीन था कि बिल्लो ज़रूर चिल्लायगी कि नया दरवाजा तोडना है का—पर बिल्लो न तो कुछ भी नहीं कहा तो उसन अपना गला साफ किया कि बिल्लो शायद अब मुडे। पर बिल्लो का सर तो कुछ और झुक गया। तो उसे हसी आ गयी, उसे अपनी इस हँसी की आवाज़ बडी अजीब लगी। आज तक वह इस तरह नहीं हँसा था।—वह खुद अपनी हँसी की आवाज़ से झेंप गया। उसन फिर बिल्लो की तरफ देखा। वह उसी तरह आखें बन्द किये और सर नहुडाय बैठी हुई थी। वह तो चकरा गया कि बिल्लो का हो क्या गया है। आखिर वह पलग के पास पहुच गया और एक बार फिर गला साफ करने के बाद बोला। 'मतलब ई कि तुम आज न हमरी पत्नी और हम तुम्हारे पति।—" बिल्लो का सर और झुक गया। उसन झुक-कर बिल्लो का मुह देखा और बोला "तू तो आज कल स भी जियादा खूब-सूरत लग रही हो।' बिल्लो फिर भी कुछ नहीं बोली तो उसन हिम्मत करके उसकी ठोडी उठायी। बिल्लो की आखें और सख्ती स बन्द हो गयी और उसका सास तेज चलन लगा। वह बोला 'पहिले तो हमरी हिम्मते ना होती रही भीतर आय की। बाहर एतनी भीड रही कि हम का बतायें। सब के सामन कयसे आ जाते।—मतलब ई कि लोग का सोचत—सब जने को पता है कि आज हमरा तोरा बिआह हो गया है। सबको ईहा मालुम कि तुम इस कोठरी म मौजूद हो। एक एक पाव मन मन भर का हो गया। पसीना छूट गया। ते पर लगे सब लोग हँसे। तो हम घबरा के अन्दर चल आय।—ऐ भाई दुलहा बन से हम बदल गये हैं का। तुम हमको पहचान ना रही हो। अर सो साफ सुन ल्यो कि ना पहचानोगी तो जो छ रुपया अस्सी पयसा धुलाई का बाकी है हम मार बैयठेंगे।

बिल्लो ने एकदम मे आखें खोल दी और उसकी तरफ देखत हुए बोली "छ रुपया अस्सी पैंयसा कैंयसे ? नौ रुपया पतिस पैंयसा बाकी है। परसा दू ठो बुसट और पतलूम ना धुलवाये रह्यो अरजण्ट ?"

"लूट पड गयी है का। दू बुसट, दू पैंट की धुलाई दू रुपया पैतिस पयसा ? हम आज स ना धुलवायेंगे अपना कपडा जनता लाण्डरी म।"

"तो और कहा धुलवायेंगे ?'

"नयी दुलहिन हो के पटर पटर वालत सरम नही आती। ढेर टें टें करेगी तो अभई ले लेंग एक ठो चुम्मा।'

बिल्लो का चेहरा शम से लाल हो गया और उसकी बडी बडी भूरी आखें झुक गयी। देश न उसके गले मे बाह डाल दी और बोला, ' कितन दिन इंतिज़ार करना पडा है इस दिन का। छुए तक ना देती रही तुम। जुदाई की तडपन सूद समेत वसूल करे का जमाना आ गया।—चच, अरे आख खोलके देख तो ले कि दुलहा बने हुए हम कयसे लग रह। खाल न। ई डबल सीसे मे आज हम रात भर अपना मुह देखे वाले हैं।"

बिल्लो न आखें खोल दी और देश उस डबल शीशे म अपनी और अपने प्यार की और अपन भविष्य की सूरत देखन म लग गया।

कटरा वी आजू

होली वा िन था।

कटरा मीर बुलाकी भी सात रगा मे शराबोर इन्द्रधनुष वी तरह फला हुआ था। बिल्ला नाच रही थी। िरा गालियाँ बक रहा था कि होली के िन गाली बकने का कोई बुरा नही मानता।—

वह जुम का दिन भी था।

मोलवी खैरानी और राम्मू मियाँ इधर उधर देखकर अपने घरो म निकले। नाटा था।

"पिछवाडवाली गला से निकल लिया जाय। शम्मू मियाँ न कहा।

दोना ब पाव चोरा वी तरह पिछवाडेवाली गली की तरफ बढ। देश वगरा तो इस ताक ही न थे। सब निकल आये। कुछ कटरा मीर बुलाकी के लोग थे और कुछ कटरा मीर बुलाकी के लोग नही थ। मोलवी खैरानी और शम्मू मिया ने घिघियाकर पहलवान की तरफ देखा।

"बहुत च ट बनत रहे।"

'जुम्मे के मारे लुका गये रह।' शम्मू मियाँ ने कहा, "नही तो का कभई ऐयसा भया है कि हम होली न खेलें। अबइ रग खेलेंगे तो फिर नहाए को पडेगा। जुम्मे का वखत निकल जायेगा।

'अरे मियाँ लोग को तो कोइ बहाना चाहिये होली न खेने का।' किसी बाहरवाले ने कहा।

पहलवान ने उमे वह लप्पड दिया कि वह लुढकनियाँ खाकर दूर जा गिरा।

"ई कटरा मीर बुलाकी है।" पहलवान ने कहा, "खबरदार जो इहाँ हिंदू मुसलमान का चक्कर चलाया। ई सब करना है तो अतरसुइया जाव या अटाले का चक्कर लगाव।"

वह बाहर वाला हाथ पाव का अच्छा था। उठा।

"तारी तो हम मा—' देश ने उस इससे ज्यादा न कहने दिया। वह उमे मारने लगा। शम्सू मिया ने देश का हाथ पकड लिया, 'अरे पागल! पागल हो गया है। सरम न आती आज तहवार के दिन दगा करते।"

देश रुक गया।

"अरे बेटा देश', मोलवी साहब ने कहा जिन्होंने व दाग सफेद खादी का कुरता-पाजामा पहन रक्खा था, 'रग से होली खेलो बेटा। खून से होली खेलने म क्या मजा है। चलो हम जुमे की नमाज कजा कर लेंगे।'

"कजा काहे कर ओगे जुम्मे की निमाज। कोई मजाक है।" पहलवान ने कहा "और ई साला होता कौन है हमरे महल्ले की निमाज कजा करवाये वाला? निकल हमर महल्ले से।"

'काहे को निकलें।' बाहरवाले ने कहा, "महल्ला कोई के बाप का ना है। मिया लोग का जुम्मा तो १५ अगस्त सन ४७ को चला गया पाकिस्तान। होली से परहेज है तो इहाँ रह की जरूरत का है।"

"ए भरभितने।" पहलवान ने कहा 'शम्सू मिया इ महल्ले मे चव्वन बरस से रह रह। एतनी तो ग्रभी तोर बाप राधेश्याम की उमिर ना होगी।'

"देखो पहलवान बाप का नाम मत लो।" उसने कहा।

'काह न लें व?" पहलवान न पूछा "तोरा नाम अवतार। तोरे बाप का नाम राधेश्याम। कह त दादा का नाम भी बता दें लगे हाथ।" पहलवान ने पच से जमीन पर थूक दिया। फिर वह देश की तरफ मुडे, 'देखो जी। ऊनियन पूनियन तो हम जान ना। शम्सू मिया और मोल्वी साहब को जुम्मा महजिद तक पहुचा आव।"

देश सर खुजलान लगा। उदास भी हो गया। क्योंकि आज उसे पहली बार पता चला कि उस्ताद और उसके बीच कितनी दूरी आ गयी है। बाबू साहब की दावतवाली रात और होली के उस दिन मे कोई दूरी नहीं थी—मुश्किल से ढाई तीन महीन थे उस रात और इस दिन के बीच मे। पर इन ढाई तीन महीनो न जाने क्या कर दिया था। जसे दानो बदलकर कोई और हो गय थे। जस वह दोना एक दूसर का जानते पहचानते ही नहीं थे।

शम्सू मिया न दावतवाली वह रात आखा म काट दी थी।

अन्दर सब सो चुके थे। शम्सू मियां चुपचाप अपने पुराने लिहाफ में घुस गये। इस लिहाफ की रुई तीन बार धुनवायी जा चुकी थी।—परन्तु उस ओढ़ने से यह तसकीन जरूर हो जाती थी कि बदन पर लिहाफ है और इस खयाल से जाड़ा कुछ कम लगने लगता था। सकीना की फसां और उम्मन का लिहाफ की तरह ओढ लिया करती थी इसलिए उनकी रातें उतनी ठण्डी नहीं होती थीं। महनाज के पास वह लिहाफ चल रहा था जो बेवा होने से दो महीने पहले बना था इसलिए लगभग नया था और उसमें उसके पति की महक सी थी। तो वह उस लिहाफ से लिपटी हुई गहरी नींद सो रही थी। शहनाज सिकुड़ी हुई थी और शायद जाग रही थी—या शायद सो रही थी।

जाड़ा ज्यादा होता तो शम्सू मियां अपना आर्मी वाला कोट उतारे बिना ही लेट लिया करते थे। उस रात भी उन्होंने यही किया पर वह रात पिछली रातों से ज्यादा सर्द थी और उनकी आत्मा में एक नयी सर्दी भी घुसी जा रही थी। यह सर्दी थी इस खयाल की कि देश ने, जिसे वह अब्दुल हक से कम नहीं चाहते थे, आज पहली बार उनकी बात काटी थी और जिस बात की तरफ से आज तक वह नजर चुराते चले आ रहे थे वह बात देश ने उनकी आंखों में शहतीर की तरह डाल दी थी और वह बात यह थी कि वह बड़े घटिया, टुच्चे और जलील आदमी हैं। वह "जेबखर्च' के लालच में उन तमाम मिकनिकों का हक बेचने पर तैयार हो गये थे जिन्हें उन्होंने अपने अब्दुल हक के साथ कारों की बारीकियां बतायी थीं और जो उन्हें उस्ताद पुकारा करते थे।

ऐसा नहीं था कि शम्सू मियां यह समझे ही न हों कि बाबू साहब कह क्या रहे थे और चाहते क्या थे। वह चाहते थे कि शम्सू मियां और देश अपने साथियों से गद्दारी करें। शम्सू मियां यह बात फौरन समझ गये थे। देश भी समझ गया था। फर्क यह हुआ कि देश ने अपने आपको बचने से इनकार कर दिया और शम्सू मियां अपने आपको बचने पर तैयार हो गये।

तो नींद कम आती। आज रात वह अपने बेटे अब्दुल हक से जैसे दोबारा बिछड़ गये थे।—और सारा घर उनके इस दर्द से बेखबर सो रहा था। ना काफी लिहाफों में सिकुड़ी मार सो रहा था और जाड़ों के खत्म होने का सपना देख रहा था।

शम्सू मियां करवटें बदलते रहे। नींद नहीं आयी। उन्होंने एक बीड़ी सुलगा ली। बीड़ी खत्म हो गयी। नींद नहीं आयी। एकदम से चाय पीने को जी चाहने लगा। तो वह उठे और दबे पांव दालान से आंगन में उतर गये। ओलती से कुहरा टपक रहा था। वह अपने हाथों को तेजी से मलते हुए और मुंह

से तरह-तरह की भिंची हुई आवाजें निकालते बावरचीखान की तरफ लपक गये। वह जानते थे कि चूल्ह में एक उपला दबा होगा। तो उपले जोडकर उन्होंने वह दबा हुआ उपला निकाला। जलता हुआ एक टुकडा तोडा और चाय के लिए आग बनाने लगे।

'हम्म काह ना जगा लिया।" शहनाज आ गयी। अपनी फटी हुई दुलाई ओढे हुए।

"हम सोचा कि तोरी नीद काहे को खराब करें।' शम्सू मिया ने कहा।

शहनाज उन्हे सरकाती हुई चूल्ह के पास बैठ गयी। बोली, "चूल्हा जलाना मरदन का काम ना है।"

शम्सू मियाँ कुछ नही बोले।

शहनाज फुकनी लेकर फूकें मारन लगी और छोटा सा बावरचीखाना उपलो के गाढे धुएँ स भर गया। शम्सू मिया का दम घुटने लगा पर बावरचीखाने मे आग सुलग रही थी। बाहर दात निपोडे जाडे की रात खडी थी।

बावरचीखाने म सन्नाटा हो गया।

शहनाज ने अलमूनियम की पतीली म पानी चढा दिया और तब उसने देखा कि बडा अँधेरा है। तो उठकर उसन सुइच नीचे किया और जीरो पॉवर का बल्ब जल गया जिसस अँधेरे म कोई खास कमी नही हुइ पर लगा कि जैस उजाला हो गया है।

'काहे को बुलाइन रहा बाबू साहब ?" शहनाज न पूछा।

"तन्खवाह बढाय की बात करे।'

शहनाज समझी कि शम्सू मिया तन्ज कर रह हैं।

'ना बताना चाह रहें तो मत बताइये।'

"अल्ला कसम बटा।"

"इ बात करे के वास्त खान की दावत की क्या जरूरत थी।' शहनाज ठेठ खडी बोली में आ गयी क्याकि उस याद आ गया कि कुछ दिन बाद वह हाई स्कूल का इमतिहान देने वाली है और उसकी गिनती पढे लिखा म होने लगेगी।

"एही सोच के तो देश छटक के अलग खडा हो गया कि दाल मे कुछ काला जरूर है।' शम्सू मिया ने कहा, मुदा हम मान गय आर हम इ कहित हैं कि भाई मान लिया तो कौन कयामत आ गयी कि देश फूल गये हमसे ?"

शहनाज कुछ नही बोली।

शम्सू मियाँ ने पल भर उसके बोलने का इन्तिजार करने के बाद खुद बालना शुरू कर दिया, 'ऊ तो छुट्टट साड है। न आगे नाथ, न पीछे पगहा। पहल-

वान की दुकान चल रही। जिल्लो की लाण्डरी चल रही। तीन पट साथ बार और तीन जाडा हाथ काम कर बाने। मुदा हम का करें। कमाय वाल अकेले हम। एतना ता जुड ना रहा कि दू जोडा कपडा और दू-चार नग ताबे का बरतन देके तुरें विदा कर दें। अरडे ऊ जे के सिर पर काई जिम्मेदारी न होय।—" वह चुप हो गय।

शहनाज़ न पतीली म चाय की पत्ती गुड और चुटकी-भर नमक डाल के पतीली को फिर ढक दिया। फिर-वह अपने लिए तामचीनी का एक प्याला उठा लायी जिसकी तामचीनी जगह जगह म उखडी हुई थी और उनके लिए वह बेकुण्डे वाली प्याली म चाय उनान लगी। चाय की प्याली उसन चुपचाप बाप के सामने सरका दी। शम्मू मिया न पहली चुसकी ली।

"तोरा इमतहान कब म है ? '

"मार्च म होगा है।'

फिर सन्नाटा।

'भैया से ऊ कहिन हैं कि नतीजा निकने के बाद पढाय की नौकरी मिल सकती है।"

"मुदा ऊ ई कयसे मान लिहिन कि हम तूह नौकरी करे देंगे ?" शम्मू ने सवाल किया और इस सवाल का शहनाज़ के पास कोई जवाब नहीं था। वह अपने पाँव के अगूठे के नाखन का खुरचने लगी। शम्मू मियाँ ने कहा, 'विआह के बाद जा जी चाह करवा लें। मुला विआह से पहले हमरी बेटी नौकरी नहीं कर सकती। साफ बात है।'

शहनाज़ फिर चुप हा रही।

"तनी सी चाय और द दो।' उन्होंने बकुण्डेवाली प्याली शहनाज की तरफ़ बढायी। उसने उसम पतीली से और चाय उँडल दी और शम्मू मिया चाय की चुसकियाँ लेन लगे।

उधर दालान म सकीना पेशाब के लिए उठी। बावरचीखाने म रोशनी देखकर उन्हें आश्चय हुआ। पेशाब करके वह सीधी बावरचीखाने मे आयी।

'बाप बेटी से क्या मिसकोट हो रहा है एतनी रात गये ?" सकीना ने सवाल किया।

जवाब देने की जगह शहनाज़ अपनी माँ के लिए भी तामचीनी के प्याले मे चाय उँडेलने लगी और शम्मू मिया बडी मेहनत से एक बीडी सुलगाने मे लग गये। सकीना प्याला थामकर बठ गयी। गम गम प्याला उसे अपने ठण्डे-ठण्डे हाथो मे बडा अच्छा लगा। अपने नथना से निकलती हुई भाप को उसने बडी दिलचस्पी से

देखना शुरु किया क्योंकि इतना तो वह समझ ही गयी थी कि यह चाय की पार्टी यू ही नहीं चल रही है।

"हम सोच रहे कि' शम्मू मिया ने कहना शुरु किया "जोखन से महनाज का निकाह पढा दें।"

"बिलकुले सठिया गये हो का ?" सकीना ने पूछा और शम्सू मिया ने एकरार मे सर हिला दिया और सकीना लाजवाब हो गयी और शहनाज रोने लगी। क्योंकि दो बच्चो की मा होने का मतलब यह नही था कि महनाज बूढी हो गयी है। क्योंकि उसके मा बाप जोखन से महनाज की शादी इसलिए नही कर रहे थे कि वह इसे मुनासिब समझते थे बल्कि यह शादी वह इसलिए करना चाहते थे कि महनाज और उसकी दोनो बच्चियां, फत्तो और उम्मन को दो वक्त का खाना खिलाना उनके लिए सम्भव नही था।—यह बडा बेदद एहसास था।

"तोरी मरजी।" सकीना ने कहा 'देस से भी पूछ ल्यो।"

"देस से काहे को पूछ लें ?" शम्सू मिया हत्थे म उखड गये। "ऊ कौन है। काजी कि मुफ्ती ? वह वा— उन्ह अपनी बीवी और बेटी से आखें चुरा कर भाग जाने का मौका मिल गया और वह भागकर अपने बिस्तर मे जा घुसे और बावरचीखाने मे मा बेटी के साथ उनके दिल का सन्नाटा और ठण्डी बेदद रात का बमुरव्वत अंधेरा और जीरो पॉवर का एक जलता हुआ बल्ब और गुड की ठण्डी होती हुई चाय का प्याला रह गया।

दूसरे दिन जोखन से महनाज की शादी भी तै हो गयी और आल इण्डिया मोटर गरेज वकज यूनियन भी बन गयी। शम्मू मिया नेशनल एडहाक कमेटी के अध्यक्ष बना दिय गये और तै हुआ कि अगस्त सितम्बर में पहला अखिल भारतीय सम्मेलन इलाहाबाद ही मे बुलाया जाये। बाबू साहब ने कहा कि यदि यह सम्मेलन अक्तूबर की बीस को किया जाये तो प्रतिनिधियो के रहने-सहने और खाने पीने का खच नैशनल गैरेज उठा लेगा।

बाबू साहब का प्रोग्राम यह था कि उनके स्वर्गीय पिता श्री शिवशकर पाण्डेय की पच्चीसवी बरसी के अवसर पर यूनियन का उदघाटन हो और उसमे श्री सजय गांधी चीफ गेस्ट होकर आयें। जाहिर है कि कम-से कम एक बार तो उन्ह बाबू साहब के घर आना ही पडेगा तो उसी बहाने 'पण्डित शिवशकर पाण्डेय मार्ग' की मरम्मत भी हो जायेगी और वह कुछ चौडी भी कर ली जायेगी ताकि श्री सजय गाधी की सवारी ठीक ठाक से 'शकर निवास' तक जा सके।

देश से दोनो बातो मे राय नही ली गयी। यूनियन के मामले मे उसस राय

वहीं ली गयी तो ज्यादा दुख नहीं हुआ। पर जब शम्सू मियाँ ने उससे पूछे बिना जोखन से महनाज की शादी तै कर दी तो उसे बडा दुख हुआ।

देखो बेटा बात यह है" इतवारी बाबा ने कहा 'कि जो काम मजबूरी से किया जाता है ओ मे आदमी अपने लोगन से ऐसे ही आख चुराता है। तुम उनके अपन हो इस वास्ते तुमसे नही पूछा।'

"और का।" पहलवान ने कहा। हम ई नही मान सकित हैं कि इ रिस्ता ऊ खुसी से किहिन हागा।"

"खुसी चाहे बेखुसी" देश ने कहा, 'हम्मे उस्ताद से ई उम्मीद ना रही।"

और उसी दिन से उसने शम्सू मिया से कतराना शुरू कर दिया। खुद शम्सू मिया भी उससे निगाहें बचाकर गुजरने लगे। पर जब शम्सू मिया न होते तो वह उसी तरह दिन में एक बार उनके घर जाता। सकीना से बातें करता। शहनाज से छेडछाड करता। उसके कोसने सुनता और यह पता ही नहीं चलने देता कि शम्सू मिया से उसे कोई शिकायत है।

जोखन बडे धूम की बरात लाये। आगे-आगे सेहरा बाधे हुए जोखन किसी ताँगे के घोडे पर सवार। पीछे पीछे कागज की फुलवारी। बराती। बाजा-गाजा। डाल वरी के ख्वान—बरात के साथ एक लौण्डे का तायफा। लोग उससे छेड छाड करते हुए। वह लोगो को तुर्की ब-तुर्की जवाब देता हुआ।

शम्सू मिया के घर के सामने तम्बू तना हुआ था। फत्तो और उम्मन अच्छे कपडे पहन दरी के फर्श पर कलाबाजियाँ खा रही थीं। बाबू साहब मौजूद थे और उनके आ जाने से शम्सू मियाँ का सर उठा हुआ था। घर के अन्दर औरतें गालियां गा रही थी—

सुन र बने तोरी बडकी बहिनिया
कोठे पे बैठी है पहिने नथुनिया
प्यार देती है सबको उधार चने के खेत म—

कि बरात आ गयी।

"अरे ऐ उमनिया। फत्तो चीखी, 'तनी जोखन नाना को देख रे। कयसे लग रहे।"

तमाम लोग जोर से हँस पडे और जोखन दिल ही दिल मे फत्तो की माँ बहन एक करते हुए किराये पर लायी हुई मसनद पर तकिये से टिककर बैठ गये और बरात के साथ आयी हुई आतशबाज़ी छोडी जाने लगी और कटरा मीर बुलाकी में बहुत दिनो के बाद फूल बरसे और आतशबाज़ी के फूलो को देखकर कटरे के बच्चे तालियाँ बजाने लगे और बूढो की आखो मे बचपन की चमक आ

गयी।

बाबू साहब तो खैर बडे आदमियो की तरह हुक्म चला रहे थे पर वास्तव मे बरात के स्वागत और बरातियो की देख भाल का सारा काम पहलवान कर रहे थे। बाबू साहब तो 'ऐ। सुनो' 'अरे भई जरा उधर भी देख लो—" के सिवा बस यह काम कर रहे थ कि दिल्ली से इण्डस्ट्री के मन्त्री और आल इण्डिया नैशनल ट्रेड यूनियन के अध्यक्ष के भेजे हुए तारो का ज़िक्र कर रहे थे कि ज्यादा से ज्यादा लोग सुन लें और यह देख ल कि उनके साथ रहने म कित्ती भलाई है वरना कहा एक जाहिल, बूढा मोटर मिकनिक और कहा केन्द्रीय मन्त्री। मन्त्री ने महनाज़ के लिए अपनी शुभकामनाएँ और शम्सू मिया के लिए मुबारकी भेजी थी।

कटरा मीर बुलाकी के इतिहास मे पहली बार डाकिया उसकी सीमाओ मे किसी मन्त्री का तार लेकर आया था और कटरे के सर पर जैसे तार के गुलाबी कागज़ का साफा बँध गया था और कटरा फूला नही समा रहा था और तार आन की खुशी म यह भी भूल गया था कि महनाज की शादी उस जोखन दुकानदार से हो रही है जिसे महनाज की बेटिया नाना पुकारती हैं।

बस देश नही था।

देश बुलाया नही गया था।

शम्सू मिया का कहना था कि जो आज अब्दुल हक होते तो का हम उनह छपवा के नवद भेजत। और देश कहना था कि जो अब्दुल हक होते ता क्या शम्सू मिया अब्दुल हक से राय किये बिना महनाज़ का रिश्ता तै कर देत।

दोनो ही सच बाल रहे थे। सच मे यही तो खराबी है कि दाहने मे बायें वाला भी सच है और ऊपर स नीचेवाला भी।—तो देश और शम्सू दोनो ही अपने-अपने निजी सचा की ढाल तलवार लगाये पतरे बदल रह थे। दिल दोनो ही के दुखे हुए थे। जाहिर दाना ही नही कर रह थ।

"भैया हम तो जरूर जायेंगे। पहलवान ने कहा।

'जाना ही चहिए। बिल्लो ने कहा।

"हम कोई का राख रह ?" देश ने कहा।

चुनाचे पहले बिल्लो गयी कि उस शादी के बहुत गीत याद थे। फिर पहलवान गये और देश घर म अकेला रह गया।

शम्सू मिया ने बाबूराम का बुलाया था। आशाराम को नही बुलाया था। बाबू सहाब तो चाहत थे कि बाबूराम भी न बुलाय जायें पर इस पर शम्सू तैयार न हुए। तो बाबूराम शादी मे मौजूद थ और आशाराम को चूकि मह-

नाज की शादी में न जाना बहुत अजीब लग रहा था इसलिए वह देश के पास आ गया। और आतशबाजी और बिजली की झालर की रोशनी से हटकर कान में जनेव लपेटे पेशाब करते हुए जगदम्बा प्रसाद ने आशाराम को "चुपके से" 'सबकी आंख बचाकर' "गई रात को" देश के पास जाते देख लिया।

अच्छे पुलिसवाला की पहचान यह है कि जरूरत के वक्त वह मुनासिब यादें जेब में हाथ डालकर तड से निकाल लेता है। मिसाल के तौर पर यदि बाबू जगदम्बा प्रसाद हेड कांस्टेबिल ने उस रात आशाराम को देश के घर जाते न देख लिया होता तो शायद यह कहानी किसी और रास्ते पर गयी होती।—पर उस बात का जिक्र आगे चलकर होने ही वाला है इसलिए यहाँ इतना ही बताने पर बस करता हूं कि आशाराम देश के घर गया और जगदम्बा प्रसाद ने उसे जाते देख लिया और आशाराम ने, हालांकि, जगदम्बा प्रसाद को पेशाब करते देख लिया था पर उसने इस बात को कोई खास अहमियत न दिया।

क्या भइ' आशाराम ने कहा, तुम्हें भी नहीं बुलाया शम्सू मियां ने?"

'अरे तो कौन हम महनाज की शादी का पुलाव गोस खाय बिना दुबले हुए जा रहे।' देश ने कहा।

आशाराम हँस पड़ा। उसे कभी-कभार अपने से सात आठ साल बड़ा यह देश बिल्कुल बच्चा सा लगता था। किसी बात पर रूठा हुआ। फूला हुआ। ठना हुआ—और उन क्षणों में देश के लिए उसके प्यार का रंग कुछ और गहरा हो जाया करता था।

'देखो देश, राजनीति—"

"राजनीत गयी अपनी मां के भौ—' वह रुक गया। "राजनीति को गलियाये से का फायदा। ऊ न हमरी उस्ताद है और न हमरे दोस अब्दुल हक की बाप। पर तुम्हीं बताव आसा बाबू का उस्ताद का इ करना चहिए था?'

'सबके गले में अपनी अपनी मजबूरियों की फांसी होती है देश।" आशाराम बोला।

'आपके गले में कौन फांसी है?' देश ने पूछा।

'तुम्हारे गले में यह फांसी नहीं तो तुम उस यूनियन में शामिल क्यों नहीं हुए?'

'इ तो कोई बात ना हुई।' देश बोला, "हमरा दिक्के को जी ना चाहा। देखिए आसा बाबू हम न कांगरेसी हैं न कमनिस्ट न सोसलिस्ट। हम खाली पूरी दस हैं। और टिकाऊ ना है। बात यही खतम। बाबू साहेब जेबखर्च की

बात न निकालते ऊ रात तो हम साइद चले ही गये हात उनकी यूनियन मे। पर एका मतलब ई विधिर स निकल आया कि उस्ताद हम्मे हमरी बहिन के बिआह मे न बुलायें ?"

आशाराम के पास इस सवाल का कोई जवाब नही था।

तो दोना चुप हा गये और महनाज के ब्याह के गीता की आवाज कुछ और साफ हो गयी। वहा काफी देर सन्नाटा रहा और काफी देर तक गानों की आवाज आती रही। फिर शायद लौण्डे का नाच शुरू हो गया। वह गा रहा था

रसगुल्ला घुमाय के मार दियो रे।
पहिला रसगुल्ला मैंने ससुरजी को मारा।
पहिला रसगुल्ला मैंने ससुरजी का मारा।
उनका बूढा समझ के छोड दियो र।
रसगुल्ला घुमाय के मार दिया र—

आशाराम उदास हा गया। घुमा के मारन के लिए रसगुल्ला है कहा मह-नाज ? रसगुल्ला है कहा ? शक्कर सात रुपये किला। माश की दाल चार रुपये किलो। दूध तीन रुपये किला।—ससुरजी का मारन के लिए रसगुल्लो का बन्दोबस्त हा ही नही सकता—ता उसका जी उचाट हा गया। उसने देश की तरफ दखा। वह छोटी छाटी खुशिया पर बाजार के भाव क लगाये हुए घाव दख सकता था पर बनिया का गाली देकर रह जाता था। उम यह पता नही था कि बनिय खुद उसी बाजार मे कुकरमुत्ता की तरह उगते है जिसमे भाव चढते ह और आदमी की जरूरत का पत्थर गले मे डाले उसकी शिराफत नग पाव बेबसी से इधर उधर देखती फिरती है कि शायद कहीं सस्ती की छाव का छोटा सा टुकडा मिल जाय।

देश की राजनीति उसका अनुभव थी, उसकी विचारधारा नही थी बाबू साहब और मिसेज गाधी और मरारजी भाई और अटल बिहारी वाजपयी और जयप्रकाश नारायण की तरह उमका पशा भी नही थी। और यही देश की आसानी भी थी और उसकी दुशवारी भी।

सोचना टढा काम है।

और दश को पता ही नही था कि आशाराम के सीने मे कैसा तूफान आया हुआ है।

अच्छा भई मैं चल दिया।" आशाराम खडा हो गया।

बठिये ना।" देश न कहा, हालाकि वह चाहता यही था कि आशाराम चला जाये क्याकि वह थोडी देर अपने साथ अकेला रहना चाहता था।

नही।" आशाराम ने कहा। "नींद आ रही है।"

देश ने कुछ नही कहा। आशाराम चला गया। देश अपने साथ अकेला रह गया। वह दरवाजा बन्द करने के लिए उठा। सामने आशाराम अपने ओवर कोट के कालर उठाए हुए और सर्दी से बदन चुराये चला जा रहा था।

आशाराम के सामने उजाला था। तम्बू के नीचे सारा कटरा जमा था और लौण्डे का नाच देख रहा था और उस पर गन्दे जुमले और फबतियां उछाल रहा था और कहकहे लगा रहा था और अपनी जाघें खुजला रहा था और औरतें इधर उधर से झांक रही थी और एक दूसरे को कुहनिया कुहनिया कर भिची भिची हँसी हँस रही थी और बच्चे बड़ो की निगाह बचाकर एक दूसरे को उँगलियां रहे थे

'अरे आशा बाबू आप शादी में नही आ रहे है क्या ?" मास्टर बद्रुल हसन नायाब मछली शहरी एक दम से जो अँधेरे से बाहर आये तो आशाराम चिहुँक के एक कदम पीछे हट गया।

"शम्सू मियां ने मुझे और देश को बुलाया नही।" आशाराम ने सादगी से कहा।

भूल गये होगे बिचारे।'

"भूलने के लिए हम ही दो लोग रह गये थे ?'

नायाब मछली शहरी के पास इस सवाल का जवाब नहीं था।

'अपनी शादी में तुम तो बुलाना नही भूल जावोगे ?" आशाराम ने पूछा।

'अरे यह क्या कह रहे है आप।' बद्रुल ने खीसें निकाल दी। 'मैंने तो मेहमानो की फेहरिस्त पहले से तयार कर ली है इसी मारे कि बाद में शर्मिन्दगी न हो।

'कब हो रही है तुम्हारी शादी ?'

'यह बताना तो मुशकिल है।" बद्रुल ने कहा। 'करने को तो अभी महराज बाजी के निकाह के फर्श पर अपना निकाह भी पढवा लें। पर अब्बा कहते हैं कि वलीमा वाजिब है। और वलीमे का जुगाड बैठ नही रहा है। सुन रहे हैं कि मिसेज गांधी टीचरो की तनख्वाह बढवानेवाली हैं। एक बीस रुपया भी बढ जाये तो सब मुशकिलें दूर हो जायें। दो तीन टियुशन भी ले लिया है।

'एक बात का खयाल रखना।" आशाराम ने कहा। अपनी शादी में देश को बुलाना न भूलना '

अरे यह क्या कह रहे है आप।' बद्रुल फर्याद करने लगा। उनके बिना

तो मेरी शादी हो ही नहीं सकती। उन्हीं की वजह से तो हो रही है शादी नहीं तो मैं शहनाज़ को गालिब मीर पढ़ाता रह गया होता।' आशाराम मुस्कुराता रहा। बद्रुल को ख्याल आया कि शायद वह पूरी बात नहीं कह सका इसलिए बोला। 'शहनाज़ ने तो घर म बडा बवाल मचाया कि उसके भैया नहीं आयेंगे तो वह भी शादी म शरीक नहीं होगी। इस पर शम्सू चा ने उसे एक लप्पड भी मार दिया। वह '

तुम तो मिया वसीम का बन्दोबस्त करके शादी कर ही डाला अब।' आशाराम न बात काटी। क्योंकि वह इस तफसील मे पडना नहीं चाहता था कि शहनाज़ के गाल पर शम्सू मिया की उँगलियो के निशान उभरे कि नहीं उभरे।

आशाराम यह बात समझ सकता था कि शम्सू मिया देश स क्या खफा है। वह उसम खफा नहीं थे। वह उसस झेंपे हुए थे क्योंकि खुद उनके सिवा यह बात केवल देश जानता था कि वह बाबू गौरी शकर पाण्डेय, एम पी, के हाथ बिक्कर मोटर वकर्ज यूनियन के अध्यक्ष बने हैं।

आशाराम यह भी जानता था कि आदमी, मजबूरी हो तो, बिक भी जाता है पर अपने बिकने से खुश कभी नहीं होता।

पर बद्रुल स रुखसत होकर जब वह अपने घर की तरफ चला तो उसे लगा कि उसके मुँह का मज़ा बिल्कुल बिगड गया है। उसे रात भी कडवी लग रही थी। एक सिग्रेट जलाकर वह तेज-तेज कदमो से अपने घर की तरफ चल पडा। सामन स जसे अँधेरे की भीड उसके बदन से टकराती शायद शम्सू मियाँ के घर की तरफ भागी जा रही थी—शहनाज की शादी म शरीक होने के लिए।

रामदयी ने दरवाजा खोला तो वह आशाराम की सूरत देखकर धक से रह गयी।

का बात है।" रामदयी ने कहा—पूछा नहीं, कहा। उसके लहजे मे सवाल नहीं था। वह आशाराम को बता रही थी कि वह परेशान है और मा ने उसकी परेशानी देख ली है इसलिए झूठ बोलने की जरूरत नहीं है।

रामदयी दादा-पोते के बीच बढते हुए खिचाव की दलदल मे फँस गयी थी और निकलने की कोई सूरत दिखायी नहीं द रही थी।—आशाराम इकलौता बेटा था। रामदयी के पास आशाराम के बारे मे हजारो सपने थे। छोटे सपने। बडे सपने। रगीन सपने। नक्शीन सपने कि आशाराम के पास एक बहुत बडी मोटर है—शहर मे चलनेवाली बसो से भी बडी मोटर जिसे खुद आशाराम चला रहा है। और पीछे रामदयी बैठी है अपन पोत दयाराम को गोद मे लिये

हुए। पोते को दात आ रहे हैं। उसने तो बहुत कहा कि इस हालत मे सुहागा लगाते है पर दयाराम की माँ यानी उसकी बहू डाक्टरनी है। उसकी घरेलू बातें सुनकर हमेशा हँस देती है कि मम्मी आप किस जमाने की बातें करती हैं! सुहागे से क्या होनेवाला है—रामदयी के सपना की बहू रामदयी की गँवारू भाषा नही बोला करती थी। वह तो श्रीमती गाधी की तरह खडी भाषा बोलती थी और सूरत म वह श्रीमती गांधी से कही ज्यादा अच्छी हुआ करती थी। बस उसके रंग के बारे मे वह कोई फैसला नही कर पाती थी। वह खुद तो यह चाहती थी कि उसकी बहू खूब गोरी चिट्टी हो पर आशाराम को सांवला रंग पसन्द था। वह लड़की प्रेमानारायण जो उसके साथ पढा करती थी कैसी सावली सलोनी थी। गडा नाक नक्श बडी-बडी गहरी भूरी आँखें। नमकीन सावला रंग—प्रेमा एक गुजरी हुई बात हो चुकी थी पर रामदयी उसे अब तक भूल न पायी थी। और जब रामदयी नही भूल पायी तो भला आशाराम कैसे भूलता।

प्रेमा अब भी पुरवाई की तरह उसके दिल के अन्दर बाहर चलती रहती थी और उसके दर्दों को जगाती रहती थी।

प्रेमानारायण बी० ए० म उसके साथ थी। पर आशाराम स्टूडेंट फेडरेशन मे चला गया और प्रेमा स्टूडेंट कांग्रेस म—प्रेम और अलगाव दोनो साथ साथ बढे। वह कहती थी कम्युनिस्ट रूस और चीन के दलाल हैं। यह कहता था कांग्रेसी अमरीका के हाथ बिके हुए है। वह कहती थी पाकिस्तान को अमरीका उकसा रहा है और चीन उसकी हिन्दुस्तान दुश्मनी को हवा दे रहा है। वह पूछता था कि पाकिस्तान को हवा खाने का शौक नहीं है पर जो सरकार बहुमती सरकार नही होगी वह यह हथकण्डे नही आजमायगी तो कितने दिन टिकेगी? यहा हिन्दू मुसलिम, ब्राह्मण अछूत, महाराष्ट्र तामिलनाडू म झगडे होते रहते ह। वहा शीआ सुन्नी मुसलिम कादयानी, बगाली पजाबी बलवे होते हैं कि दोनो ही सरकारें जनता की सरकारें नही हैं—यह सुनते ही प्रेमा बिफर जाया करती थी और नाचने खसोटने लगती थी और अपने बचाव के लिए वह उसके दोनो हाथ पकड लिया करता था और उसे चुप कराने के लिए वह प्रेमा के होठो पर अपने होठ रख दिया करता था—एक दिन रामदयी ने यह झगडा खत्म होते हुए देख लिया और उस दिन पहली बार रामदयी ने यह भी देखा कि प्रेमा के सावले रंग के नीचे लाल रंग की एक तह भी है—तो उसे वह साँवला रंग एकदम से बहुत अच्छा लगा था और तभी से उसके सपनो का रंग कभी सावला हो जाता और कभी गोरा

प्रेमा और आशाराम अलग भी हो गये पर रामदयी ने अपने सपना का रग नही बदला क्योकि अलग होने के बाद भी प्रेमानारायण ने अभी तक शादी नही की थी। आशाराम भी शादी की बात टाल जाता था। प्रेमा आकाशवाणी से समाचार सुनाने लगी थी और आशाराम अब तक वही लाल टहूका सपने बुनने मे उलझा हुआ था।

प्रेमा चूकि आकाशवाणी दिल्ली पर थी इसलिए रामदयी आकाशवाणी दिल्ली के प्रोग्राम बराबर सुनती रहती थी। क्या पता कब उसके सपना की बहू की आवाज आ जाय। वसे महीने मे एक-आध बार प्रेमा रामदयी को खत भी लिखती ही रहती थी। यह खत वह बाबूराम से पढवाकर सुना करती थी और उन्ही मे जवाब भी लिखवाया करती थी। उन खतो मे कभी आशाराम का कोई जिक्र नही हुआ करता था फिर भी रामदयी चुपके से, आशाराम की आख बचाकर, वह खत आशाराम के तकिये के नीचे रख आया करती थी और इस टोह मे लगी रहती थी कि आशाराम को वह खत पढता देख ले और वह उस हर बार प्रेमा का खत पढते देखती भी और यह देखकर वह मर-मर जाती कि खत पढने से आशाराम के चेहरे की उदासी का रग थोडा-सा और गहरा हो जाता है।

पर उस रात आशाराम के चेहरे की उदासी का रग कुछ और ही किस्म का था।

आशाराम ने रामदयी की तरफ देखा। और अपनी मा के लिए हमेशा की तरह उसका दिल बहुत दुखा। इस बूढी औरत को भी क्या जिन्दगी मिली है जवानी इस डर म गुजरी कि कही अग्रेज सरकार की चलायी हुई कोई गोली उसके पति को ना आ लगे। और बुढापा इस अन्देशे म गुजर रहा था कि कही काग्रेस सरकार की चलायी हुइ कोई गोली उसके बेटे को न आ लगे। गोली वही थी। सीन वही थे। लबलबी दबानेवाले हाथ बदल गये थे।

उसके मुह का मजा कुछ और ज्यादा बिगड गया होता अगर उसे य मालूम होता कि अशफाकुल्लाह खा एस-आइ-२ खास तौर स उसकी निगरानी प मुकरर किये जा चुके हैं कि यह पता चलाया जा सके कि 'कटरा बी आज क्या चला है और यह कि अशफ़ाकुल्लाह खा की डायरी म रोज कटरा मी बुलाकी मे चन्द लोगो के नाम बार बार जगह पा रहे है। मशहूर यह किया गय था कि जगदम्बा प्रसाद हेड कास्टेबिल छुट्टी पर है पर वास्तव म वह आशारा की निगरानी कर रहे थे और अशफाकुल्लाह खाँ एस-आइ-२ की डायरी का पे भर रहे थ।

अशफाकुल्लाह खां चाहते थे कि 'हुक्मामान वाला'[1] को इतना लगन में पहले वह उस के-जी आइ साजिश का पता चला लें। उन्होंने इस सिलसिले में सैकड़ों जासूसी फरमाइशी किस्म के ख्वाब भी देख डाले थे। हिन्दी फिल्मों के सारे 'चेज सीन' उन्हें ज़बानी याद थे और वह उन्हीं सीनों के आधार पर हिन्दी फिल्मों का मज़ाक उड़ाया करते थे पर जब 'के-जी-आइ' फाइल का चक्कर चला और उन्होंने सपने देखने शुरू किये तो वह मुजरिमों को दौड़ाने और उनका पीछा करनेवाले हिन्दी फिल्मों के तमाम सीनों को अपने ख्वाबों में शरीक करने लगे—वह देखते कि आशाराम एक बड़ी कार पर तेज़ी से चला जा रहा है। उन्हें रास्ते में एक स्कूटर खड़ा दिख जाता है। स्कूटरवाला सड़क पर एक तरफ खड़ा एक दरख्त के तने पर पेशाब कर रहा है। फर्ज़ की धुन में वह उसी स्कूटर पर आशाराम की बड़ी इम्पोर्टेड कार का पीछा करते हैं—खतरनाक मोड़ों से गुज़रते हैं—आशाराम की चलायी हुई गोलियों से हर बार साफ बच जाते हैं क्योंकि वह हीरो हैं और गोली उन्हें लग ही नहीं सकती—आखिर एक जगह आशाराम की गाड़ी उलटकर गहरे खड्डे में गिर जाती है और उसमें आग लग जाती है।—यह अपने स्कूटर ही से उस पर छलांग लगाते हैं—पर अकेले मुजरिम से लड़ना हीरो की शान के खिलाफ है इसलिए ठीक उसी वक्त न जाने कहां से आशाराम के पचास साठ साथी निकल आते हैं और मुक्केबाज़ी शुरू हो जाती है—आशाराम के चन्द साथियों को वह अच्छी तरह पहचानते हैं। देखा, भोलेनाथ पहलवान, मास्टर बद्री रामअवतार मिकैनिक—यह सारे के सारे वह लोग हैं जिनके नाम आशाराम के सिलसिले में जगदम्बा प्रसाद लेते रहते हैं। फिर जैसा कि हर फिल्म में होता है—अशफाकुल्लाह खां सबको मार पीटकर पटरा कर देते हैं और आशाराम को हथकड़ी लगाकर स्कूटर की तरफ चलने लगते हैं। सीन डिज़ाल्व होता है। राष्ट्रपति उन्हें गैलेंट्री पदक दे रहे हैं और सामने ही हीराबाई एक कुरसी पर बैठी पान चबा रही है और मुस्कुरा रही है—कभी कभी यह हीराबाई उनकी मां बीवी या श्रीमती गांधी में भी डिज़ाल्व हो जाती

अशफाकुल्लाह खां के ख्वाबों में जगदम्बा प्रसाद हेड कांस्टेबिल के लिए कोई जगह नहीं थी। पर इसका मतलब यह नहीं कि जगदम्बा प्रसाद के पास अपने ख्वाब ही न रहे हों। उसके ख्वाब भी अशफाकुल्लाह खां के ख्वाबों ही जैसे थे। फर्क बस इतना था कि अपने ख्वाबों के हीरो खुद बाबू जगदम्बा प्रसाद

---

१ ऊपर के आफिसर।

हेड कास्टेबिल हुआ करते थे।—दोनो ही को यह मालूम था कि वह एक दूसरे के ख्वाबा मे शरीक नही हैं पर एक दूसरे स उन दोनो को कोई शिकायत नही थी।

अशफाकुल्लाह खा जिला जौनपुर के रहनवाले थे। उनके खानदान म थाने दारी की परम्परा चली आ रही थी। उनके परदादा इलाहाबाद कोतवाली के इन्चाज रह चुके थे। बडी धाकडी म कोतवाली की थी मरहूम ने। कहते है कि उन दिना रहमतुल्लाह खा शहर कोतवाल की मरजी के बगर इलाहाबाद मे पत्ता नही हिलता था। बडे-बडे गुण्डा का उन्हान यू सीधा कर दिया था कि उनके तबादले के बहुत दिनो बाद भी उन गुण्डा ने अपने आपको टढा करन के बारे म नही सोचा। अशफाकुल्लाह खा अपने दादा के किस्स यू सुनात जस यह वहाँ मौजूद रह हा। दादा एनायतुल्लाह खा न बनारस के चेत गज थाने और फिर कोतवाली चौक के इलाके मे अपना सिक्का चलाया। बनारस के महाजन उनके नाम से कापते थे और हर महीन की पहली को अपन हिस्स का नज़राना खा साहब के घर पहुचा जाया करत थे और उन्ही पसो स खा साहब ने चहार-सू वाली जमीन लकर दुकानें बनवायी जिनका किराया आज तक अशफाकुल्लाह खा खा रह थे। उनके पिता विलायतुल्लाह खा सब इस्पक्टरी मे आगे न बढे। पर उन्हाने कोतवाली गाजीपुर म सवेण्ड आफिसर की हैसियत से वह धूम मचायी कि लोग अशफाकुल्लाह खा के दादा और परदादा की कोतवाली भूल गय। सन बयालीस मे पण्डित शिवशकर पाण्डेय ने उन्ही की मदद स सरकारी खजाना लुटवाया था और अपने हिस्स के खजाने से उन्हान बराक्त और नदगज वाली जमीनदारी खरीदी थी जा आजादी के बाद बाडा म बदऊकर सौ के चौसठ के भाव बिक गयी थी। बाकी के चालीस बाबू महावीर प्रसाद महाजन से अशफाकुल्लाह खा ने अपनी थानेदारी के जमान मे वसूल कर लिये थे।—परन्तु परदादा, दादा और पिता म से किसी ने काई ऐसा काम नही किया था जिसकी वजह मे खानदान का नाम ऊँचा होता। न उन्हाने सुल्ताना डाकू को पकडा न मानसिंह डाकू को गोली मारी। बाप न पण्डित नहरू पर लाठी चाज अवश्य किया था पर अशफाकुल्लाह खा अब उसका जिक्र नही करना चाहत थे। इसीलिए वह रिटायर होन स पहल तक कोई एसा काम जरूर कर गुजरना चाहत थे जिसकी वजह से उनकी आइन्दा नस्लें किसी मजमे म बैठकर उनका जिक्र करें ता आस पासवाले पलट के देखें—इत्तिफाक म जगदम्बा प्रसाद हड कास्टबिल ने वह कारनामा गिलौरी की तरह चादी के वरक म लपेटकर उनके सामने पश कर दिया।

जैसा का मुसतकिल बन्दोबस्त तो लगभग हर कांग्रेसी मन्त्री करवाना चाहता था पर बुरा हो प्रजातन्त्र का। इसलिए अशफाकुल्लाह खा किसी मौके की राह देख रहे थे और "के बी आइ फाइल" को कलेजे से लगाये अपनी तरक्की के सपने देख रहे थे।

इस निजी ख्वाब मे न उन्हाने अपनी दाश्ता हीराबाई को शरीक किया था और न ही अपनी पत्नी आलमआरा बेगम को। आलमआरा बेगम ने तो खैर कभी पूछा ही नही क्योकि अब खाने के वक्त के सिवा अपने मियाँ से उनकी मुलाकात बस ईद बकरईद के दिन हो जाया करती थी। और चूकि यू वह एक तरह से बिल्कुल बेकार हो गयी थी और वक्त काटे नही कटता था इसलिए वह अपना ज्यादा वक्त सोने के गहने बनवाने और इम्पोर्टेड साडिया खरीदने मे सर्फ किया करती थी। इलाहाबाद आकर उन्होने पर्दा भी उठा दिया था और अकेली सिनेमा देखने भी निकल जाया करती थी। नसबन्दी का प्रोग्राम चलाने मे वह बहुत आगे-आगे थी। उन्होंने अपना ऑपरेशन सबसे पहले करवा दिया था कि कोई डर ही न रह जाये और किसी कहानी के जन्म लेने का किस्सा ही न उठे। इस काम से फारिग होकर वह घर के पले हुए नौकर के साथ "शॉपिंग" के लिए निकल जाने लगी। उसका नाम रऊफ था। वह आलमआरा बेगम से कोई सत्तरह-अटठारह बरस छोटा था। पर आलमआरा बेगम की काठी अच्छी थी। अपनी उम्र से बीस बरस कम लगती थी और लोग उन्हे खुश करने के लिए उनकी बेटी लैला की बडी बहन कहा करते थे। यह लैला बीस बरस की थी और उर्दू मे एम ए कर रही थी और उसने "उर्दू एक स्वतन्त्र भाषा" शीर्षक के साथ एक लेख लिखा था जिसकी वजह से उर्दूवालो मे उसकी धूम हो गयी थी। और वह जलसो मे साहित्य और साहित्यकारो की समस्याओ पर पेपर पढने या भाषण देने के लिए बुलायी जाने लगी। इस लैला के कपडे "जनता लाण्डरी" मे धुलते थे। आलमआरा बेगम ने तो बहुत कहा कि वह मूई भी कोई लाण्डरी है। लोग क्या कहेगे। सूरजनाथ सिह, जो तुम्हारे अब्बा से जूनियर हैं, उनकी बेटी के कपडे सिवल लाइन की "स्वान लाण्डरी" मे जायें और तुम पर लैला हमेशा उनकी बात काट देती। यही कहती ममी। मैं हिपॉक्रेट नही हू। और लाण्ड्रियो मे कपडे धुलते हैं। पर बिल्लो गन्दे कपडो की इज्जत करती है और फिर आलमआरा बेगम तुरन्त उसकी बात काटती ऐ बस रहने दो बेटा। उसकी जबान की गन्दगी के आगे तो दुनिया के सारे साबुन हार मान लें। अस्ल मे आलमआरा बेगम बिल्लो से यू खफा हो गयी थी कि एक दिन कही से लौटते वक्त उन्हे खयाल आ गया कि लैला के कपडे नही आये

हैं तो उन्होंने तांगा कटरा मीर बुलाकी की तरफ मुडवा दिया। तांगा लाण्ड्री के बाहर रुका। रऊफ अन्दर गया। वहां उसने बिल्लो पर रोब डालना चाहा। बिल्लो कहां किसी के रोब मे आनेवाली थी। बरस पड़ी। तो रऊफ की मन्न पर आलमआरा बेगम लाण्ड्री में जा घुसी। उनका ख़याल था कि यह सुनते ही बिल्लो के हाथ पाँव फूल जायेंगे कि वह बेगम अशफाकुल्लाह खां हैं। पर लगा ऐसा कि जैसे बिल्लो ने कभी अशफाकुल्लाह खा का नाम ही न सुना हो। उसने आलमआरा बेगम को भी खरी खरी सुना दी और आलमआरा बेगम को मजबूरन यह धमकी देते हुए लाण्ड्री से निकल आना पड़ा कि वह इस लाण्ड्री की ईंट से ईंट बजवाये बिना चैन से नहीं बैठेंगी

और यूं कोई आठ साल के बाद वह अपने मियां से बोलीं "दखिये। यह बिल्लो बड़ी बदतमीज है।"

अशफाकुल्लाह खां यह बात पहले से जानते थे इसलिए चुपचाप खाना खाते रहे।

'बन्द करवा दीजिए उसे किसी दफा में।' आलमआरा बेगम ने हुक्मसा दिया।

'देखूंगा।" अशफाकुल्लाह खां ने कहा

यह बात है ११ जून सन ७५ की।

सड़ी हुई गर्मी पड़ रही थी। बरसात का कहीं पता नहीं था। इतनी हवा भी नहीं थी कि जिसमे कोई एक पूरा सांस ले सके। आसमान और ज़मीन के बीच मे लू की उड़ायी हुई धूल अटी हुई थी जो धीरे धीरे बिस्तरों और बर्तन और आंगन मे बरस रही थी

बिल्लो के छोटे-से आंगन मे बिजली का नया पंखा चल रहा था। यह दहेज का पंखा था। आशाराम ने बिल्लो को दिया था। उषा कम्पनी का लाल पर्खों वाला। पर अँधेरे में उषा कम्पनी के उस पंखे से गर्म हवा निकल रही थी। बिल्लो की आँख खुल गयी। पास वाले खटोले पर देश पड़ा हुआ था। केवल एक अण्डरवियर पहने। बिल्लो ने हाथ बढ़ाकर उसे छू दिया। उसे छूने से उसे बड़ा इत्मीनान हो गया जैसे उसने किसी सपने को छू लिया हो। वह मुस्कुरा दी अशफाकुल्लाह खां की बेगम आलमआरा से अपने झगड़े की बात उसने देश को नहीं बतायी थी। उसके सर पर यूं ही बड़ी ज़िम्मेदारियाँ थी। बरसात आ रही थी और पानी पड़ने से पहले सामने वाला उसारा न पड़ गया तो बरसात कमरे मे आ जायेगी। शायद घर पूरा बन जाने से पहले उसे घर मे उठ आने की ज़िद करनी ही नहीं चाहिए थी। मामा ने तो समझाया

भी था कि जल्दी क्या है । पर वह मामा को कसे बताती कि जल्दी क्या है । जल्दी यह थी कि अब उससे देश बिना रहा नही जा रहा था देश ने भी समझाया कि जल्दी क्या है । पर वह देश को कैस बताती कि जल्दी क्या है । जल्दी यह थी कि अब उससे देश बिना रहा नही जा रहा था और शादी वह, अपने घर मे उठे बिना, करने पर तैयार नही थी ।

बिल्लो का जी चाहा कि हाथ बढाकर देश को फिर छू ले तो उसने देश को फिर छू लिया । देश ने करवट ले ली और पलग के दूसरे किनारे पर चला गया । बिल्लो हँस पडी । फिर कुछ सोचकर वह उठी और कमरे के अन्दर चली गयी । फिर उसने बत्ती जलायी । कमरे मे उसने सौ किलोवॉट का बल्ब लगा रक्खा था । इतवारी बाबा ने कहा भी कि इसकी क्या जरूरत थी । पचीस पावर का बल्ब काफी है । पर वह नही मानी । उसे ज्यादा रोशनी से प्यार था, जिसमे वह अपने घर को साफ-साफ देख सके और अपने घर की दीवारा और आगन से बात कर सके ।

कमरे मे सामने ही मिसेज़ गाधी की, किसी पत्रिका से काटी हुई, तस्वीर चावल लगाके दीवार से चिपकायी हुई थी । उसके साथ ही एक कैलेण्डर था । श्री राम आगे आगे तीर कमान लगाये । उनके पीछे सीता मैया और उनके पीछे लक्ष्मणजी तीर कमान लगाये । एक हिरनी उन्ह प्यार से देखती हुई । पीछे एक पवत । बफ मे ढका हुआ । नीचे एक छोटी-सी नदी बहती हुई और उस नदी के पानी से सर निकाले हुए 'श्री राम वनवास बीडी" का बण्डल । सामनेवाली दीवार पर वह मोटरवाली अकेली तस्वीर ।

उसने मिसेज़ गाधी की तस्वीर की तरफ दखा । वह भी उसकी निगाह मे पूजने के लायक थी क्योकि जो वह न होती तो बाबू साहेब ने तो फाका करवाने मे कोई कसर नही छोडी थी । उन्होंने पता नही क्या गोलमाल किया कि यह साबित हो गया कि गरेज घाटे मे चल रहा है जब कि उसी बरस उन्होंने अपनी बेटी को साढे पाँच लाख का दहेज दिया था । काशी मे गगाजी के किनारे नयी कोठी बनवायी थी । बस करकरा को बोनस देने के लिए पैसा नही था । शम्मू मिया ने बाबू साहब का साथ दिया तो जाहिर है कि यूनियन भी उधर ही गयी पर बिल्लो के लाख समझाने के बावजूद देश नही माना । वह भूख हडताल पर बैठ गया । आशाराम ने कहा कि खाली-खूली भूख हडताल से कुछ नही होगा । उसके पीछे कोई राजनीतिक ताकत होनी चाहिए । तो देश ने उन्ह यह कहकर घुडक दिया था कि हम राजनीति फाजनीति ना जानते साहब । हम तो फाका करे की परटिटस कर रह कि कुछ दिन जीके बाबू साव की खिदमत

कर सकें। और चूंकि उसके पीछे कोई आन्दोलन नहीं था इसलिए बाबू साहब ने उसे डिसमिस कर दिया।

बाबूरामजी बिचारे ने बड़ी सहायता की। वह यह सारी नाइन्साफी देख रहे थे। उन्होंने जिला कमेटी के अध्यक्ष होने के नाते बाबू साहब से कहा भी कि उन्हें यह नहीं करना चाहिए था। बाबू साहब हँसकर टाल गया। पर बाबू रामजी चुपके नहीं बैठे। उन्होंने श्रीमती गांधी का फौरन खत लिखा कि यह खुली नाइन्साफी है। बाबूरामजी और पण्डित नेहरू दोस्त रह चुके थे। पण्डित जी इलाहाबाद आते तो उनसे मिलने उनके घर जाते। वह तो उन्हें मन्त्री भी बनाना चाहते थे पर बाबूरामजी ही ने मना कर दिया और पण्डितजी बिचारे चुप हो गये। फिर उत्तर प्रदेश सरकार ने उन्हें सिमेंट का होल-सेलर बनाना चाहा। पर उन्होंने मना कर दिया। वह चाहते तो सिफारिश करने को अपना धन्धा बना सकते थे। पर उन्होंने वह भी न किया। वह अपना मासिक "साहित्य" ही निकालते रहे और उसमें घाटा उठाते रहे। पर ऐसे आदमी की इज्जत तो होती ही है। इसलिए मिसेज़ गांधी को जो उनका खत मिला तो उन्होंने फौरन जवाब दिया। देश से कहिए कि बैंक से कर्ज लेकर अपनी वर्कशॉप खोल ले। प्रदेशी राजनीति में वह बाबू साहब की तरफ से ज़रा-सा खिंच भी गयी थी।

यह खबर जंगल की आग की तरह सारे इलाहाबाद में फैल गयी कि खुद मिसेज़ गांधी ने देश को बैंक से कर्ज दिलवा के वर्कशॉप खुलवायी है। लोग तो यहां तक कहते सुने गये कि मिसेज़ गांधी ने एक रात को फोन घुमा दिया बैंक के मैनेजर को कि देस हमारा खासुलखास आदमी है।

देश ने अपनी वर्कशाप का नाम "इन्द्रा मोटर वर्कशॉप" रखा। बाबूराम जी ने उसका उद्घाटन किया। आशाराम भी आया पर वह देश के इस कांग्रेसी झुकाव से खुश नहीं था। पर देश ने फिर भी यही कहा कि उसे राजनीति से कोई तअल्लुक नहीं, उसे तो जीने के लिए पैसे कमाने हैं। और अब तो जिम्मेदारी भी बढ़ गयी है। ब्याह हो चुका है। थोड़े दिनों में वह बाप बन ही जायेगा तो आनेवाले कल के बारे में भी तो सोचना चाहिए। आशाराम ने उसे बहुत समझाना चाहा कि आनेवाला कल भी गुज़रनेवाले या गुज़रे हुए कल ही की तरह निजी नहीं हो सकता। और वह अकेले उसके नये घर में आनेवाला भी नहीं है। इसलिए उसे सबके साथ ही उसके स्वागत की तैयारी करनी चाहिए और उस लाने के लिए रात से समय करना चाहिए। उन दोनों की इस बहस में कभी-कभार बाबूराम भी बोल पड़ते और फिर दादा-पोते में ठन

जाती। देश की आर्थिक हालत और वतमान की आर्थिक दिशा और पैदावार और माग और मजदूरी के रिश्तो पर बातें होने लगती यह बातें न बिल्लो समझती, न देश की समझ मे आती। बिल्लो तो रामदयी के पास जा बैठती और घर के काम मे उसका हाथ बटाने लगती और उसे यह राय देने लगती कि अब आशा बाबू का ब्याह कर देना चाहिए। और इस बात पर रामदयी प्रेमा नारायण की बात लेकर बैठ जाती। पर देश वही बैठा उनकी बातें सुनता रहता और समझने की कोशिश करता रहता। पर कभी-कभी उसे ऐसा लगने लगा था जैसे बाबूरामजी ठीक कह रहे है। जो ऐसा न होता तो भला बक उसे कर्ज देता और वह अपनी वकशॉप खोल पाता ? और यह जो रोज आकाशवाणी वाले बताते रहते हैं कि इतनी जमीन बे-जमीने खेतिहर मजदूरो मे बाट दी गयी या यह कि इतने लाख नये रोजगार पैदा किये गये, या इतने लाख मीटर कपडा बाहर भेजा गया जिससे इतनी बचत हुई बाहरी मुद्रा की तो यह सब झूठ थोडी होगा। उसने कोई सौ-दो सौ तो डाकुमेंट्रिया देखी होगी जिनमे यह दिखलाया गया है कि इंद्राजी के जमाने म देश ने कितनी उन्नति की है। कितनी खुशहाली आयी है देश मे। खुद देश टेरिलीन की शर्ट पहनता था। विल्स सिग्रेट पीने लगा था। कुछ तो हुआ था और इसलिए वह बाबूराम जी की बातो पर हुकारी भरने लगा और आशाराम को मायूसी होने लगी।

आशाराम अब एक पेशावर सियासतदाँ हो गया था। एक आदमी के इधर-या उधर होने से उसकी सेहत पर कोई असर नही पडता था पर देश से जैसे उसका कोई और रिश्ता भी था। उसने २८ फरवरी को अपनी डायरी मे देश के भटकने का गम मनाया भी। लिखता है

'देश सिफ एक मजदूर नही। देश मेरा पहला साथी भी है। मेरी ऐनक भी है, जिसे लगाकर मैं मजदूर वग की समस्याओ को समझ सका हूँ और लाल क्रांति का सपना देख सका हू। बिल्लो के घर का सपना केवल देश और बिल्लो का नही। मैं भी वह सपना देखने के लिए जागता रहा हू। देश का बाबूजी के साथ हो जाना मेरी बहुत बडी निजी हार है। क्या मेरी राजनीतिक समझ और चेतना मे कही खोट है ? यह प्रश्न मैं किससे करूँ। जो अपनी नादानी से इस प्रश्न का जवाब दे सकता था वह तो बाबूजी की हा मे हाँ मिलाने लगा है। कैसी अजीब बात है कि जिस देश ने शम्सू मिया का बिकना देख लिया था वह खुद अपने बिक जाने को न देख सका प्रेमा होती तो मैं उससे पूछता। उससे लडता। बहस करता। और अपने दिमाग से शक के जाला को साफ कर लेता पर प्रेमा तो दिल्ली आकाशवाणी से लोगो को यह बताने म लगी हुई है कि

भारत में एक नया सूर्य उदय हो चुका है। एक नये, बहुरंगी भविष्य की कोंपल फूट चुकी है। यदि ऐसा है तो वह बहुरंगी कोंपल मुझे क्यों नहीं दिखायी देता

पर देश के सामने ऐसी कोई उलझन नहीं थी। वह राजनीति की पतंग के पेच लड़ा रहा था। उसे यह भी नहीं मालूम था कि वह इस पतंगबाजी में माँझे की तरह है। पतंग भी नहीं। डोर है जो किसी और के हाथ में है। किसी और के इशारे पर पतंग को इधर-उधर मोड़ता रहता है देश को इस तरह की बहुत-सी बातें नहीं मालूम थीं इसीलिए वह खुश था। आदमी का और चाहिए क्या। अपना घर। बिल्लो जैसी पत्नी। और "इन्द्रा मोटर वर्कशाप"। उसके पास यह तीनों चीज़ें थीं। अब जिसकी किसमत ही मे गरीबी लिखी जाती हो उसकी गरीबी इन्द्राजी बिचारी कैसे हटा सकती थीं। उसने तो एक पुरानी फोर्ड साढे चार सौ मे खरीद ली थी और अपना सारा वक्त उसकी मरम्मत में लगा रहा था। उसने यह बात बिल्लो से छिपा रक्खी थी। वह उसे एक दिन चौंका देना चाहता था यह कहकर कि ऐ बिल्लो चल ज़रा घूम आयें। बाहर नयी गाड़ी खड़ी है वह आखें बन्द करके बिल्लो का खिला हुआ चेहरा देख सकता था। वह उस खुशी को महसूस कर सकता था जो यह सुनते ही खुशबू की तरह बिल्लो के दिल मे तैर जानेवाली है और देश खुशी के इस ख्याल ही से खुश था। आदमी का यही तो कमाल है कि कल की खुशी के सपने देखकर वह एक तरह से खुशी ओवर-ड्राफ्ट कर लेता है। तभी तो वह जिये चला जा रहा है। सपने छीन लीजिए आदमी से, वह आज नहीं, अभी मर जाये [illegible]।

देश ने वह फोर्ड खरीदने के लिए पाच सौ भी बड़ी तरकीबों से जुटाये। जाहिर है कि वह बिल्लो को बताये बिना यह रकम डाकखाने से निकाल नहीं सकता था। उन दोनों का अकाउन्ट अब भी पोस्ट आफिस में था क्योंकि बंकों पर बिल्लो का भरोसा नहीं था। देश तो खैर ईमानदार आदमी है पर हर आदमी देश थोड़ी है। वह इसी तरह कर्ज देते रहे तो दीवाला मार के बैठ जायेंगे एक न एक दिन। पोस्ट आफिस फिर सरकारी चीज है। पैसा जमा करो तो सरकारी मुहर लगती है। पैसा निकालो तो सरकारी मुहर लगती है। और मुहर भी ऐसी पक्की रोशनाई की होती है कि लाख मिटाना चाहो तो न मिटे। इसलिए उसके लिए पोस्ट आफिस ही ठीक था।

और पाच सौ कोई पाँच रुपया नहीं होता कि आयें बायें शायें करके ले लिये जायं। तो उसे वही पुरानी महनाज़ के दहेजवाली तरकीब सूझ गयी। चुनांचे

उसकी वकशाप म पुर्जे टूटने लगे। बिल्लो खूब खूब खौली पर चारा क्या था। और यू थोडा थोडा करके देश ने उस फाड का दाम चुकता किया। फिर वह उसमे लग गया—वह जैसे अल्लाह था और मुटठी-भर मिटटी से आदमी का पुतला बना रहा था—धीरे धीरे उस कार की शक्ल निकलने लगी। फिर धीरे-धीरे उसम जान पडने लगी। बिल्लो को चूकि हरा रग वहुत अच्छा लगता था इसलिए उसने उस कार पर हरा रग स्प्रे करवाया और उसी दिन बिल्लो के लिए उसने हरे रग की एक साडी भी खरीदी। पीपल के जवान पत्तो वाला हरा रग। वह कार मे बठ गया। पर कार मे बैठकर वह कोई और आदमी लगने लगा। धत माला—उसने अपने आपको गाली दी और कार को आगे बढा दिया।

शहर वही था। सडकें वही थी। सडका के कनारे खडी हुई जागती-सोती दुकानें वही थी। लाग वही थे। गूजती हुई आवाजें, नाम, गालिया—सब कुछ वही था पर देश को नया नया-सा लग रहा था जैसे वह इस शहर मे पहली बार आया हो और इन लोगो को पहली बार देख रहा हो और इस भाषा को पहली बार सुन रहा हो।

सामने इतवारी बाबा का अडडा था। और इतवारी बाबा अपनी जगह पर टाट बिछाये बठे थे। उनके पीछे दीवार पर श्रीमती गाधी का मुस्कुराता हुआ एक बहुत बडा पोस्टर था जो पिछले साल उनके आने पर लगाया गया था, जिसमे वह मुस्कुरा रही थी और उनके दात किसी टूथ पस्ट के इश्तिहार की तरह उजले और चमकदार दिखायी द रह थे। देश ने इतवारी बाबा के सामने कार रोक दी। इतवारी बाबा ने उसकी तरफ देखा। पर वह इतवारी बाबा को यह वतानेवाला नही था कि यह कार किसी और की नहीं, उसी की है। यह बात तो सबस पहले वह बिल्लो को बताना चाहता था।

"घर चलना हो तो चलो।" देश ने कहा।

"अभई दू घण्टा बाकी है डियूटी बदले मे।" इतवारी ने कहा।

वात यह है कि अपनी उम्र का खयाल करते हुए उसने अपनी जगह की तीन शिफटें चलाना शुरू कर दिया था। बाकी दो शिफटें किराये पर चलती थी। पहली शिफट म रामदीन की अम्मा बैठती थी जिसे भीख माँगना आता ही नही था। पर मजबूरी थी। रामदीन रेजा[1] था। एक घर की छत बन रही थी। वह नये पडे हुए चून की गच पीट रहा था कि छत बैठ गयी और उसके हाथ पाँव बेकार हो गये। इन लोगो की तो कोई यूनियन भी नही। घर बनवाने

[1] घर बनाने में जो मजदूर इट चूना उठाते हैं वे हमारी तरफ रेजा कहे जाते हैं।

वाले ने कह दिया कि छत उसने थोड़ी बनायी थी। बैठ गयी तो वह क्या करे। उसका तो खुद पौने दो हज़ार का नुकसान हो गया—रामदीन कँवारा था। मां के सिवा कोई और था ही नहीं घर में। मां के हाथ में राशा था। कोई काम कर ही नहीं सकती थी। रामदीन वैसे कटरा मीर बुलाकी में रहा करता था। उसके पिता अच्छे मिस्त्रियों में गिने जाते थे। पर उन्हें पटाव का काम आता था। डाट डालना नहीं आता था तो मरते मरते वह भी "रेज़ा" हो गये थे। फिर रामदीन ने भी वही काम शुरू कर दिया। लोग घर तो बनवाते ही रहते हैं। अच्छी कमाई हो जाती थी। छोटी-मोटी मरम्मत का काम वह ऊपर-ऊपर से भी ले लिया करता था। निहायत फिल्मी बात यह हुई कि उसकी शादी होने से चार दिन पहले वह छत बैठ गयी। पहले तो अड़ोस पड़ोस से खाना आता रहा। पर कटरा मीर बुलाकी में ऐसा कौन रहता था जोखन के सिवा जो दो आदमियों को आराम से खिलवा सके और जोखन को यह खयाल नहीं आया। धीरे धीरे खाना आना कम हो गया। बिल्लो से देश ने कहा कि क्या वह लोग उनके लिए दो वक्त की रोटी नहीं भेज सकते। बिल्लो एक वक्त की रोटी पर राज़ी हो गयी। तो एक वक्त की रोटी का बन्दोबस्त हो गया। अब बची दूसरे वक्त की रोटी, कपड़ा, घर का किराया। कोई बीमार हो तो दवा का दाम

तो एक दिन इतवारी बाबा ने रामदीन की माँ को पहली शिफ्ट पर बिठला दिया। पर रामदीन की अम्माँ को तो भीख माँगना भी नहीं आता था। उससे हाथ फैलाया नहीं जाता था। तो इतवारी ने उससे कहा कि उसे हाथ फैलाने की ज़रूरत ही नहीं है। बस एक प्याला सामने रखकर वह सड़क की तरफ पीठ करके चुपचाप बैठ जाये। रामदीन की अम्माँ यही करने लगी।[1]

काम पर जाने के लिए सवेरे के वक्त निकलनेवाले लोग नर्म दिल होते हैं। दिल तो वही शाम तक जाकर सख्त होता है। तो यह लोग जब रामदीन की अम्माँ को यूँ सड़क की तरफ पीठ किये बैठा देखते तो उनका नर्म दिल पिघल जाता और वह यह सोचकर उसके प्याले में कुछ न कुछ डाल ही देते कि उनकी हालत इस रामदीन की अम्माँ से तो अच्छी ही है।

तो पहली शिफ्ट रामदीन की अम्माँ की हो गयी। दूसरी शिफ्ट (जाड़ों में) खुद इतवारी बाबा किया करते थे कि धूप की गर्मी मिलती रहे। गर्मियों में वह

१ मैं बार-बार रामदीन की अम्माँ इसलिए कह रहा हूँ कि बहुत कोशिश करने पर भी मुझे उसका नाम न मालूम हो सका। कटरा के लोग उसे इसी नाम से पुकारा करते थे और शायद उसे भी अपना नाम याद नहीं रह गया होगा। मैं उससे मिल न सका क्योंकि वह शिव शंकर पाण्डेय मार्ग काण्ड में मारी गयी।

तीसरी शिफ्ट किया करत थे कि कुछ तो आराम मिले । तो जाडो मे तीसरी और गर्मियो म दूसरी शिफ्ट अल्ला रक्खे किया करता था । यह अल्ला रक्खे भी कटरे ही का था । अधेड उम्र का आदमी था । पहले बाप की कमायी खाता था । फिर बडे भाई की कमायी खाने लगा । फिर अपने बेटे की कमायी खाया किया । बाप मर गया । बडा भाई पाकिस्तान चला गया । बेटा हिन्दू मुसलिम दगो मे मारा गया । अल्ला रक्खे को कोई काम आता ही नही था । वह कोई काम जानना भी नही चाहता था और अब काम सीखने की उम्र भी नही थी । और कटरेवाले उस निकम्मे को खिलाने पर तैयार भी नही थे । तो इतवारी ने डेढ रुपये रोज पर एक शिफ्ट उसे थमा दी थी । और यू उनकी बडे आराम से कट रही थी । इसीलिए जब उन्होने दो घण्टे की दुहाई दी तो देश जल गया ।

'अरे तोरे दू घण्टे का मतलब का है ।" देश ने कहा । "बेला वजह मे जी जलाते हो । अरे हम लोग दिन रात खून पसीना एक करत हैं तब कोई तरह दू बखत की रोटी जुडती है । तोरा का है । हाथ फैला के बैयठ गए ।"

'तनी हाथ फैयला के देखाव, बोले से पहिले ।"

"लो फयला दिया ।" देश ने हाथ फैलाकर कहा । "अरे ई भी कोई काम मे काम है ।"

"ऊ जो गजा आदमी आ रहा ।' इतवारी बाबा ने कहा । 'तनी ओसे दू पैयसा माग के देखाव ।'

'माग लेते है ।' देश ने कह तो दिया । पर जब वह आदमी पास आया तो देश ने अपना बढा हुआ हाथ वापस ले लिया । इतवारी मुस्कुरा के रह गया । देश ने उसकी तरफ देखा और उसे अपनी तरफ देखता हुआ पाया तो भल्ला गया । बोला "हम ई कहित हैं बाबा कि ऊ जो तुम बोलते हो ना, हम उही भुला गये रहे ।"

कौन लम्बी तकरीर है कि भुला गया ।" इतवारी ने कहा । "एयसे हाथ फलाव ।" उसने हाथ फैला दिया । देश ने नक्ल की । 'अब कहा । भगवान के नाम पर बूढे को पाच पयसा दते जाव मया । बस यही तो कहना है ।"

पर देश वही नही कह पाया । और तब बाबा ने कहा 'हम उल्लू थोडे है कि हफ्ते म एक दिन की छुट्टी मना हैं । चलो ।" इतवारी कार मे बठ गया और कार चल पडी ।

"केको गाडी मिल गयी है तू ह चक्कर मारे के वास्ते ?"

'अरे जो गाडी की इसटेरिंग अपने हाथ मे हो ऊ गाडी अपनीये समभो ।"

"बिल्लो को लेके सलीमा जा रहे हो का ?"

'पता नही।' देश ने कहा। "ई सब तो बिल्लो के मूड पर है न।"

कार मे सन्नाटा हो गया। कार के बाहर जिन्दगी का वही हगामा था। सामने सिनेमा के सामने बडी भीड थी। पुलिस डण्डे घुमा रही थी। रिश्वत ले रही थी और टिकटो के ब्लैक में बिकने का बन्दोबस्त कर रही थी—उस भीड म उन्हे बदर और शहनाज के चेहरे भी दिखायी दिये। दोनो बहुत खुश थे। शहनाज आइसक्रीम खा रही थी और मास्टर बदर ब्लक मे टिकट बेचनेवाले से मोलभाव कर रहे थे और अपनी माचिस से पास खड़े पुलिस कास्टेबल की सिग्रेट भी जला रहे थे—हार्न बजाती कार उनके पास से गुजर गयी पर उन्होंने ध्यान नही दिया और वह ध्यान देते भी क्या। वह तो यह सोच भी नही सकते थे कि कटरा मीर बुलाकी का देश अपनी कार मे बैठा नजर आ सकता है।

"ए भाई ई दूनो सनीमा देख देख के कब तक गुजारा करिहू आखिर।" इतवारी बाबा ने कहा।

"तो और का करें बिचारे लोग?" देश ने पूछा। वह रियर-व्यु मिरर में अब भी उन्ही को देख रहा था। "टिकट ना मिला।' यह कह कर उसने गाडी एक तरफ करके रोक ली।

"रुक काहेको गयो?'

'उनहू भी लेत ही चलें। नही तो छ आना दीहू लोग रक्शे का।"

"आना कयसा भई।" इतवारी ने कहा।

और देश हँस पडा।

बदर और शहनाज।

बदर और शहनाज के हँसने की आवाज भी पास आ गयी। उन्होंने फिर कार पर ध्यान नही दिया। यकायक देश चिल्लाया 'कटरा मीर बुलाकी चार आना। कटरा मीर बुलाकी चार आना—" शहनाज और बदर दोनो चौंके। अब उन्होंने देखा कि चमचमाती हुई हरी कार मे देश है और उस के पास इतवारी बाबा हैं।

"अरे अम्मा देख का रही हो। जल्दी से बैयठो।—'

"आग लगे आपकी जबान म।— कोसती हुई शहनाज कार मे जा घुसी और उसकी नयी सीट म धँस गयी। वह सीट बदर की बाहो से ज्यादा नम थी। उसने नये मखमली रेक्सीन पर हाथ फेरा और उस लगा जसे यहा से वहाँ तक बीर बहूटियाँ बिछी हुइ हैं—देश ने रेडियो ऑन कर दिया।

'अब आप प्रेमा नारायण से हिन्दी म समाचार सुनिए। आज नयी दिल्ली मे दिल्ली युनिवर्सिटी टीचर्ज यूनियन की सभा मे बोलते हुए श्रीमती गाधी ने कहा

कि शिक्षा हर आदमी का पैदायशी हक है। भोपाल मे सोफिया कालेज के अखिल भारतीय मुशायरे का उदघाटन करते हुए रक्षा मन्त्री श्री जगजीवन राम ने कहा कि श्रीमती गांधी के हाथो म भारत और भारतीय साहित्य का भविष्य सुरक्षित है। जमशेदपुर म एक सभा म शिक्षा मन्त्री डाक्टर नूरुलहसन ने श्रीमती गांधी के एक स्टेचू का निकाब उठाया। यह स्टचू ताँबे का है। कल अलइता लिया का एक जम्बो विमान हाइजैक कर लिया गया। अब आप पूरे समाचार सुनिय।"—देश ने रेडियो सीलोन लगा दिया और कोई फिल्मी गाना आने लगा।

"ए भाई, जब ऊ हवाई जहाज म इन्दरा गांधी ना रही तो ओका जिक्रि आकासवाणी पर कयसे आ गया?" इतवारी ने कहा।

'देखो बाबा," देश झल्ला गया। "हर बखत पजा झाडे उनही के पीछे मत भागा करो।'

और क्या।" बद्रुलहसन नायाब मछली शहरी ने कहा। "जो वह न होती तो अब तक यह मुल्क तबाह-बरबाद हो चुका होता।'

"का एलाहाबाद वक जयपरकास बाबू के कहे से हम्मे करज दिहिस है?" देश ने सवाल किया।

"आप दख लीजिएगा।" बद्रुलहसन नायाब ने कहा। 'उनके सिवा कोई गरीबी नही हटा सकता। और वह हटा कर रहेगी।"

"जब तक हम और रामदीन की अम्मां और अल्ला रक्खे खाव नही हटाय जाते, हम ना मानेंगे।"

"हम तो सुना है कि तुम मुसायरे मे धूम मचाके आये हौ।"

"अरे नहीं भाई साब।" मास्टर साहब शर्मा गय। "हम क्या मचायेंगे धूम।"

"तनी हम भी तो सुनें।" देश ने कहा।

"अर्ज करता हूँ।" मास्टर साहब फौरन तैयार हो गए। "नज्म का उनवान है नया सूरज।" फिर वह गुनगुनाने लगे। देश ने शीशा चढा दिया। फिर तमाम शीशे चढ गय। और मास्टर बद्रुलहसन नायाब मछली शहरी लहक-लहककर अपनी नज्म सुनाने लगे

सारी रौनक, ताजगी, बस इन्दिरा गांधी की है।
देश मे तो रोशनी, बस इन्दिरा गाधी की है।
ललिये मुसतकबिले हिन्दोस्ता उसकी कनीज़,
गसुओ की बरहमी बस इन्दिरा गाधी की है

"ए मास्टर ई नजम है कि ग्राकासवाणी का समाचार।" बाबा के लहजे कोई सवाल नही था। मास्टर बद्र घबराकर चुप हो गय। "हम्मे उतार दयो टा।"

"सठिया गये हो का ?' देश ने कहा।

'हम ई कहित है भया कि हर मरज की दवा जय सिया राम।—" वह पनी बात पूरी न कर सका क्योंकि देश ने गाडी वाकई रोक दी। और इत री की तरफ देखे बिना बोला "हमरी गाडी म बयठ के कोई इन्द्राजी को ली ना दे सकता।"

कार म सन्नाटा हो गया। झल्लाहट के इज़हार के लिए कोई तयार नही । पर अब तो गाडी रुक चुकी थी। इतवारी बाबा चुपचाप दरवाज़ा खोल र नीचे उतर गये। कार आगे बढ गयी। इतवारी बाबा पीछे रह गये।

'हम जे थाली मे खायें ग्रो ही मे छेद करे वाले लोगन मे से ना हैं।' थोडी र के बाद देश ने शायद अपने ही सामने अपनी सफाई पेश की। शहनाज़ चुप ही। बद्रुलहसन ने कुछ नही कहा। कार हवा से बातें करन लगी।

'गली द्वारका प्रसाद' के नुक्कड पर बद्रुलहसन ने कहा 'हमे यही उतार जिए।"

गाडी रुकी तो 'पहलवान टी स्टाल' पर बैठे हुए तमाम लोगो ने देखा कि डी देश चला रहा है और उसी गाडी से मास्टर साहब उतर रह हैं और ी गाडी मे शहनाज़ बैठी है। लोगो को शहनाज़ का चेहरा नज़र नही आया। लोग उसका बुरका पहचानते थे। पर किसी को कुछ पूछने का मौका नही ला क्योंकि कार गली द्वारका प्रसाद' मे उतर चुकी थी और जब तक कोई े पूछे काफी आगे जा चुकी थी। चूंकि उस वक्त वहाँ शम्मू मियाँ भी थे लिए बद्रुलहसन से भी किसी ने सवाल करना उचित न जाना। और वह भी ली द्वारका प्रसाद ने अन्धेरे म उतर गया।

मगर देश शहनाज को उतार कर फिर लौटा क्योंकि उसका नया घर 'पण्डित शिवशकर पाण्डेय माग पर था, जिसमे पहलवानवाल कमरे की त पड रही थी और बाहरी बैठक की दीवारें उठ रही थी।

चायखान के पास उसन कार रोकी।

"ए मामा।' उसने हाँक लगायी। "हम लोग साढे नौवाला शो देखे जा हैं।"

'लाटरी लग गयी है का ?" न जाने किसन पूछा। "गाडी तो बहुत पस-नाम है।'

"कब लियो ?" पहल्वान ने पूछा।

"अब हम का बतायें मामा—"

"अरे तुम का बताओगे बेटा ! बताते तो रहे स्वर्गीय पिताजी। एक दिन एयसा भया कि—" वह चूतड एक तरफ से उठाकर पादने के लिए रुके।

"वाह ! का सुर में हो आजकल।" किसी ने कहा।

"अरे भैया कमरदीन, हम का हागे सुर मे। सुर मे तो हुआ करते रहे स्वर्गीय पिताजी, कि पादें तो आवाज सिद्धी इहां से आनन्द भवन तक जाये—'

ज़ोरदार कहकहा पडा। देश ने मौके का फायदा उठाया। निकल गया।

'इंजिन की अवाज तो फाड की ना है।' शम्सू मियाँ ने कहा, "मुदा काम अच्छा किया है।"

"मतलब ई कि देस गाडी ले लिहिन।" मामा को अपनी बात पर यकीन नही आया।

'गाडी अवाज से मालिक की नही, मिकानिक की लग रही।" शम्सू मियाँ ने कहा।

पहल्वान जोश म खडे हो गये "ए नरेणा ! अरे जल्दी कर। दुकान बन्द करे का टैम हा गये—"

'का ?" एक गाहक ने कहा, "तोर सिर की घडी तेज चले लगी है साइद। कौन दिन तोरी दुकान रात के डेढ दू बजे से पहिले बन्द भई है, ऐ ?"

'हम अभइ आ रहे—" पहल्वान दुकान से उतरकर देश के घर की तरफ लपक लिये। अस्ल म वह इस खुशी मे रोना चाहते थे कि देश के पास अपनी कार आ गयी है बाबू साहब की तरह—दुकान स चन्द कदम आगे बढके उन्हाने कारपोरेशन के अँधेरे मे नाक सुडकना और आँखें पोछना शुरू कर दिया।

सामने ही वह हरी गाडी खडी थी।

पहलवान ने उसे प्यार से छुआ। उनके छूने मे लगभग वही प्यार था जो उनके हाथो मे बिल्लो या देश के बचपन को छूते समय आ जाया करता था। आँसू का एक कतरा कार पर टपक पडा। पहलवान ने जल्दी स अपनी धोती से उसे साफ किया और उसे उस वक्त तक घिसत रहे जब तक कि आसू के उस कतरे की नमी बिल्कुल खत्म नही हो गयी और तब वह दरवाज़ा खोलकर अन्दर गय। सामनेवाले ओसारे मे बिल्लो मुह फुलाये बैठी थी और कोठरी के दरवाज़े से टिका हुआ देश अपना सर खुजला रहा था।

बिल्लो बस पल भर के लिए मोटर की खबर सुनकर ताज़ा कली की तरह खिल के फूल बनी क्योंकि फिर उसे खयाल आ गये कि मोटर खरीदने मे पसा

लगा होगा और फिर बात हाथ से निकल गयी। उसने ज़मीन-आसमान एक कर दिया। मतलब यह कि देश उससे चोरी करता है। उससे झूठ बोलता है। उससे अपनी कमाई छिपाता है—नही तो मोटर खरीदने का पैसा कहाँ से आया ? और लाटरी लग गयी रही तब भी बताये को तो चहिए रहा। मोटर बिना जीय मे कोई फरक ना पडता रहा। जो पैयसा माटीमिली मोटर मे लगा है उतने से तो घर पक्का हो जाता—देश के पास इनमे से किसी बात का जवाब नही था, इसलिए वह चुप खडा सर खुजला रहा था।

मामा पर किसी की निगाह नही पडी और वह दबे पाव जैसे आये थे वस ही चले भी गये।

बिल्लो का मूड कुछ यू भी बिगडा हुआ था कि अभी कुछ देर पहले अशफाकुल्लाह खा की आलमआरा बेगम से उसकी तू-तू मैं मैं हो चुकी थी और वह झल्लाहट म लाण्डरी बन्द करके घर आ गयी थी।

यह बात है ११ जून सन ७५ की।

जस्टिस सिंहा अपने बगले म जाग रहे थे क्योकि यह रात उनके सोने की रात नही थी। न० १ सफदरगज मे श्रीमती गाधी जाग रही थी कि यह उनके सोने की रात नहीं थी। महात्मा गाधी की समाधि, मौलाना आज़ाद की कब्र, सदाकत आश्रम की कुटिया—विधान सभा की तरफ जाती हुई सीधी, चौडी सडक, राष्ट्रपति भवन की दीवारें—सभी की नीद उडी हुई थी कि यह उनम से किसी के सोने की रात नही थी—पटने की सडको पर नारे जाग रह थे और विद्यार्थिया के दिला का सन्नाटा जाग रहा था।—पर आम लोग सो रह थे। मज़दूर, किसान, छोटे वडे दुकानदार, सफेद कमीजें पहननेवाले बाबू लोग। होमियोपथी और ऐलियोपेथी के डाक्टर, हकीम और वैद्य सभी सो रहे थे—क्योकि सब जानते थे कि फसला क्या होगा। लेकिन जब सुबह हुई तो पता चला कि कोई कुछ नही जानता था।

इलाहाबाद हाईकोर्ट का वह कमरा खचाखच भरा हुआ था जिसमे जस्टिस सिंहा राजनारायण बनाम इन्द्रा गांधी केस में अपना फैसला सुनानेवाले थे।

१२ जून की सुबह म कोई खास बात न थी। गर्मी वसी ही थी। चौक में घण्टाघर की घडी वस ही बन्द थी। इक्का रिक्शा, तांगा और कारो के बीच स पैदल उसी तरह आ-जा रह थे। दुकानें उसी तरह खुली हुई थी। कादिर हलवाई की दुकान पर इमरतियाँ उसी तरह छानी जा रही थी। लू उसी तरह सवेर ही से चलने लगी थी। और कोई यह जानने के लिए परेशान नहीं था कि आज क्या फैसला होनेवाला है। देश तो बिल्लो स यह कहकर अपनी कब-

शॉप गया था कि वह शाम को कलवाली हरी साडी बाँधकर तयार रहे। आज चला जायेगा इन्दिराजी की जीत की खुशी म सिविल लाइन खाना खाये अपनी कार म बैठकर। और इन्दिराजी के जीतने की खुशी म बिल्लो ने यह बात टल जाने दी कि देश ने फिर वही कलवाली बात निकाली।

कारवाली बात पर उसने देश को माफ नही किया था। गयी रात तक वह ग्रकेली देश से भगडती भी रही थी क्योकि देश तो चुप साध के लेट गया था और उसकी डाँटें सुनत सुनत सो गया था। पर वह बमकती रही थी। लेकिन चूकि देश बोल नही रहा था, इसलिए उसे लडने म कोई मजा भी नही आ रहा था। और जब बोल्ते-बोलते उसने एकदम से देश के खर्राटे की आवाज सुनी तो उस हँसी आ गयी। उसने वही खडे-खडे देश की लायी हुई हरी साडी बाधी और फिर अपना नक्ली चमडेवाला बैग लेकर वह महनाज की तरह बडी शान स आँगन म चली-फिरी।

महनाज सोशल वरकर हो गयी थी। दिन-रात 'यूथ काग्रेस' करती रहती थी। नसबन्दी के बारे मे उसने कई तकरीरें याद कर ली थी। जनाने मकाना मे जाती और औरता को नसबन्दी के फायद बताती। 'निरोध' का डिब्बा बैग से निकालकर औरता का दिखलाती—हाल्त यह हो गयी थी कि औरतें उसकी सूरत स शर्माने लगी थी—बिल्लो को तो उसने पहचानना ही छोड दिया था। उसकी आखो पर मुसतक्लि धूप का रगीन चश्मा चढा रहता। कटरा मीर बुलाकी म निकलती तो कटरवाला से सलाम की उम्मीद करती। महल्ले के बच्चे उसे देखत ही निरोध निरोध' चिल्लाने लगते। एक तरह से उसका नाम ही 'निरोध' पड गया था।

कटरा मीर बुलाकी के लिए वह दिन बडी हैरत का था जिस दिन महनाज ने पर्दा उठाया था और साडी पहने, बैग झुलाती एकदम सामने आ गयी थी—सबसे पहले तो खुद उसे शम्सू मिया ने नही पहचाना था—उन्होने सोचा था कि ए भाई ई एकदम्मे से महनाज जसी दूसरी ल्डकी कहाँ से आ गयी! यह बात वह सकीना का बता ही रहे थे कि महनाज ग्रा गयी थी। वही साडी पहने, वही चश्मा लगाय और वही बैग झुलाती। सारा घर सन्नाटे मे आ गया था।

"ए बहिनी खुदा की मार हो तोरी सूरत पर।" सकीना ने कोसना शुरू कर दिया था।

पर जब यह पता चला कि वह डेढ सौ महीना तनख्वाह पायेगी तो सबकी जान म जान आ गयी थी और इस मौके का फायदा उठाते हुए उसने सबको समझा लिया था कि पर्दा कोई ऐसी जरूरी चीज नही है। असल चीज तो आखो

का पदा है।

और उस दिन के बाद से वह बराबर खुली फिजा मे ऐंडने लगी थी।

और एक दिन तो उसने हद कर दी कि पहलवान की दुकान पर नसबन्दी का पोस्टर पहुचा गयी। अब वहा किसी की समझ मे नही आ रहा है कि किधर देखे। पर यह अपना बडे आराम से खडी हो गयी और नारायण को हुक्म देन लगी कि यह पोस्टर दुकान मे किस तरह और कहा लग जाना चाहिए।

बिल्लो उस रात को याद करके हँस पडी। बाप रे बाप, मामा कैंयसा बमके रहे ऊ दिन! दुकान बन्द करके सीधे पहुच गये रह शम्भू मामू के घर कि समझा दयो अपनी महनाज टहनाज को। सरम भी ना आती, ऊ लडकी को। अपन बाप के दोस्तन से नसबन्दी की बात करती है

देश नीद मे कुछ बोला। बिल्लो ने पलटकर उसकी तरफ देखा। पर वह करवट बदलकर फिर सो गया।—वास्तव म वह सोया ही नही था। झगडा खत्म करने के लिए सोता बन गया था। इसीलिए जब बिल्लो ने ठीक उसके सामने खडी होकर अपनी साडी खोली और बेखयाली मे उसके पायती डाल दी तो उस साडी की छुलन स उसके बदन मे गुदगुदी की एक अजीब सी लहर दौड गयी। उसका जी चाहा कि तकिये को भीच ले और खिलखिला के हँसने लग। पर वह अपना जी मार गया और चुपचाप बिल्लो को आँगन मे कूल्हे मटकात देखता रहा। फिर बिल्लो दरवाज़ा खोलकर बाहर जाने लगी तो वह चकराया। चुपके स वह भी उठा। पलग चर्राया तो वह वैसे-का वैसा रुक गया, फिर बहुत धीरे धीरे सास रोके हुए उठा और पजा के बल चल्ता हुआ वह भी बाहर चला गया।

बिल्लो बाहर कार के सामन खडी थी। देश दरवाज़े ही पर रुक गया। बिल्लो उसके आने से बेखबर कार की तरफ देखती रही। फिर उसे वह तस्वीर याद आयी जो एक दिन फुटपाथ पर खिचवायी गयी थी और अब भी कमरे म टँगी हुई थी। फिर उसने हाथ बढाकर कार को यू छुआ जैस वह पानी के बुल-बुले की बनी हुई है और साँस की ठेस से भी टूट सकती है—कार के चिकन हुरे रग के बदन को छूते ही उसकी आँखो म आँसू आ गय और देश न पीछे स उस अपनी बाँहो मे जकड लिया और बिल्लो को लगा जैसे यह भी सुहागरात है और वह दुल्हन बनी बैठी है और देश उसके पास आया है—वह शर्मा गयी।

चल तनी घूम आयें।" देश ने कहा।

बिल्लो के जवाब का इन्तिज़ार किये बिना वह अन्दर भागा। उसने जाँघिय ही पर कमीज़ डाल ली और कार की चाबी लिये हुए बाहर आ गया। बिल्लो

उसका हुलिया देखकर हँस पड़ी।

"पतलून काहे ना पहिया ?"

"टैम ना है।" वह कार का दरवाजा खोलते हुये बोला। फिर, जैसा कि उसने फिल्मों में देखा था, वह अदब से खुले दरवाज़े के साथ खड़ा हो गया और बिल्लो, जैसा कि उसने फिल्मों में देखा था, हँसती हुई बैठ गयी।

गयी रात के सन्नाटे में देश की हरी फोर्ड इलाहाबाद की सूनी सड़कों पर चक्कर काटती रही। चौक का घना बाज़ार सो रहा था। चौक का घण्टाघर जाग रहा था। चौक की कोतवाली ऊँघ रही थी। रानी मण्डी की गली रात के नशे में लड़खड़ा कर जैसे गिर गयी थी और उसे अपने तन बदन का होश नहीं था। सर कहीं था पाँव कहीं था। नवहत पब्लिकेशन्ज़ के बोर्ड पर एक अकेला बल्ब किसी उल्लू की तरह बैठा हुआ, बिना आँख झपकाये उस गली की तरफ देख रहा था। पोस्ट आफिस में सन्नाटा था। हज़ारों खत, हज़ारों लिफाफे, पोस्टकार्ड, मनीआर्डर के फार्म, तार के फार्म मुहरें, रसीदें—सब सो रहे थे—समय जैसे रुका हुआ था। बस एक हरी फोर्ड जाग रही थी और रास्तों की शबनम चाटती फिर रही थी

यकायक सामने से एक बिल्डिंग उभरी।

"ई का है ?" बिल्लो ने पूछा।

"हाई कोरट।" देश ने कहा, "एही तो कल राजनराएन वाले केस का फैसला होनेवाला है।"

फैसला।

क्या ताकत है इस शब्द में ! क्या भरोसा है इसकी आवाज़ में ! स्टेनलेस स्टील की तरह बेदाग और मज़बूत। हिंदुस्तान की जुडिशरी की आज़ादी का प्रतीक। आम आदमी के जीने की अलामत। सपनों का खलिहान।—फैसला। यह एक शब्द न होता तो आदमी कब का मर चुका होता।

देश ने एंजिन बन्द कर दिया वह दोनों अपनी हरी कार में बैठे-बैठे हाईकोर्ट को देखते रहे। और यह यकीन उन दोनों को था कि मिसेज़ गांधी के हारने का तो सवाल ही नहीं उठता।

यह यकीन उनकी तरह बहुत लोगों को था। कुछ को इस आधार पर यकीन था कि यही इन्साफ का तकाज़ा है या, कि नाइन्साफी यही करती आयी है। अदालतें हमेशा सरकार या ताकत का साथ देती हैं। क्या सुकरात को सज़ा नहीं दी गयी थी ? क्या मसीह को सलीब नहीं चढ़ाया गया था ? क्या गैलीलियो के साथ इन्साफ हुआ था ? क्या ब्रूनो को न्याय मिला था ? क्या अमरीका और

अफ्रीका के कालो को वही इन्साफ मिल रहा है जो वहा के गोरा को मिलता है ? क्या जूलियस फ्यूचिक, चार्ली चैपलिन, पॉल रॉब्सन—हजारो-लाखो नाम थे। हजारो-लाखो इन्साफ हुए थे। इन अनेका सवाला के सामने सवालिया निशान नही थे। क्योकि यह सवाल थे ही नही। यह तो इतिहास था। और इतिहास के सामने किसने सवालिया निशान लगाया है ?

हरी फोर्ड मुडी और वापस चली गयी। इलाहाबाद हाई कोट की बिल्डिंग राह के अँधेरे मे अकेली रह गयी।

फैसला

जस्टिस सिंहा अपनी कार से उतरे।

हाई कोर्ट मे बडी चहल पहल थी, पर एक अजीब-सा तनाव भी था। तनाव जस्टिस सिंहा की आत्मा मे था। एक बेनाम डर। एक अजीब-सी बचैनी। उन्होंने भीड की तरफ देखा। यह भीड रोजानावाली भीड से मुख्तलिफ थी।

जो फैसला दुनिया मे किसी को मालूम नही था वह जस्टिस सिंहा को मालूम था और यह खयाल एक पहाड की तरह उनके कधा पर उग आया था और उन्हे लग रहा था कि जैसे कधे टूट जायेंगे। उन्होने कार के अन्दर से फैसले की फाइल उठायी। यह फैसला उन्होंने अपने स्टेनो को डिक्टेट नही किया था। यह फैसला उन्होंने अपने टाइपिस्ट से टाइप नही कराया था। यह फैसला उन्होंने खुद लिखा था। रातो की नीद हराम करके।[1] और यह फैसला लिखते वक्त वह जानते थे कि वह किसी एलेक्शन पटिशन का फैसला नही बल्कि हिन्दुस्तान के इतिहास का एक चप्टर लिख रहे हैं

---

१ जस्टिस सिंहा ने अपना फैसला डिक्टेट भी किया था और टाइप भी करवाया था। पर मैं इतिहास नहीं उपन्यास लिख रहा हूँ और उपन्यासकार के नाते मुझे फैसले का टाइप होना अच्छा नही लग रहा है। हो सकता है वह टाइपिस्ट इतना ईमानदार न निकलता। जो ऐसा होता तो बाद के उन्नीस महीने न जाने कैसे निकलते। जस्टिस सिंहा ने वह फैसला टाइप करवा के गैरजिम्मेदारी का सुबूत दिया। वैसे मैं उनके फैसले के कई हिस्सों से भी सहमत नहीं हूँ और इमरजेंसी के लिए कुछ वह भी जिम्मेदार हैं।

मैं, राही मासूम रज़ा, यहाँ इस कहानी मे चद लमहा के लिए दाखिल होने की इजाजत चाहता हूँ। मुझे आपसे कुछ कहना है। जो बातें मैं कहना चाहता हूँ वह मैं इस उपन्यास के किसी पात्र से भी कहलवा सकता था पर उसमे कोई मजा नही। मैं नही चाहता कि मेरी बात किसी पात्र के सर की टोपी वनकर रह जाये।

मैं यह नही मानता कि अदालतो म कानून चलता है और कानून के आधार पर फसले होते हैं। आई पी सी वाले मुकदमो मे चाहे कानून चल भी जाता हो कि वहाँ झूठ या सच साबित किया जा सकता है। पर जिन मुकदमो मे राज निति या विचारधारा या उसूलो की बात आन पडी हो उनमे कानून अन्धा-बहरा नही रह जाता। उसके चेहरे पर आँखें उग आती हैं। नाक बन जाती हैं। कान निकल आते हैं। दुनिया का कोई जज ऐस मुकदमो मे अपनी विचारधारा, अपने उसूल और अपनी राजनीति से दामन नही बचा सकता। जस्टिस सिंहा ने जो फैसला किया वह कानूनी फैसला नहीं था, राजनीतिक फसला था। यह कहकर मैं अदालत की तौहीन नही कर रहा हूँ बल्कि उस फैसले को तसलीम करते हुए उस पर अपने विचार प्रकट कर रहा हूँ। मैंने इमरजेंसी के जमाने मे भी श्रीमती गाँधी का विरोध करने की हिम्मत की थी और मैं श्री जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन से भी सहमत नही था। क्योंकि श्री जयप्रकाश नारायण की राजनीति ने कभी मेरे दिल को नही छुआ। मैंने उन्हें हमेशा जनता की मुखालिफ सफ मे खडा पाया है। फिर जो लोग उनके साथ लग लिये थे वह भी कुछ भले लोग नही थे। बिहार के सारे बेईमान मिनिस्टर उनके साथ लगे हुए थे। बिहार मे उन्हें पहले कभी बेईमानी नही दिखायी दी और जब उस स्टेट को एक ईमानदार चीफ मिनिस्टर मिला तो बिहार के बेईमान लोगो को साथ लेकर जयप्रकाशजी ने धावा बोल दिया और जनसघ, आर एस एस, प्रेममार्गिया और जमाअते इसलामी जैसे घोर अवाम दुश्मनो से गठजोड करते हुए उन्हें जरा तकल्लुफ न हुआ। मार्क्सवादी कम्यु निस्टो ने भी इस मोर्चे का साथ दिया और यू जनसघ ने दिल्ली मे सरकार बना ली। श्रीमती गाँधी और उनकी कांग्रेसी सरकार की हार बडी खुशी की बात है। पर जो लोग जीते वह भी कुछ बहुत अच्छे लोग नही हैं। मुरारजी भाई आजादी के साथ मिनिस्टर बने थे। क्या उनके जमाने मे कोई बेईमान था ही नही ? उन्होंने कब और कितनी बार उन बेईमानो के खिलाफ आवाज उठायी ? पटेलजी के खिलाफ जस्टिस छागला का फसला मौजूद है। पटनायक साहब 'सिराजुद्दीन केस मे नामजद थे। स्वर्गीय डाक्टर तासीर का एक शेर याद

आ गया

दावरे-हश्र मेरा नामये-आमाल न देख,
इसमे कुछ पर्दानशीनो के भी नाम आते हैं।

जिन लोगो के नाम गाधीजी के कातिलो म लिये जाते हैं वह गाधीजी की समाधि पर इन्सानी दोस्ती की कसम खाते दिखायी देते है। इमरजेंसी एक भयानक काली रात थी। श्रीमती गाधी ग्रहण की तरह हमारे सविधान के चाद को लग गयी थी। पर उस रात के खत्म होने के बाद सवेरा नही हुआ। मुझे तो ऐसा लगता है कि एक रात खत्म हुई और दूसरी रात शुरू हुई।

इमरजेंसी लागू होने के कुछ ही दिना बाद मुझसे एक हिदुस्तानी पत्रकार मिलने आये थे जो शायद वर्मा मे रहते हैं और वहाँ के पत्रो के लिए काम करते हैं। उनसे मैंने यही कहा था कि इमरजेंसी लगाना या न लगाना केवल कोई राजनीतिक सवाल नही है। मुझे शम यह सोचकर आती है कि हिन्दुस्तानी बुद्धिजीवियो ने इसके खिलाफ कोई आवाज नही उठायी। कम्युनिस्ट बुद्धिजीवी तो खुल्लमखुल्ला इमरजेंसी का साथ दे रहे थे और हिदुस्तानी साहित्य का इतिहास उह कभी क्षमा नही करेगा।

अण्डरग्राउण्ड आदोलनो से मेरा कोई सम्पक नही रहा। पर थोडी जान-पहचान जरूर रही जिससे थोडी बहुत बातें मालूम हाती रहती थी। और मैं सोचा करता था कि कल जब मेरा देश मुझसे सवाल करेगा तो मैं क्या जवाब दूगा। उन दिना मैं एक उपन्यास लिख रहा था। सौ पन्ने लिखे होगे कि जी उचाट हो गया और मैंने राजकमल की श्रीमती शीला सधू को लिखा कि मैं एक और उपयास 'कटरा बी आर्ज़ू' लिख रहा हू। तब मुझे लग रहा था कि श्रीमती गांधी चुनाव करवायेंगी और चुनाव से पहले इमरजेंसी जरूर उठेगी। उसी उम्मीद मे यह उपन्यास शुरू किया था कि दोबारा इमरजेंसी लगने मे पहले इसे प्रकाशित करवाया जा सकेगा। और फिर जो होगा देखा जायेगा। तब मुझे यकीन था कि चुनाव म काग्रेस ही जीतगी। चुनाव का नतीजा आने स पहले मैं यही सोचता रहा। और इसीलिए मैं वोट देने नही गया कि कोई मेरे वोट के लायक था ही नही। पर चुनाव का नतीजा जस्टिस सिंहा के फसले से ज्यादा चौंकानेवाला निकला। यह उपयास खत्म होने से पहले इमरजेंसी और उसके साथ काग्रेस सरकारें भी खत्म हो चुकी थी। परन्तु मेरे खयाल म इस उपयास की जरूरत खत्म नही हुई है क्योकि यह मेरे और इमरजेंसी के नाजायज तअल्लुकात की निशानी है। और इसका नाम फिर भी 'कटरा बी आजू ही है क्योकि आर्ज़ू का मौसम खत्म नही हुआ है और शायद कुछ दिनो

मैं, राही मासूम रजा, यहाँ इस कहानी म च द लमहो के लिए दाखिल होने की इजाजत चाहता हूँ। मुझे आपसे कुछ कहना है। जो बातें मैं कहना चाहता हूँ वह मैं इस उपन्यास के किसी पात्र से भी कहलवा सकता था पर उसम कोई मजा नही। मैं नही चाहता कि मेरी बात किसी पात्र के सर की टोपी बनकर रह जाये।

मैं यह नही मानता कि अदालतो म कानून चलता है और कानून के आधार पर फसले होते हैं। आई पी सी वाले मुकदमो में चाहे कानून चल भी जाता हो कि वहाँ झूठ या सच साबित किया जा सकता है। पर जिन मुकदमो म राज निति या विचारधारा या उसूलो की बात आन पडी हो उनमे कानून अधा-बहरा नही रह जाता। उसके चेहरे पर आँखें उग आती हैं। नाक बन जाती हैं। कान निकल आते हैं। दुनिया का कोई जज ऐस मुकदमो मे अपनी विचारधारा, अपने उसूल और अपनी राजनीति से दामन नही बचा सकता। जस्टिस सिंहा ने जो फैसला किया वह कानूनी फैसला नहीं था, राजनीतिक फैसला था। यह कहकर मैं अदालत की तौहीन नही कर रहा हूँ बल्कि उस फैसले को तसलीम करते हुए उस पर अपने विचार प्रकट कर रहा हूँ। मैंने इमरजेंसी के जमाने मे भी श्रीमती गाधी का विरोध करने की हिम्मत की थी और मैं श्री जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन से भी सहमत नही था। क्योकि श्री जयप्रकाश नारायण की राजनीति ने कभी मेरे दिल को नही छुआ। मैंने उन्हे हमेशा जनता की मुखालिफ सफ मे खडा पाया है। फिर जो लोग उनके साथ लग लिये थे वह भी कुछ भले लोग नही थे। बिहार के सारे बेईमान मिनिस्टर उनके साथ लगे हुए थे। बिहार मे उन्हे पहले कभी बईमानी नही दिखायी दी और जब उस स्टेट का एक ईमानदार चीफ मिनिस्टर मिला तो बिहार के बेईमान लोगो को साथ लेकर जयप्रकाशजी ने धावा बोल दिया और जनसघ, आर एस एस, प्रेममार्गियो और जमाअते इसलामी जैसे घोर अवाम दुश्मनो से गठजोड करते हुए उन्हे जरा तकल्लुफ न हुआ। मार्क्सवादी कम्यु निस्टो ने भी इस मोर्चे का साथ दिया और यू जनसघ ने दिल्ली मे सरकार बना ली। श्रीमती गांधी और उनकी कांग्रेसी सरकार की हार बडी खुशी की बात है। पर जो लोग जीते वह भी कुछ बहुत अच्छे लोग नही हैं। मुरारजी भाई आजादी के साथ मिनिस्टर बने थे। क्या उनके जमाने मे कोई बेईमान था ही नही? उन्होने कब और कितनी बार उन बेईमानो के खिलाफ़ आवाज उठायी? पटेलजी के खिलाफ जस्टिस छागला का फैसला मौजूद है। पटनायक साहब 'सिराजुद्दीन केस' मे नामजद थे। स्वर्गीय डाक्टर तासीर का एक शेर याद

आ गया।

दावरे-हश्र मेरा नामये-आमाल न देख,
इसमे कुछ पर्दानशीनो के भी नाम आते हैं।

जिन लोगों के नाम गांधीजी के कातिलो मे लिये जाते हैं वह गांधीजी की समाधि पर इन्सानी दोस्ती की कसम खाते दिखायी देते हैं। इमरजेंसी एक भयानक काली रात थी। श्रीमती गांधी ग्रहण की तरह हमारे सविधान के चाद को लग गयी थी। पर उस रात के खत्म होने के बाद सवेरा नही हुआ। मुझे तो ऐसा लगता है कि एक रात खत्म हुई और दूसरी रात शुरू हुई।

इमरजेंसी लागू होने के कुछ ही दिनो बाद मुझसे एक हिदुस्तानी पत्रकार मिलने आये थे जो शायद बर्मा मे रहते हैं और वहाँ के पत्रा के लिए काम करते हैं। उनसे मैंने यही कहा था कि इमरजेंसी लगाना या न लगाना केवल कोई राजनीतिक सवाल नही है। मुझे शम यह सोचकर आती है कि हिन्दुस्तानी बुद्धिजीवियो ने इसके खिलाफ कोई आवाज नही उठायी। कम्युनिस्ट बुद्धिजीवी तो खुल्लमखुल्ला इमरजेंसी का साथ दे रहे थे और हिदुस्तानी साहित्य का इतिहास उन्हें कभी क्षमा नही करेगा।

अण्डरग्राउण्ड आन्दोलनो से मेरा कोई सम्पर्क नही रहा। पर थोडी जान-पहचान जरूर रही जिससे थाडी बहुत बातें मालूम हाती रहती थी। और मैं सोचा करता था कि कल जब मेरा देश मुझसे सवाल करेगा तो मैं क्या जवाब दूगा। उन दिना मैं एक उपन्यास लिख रहा था। सौ पन्ने लिखे होगे कि जी उचाट हो गया और मैंन राजकमल की श्रीमती शीला सधू को लिखा कि मैं एक और उपन्यास 'कटरा बी आजू' लिख रहा हूँ। तब मुझे लग रहा था कि श्रीमती गाधी चुनाव करवायेंगी और चुनाव से पहले इमरजेंसी जरूर उठेगी। उसी उम्मीद म यह उपन्यास शुरू किया था कि दोबारा इमरजेंसी लगने मे पहले इसे प्रकाशित करवाया जा सकेगा। और फिर जो होगा देखा जायेगा। तब मुझे यकीन था कि चुनाव मे कांग्रेस ही जीतेगी। चुनाव का नतीजा आने से पहले मैं यही सोचता रहा। और इसीलिए मैं वोट देने नही गया कि कोई मरे वोट के लायक था ही नही। पर चुनाव का नतीजा जस्टिस सिंहा के फसले से ज्यादा चौंकानेवाला निकला। यह उपन्यास खत्म होने से पहले इमरजेंसी और उसके साथ कांग्रेस सरकारें भी खत्म हो चुकी थी। परन्तु मेरे खयाल म इस उपन्यास की जरूरत खत्म नही हुई है क्योकि यह मेरे और इमरजेंसी के नाजायज तअल्लुकात की निशानी है। और इसका नाम फिर भी 'कटरा बी आजू' ही है क्योकि आर्जू का मौसम खत्म नही हुआ है और शायद कुछ दिनो

बाद फिर आज़ू करना हिम्मत का काम बन जायेग।

आइए अब १२ जून सन ७५ की तरफ लौट चलें।

एलाहाबाद हाई कोट का कमरा नम्बर २४ खचाखच भरा हुआ था। कही तिल रखने की जगह न थी। सासें सासो से उलझी पड रही थी। यह भीड राजनीतिक थी। आदशवाली राजनीति नही। पसेवाली राजनीति। राजनीति म इन लोगा के सपने नही, पसे लगे हुए थे। लाखा लाख रुपये। हजारो लाइसेंस। लाखो ठेके सडक बनाने के ताकि बेरोजगारी चल सके। गाव से शहर की तरफ। छोट शहरा से बडे शहरो की तरफ।

जस्टिस सिंहा ने मजमे की तरफ देखा, फिर वह पिछले दरवाज़ से कमरा नम्बर २४ मे दाखिल हुए। तमाम लोग खडे हो गये। उनके साथ तमाम लाइसेंस, तमाम रिश्वतें तमाम साजिशें, बेईमानी की सारी दौलत—हर चीज उठ खडी हुई और किसी ने उस सपन की तरफ ध्यान नही दिया जो सबसे अलग-थलग कमरा नम्बर २५ मे एक तरफ खडा जस्टिस सिंहा की तरफ देख रहा था।

जस्टिस सिंहा के बैठते ही तमाम लोग, तमाम लाइसेंस, तमाम ठीके बैठ गय, बस वह सपना खडा रहा पर किसी ने उसकी तरफ ध्यान ही नही दिया।

कमरा नम्बर २४ मे शान्तिभूषण, राजनारायण के वकील, मौजूद नहा थे क्योंकि शायद वह यह यकीन किये बैठे थे कि जिरह-बहस करके वह अपना फर्ज़ अदा कर चुके हैं। फसला तो जाहिर है। परन्तु इन्द्रा गाधी के वकील सतीशचन्द्र खरे मौजूद थ क्योंकि शायद वह भी यही सोच रह थे कि फसला तो जाहिर है। वह सपना भी सांस रोके चुप खडा था क्योंकि वह भी यही सोच रहा था कि फसला तो जाहिर है—पर फैसला जाहिर ही ता नहीं था। तमाम लोग एक महत्त्वपूण बात भूल गय थे कि वह एलाहाबाद हाइकोट म हैं और एलाहाबाद हाई कोट सरकार के खिलाफ फसला देने के लिए मशहूर है। वह सरकार चाह अंग्रेज की हा या कांग्रेस की।

'राजनारायण-बनाम इन्द्रा गांधी।' पेशकार ने एलान किया और जस्टिस सिंहा ने फसले की फाइल खोली और सामने के मजमे की तरफ फिर देखा, गला साफ किया और कहा

'मैं सिफ फैसला सुनाऊंगा और फैसला यह है कि राजनारायण का पटिशन मान लिया गया—"

किसी को अपने सुन पर यकीन न आया। सतीशचन्द्र खरे सन्नाटे म आ गय और फिर वह अकेला सपना तालियां बजाने लगा और उस अकेली ताली

की आवाज़ ऐसी लग रही थी जैसे साठ-पैंसठ करोड लोग तालियां बजा रहे हो—और फिर तमाम लोग एक साथ बोलने लगे और जस्टिस सिंहा पिछले दरवाज़े से अपने रिटायरिंग रूम मे चले गये।

नम्बर एक सफदरजग में यह खबर सुनकर सन्नाटा हो गया।

लोग आने लगे।

सुभद्रा जोशी ने कहा त्यागपत्र दे देना चाहिए।

जगजीवनराम ने कहा त्यागपत्र दे देना चाहिए।

स्वर्णसिंह ने कहा त्यागपत्र दे देना चाहिए।

यशवंतराव चव्हाण ने कहा त्यागपत्र दे देना चाहिए।

श्रीमती गांधी ने सुना। और यह सुनकर वह मुस्कुराती रहीं।

फिर दूसरा रेला आया।

यशपाल कपूर ने कहा त्यागपत्र नही देना चाहिए।

सिद्धार्थशंकर रे ने कहा त्यागपत्र नही देना चाहिए।

रजनी पटेल ने कहा त्यागपत्र नही देना चाहिए।

ओम मेहता ने कहा त्यागपत्र नही देना चाहिए।

पी एन हक्सर ने कहा त्यागपत्र नही देना चाहिए।

श्रीमती गांधी ने सुना। और यह सुनकर वह मुस्कुराती रहीं।

और तब संजय गांधी ने मां की आंखों मे आंखें डालकर कहा त्यागपत्र नही देना चाहिए।

श्रीमती गांधी खुद भी यही सोच रही थी। उन्होंने फैसला किया कि त्यागपत्र नही देना चाहिए। और उनका फैसला सुनते ही अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की समझ मे यह बात आ गयी कि श्रीमती गांधी को त्यागपत्र नही देना चाहिए। जस्टिस सिंहा क्या बेचते हैं। वह होते कौन हैं प्रियदर्शनी को राजगद्दी से हटानेवाले और एक मोटे थलथले दमाग मे एक नारे का केचवा कुलबुलाने लगा कि इन्द्रा हिंदुस्तान है और हिन्दुस्तान इन्द्रा है।

जयप्रकाश नारायण ने पटने मे बडी सख्त तकरीर की।

राजनारायण ने मांग की कि इन्द्रा गांधी को चुल्लू भर पानी मे डूब मरना चाहिए।

आकाशवाणी की एक न्यूज़ रीडर प्रेमा नारायण को जब यह खबर सुनानी पडी कि श्रीमती गांधी एलेक्शन पेटीशन हार गयी और अब वह छ साल तक कोई चुनाव नही लड सकेंगी तो वह रो पडी और उसे कई बार "क्षमा कीजियेगा" कहना पडा। वह यह सोच भी नही सकती थी कि मिसेज़ गांधी कोई लडाई

हार भी सकती हैं। जिसने मुरारजी भाई को दूध की मक्खी की तरह निकाल फेंका हो वह भला किसी जस्टिस जगमोहन सिंहा से कैसे हार सकती हैं।

वह दिन बहुत बुरा गुजरा। प्रेमा को हर चीज़ झूठी दिखायी दे रही थी। अब जब माउण्ट एवरेस्ट कार्डबोर्ड का निकला तो फिर कोई किस चीज पर भरोसा करे। उसने दिल ही दिल मे जयप्रकाश नारायण को बहुत गालियां दी। फिर भी तस्कीन नही हुई।—जिस इन्द्रा गांधी के लिए उसने आशाराम को छोडा था वह साबुन के बुलबुले की तरह टूट गयी तो अब प्रेमा नारायण जिये कैसे और जिये किस मुह से ?—और जीने का मतलब क्या है ?

आशाराम की याद आते ही वह उदास हो गयी। उसे जाडो की वह दोपहर याद आ गयी जिसने उसके दिल को प्लेटफार्म बनाकर उसकी महब्बत के खिलाफ तकरीर की थी। सर्दी ऐसी थी कि मुह से निकलती हुई भाप मे दिल की बात खोयी जा रही थी। कई दिनो की लगातार बारिश के बाद धूप निकली थी। पर धूप कुछ सहमी-सहमी सी थी। जैसे मुड-मुडकर पीछे देख रही थी कि कही बादल तो नही आ रहे हैं—हवा जसे सर्दी से भागी भागी फिर रही थी। पेडो के दात बज रहे थे। यूनिवर्सिटी के खुले बागीचे मे लडके-लडकिया ओवर कोट पहने, मफलर लपेटे, भारी स्वेटर पहने, जुर्राबें चढाये धूप के पीछे पीछे चल रहे थे। हँस-बोल रह थे। शायरी कर रहे थे। चगेजी अपनी गालियो भरी नज्म सुना रहा था और लडके लोट पोट हुए जा रहे थे। जेबो मे भुनी मूगफलियाँ, हाथो मे नमक मसाले की पुडिया, क्रिकेट के मैदान म इण्टर-वसटी का कोई मच हो रहा था। वहाँ खेल कम हो रहा था और शोर ज्यादा हो रहा था—प्रेमा सोच भी नही सकती थी कि इस हसीन लिपटनेवाली दोपहर म वह आशाराम से जुदा भी हो सकती है। पर हुआ यही।

आशाराम और प्रेमा नारायण की राजनीतिक ऐनको के नम्बर अलग-अलग थे। प्रेमा नारायण की ऐनक के शीशो पर श्रीमती गांधी की तस्वीरें चिपकी हुई थी इसलिए उसे श्रीमती गांधी के सिवा कुछ दिखायी ही नही देता था। मार्क्सवाद या मार्क्सवाद लेनिनवाद मे क्या रक्खा है। अस्ल चीज तो इन्द्रावाद है और वही हिन्दुस्तान की आर्थिक समस्याएँ दूर कर सकता है। आशाराम प्रेमा से सहमत नहीं था। पर उन दोनों म फर्क यह था कि आशाराम राजनीति और प्रेमा को गिड मिड करने पर तयार नही था और प्रेमा के प्रेम का जस कोई स्वतन्त्र वुजूद ही नही था। आशाराम कभी मजाक म भी श्रीमती गांधी के खिलाफ कुछ कह देता तो प्रेमा हत्थे स उखड जाती।

यही दिसम्बर की उस खूबसूरत दोपहर मे भी हुआ।

आशाराम भुनी मूँगफलियाँ लेकर लौटा और प्रेमा के पास घास पर बैठ गया। कागज का एक चोगा उसने प्रेमा की तरफ बढा दिया। दोनो मूगफली खाने लगे और दोनो के मुह भाड मे भुनी हुई मूगफली की सोधाहट से भर गये और दुनिया कुछ और हसीन हो गयी। किसी और गोल की तरफ से मूगफली के चोगे का फटा हुआ कागज उडता हुआ उनकी तरफ आ गया। वह किसी दैनिक पत्र का एक टुकडा था। सामने ही मिसेज गाँधी की तस्वीर थी। वह मुस्कुरा रही थी। वही 'मक्लीन मुसकुराहट'। आशाराम ने वह कागज उठा लिया और तस्वीर की तरफ देखता हुआ बोला, "यह राजनीति का धधा छोड भी दें तो मॉडलिंग करके खा कमा लेंगी।'

"देखो राम—"

"दख रहा हू।" आशाराम ने उसकी भल्लाहट बीच से काट दी। "स्वेटर नया है और तन पर सज रहा है। साडी भी बहुत खूबसूरत है और तुम तो खर हमेशा ही नयी और खूबसूरत दिखायी देती हो। अपनी मिसेज गाधी की तरह मुस्कुराना सीख लो तो तुम्हें प्रधानमत्री बनवा दूँ।"

"तुम जलते हो कि वह तुम्हारी तरह रूस-चीन की दल्लाल क्या नही हैं।"

"यह दल्लाल अच्छा शब्द नही है। सुनने ही मे घटिया लगता है।" आशाराम ने कहा, "ब्रोकर कहो। यह रिसपेक्टेबिल लगता है। वैसे इन बातो से कम्यूनिस्ट आदोलन नही रुकनेवाला है।'

'क्या, क्या सन बयालीस मे तुम्हारी पार्टी ने गद्दारी नही की थी?"

'यार प्रेमा। तुम छोडो न पालिटिक्स।"

'छोड् क्या?"

"क्योकि तुम पोलिटिकल मिसटेक और गद्दारी मे फर्क नही कर सकती।"

"जब सारा देश स्वतन्त्रता सघर्ष की तैयारी कर रहा हो, ऐसे मे यदि कोई किसी लडाई को केवल इसलिए कौमी जग कहके अग्रेजी सामराज का पिट्ठू बन जाये कि रूस भी लडाई मे शामिल हो गया है तो क्या यह कवल पोलिटिकल मिसटेक है? यह गद्दारी है।'

'सन् चौदहवाली लडाई मे तुम्हारे बापू श्री मोहनदास करमचन्द गाधी ने लडाई को कौमी जग कहे बिना यही किया था। वह हिदुस्तानियो को अग्रेजी फौजो म भरती करवा रहे थे ताकि व अग्रेजी सामराज का बचाव के लिए अपनी जान द सकें। यह क्या था?"

प्रेमा उसे घूरने लगी। वह बैठा मुस्कुराता रहा और मूगफली खाता रहा। प्रेमा ने मूगफली का चोगा उसके मुह पर खीच मारा और उठकर वहा से चली

गयी। आशाराम हँसकर रह गया। यह तमाशा कोई पहली बार नहीं हुआ था। उस प्रेमा को यूँ छेड़ने में बड़ा मजा आता था। वह वहीं बैठा धूप में बोर-बोर कर मूँगफली खाता रहा। वह जानता था कि प्रेमा दस-बीस मिनट में वापस आ जायगी। पर उस बार ऐसा नहीं हुआ। प्रेमा नहीं आयी। उसने शर्त रख दी कि वह पहले गाँधीजी और मिसेज गाधी (कस्तूरबा नहीं इन्द्रा) के बारे में बदतमीज़ी करने की म्आफी मांगे। आशाराम को यह बात बुरी लगी। गाधीजी या इन्द्रा गाधी का उसकी मुहब्बत के बीच में आने का क्या हक है ? उसने भी शर्त रख दी कि पहले प्रेमा कम्युनिस्टों को रूस चीन का दल्लाल और गद्दार कहने पर म्आफी माँगे। इस पर प्रेमा तैयार नहीं हुई। तो उस पर आशाराम तैयार नहीं हुआ—दूरियाँ बढ़ने लगीं। यूनिवर्सिटी ने दिलों के टूटने और जिन्हों के टकराव की आवाज सुनी और सब हैरान रह गये क्योंकि यह तो किसी ने सोचा भी नहीं था। प्रेमा ने तो देश के लिए कई पैसेवाले लड़कों को ठुकरा दिया था और आशाराम तो किसी लड़की की तरफ देखता भी नहीं था। और यह बात सब ही जानते थे कि आशाराम की शिक्षा समाप्त होते ही दोनों की शादी हो जायगी।

रामदयी ने अपने सीधेसादे गँवारू स्टाइल में बीचबचाव करवाने की कोशिश की पर दोनों अपनी जगह टिके गये थे और कोई पहल करने पर तैयार नहीं था—चुनांचे प्रेम पर दूरियों की धूल पड़ने लगी। कोई दिल की झाड़ पोंछ रोज थोड़ी करता है और दिल वह चीज नहीं जिसकी झाड़-पोंछ का काम किसी नौकरानी या माँ के सुपुर्द कर दिया जाय।

प्रेमा ज़िद में और कांग्रेसी हो गयी। आशाराम ज़िद में और बायीं तरफ सरक गया और सी पी एम से भी उसके तअल्लुकात बिगड़ने लगे। चुनाव पर से उसका भरोसा अपने दादा की हार के बाद ही उठ गया था। वह जानता था कि वह जिस कण्डिडेट का साथ दे रहा है वह उसके दादा के मुकाबले में कुछ नहीं। पर वह जीत गया। और वह इसलिए नहीं जीता कि उस कांस्टिचुएंसी में वामपंथियों की ताकत ज्यादा थी। वह इसलिए जीता कि शुद्ध कांग्रेसियों ने बाबूराम आजाद का साथ नहीं दिया था।—वह क्रान्ति की तरफ बढ़ गया और यूँ लगभग बिल्कुल अकेला हो गया क्योंकि इलाहाबाद जैसे नौकरीपेशा शहर में क्रान्तिकारियों का क्या काम !

फिर प्रेमा दिल्ली चली गयी और आकाशवाणी पर न्यूज रीडर हो गयी और उसी दिन से आशाराम ने रेडियो पर हिन्दी समाचार सुनना बन्द कर दिया क्योंकि प्रेमा की आवाज़ उसके दिल के ज़ख्म और उसके प्रेम के अपमान के

घाव का हरा कर देती थी। वह अंग्रेज़ी मे समाचार सुनता था और उस पर बाबूराम से बहस हो जाती। बाबूराम अंग्रेज़ी नही जानते थे और हिंदी मे समाचार सुनना चाहत थे।

यह दोना यू लडते थे जैसे तल-उपरिया भाई हा। जस उन दोनो के बीच से एक और पीढी गुज़र ही न चुकी हो। आशा के पिता।

राजाराम 'बेकल बाबूराम आजाद' के बेटे और आशाराम के बाप थ। आशाराम अपने बाप की परछाई बना रहता था। जाहिर है कि राजाराम 'बकल' बाबूराम को 'पिताजी' कहते थे इसलिए आशाराम भी अपने दादा का पिताजी ही कहने लगा क्याकि उस यकीन था कि उसके पिता जो करते हैं ठीक ही करते हैं। रामदयी और राजाराम की हज़ार कोशिशा के बाद भी उसने बाबूराम को दादा कहके नही दिया और घरवालो ने हार मान ली।

परन्तु बाद म उसका दादा को पिता कहना बाबूराम के बहुत काम आया। यह ठीक है कि बाबूराम और राजाराम मे हिंदी-उदू सवाल पर बडी भडपें हुआ करती थी। बाबूराम हिन्दी को भापा ही नही मानते थे। उनका कहना था कि खडी बोली उदू बनकर जवान हुई। इस म्यामल म वह गांधीजी की बात मानने पर भी तैयार नही थे। और राजाराम का कहना था कि भापा ता हिंदी ही है जो फारसी लिपि म भी लिखी जाती है।—इस सवाल को लेकर घर म वह चीख पुकार मचती कि रामदयी घबरा जाती और पति से कहती कि वही क्यो नही चुप हो जाता। और यह सुनते ही बाबूराम हँस पडत और बहू स कहत कि जोर जोर स वह नही उनका प्यार बोल रहा है। उन बाप बेटा म दोस्ती थी। पर राजाराम म एक ही खराबी थी कि उसे राजनीति म कोई दिलचस्पी ही नही थी। वह कहता था कि वह तो कवि है और प्रेम करना उसका धम है। तो वह एक हिंदी पत्रिका निकालने लगा और बाकी वक्त कवि सम्मलनो मे गुज़र जाता।

कलकत्ते मे एक अखिल भारतीय कवि सम्मलन का आयोजन हुआ। राजाराम गया। वहा नक्सलिया और पुलिस के टकराव के बीच मे फँस गया। जान बचाकर भागा—पुलिस न सोचा कि वह नक्सलिया है। दौडा लिया। वह पकडा गया। पुलिस कह रही थी कि नकसलिया है। वह कह रहा था कि वह 'बेकल' है।—पुलिस ने सोचा कि बेकल तो नकसलिये भी हैं इसलिए एक दीवार के सामने खडा करके पुलिस न उसे गोली मार दी। दूसरे दिन के अखबारा मे खबर आयी कि हिंदी का प्रसिद्ध कवि राजाराम बेकल' नकसलिया और पुलिस की एक झडप मे पुलिस की गोली स मारा गया। उसकी लाश से

कुछ ऐसे कागजात बर-आमद हुए जिनसे पता चलता है कि वह इस आदोलन मे गले गले डूबा हुआ था और एक टोली का सरगना था और कवि सम्मलन का तो बस बहाना था। वह वास्तव म कलकत्ते म नक्सलियो की एक अखिल भारतीय बठक मे शिरकत करन आया था।

पुलिस का यह बयान नक्सलियो न नही माना क्योकि वह जानत थे कि 'बेकल' का उनसे कोई तअल्लुक नही था। पुलिस का यह बयान बाबूराम 'आजाद' ने नही मान। क्योकि वह यह जानते थे कि यह बात गलत है।

तो अब उनके पास एक आशाराम रह गया और एक वह पत्र रह गया—हिंदी का वह पत्र जो राजाराम बेकल, उनका बेटा, उनका दोस्त निकाला करता था।

तो वह पत्र उन्होने बन्द नही किया। उन्होने हिन्दी सीखना शुरू किया और और वह पत्र निकालत रहे। सम्पादक का नाम बदल गया। अब उस पत्र के सम्पादक बाबूराम आजाद' थे।

इसलिए आशाराम अब उन्हें पिताजी कहता तो उन्हे लगता कि उनके पोते मे उनका बेटा भी जी रहा है। पर अब वह बूढे हो गय थे। नहो, बूढे तो वह बहुत दिनो से थे। अब वह बहुत बूढे हो गये थे। पर खादी और काग्रेस पर उनका विश्वास अब भी उतना ही अटल, उतना ही अटूट था।

इसीलिए जब जस्टिस सिंहा के फसले की खबर आयी और आशाराम ने उनकी तरफ शरारत से देखा तो वह बडे यकीन से बोले, 'देख क्या रहे हो। नेहरू की बेटी को कुरसी का लालच नही हो सकता। शाम तक वह इसतेफा दे देगी।

आशाराम मुस्कुरा दिया।

रामदयी ने खुशामद भरी नजरो से बेटे की तरफ देखा। उसकी आँखें आशाराम से बोली, तुम्ही चुप हो जाव। बहस करे से का फायदा ? ई कभई तोरे पिताजी की ना सुनिन तो तोरी का सुनिहं ?—अपनी मा की आखो की बातें सुनकर भी वह मुस्कुराता रहा तो बाबूराम ने कहा, "इसमे मुस्कुराने की कोई बात नही। तुम देख लेना।"

जो उन्होन त्यागपत्र नही दिया तो आप कांग्रेस छोड देंगे ?'

'यह जो तुम्हारी माँ है, रामदयी, यह अगर तुम्हारे साथ कोइ ज्यादती कर बैठे तो क्या तुम इसे माँ मानना छोड दोगे ? कांग्रेस मेरी माँ है। और प्रिय दशनी के इसतेफे से उसका कोई तअल्लुक नही है।"

इसतेफा देने पर तो बाबूराम 'आजाद' नही तयार हुए पर उन्ह यकीन था कि उनकी प्रियदशनी भला ऐसा कसे कर सकती है कि जस्टिस सिंहा के फसले

के बाद भी कुरसी पर डटी रह ? यह तो नामुमकिन है। फिर भी आशाराम की मुस्कुराहट ने उन्हे परीशान जरूर किया। उन्ह लगा, जैसे आशाराम कोई ऐसी बात जानता है जो उन्हे नही मालूम। कही वाकई यही तो नही होन वाला है कि प्रियदशनी कुरसी पर बैठी रह जायेगी ?—तो उन्होने उसी वक्त एक तार लिखा अपनी प्रियदशनी के नाम कि उसे फौरन इसतेफा दे देना चाहिए और थोडे दिनो के लिए अपनी जगह पर बाबू जगजीवनराम को प्रधानमन्त्री बना देना चाहिए।

आशाराम यह तार देखकर भी मुस्कुरा दिया और बोला, "पिताजी, आप किस दुनिया मे रहत हैं ? भूल जाइए उस प्रियदशनी को जिस आपन गोद मे खिलाया है और जो अपने बाप जवाहरलाल नेहरू के साथ कई बार आपके टूटे हुए घर मे आ चुकी है। और जो आपको 'आज़ाद चचा' पुकारती है और जिसने छुटपन म एक दिन आपके सामने आपके दोस्त जवाहरलाल से पूछा था कि क्या आज़ादी आज़ाद चचा की वाइफ का नाम है—हमारे देश की प्रधानमन्त्री वह प्रियदशनी नही, वह इन्द्रा गाँधी है जो अपने सिवा किसी को पहचानती ही नही—।"

"तुम तार दे आव।" बाबूराम ने कहा।

आशाराम कन्धे सिकोडकर तार देन चला गया।

पहलवान के चायखाने मे सन्नाटा था। लोग थे, पर चुप थे। किसी को यकीन नही आ रहा था कि उन्हाने जो सुना है वह ठीक सुना है।

"ए आशा बाबू," पहलवान ने आवाज़ दी, "किधर जा रह ?"

आशाराम रुक गया। पहलवान उसके लिए चाय बनाने लगे। चाय बनाते बनाते और आशाराम की तरफ देखे बिना पहलवान ने कहा, "हम लोग ई त किया है कि कटरा मीर बुलाकी का नाम कटरा इन्द्रा गाँधी कर दिया जाये।"

आशाराम ने पहलवान के हाथ से चाय की प्याली ले ली पर उसने उसकी बात के जवाब मे कुछ नही कहा। श्रीमती गाधी के हार जाने के बाद भी पहलवान की चाय का मजा वही था। आशाराम का मुह गम चाय मे घुली हुई बालाई की नर्मी से भर गया और वह यह सोचकर मुस्कुरा दिया कि किसी के हारने या जीतने से जिन्दगी का मजा नही बदलता।

कटरा श्रीमती गाँधी

बिल्लो इन्द्रा गाधी के मुकद्दमा हारने के गम मे इतना रोई कि उस दिन 'जनता लाण्डरी' को खोलना भूल गयी। अपने छोटे से इतिहास मे 'जनता लाण्डरी' पहले दिन बन्द हुई थी। इतवारी बाबा को दूसरे दिन भी सुबह की चाय पीने के लिए पहलवान टी स्टाल के खुलने का इन्तजार करना पडा। किसी काम मे बिल्लो का जी ही नही लग रहा था। फैसले के दिनवाली रात को तो उसके घर चूल्हा ही नही जला। दिल देश का भी दुखा। दिन का खाना तो वह खुद भी टाल गया। पर रात को उसके पेट मे चूहे कूदने लगे क्योंकि पेट के चूहे तो न राजनारायण को जानें न इन्द्रा गांधी को। पर बिल्लो मुह लपेटे रो रही थी। देश उसके पास गया। उसके पास बैठ गया। उसके बालो से खेलने लगा। उसके बालो से खेलते खेलते वह पलभर को अपने पेट की भूख भूल गया और उसे यह भी याद न रहा कि आज ही दस बजे तो श्रीमती इन्द्रा गाँधी, बबो को कौमियानेवाली इन्द्रा गांधी बैंक से कर्ज दिलवानेवाली इन्द्रा गाधी मुकद्दमा हारी थी। बदन बदन को पुकारने लगा पर बिल्लो ने अनसुनी कर दी। वह रोती रही और देश उसके बालो से खेलता रहा और उसका सास तेज होता रहा।—फिर एकदम से बिल्लो का एक खयाल के साप ने ऐसा डसा कि बिलबिलाकर उठ बैठी और आसू पोछते हुए बोली, "अब बकवा ई ता ना न चहिए कि तुरते करजवा वापिस करो ?"

देश हँस पडा। दुनिया भले बदल जाय पर बिल्लो नही बदलेगी।

"ई हँसे की बात ना है।" बिल्लो ने कहा, "मोटर मे पैयसा ना फँसाय

होते तो बक्वाले को देके खुसामद-दरामद करत कि थोडी-सी मुलहत दे दा। का पता मानी जाता। पर तूह तो मोटर का सौक चर्राया रहा। अब ओही से बोर-बोर के रोटी खाव।"

वडे जोर की भूक लगी है।" दश को पट की भूख याद आ गयी।

"आग लगे तोरी भूक मे।" बिल्लो ने कहा।

'काहे को आग लगा रही हो हमर भया की भूख मे?' आँगन मे पाव धरने के बाद बुरका हटाती हुई शहनाज़ ने पूछा।

देश और बिल्लो, दोनो ही ने शहनाज की तरफ देखा।

'हम पूछित है," बिल्लो ने दश से पूछा, "कि मास्टर बदर के आये का वखत हो गया का?"

शहनाज़ शर्मा गयी। और आगन म फश की तरह बिछी हुई उदासी जैसे एकदम से खत्म हो गयी। बिल्लो खिलखिला क हस पडी और शहनाज़ बुरके को अलगनी पर फेंकती सामनेवाले पलग पर बैठ गयी। फिर उसने देश की तरफ देखा जिसने बिल्लो की आख बचाकर इशारा किया कि उसे बहुत भूख लगी है। शहनाज़ ने इशारा किया कि धीरज रक्खो। बिल्लो यह इशारेबाज़ी देखती रही पर अनजान बनी बठी रही जैसे कुछ देख ही न रही हो।

'तनी हमरे सिर म कँघइ कर दयो।" बिल्लो ने सर खुजलाते हुए कहा, 'लग रहा है कि जूयी पड गयी है।'

'कँघई-ओधई बाद म करेंगे।' शहनाज़ ने कहा, 'तुम पहिले मोको कुछ खिला दयो भाउज। पेट मे चूहा कूद रहा।"

'इ चूहा केंका पहुच गया पेट मे?" बिल्लो न पूछा।

दश घबराकर दूसरी तरफ देखने लगा। शहनाज़ ने बिल्लो को घूरा। बिल्लो बडी सादगी स शहनाज़ की तरफ देखती रही जसे उसे पता ही न हो कि अभी-अभी उसन जो बात पूछी थी उसका मतलब क्या निकलता है। और शहनाज़ के सारे बदन का खून उसके चेहरे म खिंच आया और उसकी सांवली रगत के नीच गुलाबी रग छलकने लगा। इसी गुलाबी छलकन के लिए तो बिल्लो ने वह बात कही थी। वह मुस्कुरा दी।

'जाव हम तुमसे ना बोलत।" शहनाज़ न झल्लाये हुए शर्मीले लहजे म कहा। वह इस बात पर खफा नही थी। पर भया के सामने तो ऐयसी बात नही करनी चाहिए। वह क्या सोचते हागे—और वह जसे जाने के लिए उठ गयी।

"उठे गयी हो तो तनी चूल्ह मे आग बना दयो।" बिल्लो ने कहा।

शहनाज बावरचीखाने की तरफ़ चली गयी।

"तु ही बडी बदमास।" देश ने कहा।

"ए मे बदमासी की का बात है ? आज नही तो कल चूहा दौडव क ओके पेट मे।"

"अम्मा ना हाती ए वखत घर मे तो हम चूहा दौडा देत तारे पट म

बिल्लो ने उसे घूरा और उसके घूरन पर वह जोर जार से हँसने लगा चूल्हा जलाती हुई शहनाज ने पलटकर उनकी तरफ देखा और वह बहुत हुई जैसे—बस क्या ? खुश हुई और ऐसी खुशिया के आगे पीछे कोई जैम होता [

"अब्बा कहते रहे कि भोलू-चा मिटिंग बुलाइन है आज रात को म भर की।" शहनाज ने बावरचीखाने से कहा।

"काहे की मीटिंग ?" देश ने पूछा।

"शाइद महल्ले का नाम बदले के वास्ते।"

"महल्ले के नाम मे कौन खराबी आ गयी ?" बिल्ला ने पूछा।

"सुन रहे कि ऊ कटरा मीर बुलाकी को कटरा श्रीमती गाधी किया रह।" शहनाज ने चूल्हे पर अलमूनियम की केतली चढा दी। किसी ने दा से कुछ नही कहा। शहनाज बेसन गूधने बैठ गयी। पर वह कनखिया मे और बिल्लो की तरफ देखती भी जा रही थी। उन दोनो मे कोई काना फूसी रही थी। फिर उसने देखा कि बिल्लो ने टेंट से दो रुपये का एक नोट निक कर देश को दिया और देश नोट को जेब म रखता बाहर चला गया।

'कहाँ भेज दिया भैया को ?"

"भेजा है कि एक ठो मास्टर बदर खरीद लिआयें। केहू मारे कि तोरे म साब तो वलीमे के चक्कर म निकलेवाले ना हैं। और कोई दिन मामू का चल गया कि तू लोग इहा मिले आते हो तो खून पिये को दौड पडिहे देस का-

मुस्कुराती हुई शहनाज एकदम से उदास हो गयी।

बिल्लो भी बावरचीखाने मे आ गयी और उसी के पास एक पटरे पर के प्याज काटने लगी और छोटा सा बावरचीखाना प्याज की तेज महक स गया और उन दोनो की आँखो से पानी बहने लगा। फिर उसने कुछ हरी मि काटी और हरे धनिये की पत्तियाँ ली और यह सब बेसन के उस आटे म मि दी जिसे शहनाज गूध रही थी। बोली, "जल्दी-जल्दी फुलौडी तल ल्यो। म साब आते ही होइहे। उनहे गरम-गरम फुलौडी खाये का बडा सौक है बात खत्म करके उसने दूसरे ऐले पर कढाई चढाकर उसमे सरसो का

डाला और शहनाज़ जल्दी-जल्दी बेसन फेंटने लगी और उसकी कलाइयों में पड़ी हुई काच की चूड़िया बजने लगी।

"मामा का नाम रख रहे अपने कटरे का?" बिल्लो ने पूछा कि शहनाज़ की झेंप कुछ कम हो।

"कटरा श्रीमती गाधी।" शहनाज़ ने कहा, "यह तो बहुत बुरा हुआ न भाउज?"

"बुरा? खाली बुरा? हमरा तो रोते रोते बुरा हाल हो गया। सात सनिच्चर की झाड़ फिरे ई माटी मिले जगमोहन सिंहा पर। जगमोहन। तनी नाम दखो हरामी का—" दरवाज़े की कुण्डी बजी। बिल्लो ने शहनाज़ की तरफ शरारत से देखा। शहनाज़ नीचे देखने लगी और उसका हाथ बेसन फेंटने मे और तेज़ी से चलने लगा।

'देश साहब हैं?" मास्टर बद्रुलहसन नायाब मछलीशहरी की आवाज़ आयी।

'ढेर इतराव मत।" बिल्लो ने हाक लगायी, "हम्मे पता है कि तू कौन देस साहेब से मिले आये हो।'

"हट् भाउज।' शहनाज़ ठनकी, "हम तो आके गुनहगार बन गय।"

बिल्लो हँसती हुई दरवाज़े की तरफ बढ गयी। उसने दरवाजा खोला। सामने मास्टर बद्रुलहसन खड़े थे।

'आदाब भाबी।"

"भीतर चलके बयठो," बिल्लो ने कहा, "तारे भैया आते ही होइह। हम तनी मामा से एक ठो बात कहके आ रहे।"

मास्टर के जवाब का इन्तिज़ार किये बिना वह हवा हो गयी।

मास्टर बदर को मालूम था कि शहनाज़ वहा आयी हुई है इसीलिए बिल्लो के यू चले जाने पर वह झेंप से गये क्योंकि इसका मतलब यह था कि बिल्लो को यह मालूम था कि इस वक्त वह देश से मिलने नही आये हैं।—वह अन्दर चले गये।

शहनाज़ का हलक सूख रहा था। बिल्कुल तनहाई मे बदर मे यह उसकी पहली मुलाकात हो रही थी। और यह सोचकर न वह आयी थी न बदर। उन दोना ने तो बस यह सोचा था कि दोनो एक जगह होंगे। चाहे एक-दूसरे से बात भी न करें। पर एक दूसरे की तरफ देख तो लेंगे।

मास्टर बदर ने शहनाज़ को देख तो लिया। पर बावरचीखाने मे जाने की हिम्मत न हुई, हालाँकि उन्हे मालूम था कि उन दोनो को तनहाई का मौका

देनवाले देश और बिल्लो आवाज़ किये बिना अन्दर नहीं चले आयेंगे—फिर : मतलब यह कि कोई और भी आ सकता है। कोई कुजड़न आ सकती है। क नायन आ सकती है।

तो वह दालान म जा बठा और बास का चर्खीदार पखा झलने लगा।

घर मे सन्नाटा रहा।

मास्टर ने गला साफ किया "भाउज नहीं है क्या ?"

'जी नहीं," शहनाज ने कहा, "भया भी नहीं ह—"

कढाई म तेल कडकडा चला था। आवाज़ पर शहनाज़ कड़ाही की त मुड़ी। कड़ाही मे तेल के छोटे-छोटे बुलबुले तर रहे थे। उसन फेंटे हुए बसन एक बूद कड़ाही मे टपका दी और गम तल म गिरते ही वह बूद तड़पन लगी नाचन लगी। पासवाले ऐले से केतली का पानी भी सनसनाने लगा था। तो श नाज ने चाय का डिब्बा उठाया और साफी स केतली का ढक्कन उठाया। भ उसकी सासा मे घुस गयी और उसने खौलते हुए पानी म चाय की पत्ती डाल फिर दूध डाला। फिर चीनी डाली। फिर दो-चार छोटी एलाइचिया अ लौंगें डाली और फिर चुटकी भर नमक डालकर उसन केतली का मुह ब कर दिया और कढ़ाही म फुलकियें डालन लगी।

मास्टर बदर दालान म बैठे पखा झलत रहे और दानो ही एक दूसरे बार मे सोचत रहे और—सोचते रहे कि वह दोना इस वक्त अकेले ह अ थाडी देर बाद अकेले नहीं रह जायेंगे। दोना ने कई बार गला भी साफ किय बदर ने उठकर बलुही सुराही से पानी पिया। शहनाज़ ने फुलकियो की ख खेप उतारकर कड़ाही मे दूसरी खेप डाली—पर घर का सन्नाटा नहीं टूटा।

यह दोना कई बार सिनेमा हाल में अकेले हो चुके थे। पर वहाँ भीड हो थी। और उस भीड के शोर मे वह दोनो सरगोशी कर लिया करते थे। ' यह मुकम्मल तनहाई—वह दोना ही इस तनहाई म डर हुए थे।

और चूल्हे पर चाय खौलती रही। और कडकडात तल म फुलकिया नाच रहीं और शहनाज सर नेहुडाये बैठी रही और मास्टर बदर पखा झलते र और उन दोना के बीच मे २ जून की रात खडी रही।

एक प्याली चाय मिल जाती तो—" आखिर मास्टर न हिम्मत की।

शहनाज न कोई जवाब नहीं दिया। वह प्याली म चाय उँडेलन लगी और बदर चाय लेने के बहाने बावरचीखान म आ गया। शहनाज न चाय क प्याली उसकी तरफ बढ़ायी। प्याली लेत हुए मास्टर न, जान पर बूझकर उसक हाथ छू दिया और शहनाज का बदन सन् से हो गया। सिनमा की भीड में हा

का हाथ मे होना और मतलब रखता है। पर किसी घर के सन्नाटे मे तो बात ही और हो जाती है। शहनाज डर गयी। पर उसका जी यह भी चाहा कि उसके डर को एक तरफ ढकेलकर बदर उसे अपनी बाहो मे ले ले। जैसा हर फिल्म मे होता है—कि बाहर से बिल्लो की आवाज आयी, "हा-हा, ठीक है। भेज देंगे मीटिंग म।"

बाहर दरअस्ल कोई नही था। वह तो अन्दरवालो का यह बताना चाहती थी कि वह अलग हो जायें। बदर प्याली लेकर दालान मे भागा। शहनाज झपाक झपाक कडाही मे फुलकियें डालने लगी पर उसका दिल ज़ोर ज़ोर से धडक रहा था। और वह यह सोच रही थी कि अब वह बिल्लो की तरफ देखेगी कैसे।

बिल्लो आ गयी। उसने यह जाहिर नही किया कि वह सबकुछ जानती है। मास्टर के हाथ मे पखा छीनकर वह अपने-आपको झलन लगी। बोली, "इ गर्मी मे तू लोग चाय कैंयसे पीते हो मास्टर !"

"हिदुस्तानी चाय गर्मी मे ठण्डक पहुचाती है।' मास्टर ने कहा।

फिर देश भी आ गया।

फिर शहनाज भी बावरचीखान से दालान म आ गयी।

गम-गम फुलकिया की प्लेट चारपाई पर रख दी गयी। देश टूट पडा। पहली ही फुलकी इतनी गम थी कि दात मारत ही उसका मुह गम भाप से जलने लगा और वह घबराकर मुह चलाता हुआ खडा हो गया। और तरह-तरह से मुह चलान लगा और मुह से तरह-तरह की आवाजें निकालने लगा।

शहनाज खिलखिलाकर हँस पडी। बोली, 'ऐयसी जलदी का रही ?"

पर देश अभी बतान की हालत में नही था।

"आप भी खाइए न भाबी !" मास्टर ने कहा।

"हमरी भूक तो सवेरे ही से मरी पडी है।" बिल्लो ने कहा।

"अरे भाबी !" मास्टर ने कहा, 'यह तो सियासत है। हार-जीत लगी ही रहती है। खाना-पीना छोडने से कैंयसे काम चलेगा ? जगमोहन सिंहा हिन्दुस्तान के पसठ-सत्तर करोड आदमियो से बडे तो हो नही गये। जमहूरियत में वह नही होता जो हजार बारह सौ रुपल्ली तनख्वाह पानेवाला कोई जज कहता है। जमहूरियत मे वह होता है जो जनता कहती है। जो अवाम कहत है—"

मास्टर ने दरअस्ल वह तकरीर शुरू कर दी जो आज रातवाली सभा के लिए उसने तैयार की थी। पर बिल्लो पर उसका कोई खास रोब नही पडा। क्योंकि सबसे पहले तो यह कि वह जमहूरियत का मतलब ही नही समझी।

इस तकरीर का मतलब कटरा मीर बुलाकी के लोग भी पूरी तरह नही समझे।

बाबू गौरीशकर लाल पाण्डेय सभा के अध्यक्ष थे। बेदाग सफेद खादी की धोती। बेदाग सफेद खादी का कुरता। बेदाग सफेद खादी की टोपी। सफेदी की इस भीड मे उनका काला रग कुछ और निखर आया था। वह मास्टर बद्रुलहसन नायाब मछलीशहरी की तकरीर नही सुन रह थे। वह अपने बारे मे सोच रहे थे कि यदि श्रीमती गाधी त्यागपत्र दे ही डालती हैं तो उन्ह किस गुट मे जाना चाहिए। उनके भविष्य का सवाल था। उनके लाइसमो का सवाल था। उनके मन्त्री होने या न होन का सवाल था

"इसलिए हम ई कहित है,' पहलवान की आवाज़ आने लगी और बाबू गौरी शकर पाण्डेय चौंक पडे और अपने सर पर अपनी टोपी को सीधा करने लग। पहलवान सभा के सामने प्रस्ताव रख रह थे और उनकी हालत पतली हो रही थी। कुश्ती लडना और बात है। किसी भरी सभा मे बोलना और बात है चाहे उस सभा मे वही लोग क्यो न हो जिन्ह आप उनकी या अपनी पैदाइश के पहले से जानते हैं। सामने खडा हुआ माइक्रोफोन पहलवान को कोई राक्षस लगा जो शायद मुँह से आवाज़ के निकलते ही उसे निगल जायेगा। घबराहट मे वह बोल कम रहे थे और गला ज्यादा साफ कर रहे थे। पसीने पसीने अलग हो रहे थ। "कि मुकदमा ससुर का चीज़ है। मुकदमे की तो मा—" पास ही बैठे हुए शम्भू मियाँ ने बहुत ज़ोर स अपना गला साफ किया। पहलवान घबराकर चुप हो गये। बाबूराम मुस्कुराने लगे। मास्टर बद्रुलहसन ने देश को कुहनियाया। पहलवान ने फौरन गला साफ किया जैसे वह गला साफ करने ही के लिए बोलते-बोलत रुक गये हो। फिर बोलने लगे "हम इहाँ माँ-बहन की गाली बकके वास्त ना खडे भय हैं। हम, खाली, का कहते हैं, पुरजोर अलफाज मे यह कहा चाह रह कि मुकदमा गया अपनी माँ की—" वह शम्भू मिया के गला साफ करन से पहले ही रुक गये। यह तो बडी उलझन की बात हो गयी। वह बात को जिधर से घुमा के निकाल ले जाना चाहते, वह माँ-बहन की गाली के नुक्कड पर आके रुक जाती। तो उन्होंने एक बार और गला साफ किया। बोल 'मुख्तसर ई कि आज हम लोग ई फसला किया है कि आज से जो कटरा मीर बुलाकी को कटरा श्रीमती गाँधी न कहे ऊ साला अपने बाप के नुतफे स नही है। इतनी लम्बी बात वह एक साँस म कह गय और शम्भू मियाँ को खँखारने का मौका ही नही मिला। जब तक वह खँखारें-खँखारें, पहलवान अपनी बात खत्म करके पसीना पोछते बैठ गय। उन्होंने बाबूराम आज़ाद की तरफ झुककर उनके कान म कहा,

"हम सच कहित है बाबू साहेब। तकरीर करना कुस्ती लड़े से बहुत जियादा मुसकिल काम है।"

प्रस्ताव पास करके सभा खत्म हो गयी। आशाराम इस सभा मे नही आया।

तीसरे दिन कारपोरेशन ने कटरा मीर बुलाकी की तख्ती उतारकर 'कटरा श्रीमती गाधी' की तख्ती लगा दी। और उस तख्ती के लगते ही बिल्लो यह भूल गयी कि जस्टिस सिंहा ने श्रीमती गाधी को हरा दिया है।

और जब आशाराम ने कहा कि मिसेज़ गाधी को यह नही करना चाहिए था तो देश मियाँ बीवी ने लगभग उसका मुँह नोच लिया। उस वक्त वह दोनो बाबूराम के घर पर थे। बिल्लो रामदयी की साडी पहुचाने आयी थी और देश यू ही साथ आ गया था।

जब बहस बहुत जोरदार हो गयी और रामदयी घबरा गयी कि कही आशाराम और देश म मारपीट न हो जाये तो बाबूराम ने बहस मे हिस्सा लेने का फसला किया। वह बोले, "पर आशाराम, जिन जस्टिस सिंहा ने राजनारायण को जितवाया है, उन्होंने बीस दिन के लिए अपने फसले को स्टे भी किया है। तो प्रियदशनी क्या त्यागपत्र दे?"

"इसलिए त्यागपत्र दे आपकी प्रियदशनी कि जिस चुनाव के आधार पर वह प्रधानमन्त्री बनी हुई है उसे हाई कोट ने नही माना है। खरे साहब न नये प्रधानमन्त्री के चुनाव के लिए स्टे लिया था।"

"तो का करें वह?" देश ने पूछा, 'जयपरकास नरायन को प्रधानमन्त्री बना दें?"

नही भई, त्यागपत्र दें उनके दुश्मन।" आशाराम ने कहा, 'यह औरत हिन्दुस्तान को अपने बाप की जागीर समझती है।"

"मेरे घर मे नेहरू और उनके परिवार के लोगो का नाम इज्जत से लिया जाता है।"

'आपका घर हिन्दुस्तान के बाहर नही है पिताजी।" आशाराम ने कहा, "और जितना अधिकार आपको उनकी इज्जत करन का है, उतना ही अधिकार मुझे उनकी इज्जत न करने का है।"

"मैं तुम्हारे अधिकारो की बात नही कर रहा था।' बाबूराम ने कहा, 'मैं अपन घर की बात कर रहा था। राजनीति दूसरी चीज़ है। यह राजनीति नहीं बत्तमीज़ी है।"

रामदयी धक स हो गयी। बाबूराम न आज तक पोते से इस तरह की

बात नही की थी।

रामदयी ने आशाराम की तरफ देखा। आशाराम अपने दादा की तरफ देख रहा था और उसकी आखो मे विद्रोह था।

बिल्लो ने देश की तरफ देखा। देश ने इशारा किया कि इस वक्त चल देना चाहिए।

"अच्छा बाबू साहब," देश न कहा, "हम चल रहे हैं।"

बिल्लो भी खडी हो गयी।

देश बिल्लो को साथ लेकर चला गया। घर मे सन्नाटा हो गया। बाबूराम चर्खे पर बैठ गये। रामदयी कभी बेटे और कभी ससुर की तरफ देखने मे लग गयी। आशाराम अपने दादा की तरफ यू टकटकी बाधे देख रहा था जसे उन्हे उसने पहली बार देखा हो। जैसे यह आदमी ही न हो जिसके कन्धे पर बैठकर वह *तालिया बजाते हुए अपनी माँ से कहा करता था 'अम्मा-अम्मा, देख हम पिताजी से बडे हो गये—'* यह वह आदमी भी नही था जो बरसात मे उसके लिए पुराने अखबार के कागज से तरह-तरह की नौकाएँ और स्टीमर बनाया करता और बरसती ओल्ती के नीचे जमा पानी मे वह नौकाएँ थिरकने लगती थी और स्टीमर नाचने लगते थे और वह उन नौकाओ और स्टीमरो पर बठकर लाल परी की तलाश मे चला जाया करता था—यह वह आदमी भी नही था जो इसी घर के दरवाजे पर उस शाम खडा उसकी राह देख रहा था जिस शाम वह पहली बार स्कूल से घर आया था—यह वह आदमी भी नहीं था जिसने प्रेमा के चले जाने के बाद उसके दिल का दद समझा था और जिसने कभी उसके सामने प्रेमा का नाम नही लिया था—सामने बैठकर चर्खा चलाते हुए आदमी को जैसे न उसने कभी देखा था और न ही उसके बारे मे किसी से कुछ सुना था

आशाराम उठा। वह बाबूराम के पास गया। दो ही कदम का तो फासला था। बाबूराम चर्खा चलाते रहे। वह जानते थे कि आशाराम उनके पास आकर खडा हो गया है और इस इन्तजार मे है कि वह कुछ कहें। पर उन्होंने कुछ नही कहा। उनके लिए आशाराम उनकी उस काँग्रेस से बडा नही था जिसके झण्डे-तले अग्रेजो के खिलाफ लडाई लडी गयी थी। जिसके झण्डे के नीचे बिसमिल ने सरफरोशी का गाना गाया था और गुलामी की जिन्दगी की तरफ हिकारत से देखकर मौत को गल लगा लिया था। जिसके झण्डे के नीचे सन ४२ म खुद बाबूराम ने मरने की कसम खायी थी। जिसके झण्डे के नीचे मरण व्रत रखे गये थे। जिसके झण्डे के नीचे पुलिस की लाठिया खायी गयी थी, जेल

की चक्किया पीसी गयी थी, बाजारो मे रसवा हुआ गया था---जिसके झण्डे म एक अनदेखा चौथा रग भी है। महात्मा गाधी के खून का रग। बाबूराम न लगभग तेरह बरस इसलिए अँग्रेजी जेल म नही काटे थे कि उनके घर मे उन्ही का पोता उनकी काग्रेस को गाली दे।

"यह घर आपका है पिताजी,' आशाराम ने कहा, "लेकिन यह देश सिफ आपका नही है।"

आशाराम उस घर मे कभी न लौट आने के लिए उस घर से चला गया। बाबूराम ने पल्टकर जाते हुए आशाराम की तरफ देखा भी नही। पर उन्होने पहली बार यह जरूर सोचा कि जो आज आशाराम की जगह राजाराम रहा होता तो यू उसके बुढ़ाप का अकेला छोडकर न चला गया होता।---इस बारे मे उन्ह बिल्कुल शक नही था कि आशाराम चला गया। पर चर्खे की रफ्तार वही रही और रामदयी को पता भी न चला कि आशाराम उसे छोडकर न जाने कहा चला गया है। वह तो, बल्कि यह सोचकर, खुश हुई कि यह बडा अच्छा हुआ कि आशा चला गया। नही तो दादा पोत का झगडा न जाने कब तक चलता रहता। इसलिए इतमीनान का एक सास लेकर उसने अपने दाँतो तले खैनी दबायी और वहाँ से उठकर पडोस के घर म चली गयी।

बाबूराम अपने चर्खे के साथ बिल्कुल अकेले रह गये और उन्होंने पहली बार महसूस किया कि आशाराम काग्रेस के मुकाबले मे चाहे कुछ न हो पर उसके बिना जिन्दगी म कोई मजा भी नही है। और तब उन्ह पहली बार यह पता चला कि जब उनके पिता इसी तरह एक दिन उनके दादा को छोडकर चले गये होगे तो दादा कितने अकेले हो गये होंगे।

बाबूराम के दादा बाबू त्रिलोकीप्रसाद श्रीवास्तव मिरजापुर मे मुख्तारी किया करते थे। सरकार मे उनकी बडी मान-जान थी। बादशाह की वषगाठ पर उन्ह सरकार ने रायबहादुर भी बना दिया था। बेटे को उन्होने लन्दन भेजकर बरिस्टर बनवाया। पर वह वहा से काग्रेसी होकर पलटे। तब बाबूराम कोई दस साल के रहे होंगे। जब बाबू हरिमोहनदास श्रीवास्तव, बार-एट-लॉ ने बाप से कहा कि वह प्रैक्टिस नही करेंगे बल्कि देश की स्वतन्त्रता के सग्राम मे हिस्सा लेंगे तो बाबू त्रिलोकीप्रसाद न जमीन-आसमान एक कर दिया था। दस-ग्यारह साल के बाबूराम यह सग्राम देख रहे थे।---और आखिर मे बाबू हरिमोहनदास श्रीवास्तव ने जो कहा वह बात बाबूराम को आज भी याद थी।

"पिताजी! देश का रिश्ता बाप के रिश्त से ज्यादा बडा होता है।"

यह सुनकर बाबू त्रिलोकीप्रसाद श्रीवास्तव सन्नाटे मे आ गये थे। और

उसी दिन बाबू हरिमोहनदास श्रीवास्तव, बार एट ला ने अपना घर छोड़ दिया था। थोड़े दिनों के बाद वह पत्नी और बाबूराम को अपने साथ लेते हुए एलाहाबाद चले गये थे और जभी से यह परिवार एलाहाबाद में रह रहा था।

लोगों को सिग्रेट-पान का शौक होता है। हरिमोहन बाबू को जेल जाने का शौक था जसे। एक सजा काटकर आते और दूसरी सजा काटने चले जाते और बाबूराम का बचपन अपनी माँ कमला देवी के साथ अकेला रह जाता।

आज जसे उस घर मे इतिहास अपने को दुहरा बैठा था। एक बेटा फिर बाप को देश-द्रेशप्रेमी और बाप-बेटे के रिश्ते का फर्क बतलाकर घर से चला गया था—तो क्या मैं अपने दादा का प्रतिनिधि बन गया हू ? क्या स्वतन्त्रता-संघर्ष में बहे हुए मेरे खून और पसीने का कोई मूल्य ही नहीं ? क्या देश प्रेम की परिभाषा बदल गयी है ?—बाबूराम ऐसे किसी सवाल से घबराकर अपना रास्ता बदलने को तैयार नहीं थे। महात्मा गांधी के झण्डे के सिवा हर झण्डा और उनकी बात के सिवा हर बात गलत है।—उन्होंने अपने छोटे से घर की तरफ देखा। घर मे उनके सिवा कोई नहीं था। आँगन मे तार की अलगनी पर रामदयी की साड़ी के पास ही आशाराम का एक कुरता सूखने के लिए टँगा हुआ था। दालान की छत से एक नगा बल्ब लटक रहा था। और तार समेत उसकी परछाइं ने दालान की दीवार पर एक लकीर सी डाल दी थी जो हवा के साथ हिल रही थी। आँगन मे साये लम्बे हो चले थे।—एक-दम से बाबूरामजी को लगा कि इस अकेले घर मे वह भी शायद दूसरी तमाम परछाइयों की तरह बस एक परछाईं हैं। उनके बदन मे यकायक एक अजीब-बड़ी जानलेवा थकन यू रिसने लगी जैसे बालू मे पानी उतरता है।

'हरे राम !" कहते हुए घुटनों पर हाथ रखकर वह खड़े हो गये। बिजली के छोटे-से पंखे को उन्होंने बन्द कर दिया। उसके परों का नाच धीमा होने लगा। फिर वह पर अलग-अलग नजर आने लगे। बाबूराम की निगाह उन परों पर यूं जमी हुई थी जैसे वह यह तमाशा पहली बार देख रहे हों। फिर पर रुक गये और दीवार पर हिलनेवाली परछाइं की लकीर रुक गयी और उस समय रुक गया और बाबूराम अपने अकेलेपन से डर-से गये। इतना डर तो उन्हें तब भी नहीं लगा था जब वह सन ४२ में जेल की एक कोठरी में तनहा बन्द कर दिये गये थे। कोठरी में बस एक छोटी-सी खिड़की थी जिसमें आसमान का एक छोटा-सा कोना नजर आता था। पर वह कोना सूरज के रास्ते में था। तो उन्हें यह पता चलता रहता कि सूरज रोज निकल रहा है। और रात

को उस कोने मे दस-बारह तारे आ जाया करते थे। बाबूराम आजाद ने उन तारो के अलग अलग नाम रख छोडे थे। उन पर उन्होने अपनी सबसे खूबसूरत नज्म भी लिखी थी। अपने अकेले घर के सन्नाटे स डरकर उन्होने वह नज्म याद करनी चाही। दिमाग पर बहुत जोर दिया पर उस नज्म की एक लाइन न याद आयी वह आगन म उतर आये। आसमान नगा था। दूर दूर बादल का एक धब्बा भी नही था कि वह यह सोच सकते थे कि मौसम बदल रहा है। बाहरी दरवाजे की कुण्डी लगाकर बाबूराम ने ताला लगा दिया। इस ताले की एक कुजी रामदयी के पास थी और एक आशाराम के पास रहा करती थी कि वह रात बिरात आये तो किसी को जगाने की जरूरत न पडे। क्या वह कुजी अबकी इस्तमाल होगी? क्या वह भी हरिमोहनदास की तरह किसी नये घर की बुनियाद डालेगा जिसक आँगन के थालो मे नये किस्म के सपना के पौधे लगेंगे और नय रगो के फूल आयेंगे? क्या पीढियो से पीढियो का सम्बन्ध टूटना जरूरी है? और यदि जरूरी है तो हरिमोहनदास और बाबूराम के सपना मे फक क्यो नही था? इस तरह के बेशुमार सवालो ने बाबूराम को हर तरफ मे घेर लिया। यह सवाल नये थे। और उन्ह यह नही मालूम था कि इन सवालो का जवाब क्या है और अपने-आपको इन सवालो का जवाब कैसे दिया जाता है। तो वह 'शिवशकर माग' पर यू ही, बिला मक्सद चल पडे।

हवा म अभी तक काफी गर्मी थी। 'शिवशकर माग' पर धूल उड रही थी और एक बच्चा बफ की लाल शरबत म भिगोयी हुई चुसनी चाटता भागा जा रहा था पहलवान के टी स्टाल के सामन नारायण सडक पर पानी छिडक रहा था। और पहलवान आल्थी पाल्थी मारे बैठे हुए मिट्टी के बरतन मे लकडी की घाटनी से लस्सी घाट रहे थे। हाथ रोककर उन्होंने जीन के थैले मे सिल्ली से बफ काटकर डाली। फिर लकडी की मूगरी से बफ को कूटते हुए उन्होंने रामअवतार मिकानिक स कहा कि लग रहा है कि पानी दू एक दिन मे पडा ही चाह रहा। रामअवतार उनसे सहमत था। बफ कुट गयी। उन्होने कुटी हुई बफ को मिटटीवाले बरतन मे डालकर लस्सी को फिर घाटना शुरू ही किया था कि उनकी निगाह बाबूराम पर पड गयी और उन्होंने हाथ चलाते-चलाते हाँक लगायी, "सलाम बाबू साहेब।"

बाबूराम तो अपनी आत्मा के सन्नाटे से घबराये हुए थे ही। वह तो यह सोच-सोचकर डर रहे थे कि जो पहलवान ने उन्ह न देखा और आवाज न दी तो वह इस सन्नाटे का बोझ उठाये हुए कहाँ फिरेंगे मारे मारे! इसलिए पहल-

वान की आवाज़ सुनते ही वह दुकान की तरफ मुड गये।

"क्या हाल है भई ?" उन्होंने टीन की एक कुरसी खचक्कर बैठते हुए कहा। पहलवान ने बिजली के मेज़ी पखे का मुह उनकी तरफ कर दिया। गम हवा के एक भपके ने पसीने को छुआ और ठण्डा पड गया, "एक लस्सी पिलाव भई।"

पहलवान चौक पडे। बाबूराम ने आज जिन्दगी मे पहली बार किसी दुकान पर बैठकर कुछ खाने पीने का इरादा ज़ाहिर किया था। वह तो दुकान पर बैठकर खाने को बदतमीज़ी कहा करते थे। हा, परदेस की बात और है। पहलवान मुस्कुरा दिये और बाबूराम समझ गये कि पहलवान क्या मुस्कुरा रहे हैं। पर उन्होंने उस मुस्कुराहट का बुरा नही माना। पहलवान उनके लिए लस्सी बनाने लगे और बाबूराम ने यू ही आसमान की तरफ देखते हुए कहा, "गर्मी मे लगता है कि दो-एक दिन मे बारिश होने ही वाली है।"

'एही हम अभइ रामऔतार से कहित रह।' पहलवान ने कहा और फिर बहुत जी लगाकर बाबूराम की लस्सी के लिए बर्फ कूटने लगे। फिर दही के बरतन से महीन तारो का जालीवाला ढक्कन उठाया और ताबे के एक गोल टुकडे से लस्सी के लिए दही काटने लगे। लस्सी का गिलास मे उँडेलने के बाद उन्होंने ताँबे के उसी पतरे से दही की बालायी का एक टुकडा काटा और गाज दार लस्सी के गिलास मे डाल दिया और गिलास बाबूराम की तरफ बढाते हुए कहा, "इ आसा बाबू आज किधिर गये हैं बवण्डर की तरह ? हम पुकारते ही रह गय।'

'मुझे बताके तो नही गया।' बाबूराम ने कहा और लस्सी का गिलास मुह से लगा लिया। खट मीठी लस्सी के साथ साथ बर्फ के दो चार छोटे छोटे टुकडे भी उनके मुह मे फिसल आये और वह अपने मजबूत दाँतो से उन्हे चबाने लगे।

बाबूराम के दाँत बडे खूबसूरत थे। बडे मजबूत भी थे। वह इस उम्र मे भी कच्चे अमरूद और गन्ना इतमीनान से खा लिया करते थे। रामदयी के लगभग तमाम दात गिर चुके थे और वह नकली दाँत लगाया करती थी। इस बात पर वह दादा-पोते मिलकर उसका मज़ाक उडाया करते थे और वह बिचारी रोआसी हो जाया करती थी। अब अकेले क्या मजा आयेगा रामदयी के दाँतो का मजाक उडाने में। यह सोचकर बाबूराम उदास हो गये। पर यह नियमो की लडाई थी। कुरुक्षेत्र मे रिश्तेदारी नही देखी जाती। सबसे बडा रिश्ता खून का नहीं कर्तव्य का है।—वह लस्सी गटगटा गये और गिलास पहलवान को थमाकर उन्होंने जेब मे हाथ डाला।

"ना ना ना ई का कर रह आप ?" पहलवान ने कहा। "कौन कह कि आप रोजाना लस्सी पीये आइयेगा। पैंयसा नहीं लेंगे।"

"मगर—"

"ए साहेब, सुनिए हमरी बात।" पहलवान ने बात काटी। "जे को इंद्रा गाधी चाचा पुकारें हम ओसे लस्सी का पयसा ले सक्त हैं भला!"

"मतलब हम कोई चीज ही नहीं।" बाबूराम न मुस्कुराकर कहा।

पहलवान ने जोरदार ठहाका मारा। फिर बण्डल से बीडी निकालते हुए बोले "ल्यो। कोई सुने बाबू साहेब की बात। अरे साहब, आपके कहे से तो हम कागरेसी बने। आप ना रहे होते तो हम और हम ही काहे को, सारा कटरा मीर बु—मतलब कटरा श्रीमती गाधी कमनिश्ट हो गया होता। सन ३५ लगा एत ई चुनाव, का ई कटरे का एक्को ओट कागरेस के खेलाफ गया है ? और भगवान न चाहा तो जायेगा भी नहीं।"

यह थी बाबूराम की जीत। एक आशाराम हाथ से निकल गया तो क्या हुआ। यह पूरा कटरा उनका परिवार था। पहलवान के भरोसे के नलके तले बैठकर नहाने से उनके मन की उदासी और आत्मा की तनहायी का सारा मैल धुल गया। वह मुस्कुराते हुए उठ खडे हुए और ठीक उसी वक्त पतली सडक से बाबू गौरीशकर लाल पाण्डेय, एम० पी० की कार धल उडाती गुजर गयी और बाबूराम खादी के रूमाल से अपने चेहरे की धूल झाडने लगे।

"ई साली सडक मे एही खराबी है।" पहलवान ने कहा। एक ठो मोटर गुजर जाये तो इतनी धूल उडाती है जैसे मिलिटरी का पूरा कँवायी गुजर गया है। बाबू साहेब से कहिए ना कि सिरमिट की बनवा दें कि कोई चाहे तो रात को चद्दर बिछा के लेट भी रहे।

पहलवान ने जब यह बात बाबूराम स कही तो उन्हें यह नहीं मालूम था कि बाबू गौरीशकर पाण्डेय खुद भी इस सडक के बारे मे बडे-बडे प्रोग्राम बनाय बैठे हुए हैं—

मोटर वर्क्स यूनियन की वजह से वह 'आल इण्डिया' किस्म के आदमी हो चुके थे। उनकी यूनियन को ट्रेड यूनियन ऐक्ट के तहत रिकॉगनिशन भी मिल चुका था। अखिल भारतीय सम्मेलन न होन के बावजूद बाबू साहेब उसकी अखिल भारतीय कमेटी के अध्यक्ष चुन जा चुके थे और उनके नय लेटर हैड पर 'अध्यक्ष ए० आई० एम० डबल्यु० यू०' भी लिखा हुआ था और पुराने लेटर पडो पर उनकी पत्नी घर का हिसाब लिखा करती थीं।

जस्टिस जे० सिंहा के फैसले ने एक दिन के लिए तो उन्हें हिला

दिया था और वह यह सोचने भी लग गये थे कि सी० एल० डी० म जाना चाहिए या जनसघ म—पर फिर दिल्ली से फोन द्वारा सूचना मिल गयी कि श्रीमती गाधी त्यागपत्र नही दे रही हैं और बाबू साहेब जहाँ थ वही जमे बठे रह गय—बल्कि उन्होंने श्रीमती गाधी को एक लम्बा चौडा तार भी भेजा कि वह त्यागपत्र न दें क्योंकि जो उन्होंने त्यागपत्र दिया तो भारत की नया डूब जायेगी। गौरीशकर पाण्डेय और उनके साथ-साथ भारतवष की समूची जनता श्रीमती गांधी के साथ है—और यह तार देने के तीसरे दिन टण्डन पाक में एक पब्लिक मीटिंग मे भाषण देते हुए जस्टिस सिंहा और जयप्रकाश नारायण के बखिय उधेड दिय। उन्होंने एलान कर दिया कि जयप्रकाश नारायण उनके तमाम चटटे-बटटे जनता विरोधी और फासिस्ट हैं। प्रजातन्त्र का बस नाम लेते हैं पर वास्तव मे सेना को भडकाकर देश मे सेनाशाही चलाना चाहते हैं।—यह लोग तो इस लायक हैं कि किसी चौराहे पर इन लोगो को फाँसी दे दी जाय।—इस तकरीर की कटिंग भी बाबू साहब ने श्रीमती गाधी के पास भिजवा दी। फिर उन्होंने जिला कांग्रेस कमेटी की एक इमरजेंट मीटिंग बुलवायी और उसम परस्ताव पास करवाया कि जयप्रकाश नारायण और इस तरह के दूसर तमाम लोगो को एलाहाबाद का दुश्मन करार दिया जाता है और एलाहाबाद के बगर दश रह क्या जाता है। एलाहाबाद तो हिन्दुस्तान का दिल है। तीनो प्रधानमन्त्री देश को किसने दिये ? एलाहाबाद ने। उन्होंने तो यह भी माँग करनी चाही कि जस्टिस सिंहा के खिलाफ कमीशन विठलाया जाय। उनके ख्याल म सिंहा साहब ने घूस खाकर यह फैसला दिया है। और घूस आयी कहाँ स ? या तो अमरीका से या चीन से।—अरे साहब, किसी को जरा भी राजनीति की समझ होगी तो वह हाइ कोर्ट के इस फसले म सी० आइ० ए० का हाथ साफ देख सकता है।—चीन का नाम तो वह यू ले रहे थे कि सी० पी० आई० के मित्र बुरा न मानें—इस परस्ताव की एक कापी भी १-सफदरजग भेज दी गयी।

नम्बर १ सफदरजग, नयी दिल्ली ११०००१ के पते पर ऐसे बेशुमार परस्ताव और समाचार-पत्रो की कटिंगें आ रही थी। और फिर प्रधानमन्त्री उन्ही परस्तावो को देश की आवाज समझकर अपने दरवाजे पर लगी या लगवायी हुई भीड का ऐड्रेस कर रही थीं और पत्र पत्रिकाओ मे उनकी तकरीरो के साथ-साथ उनकी तस्वीरें भी छप रही थी।

और उन तकरीरो को आकाशवाणी से सुनकर और उन तस्वीरो को पत्र-पत्रिकाओ म देखकर कटरा मीर बुलाकी उर्फ कटरा श्रीमती गांधी के लोग खुश हो रह थे।

देश टो टोकर समाचार-पत्र तो पढ ही लिया करता था। तो बिल्लो ने उसकी सुबह की डियूटी ही यह बाँध दी थी कि वह उसे अखबार सुनाया करे। वसे देश खुद भी सुबह की चाय के साथ अखबार पढना चाहता था ताकि घर से काम पर जाने के लिए निकले तो पूरी तैयारी से निकले। यह जानकर निकले कि रात वाली आकाशवाणी की न्यूज बुलिटीन के वाद देश मे कोई भारी और गम्भीर परिवतन तो नही हुआ।

तमाम सादा लोगो की तरह देश को यकीन था कि समाचार-पत्र और रेडियो झूठ नही बोलते। भई वह क्यो बोलेंगे झठ ? उन्हे झूठ बोलने की जरूरत क्या है ?

सवेरे की चाय की प्याली के साथ बिल्लो देश को समाचार पत्र भी थमा देती और वह समाचार पढने लगता। यदि बिल्लो को समाचार सुनने का शौक न हो गया होता तो भी देश जोर जोर ही स अखबार पढता क्याकि धीरे धीरे पढना उसे आता ही नही था।—एक दिन वह यूही चाय मे बोर-बोर के समाचार खा रहा था कि बिल्लो को पहली मतली आयी। देश तो घबराकर उठा और चाय की प्याली उछल गयी। अपना पेट पकडे उबकाइया लेती हुई बिल्लो प्याली टूटने पर उबकाई भूल गयी और उसकी खबर लेने लगी कि चाय की प्याली सामनेवाले नीम के पेड मे निबौडी की तरह तो फलती नही कि जाकर तोड लाओगे—

'तोरी मतली देख के हम घबरा गये रहे।" देश ने कहा। 'हम अभई वदर के अब्बा से होमोपेथी की दवायी माग लिआते हैं—" वह जाने के लिए उठा।

"अे भायी कयसे पागल आदमी से पाला पडा है।" बिल्लो न कहा। 'ई दवायी वाली मतली थोडे है—" यह कहते कहत जो बिल्लो शरमा न गयी होती तो शायद देश की समभ मे बात न आयी होती। पर उसके शरमाने से वह समझ गया। और बात समझते ही वह वही आगन के कच्चे फश पर आल्थी-पाल्थी मार के बैठ गया।

"का होगा ?" देश ने पूछा।

"का पता।" बिल्लो ने कहा।

"लडकी होये को चहिए।'

'फिर सुरू कर दिया ओही बात।"

"लडका पाले म कोई मजा ना है बिल्लो। प्रधानमन्त्री के नाम पर इन्दरा नाम रख लिया जैयह। लडका भया त का पुकारिहो ? जयप्रकास कि मुरारजी कि अटल बेहारी वाजपेयी ?"

"सजय !" बिल्लो ने कहा ।

"लडका भया तो हम साले को फेंक आयेंगे कोनो घूरे ऊरे पर । स
है । "

बस लडाई चालू हो गयी । यह लडकी पर जमा हुआ था और ब
पर ।—और जो इतवारी बाबा न आ गये होते तो यह लडाई न जा
तक चलती रहती । उनकी तबीअत आजकल कुछ खराब चल रही थी
उन्होने तीसरी शिफ्ट किराये पर उठा रखी थी । आराम स गयी
सोया करते थे और आराम स जरा देर म उठा करते थे । जनता ल
भी अब मुह अँधेरे नही खुला करती थी । जिलाधीश का हुक्म था
दुकान यदि वह खाने की नही है नौ बजे से पहले नही खुल सकती ।
स दो बजे तक खाने के लिए हर दुकान, यदि वह खाने की न हो तब,
लिए बन्द होगी । और आठ बजे रात के बाद कोई दुकान, यदि वह खाने
हो, बन्द हो जायगी । बिल्लो न बडी गालियाँ दी थी जिलाधीश को । व
होता है उसकी दुकान का वक्त मुकर्रर करनेवाला ? पर जब पहलवान
इतवारी बाबा न बहुत समझाया कि हर जगह उसकी जबान नही चल
तो उसे अपनी जबान रोकनी पडी । पर तभी से वह सोच रही थ
लाण्डरी बन्द करके खाने की कोई दुकान खोल ली जाय । पर देश इसके
राजी नहीं हो रहा था और मामा भी समझा रहे थे कि खाने की दुकान म
खराबी यह है कि राज की चीज रोज न बिके तो घाटा लग जाता है ।
बहुत सी परेशानियाँ भी है । अनाज ब्लैक से खरीदो । सेल्ज टैक्स वा
रिश्वत दो । राशनिंग इन्स्पेक्टर को दूध मलायी खिलाव ।—बरतन खर
गिलास रोज टूटगा । नौकर चाकर चोरी जरूर करेंगे । गाहक लोगो से न
कि मसूर की दाल पकी है तो यह चने की दाल माँगेगा । कोई गोश्त नही ख
कोई सब्जी नही खाता । कोई को पियाज की महक ना अच्छी लगती ।
लहसुन का ना हाथ लगाता—लाण्डरी का काम ठीक है । एक्के ठो इसलिए
एक्क ठो क्लर्क । किस्सा खतम । कोई झगडा टण्टा नही ।—और पहल
की इस लाजिक का बिल्लो के पास कोइ जवाब नहीं था । और इस पर
इतवारी बाबा ने यह तुर्रा बाँधा कि भीख माग के बाद लाण्डरी चलाये से
आसान काम काइ हैय नहीं कहने का मतलब यह है कि न बिल्लो ने अ
धन्धा बदला और न इतवारी बाबा ने अपना । दोनो मजे मे जिन्दगी की पु
डगर पर चले जा रहे थे । सरकार कोइ आ जाय लोग कपडे जरूर धुलव
और लोग भीख भी जरूर मागेंगे—और कपडा धोने धुलानेवाला तो चाहे

मर भी जाये पर भीख मागनेवाला तो भूखा रह ही नही सकता—नयी नयी आज़ादी के दिनो हिन्दू फकीर और मुसलमान फकीर का चक्कर चला था कुछ दिना पर भिखमगो को सेकुलर होने मे ज्यादा दिन नही लगे क्योकि आप मिसाल के तौर पर हिंदू फकीर को पैसा देना चाहते है और कोई हिन्दू फकीर सामन नही पड रहा है। अब आप फँस गये। वह पैसा लेकर आप घर म तो आ नही सकते क्योकि उतनी भीख देने की आपको आदत पडी हुई है—चुनाचे भीख देनवाला मे मानवतावादी विचारधारा ने सर उठाया कि साहेब फकीर तो फकीर होता है। हिंदू क्या और मुसलमान क्या! और मज़े की बात यह कि भिखमगा की न कोई असोसियेशन न कोई यूनियन। सरकारें यूनियनबाज़ी से घबराती है। शायद इसीलिए भीख माँगन के काम मे दिन दूनी और रात चौगुनी तरक्की हो रही है। यदि हमारी पर कैपिटा इनकम का हिसाब लगात समय फकीरो की आमदनी को भी जोड लिया जाय तो पर कपिटा इनकम जा है उसस दूनी निकलेगी कम-स कम। और हम भीख मागे वाले समाज का तउन हिस्सा हैं कि हमरे जिय मरे से कोई फ़रक नही पडता। बाजार के भाव पर कोई असर ना पडता केह मारे की हम बजार से कोई चीज लेव ना करत। अरे जब बेमाग हर चीज़ मिल जाहै तो हम कोई चीज खरीदे क्यो जायें—

"फजूल बात मत किया करो बाबा।" बिल्लो ने हँसी रोकने की कोशिश करत हुए कहा क्योकि वह जानती थी कि बाबा यह बातें ज्यादातर देश को चिढाने के लिए करते है। पर उस दिन तो देश का आधा ध्यान अपनी बटी मे लगा हुआ था। उसके पास बाबा की उटपटाग बातें सुनन का समय ही नही था। और बाबा तामचीनी के बडे प्याले मे भरी हुई मजेंदार चाय की चुसकिया ले रहे थे। लेकिन इधर-उधर की हाक्त हाक्ते इतवारी बाबा न एकदम से एसी बात कही कि देश भी चौक पडा—वह बाले "आज हम, उ जो रानी मण्डीवाले अकील (अकील) ग्रहमद एडोकेट ह न उनके पास जाके अपना वसीयतनामा लिखवाया—'

दश मिया-बीवी उनकी तरफ देखन लग।

"बक मे बारह हज़ार तीन सौ सत्ताइस रुपया चौबिस पयसा नकद है। तो हम लिखवा दिया है कि हमरे मरे के बाद हमरा क्रियाकम तो चन्दे से किया जाये केह मार कि अपनी कमायी का कफन पहिने मे हम्म सरम आयगी। और हमरी राख कटरा मीर बुलाकी मतल्ब कटरा श्रीमती गाँधी की बडनो गन्दी नाली मे बहा दी जाय कि ओके गन्दे पानी मे मिल के गगाजी मे मिलना चाहता हूँ। साफ सुथरे गय तो मजा ना आयगा। खर ई तो अलग बात हो

गयी। ऊ जो बारह हजार तीन सौ है ओम से हजार रुपया फकीरा मं के वास्ते है। बाकी रुपया हम तोरी स्रीमती गाधी के नाम कर दिया है उनके जमाने मे हमरे पसेवाल्न की बडी तरक्की भयी है। लोग कहत इजिनियर और डाक्टर बहुत बढ गय बाकी हम कहित है कि दस मे भीख वालन की आबादी बहुत बढी है '

इतवारी ने जो यह बात अपनी वसीयत से न शुरू की होती तो शायद और बिल्लो ने उसे तिक्काबोटी कर दिया होता। कसा झूठा है यह आद आकासवानी जो बोले ऊ गलत। पत्र पत्रिकाओ म जो छपे ऊ गलत। एही एक सच्चा हैं

पर बात इतवारी न अपनी वसीयत से शुरू की थी। इसलिए उसके होते ही घर मे सन्नाटा हो गया। सामने दीवार पर एक कलेंडर टँगा हुआ कभी उससे तारीख नही पूछी जाती थी क्यांकि उसम से जनवरी का पन्ना तक नही फाडा गया था और तारीख जून की छब्बीसवी की थी। कैलेंडर मुहम्मद बीडी का था। ऊपर श्रीमती गाधी की मुस्कुराती हुई तस्वीर थी नीचे लाल मुहम्मद बीडी के बण्डल सजे हुए थ—देश को मिसज गांधी का प अच्छा लगा था और इसीलिए यह कैलेंडर दालान मे टागा गया था कि घ सबसे ज्यादा इस्तमाल होनेवाला हिस्सा यही था। देश तो ज्यादातर दालान मे फसड के चारपायी पर बैठा बठा खाना भी खा लिया करता था जब देश या बिल्लो ने कुछ नही कहा तो इतवारी ने उस कैलेंडर की त देखा। मिसेज गाधी का वह फोटो किसी और तरफ देख रहा था और चारप पर पडे हुए अखबार मे पहली खबर यह थी कि राष्ट्रपति ने कल रात व बजे सारे देश पर इमरजेंसी लागू कर दी है।

गूंगी बस्ती गूंगे लोग

इमरजेंसी !
उजाला कहाँ है ?
न दिन म,
न घर म,
न इस रास्ते पर,
न उस रहगुज़र म,
उजाला कहाँ है ?
उजाला कहाँ है ?

मैं अपने को धुंधला नज़र आ रहा हूँ
उजाला कहाँ है ?
मैं खुद अपनी परछाईं बनता चला जा रहा हूँ
उजाला कहाँ है ?
न गुज़रा हुआ कल नज़र आ रहा है
न कल का कोई पता है
यहाँ स वहाँ तक
अँधेरे का एक सिलसिला है
अँधेरा
जो पिछले अँधेरों स बिल्कुल अलग,

तणरवा से जुदा है
अँधेरा
जो शायद बस एक पल है,
लेकिन
यह पल भी
गुजश्ता सदी स बडा है
सलीबा की मानिंद दिल म गडा है
यकी है कि इस दर्दे-तारीक का भी मदावा तो हागा
मदावा किधर है ?
मसीहा कहा है ?
उजाला कहा है ?
उजाला कहाँ है

उजाला दूर दूर कही नही था। गदे बदबूदार कुहरे की एक माटी तह जैस हर चीज़ पर जम गयी थी। कोई चीज़ साफ नही दिखायी दे रही थी। विधान सभा, हाई काट, सुपरीम कोट। गाधीजी की समाधि, मौलाना आजाद की कब्र तिलक और गोखले के स्टचू, युनिवर्सिटियाँ, प्रेस गरज कि हर चीज़ पर अँधेरे की एक मोटी तह जमी हुई थी यह अँधेरा अजीब था मगर। आम तौर से किसी को दिखायी ही नही द रहा था। बहुत मे बुद्धिजीवी भी इसे न देख पाय। ख्वाजा अहमद अब्बास, अली सरदार जाफरी, डागे, राजेश्वर राव, हिरेन मुखरजी, डाक्टर नूरुल हसन, कृष्णचद्र, कमलेश्वर, चित्रकार हुसन हज़ारा नाम हैं। इन लागो ने अँधेरे को उजाला कहा और उसका स्वागत किया। यह सर जो अग्रेज़ के सामने नही झुके थे रास्ते भर सज्दा करते हुए नम्बर १ सफदरजग तक जा पहुचे और जिन सरो ने झुकने म और जिन जबाना ने कसीदा पढन से इनकार किया वह बहुत बुरी गुज़री उन पर। हमारा देश जिसके बारे म जहाँगीर ने कहा था कि जन्नत यही है, एक खँडर बन गया जिस पर कूडे की तरह कटे हुए सर और कटी हुई जबानो का ढेर लग गया और इस ढेर पर एक कुकुरमुत्ता उगा जिसका नाम सजय गाधी था। यह ज़माना है वी० सी० शुक्ल जोम मेहता और बसीलाल जस लोगा के उरूज का। यह जमाना हैं बाबू जगजीवनराम, बहुगुणा, चौहाण जैसे लोगो के चुप रह जाने का। यह जमाना है चन्द्रशेखर, मोहन धारिया जस लोगा के सच बोलन का और सच बोलन की सजा भुगतने का। मैं इस युग को जयप्रकाश नारायण का युग नही मानता। परन्तु मैं यहाँ यह बहस छेडना नही चाहता क्योकि इस वक्त मैं एक

डिंग के खयाल से उन्हें रात भर पसीना आता रहा जिसे वह बरसात से पहले वाले हब्स का पसीना समझकर मौसम को गालियाँ देते रहे। पर वह घर में अकेले थे। बिल्लो के लाख कहने और देश की हजारों खुशामदों के बावजूद वह उनके नये घर में नहीं गये हालांकि उनका कमरा बनकर तैयार हो चुका था। उन्हें बेटी के घर जाना अच्छा नहीं लग रहा था। माना कि देश भी बेटे से कम नहीं था पर उनके वहाँ होने से उन दोनों की जिन्दगी में फर्क पड़ सकता है। पता नहीं पति पत्नी क्या बात करना चाहें। कैसे रहना चाहें। क्या खाना-पीना चाहें पर मामा सूरत पर सवार हैं उन्हें अकेले रहने की आदत नहीं थी। पर बिल्लो और देश के चले जाने के बाद उन्होंने अकेले रहने की आदत भी डाल ही ली किसी न किसी तरह। बस खाना खाने के लिए उन्हें बिल्लो के घर जाना पड़ता था और वह दोनों किसी कीमत पर यह मानने को तैयार नहीं हो रहे थे कि जब वह बच्चे थे तब भी तो पहलवान खुद ही खाना पकाया करते थे उन दोनों ने एक न सुनी। दिन का खाना तो बिल्लो दुकान पर पहुंचा जाया करती थी। रात का खाना वह उनके घर खाया करते और सवेरे का नाश्ता बिल्लो पुराने अखबार के कागज में लपेटकर साथ कर दिया करती थी। खाना खाने के बाद वह नीम के तिनके से खिलाल करते, नाश्ते की पोटली बगल में दबाये और बेतकल्लुफ सड़क पर ज़ोर ज़ोर से पादते हुए अपने घर लौट आते। इस इलाके में तो किसी की यह हिम्मत थी नहीं कि उनके पादने पर हँस दे घर आने के बाद वह लेट जाते। बत्ती बुझा देते और रात का अँधेरा ओढ़ कर सोने की कोशिश करने लगते। अकेला घर और अकेले घर की अकेली रात उन्हें अजीब लगती तो वह रामायण गुनगुनाने लगते और फिर भूली भटकी यादें आने लगतीं और चारपायी पर उनके पास बैठ जातीं यह यादें उनके बारे में कभी न होतीं। बिल्लो की माँ की याद भी न होती। उनकी तमाम यादें देश और बिल्लो के बचपन की होतीं और इन्हीं यादों की कोई कहानी सुनाते सुनाते या किसी शरारत पर प्यार से डाँटते डाँटते वह सो जाते। पर वह रात दूसरी तमाम अकेली रातों से अलग थी। कोई याद भी पास नहीं फटक रही थी। आकाशवाणी का भूत उनके सरहाने खड़ा था आखिर जब किसी तरह नींद न आयी तो वह बाहर निकल आये। मीर बुलाकी का कटरा नहीं श्रीमती गाँधी का कटरा मज़े में गहरी नीद सो रहा था। लग रहा था कि इमरजेंसी में कुत्ते बहनचोद लोग भी भूकना कम कर दिहिन हैं सामने 'जनता लाण्डरी' थी और उसके तख्ते पर इतवारी बाबा आराम से सो रहे थे। पहलवान उसी तख्ते पर जा बैठे। जेब से टटोलकर उन्होंने बीड़ी निकाली और उसे सुलगाकर लम्बे

लम्बे कश लेने लगे।

"एक ठो और बीडी होय तो हमहूँ जाग जायें।" इतवारी ने कहा। और यह कहकर इतवारी उठ बैठे। "का बात है?" उन्होंने पूछा। 'नीद ना आ रही का?"

"न।' पहलवान ने आधी पी हुई बीडी इतवारी बाबा की तरफ बढाते हुए कहा।

इतवारी बाबा ने वह बीडी ले ली और चुपचाप उसके कश लेने लगे।

"हमरी तो समझ म ना आ रहा कि हम बोलेंगे का कल रेडियो पर।"

"समझै की जरूरते का है।" इतवारी बाबा न कहा, "इ बेसमझे बोले का जमाना है। आशाराम बहुत समझदार बनते रहे ना। तो पुलिस से कबड्डी चालू हो गयी है। कहा तक छिपिहें। आखिर पकडे जैयहे एक दिन। ऊ जो मसल है कि बकरे की मा क दिन खैर मनायेगी।"

आशाराम।

इमरजेंसी म आशाराम का क्या काम।

हेड कास्टबिल जगदम्बा प्रसाद और थानदार अशफाकुल्लाह खाँ के सपन के पूरे होने का मौसम आ गया था। तो इमरजेंसी लगने के दूसरे ही दिन अशफाकुल्लाह खा ने रोजनामचे म लिखा कि उन्हे शक है कि आशाराम यकीनन सरकार के खिलाफ कोई साजिश कर रहा है और इस साजिश का मरकज कटरा मीर बुलाकी है कि जिसका नया नाम कटरा श्रीमती गाधी रख दिया गया है। हेड कास्टेबिल जगदम्बा प्रसाद ने इस साजिश की तफतीश म बडी मेहनत और इमानदारी स काम किया लेकिन यह साजिश इतनी गहरी है कि अब तक इसका कोई पता नही चल सका है। एस० आइ-२ ने जी जान से काम करके एक डाजियर तैयार किया है जिससे यह पता चलता है कि आशाराम कटरे के चन्द लोगो स बहुत ज्यादा मेलजोल रखता है। इन लोगो मे पहला नाम देशराज मोटर मिकैनिक का है जिसे प्रधानमन्त्री की सिफारिश पर बक लोन मिला था और जो आजकल जीरो रोड पर अपनी मोटर वर्कशाप चला रहा है। इसी देशराज ने आशाराम के कहने से बाबू गौरीशकर लाल पाण्डेय के नेशनल गरेज म हडताल करवायी थी। इस देशराज की नीयत पर भरोसा नही किया जा सकता। हुक्कामाने आला के हुक्म का इनतिजार है

अशफाकुल्लाह खा न अभी रोजनामचे म यह न लिखा होता पर इमरजेंसी से ज़रा वह भी डर गये थे शुरू-शुरू म और उन्ह डर था कि कही सी० वी० आइ० वालो ने सूंघ लिया कि कटरा मीर बुलाकी म सरकार को उलटने की

कोई साज़िश हो रही है और थानेदार इनवाज मे कानो पर जू तक न रेंगी तो लेने के देन पड जायेंगे। इसलिए उन्होने मुनासिब यही जाना कि रोज़नामचा कर देना चाहिए कि जब यह साज़िश बेनकाब हो तो सरकार के इल्म मे यह बात रहे कि यह खबर अशफाकुल्लाह खाँ थानेदार ने दी थी। जगदम्बा प्रसाद का नाम तो उसने यू ही टाँक दिया था कि वह उसी कटरे का रहनेवाला था और यह खबर वास्तव मे वही लाया भी था। उन्हे यकीन था कि आशाराम के गिरफ्तार होते ही उन्हे किसी छोटे शहर की कोतवाली का चाज तो मिल ही जायगा।

आलमआरा बेगम तो कोतवालिन बनने के ख्वाब तब देखने लगी थी क्या कि अशफाकुल्लाह खाँ इस किस्म की बातें उन्हें जरूर बता दिया करते थे। वह खा साहब के कोतवाल होने के बाद लला की शादी करना चाहती थी कि कोत वाल की बेटी के लिए शहर के महाजन दहेज बनवाते हैं। एक ही बेटी थी। वह उसका ब्याह बडे चाव और हौसले से करना चाहती थी। किसी को यह कहने का मौका क्यो मिले कि आलमआरा बेगम ने अपनी इकलौती बेटी को उस थानेदार या एस० पी० से कम दहेज दिया। वह तो चाहती थी कि यू० पी० पुलिस के हलको मे धूम मच जाय कि साहब ब्याही तो गयी अशफाकुल्लाह खा की बेटी। एक सौ दस तो जोड़े दिये। कोई जोडा पाँच सौ से कम का नही था। पन्दरह सेट गहनो के कि कोई सेट महीने भर दोबारा न पहनना पड़े। फिर पुरानी तर्ज़ वाले खानदानी ज़ेवर अलग कि फिर उनका फैशन आ गया है। तो आलम-आरा बेगम की ददिया सास वाला नौरत्न गुलूबन्द, याकूत वाला जोशन और दस्त बन्द, जडाऊ पात बालियाँ और कंगन, मोतियों का सतलडा चादी के सब बरतन तो खैर दिये ही जायेंगे। दूल्हा को एक कार और प्लैटीनम का सिग्रेट केस तो देना ही पडेगा। फिर बरात वालो का जोडा। घर बिरादरी, पुराने नौकर चाकर सात आठ लाख से कम खर्च नही होगा। अब यदि इलाहाबाद कोतवाली का कोई अफसर दोयम अपनी बेटी की शादी मे, चाहे वह इकलौती ही बेटी क्यो न हो, सात आठ लाख रुपये खर्च करेगा तो भँवें जरूर तनेंगी। पर जो यह शादी किसी छोटे शहर के कोतवाल की बेटी की हो तो लखनऊ का खबर भी न होगी। अब गाजीपूर, आजमगढ या बलिया की परवा कौन करता है! इसीलिए उन्होने हज़ारो मन्नतें मान डाली कि आशाराम पकडा जाय और उसके मियाँ का तबादला किसी छोटे शहर मे हो जाये।

आशाराम से आलमआरा बेगम को कोई जाती शिकायत नही थी। वह तो उसे जानती भी नहीं थी। बस एक बार देखा ज़रूर था। वह किसी की गिरफ

तारी पर शोर मचाने उनके घर आ गया था। उसका कहना था कि खां साहब ने रिश्वत खाकर उस आदमी को किसी और के जुर्मों पर पर्दा डालने के लिए पकड़ लिया है। उस वक्त वह 'निरंजन' में कोई फिल्म देखने जा रही थी। यह तो उन्हें लैला ने बताया था कि वह आशाराम है।

और लैला ही की वजह से आशाराम काफी दिनों तक पुलिस के पंजे में बचा रहा।

हुआ यह कि जब कोतवाल ने रोज़नामचा देखा तो उसने फौरन डी० आइ० जी० को रिपोर्ट की कि उसने पता चलाया है कि आशाराम सरकार का तख्ता उलटने का कोई प्रोग्राम बना रहा है और उस साज़िश का कोड नाम 'कटरा बी आर्ज़ू' है।

चक्कर यह था कि पुलिस के लोग सरकार को खुश करने में लगे हुए थे। और सबके सब एक-दूसरे से बाज़ी मार ले जाने की फ़िक्र में थे। कोतवाल श्री बांके बिहारी लाल गुप्ता आइ०पी०एस० के आदमी थे। तोड़ जोड़ के आदमी भी थे। वह इस कोशिश में थे कि इमरजेंसी में जब सुप्रीम कोर्ट के जजों की सीनियरी नहीं चलती तो यू० पी० पुलिस किस खेत की मूली है। वह क्या सीनियर आफिसरों को काटकर डी०आइ०जी० बनने के चक्कर चलाये हुए थे और जब उन्हें ही 'कटरा बी आर्ज़ू साज़िश' की भनक पड़ी तो उन्होंने उसे लपक लिया। इस साज़िश का पर्दा यदि वह फाश कर सकें तो उन्हें डी०आइ०जी० बनने से रोक कोई नहीं सकता। पर वह यह भी नहीं चाहते थे कि डी०आइ०जी० को बताये बिना कुछ करें क्योंकि राजनीति का कुछ नहीं है। क्या पता कौन किसका रिश्तेदार निकल आये? इसलिए उन्होंने रिपोर्ट तो कर दी पर चुपके से एक खुफिया खत लेकर अशफ़ाकुल्लाह खां को लखनऊ रवाना कर दिया कि वह खत मुख्यमन्त्री को दिया जाये।

खां साहब ने इस मौके को गनीमत जाना। मुख्यमन्त्री उन्हीं के गांव के थे। उनकी रिआया रह चुके थे और अब भी बहुत खयाल करते थे। चुनांचे उन्होंने मुख्यमन्त्री को खूब नमक मिर्च लगाकर अपनी रिपोर्ट दी और आखिर में उन्हें गुप्ताजी का खत भी दे दिया। मुख्यमन्त्री दिल ही दिल में गुप्ताजी से नाराज़ थे कि सात आठ साल पहले, जब कि मुख्यमन्त्री मुख्यमन्त्री नहीं थे बल्कि अपोज़ीशन के एक एम०एल०ए० थे, गुप्ताजी ने उनके एक आदमी को फांसी की सज़ा दिलवायी थी। गुप्ताजी इस बात को भूल चुके थे। पर मुख्यमन्त्री को यह बात याद थी। और जब वह फ्लोर क्रास करके सरकार से मिल गये तो उन्होंने गुप्ताजी से खूब दोस्ती की। वह गुप्ताजी को ऐसी जगह मारना चाहते थे कि

जहाँ माँगे पानी न मिले और इमरजेंसी के शुरू में उन्हें यह मौका मिल गया। उन्होंने खाँ साहब से कहा कि वह गुप्ताजी को इस साजिश में लपेट लें तो वह उन्हें एलाहाबाद कोतवाली का इनचार्ज बना देंगे। अशफाकुल्लाह खाँ खुश खुश एलाहाबाद लौट आये कि जब मुख्यमन्त्री ने जबान दे दी है तो भला अब उन्हें कोतवाल एलाहाबाद होने से कौन रोक सकता है। एलाहाबाद का कोतवाल होने का मतलब यह था कि वह सब इन्स्पेक्टर से सीधे एस०पी० हो जायेंगे। इमरजेंसी में कुछ भी हो सकता है पर वहाँ लखनऊ में मुख्यमन्त्री की अपनी परेशानियाँ थीं। वह जानते थे कि और कितने लोग उत्तरप्रदेश के मुख्यमन्त्री बनना चाहते हैं। तो यदि उनमें से किसी को इस 'कटरा बी आर्ज़ू साजिश' की भनक पड़ गयी और उसने भुनक दिया श्रीमती गाँधी या संजय गाँधी में तो उनका पत्ता साफ हो जायगा। इसलिए वह पहली फ्लाइट से दिल्ली के लिए रवाना हो गये। उन दिनों कांग्रेसी मुख्यमन्त्रियों का ज्यादा वक्त यूँ भी दिल्ली में गुज़रा करता था।

और यूँ मिसेज गांधी की निजी इंटेलिजेंस को 'कटरा बी आर्ज़ू साजिश' का फाइल मिल गया। पर मुख्यमन्त्री ने अब भी इतमीनान की साँस नहीं लिया। उनके धड़ के लिए यही बात काफी थी कि श्रीमती गांधी की सरकार उलटने का नक्शा उनके प्रदेश में बनाया जा रहा था। इसलिए संजय गांधी को खुश करने के लिए उन्होंने अपने प्रान्त में नसबन्दी का कोटा खुद ही दुगना कर दिया। इस पर नम्बर एक सफदरजंग ने उनकी पीठ थपथपायी और वह खुश-खुश लखनऊ लौट आये। और के० बी० ए० फाइल सी० बी० आइ के हवाले कर दिया गया। अब चूंकि यह फाइल सी० बी० आइ० को नम्बर १ सफदरजंग से मिला था इसलिए यह तो साबित करना ही पड़ेगा कि कटरा बी आर्ज़ू के कोड नाम से एलाहाबाद में कोई आशाराम दिल्ली सरकार का तख्ता उलटने की कोशिश कर रहा है। चुनांचे सी०बी० आइ यह साबित करने के लिए एलाहाबाद में आ गया।

इस बात की खबर एलाहाबादियों को नहीं हुई कि उनका ऊँघता मल्हता शहर इतनी बड़ी साजिश का मरकज़ बना हुआ है। लेकिन अशफाकुल्लाह खाँ के एक साले सी०बी०आइ० में थे। इसलिए उनके घर में यह खबर आ गयी।

खुर्शीद आलम खाँ को अपनी भाजी लैला से बड़ा प्यार था और लैला को क्राइम फिक्शन पढ़ने का बड़ा शौक था। कई बार ऐसा हो चुका था कि लैला से गप लड़ाने में लैला अपनी सादगी में कोई ऐसी बात कह गयी कि खुर्शीद आलम खाँ को सुराग मिल गया। परन्तु क्या के० बी० ए०' केस में भी वह लैला से

राय लें ? वह अपने बहनोई अशफाकुल्लाह खाँ से खुश नहीं थे क्योंकि उन्हें मालूम था कि उनकी बहन आलमआरा खुश नहीं है। उन्हें हीराबाई की बात भी मालूम थी इसलिए वह नहीं चाहते थे कि के० बी० ए० केस में अशफाकुल्लाह खाँ को कोई फायदा हो। तो उन्होंने आखिर लैला की मदद लेने का फैसला कर ही लिया। और यह फैसला उन्होंने उस दिन किया जिस दिन उन्हें पता चला कि लैला के कपड़े 'जनता लाण्ड्री' में धुलते हैं और यह जनता लाण्ड्री उसी कटरा मीर बुलाकी में है जहाँ आशाराम के० बी० ए० साजिश कर रहा है। उनका ख्याल था कि बम की कोई फैक्ट्री तो निकलेगी ही। हो सकता है नोट छापने का कोई प्रेस भी निकल आये क्योंकि इस युग में बगावत के लिए भी केवल सरफरोशी से काम नहीं चलता। बगावत भी एक 'बिग बिज़िनेस' बन चुकी है और टिकिय चोट्टे बगावत नहीं कर सकते। आशाराम चूंकि कम्युनिस्ट है इसलिए उसे यकीनन पाकिस्तान और चीन से मदद मिल रही होगी। यदि यह क्लियु हाथ लग जाये तो हो सकता है कि वह 'रा' के चीफ भी बना लिये जायें।

लैला को चूंकि जासूसी उपन्यास पढ़ने की लत थी इसलिए वह एक जवान 'मिस मापुल'[1] के ख्वाब भी देखा करती थी। खुर्शीद आलम खाँ को लैला की यह कमजोरी मालूम थी। तो उन्होंने लैला को अपने राज़ में शरीक कर लिया और चूंकि लैला मिसेज़ गांधी की फैन भी थी इसलिए उन्होंने लैला से यह भी कहा कि मिसेज गांधी उसे तुन्किय का खत भी लिखेंगी। फिर क्या था! लैला नशे में आ गयी। इतना तो उसे जासूसी उपन्यासों के पढ़ने से ही पता चल चुका था कि यह काम राजदारी के होते हैं और किसी को कानों कान खबर नहीं लगनी चाहिए पर बटू कोई ऐसा वैसा नहीं है।

यह बटू लैला का ब्वाय फ्रेंड था। दोनों शादी वादी नहीं करना चाहते थे। बस यूं ही एक सिलसिला सा चल रहा था। बटू का पूरा नाम बनवारी लाल था। पेंटर था। लैला चुपके चुपके उसके लिए मॉडलिंग किया करती थी कि कला की सेवा करने का भी लैला को बड़ा शौक था। वह इधर उधर मिला करते थे। लैला एक अबाशन भी करवा चुकी थी। बटू एक बोहीमियन था। रिश्तों को नहीं मानता था। हर बात भड से कह दिया करता था और यही लैला को अच्छा लगता था। और इसीलिए वह पहली बार उसके लिए माडलिंग

[1] आगाथा क्रिस्टी का एक कैरेक्टर। यह बुढ़िया घरेलू बातों और मिसालों से बड़े-बड़े जुर्मों का पता चला लिया करती है और असली मुजरिम की तरफ इशारा कर देती है जिस पर कभी पुलिस की आँख ही नहीं पड़ती।

करने पर तैयार हुई थी।—धीरे धीरे बटू ने उससे कहा कि तमाम ओल्ड मास्टज ने 'यूड बनाये हैं। उसके बिना चित्रकला सम्पूर्ण नही होती। और वह 'यूड' की मॉडलिंग के लिए कहा से लडकी लाये। उस वक्त तक लैला उसकी महानता की कायल हो चुकी थी इसलिए राजी हो गयी। और जब एक बार कपडे उतर गये तो उतर गये। एक ग्रेट आर्टिस्ट की कीप बनने मे वह किसी की पत्नी बनने से ज्यादा खुशी महसूस करने लगी। पत्नी बनने मे क्या धरा है!—अब जिस आदमी से उसने अपना बदन नही छिपाया था उसे के० बी० ए० की बात क्या छिपाती?—तो उसने बटू को बता दिया कि वह सी० बी० आइ० की मदद कर रही है के० बी० ए० साजिश का पता चलाने मे। और यह काम इतनी राजदारी से हो रहा है कि लोकल सी० बी० आइ० क्या यू० पी० की सी० बी० आइ० को इसका पता नही है।

लैला को बटू के बारे मे और सबकुछ मालूम था पर यह नही मालूम था कि वह उत्तर प्रदेश मे सी० बी० आई० का इनचाज है। बटू ने उसे यह बात इसलिए नही बतायी थी कि यह बताने से उसके आर्टिस्ट होने का इमेज बिगडता था। और वह खुद भी इमरजेंसी लगने के बाद से युनिवर्सिटी के विद्यार्थियो और टीचरो के खिलाफ जासूसी करने का काम कर रहा था और उसी के इशारे पर युनिवर्सिटी के कई विद्यार्थी और टीचर 'मीसा' के चगुल मे आ चुके थे।

लैला तो फुलझडी छोडकर चली गयी। पर बटू चकरा गया। यह कैसे हो सकता है कि आशाराम कोई इतनी बडी कासप्रेसी कर और उसे हवा तक न लगे! पर यदि दिल्ली मे खुर्शीद आलम साहब आ गये है तो यकीनन कोई खास बात होगी और यदि उन्होने इस साजिश का पर्दाफाश कर दिया तो उसका और उसके पिता का क्या होगा! उसे तो यह भी नही मालूम था कि खुर्शीद आलम कितना जानते हैं। लैला को उन्होंने सारी बातें थोडी बतायी होगी। हो सकता है कि वह आज-कल मे आशाराम को पकड ही लें। मतलब कि शायद इतना समय भी नही कि वह अपने पिता से राय ले सके। ऐसी बातें फोन पर तो नहा हो सकती—इसलिए उसने वह किया जो आम तौर पर पुलिस के लोग या पुलिस के एजेंट नही करते। आशाराम को खुर्शीद आलम या तो नही पकडेंगे। इस लिए उसने उसी वक्त उस अखबार के आफिस का फोन घुमाया जिसमे आशाराम काम करता था। आशाराम से उसकी हल्की-सी मुलाकात भी थी कि अपनी विचारधारा मे वह 'नेपिटस्ट' था।

'मैं बटू बोल रहा हूँ।' उसने आशाराम के फोन पर आने के बाद कहा।

'क्या हाल हैं?' आशाराम ने पूछा।

"वह जो कल कही बाहर जानेवाले हैं ना ?" उसने कहा।

"मैं ? नही तो।" आशाराम ने कहा।

"मुझसे क्या छिपाना।" वटू ने कहा। "हो सकता है कि कुछ अनवाटेड लोग आपसे आज ही मिलने आ जायें। इसलिए कल की जगह आज ही चल जाइए।" उसने यह कहकर फोन बन्द कर दिया। किसी स्विच बोर्ड से गुजरने वाली बातचीत में वह इससे ज्यादा कह भी नही सकता था।

पर आशाराम सिलसिला के कट जाने के बाद रिसीवर की तरफ देखता रह गया। उसकी समझ मे उस बातचीत का मतलब ही नही आ रहा था।—और फिर उसकी समझ मे बात आ गयी।

दो दिन के बाद खुर्शीद आलम खा ने आशाराम से बात करने का फैसला किया। पर जब तक तो आशाराम कहा का कहा पहुच चुका था। पता चला कि दो दिन से वह आफिस ही नही आया है। यह सुनकर खुर्शीद आलम खा के हाथो के तोते उड गये। वह अपनी भेजी हुई वह रिपोर्ट तो अब वापस ले नही सकते थे जिसमे उन्होने यह लिखा था कि कटरा मीर बुलाकी सचमुच एक गहरी साजिश का गढ है और उन्हे यकीन है कि वहा बमो का कोई कारखाना जरूर है। हो सकता है कि नोट भी छापे जाते हो। आशाराम ही के० बी० एo साजिश का सरगना है इसलिए उन्होने उसे गिरफ्तार करने का फैसला कर लिया है—और उन्हे यकीन है कि वह आशाराम से उसके साथियो के नाम और बमो के कारखाने का पता पूछने मे कामयाब हो जायेंगे।—बमो के कारखाने की तरफ से वह जरा फिक्रमन्द नही थे क्योकि कही से बमो का कारखाना बर आमद कर लेना कोई मुश्किल काम नही था। सवाल तो यह था कि अब वह आशाराम को कहा से बर-आमद करें

इसलिए एक पुरानी मस्जिद के खंडर से उन्होंने बमो का एक कारखाना तो बर-आमद कर ही लिया कि दिल्ली से कुछ तो कह सकें। जिस दिन पुलिस ने मस्जिद के खडर पर छापा मारा उस दिन सारे कटरे मे खलबली पड गयी। हिन्दुओ और मुसलमानो दोनो ही ने बुरा माना और तब फैसला किया गया कि आकाशवाणी से कटरे ही के लोगो की जबान से इमरजेंसी की तारीफ करवायी जाये। और यू शम्सू मिया का इन्तिखाब किया गया। शम्सू मिया मे, मौके के लिहाज से, दो खूबिया थी। एक तो यह कि वह मुसलमान थे और दूसरी यह कि कटरे वाले उनकी बडी इज्जत करते थे। परन्तु जो सिर्फ शम्सू मिया का बयान आकाशवाणी से सुनवाया जाता तो मुमकिन है एलाहाबाद वाले यह सोचते कि सरकार लीपा पोती कर रही है क्योकि शम्सू मिया तो थानू

गौरीशकर पाण्डेय के आदमी मशहूर ही थे इसलिए पहलवान, दरा और बिल्लो को भी चुना गया कि इन लोगा की भी कटरे मे बडी इज्जत थी और यू भी सरकार आम लागो स इमरजेंसी की तारीफ करवा-करवा के देश के तमाम लोगा को यह यकीन दिलाना चाहती थी कि इमरजेंसी वाकई बडी अच्छी चीज है और जो लोग इमरजेंसी के विरोधी हैं वह वास्तव मे देश-द्रोही हैं—सरकार आम लोगा को बडी हद तक यह बात समझाने मे सफल भी हो गयी थी। इसीलिए देश न तो आकाशवाणी वालो से साफ कह दिया था कि सच बालने का पैसा तो वह ले नही सकता। उसके यह कहने से आकाशवाणी वाले चपलकश मे पड गय कि अब क्या करें। कोई झूठ बोले या सच पर आकाशवाणी वाले पैसा दिय बिना तो बुलवा नही सकते।

बडी मुसकिल दस ए पर तैयार भया कि ठीक है ता हमरी बुलवायी परा-इम मिनिस्टर फण्ड म दे दी जाय।" पहलवान ने कहा और बीडी का बण्डल इतवारी बाबा की तरफ बढा दिया। इतवारी बाबा ने चुन के एक बीडी निकाली और अंधेरे म उस दखने के बाद बोले

'लाल महम्मद बीडी मे अब ऊ पहिले वाली बात नही रह गयी है।"

पहलवान अपनी बीडी सुल्गान म लगे हुए थे इसलिए कुछ न बोले।

'एहू के बारे मे दू लफज काहे न बाल देत रेडियो पर कि इमरजेंसी साहब लाल महम्मद स कह कि पहिल जयसी बीडी बनाना शुरू कर दें नही तो भीसा म पकड के बन्द कर दिये जायेंग।'

'चूतियापन्ती की बात मत किया करो। पहलवान ने दियासलाई का शोला इतवारी की तरफ बढात हुए कहा। 'रेडियो पर ऐयसी छोटी छोटी बात ना कही जाती।"

बीडी छोटी बात ना है। इतवारी ने कहा। "आजादी के पहल दाम का रहा एक बण्डल का ? "

"अँह।' पहलवान खडे हो गय। 'माँ चुदाव अपनी। अंधेरी जमीन पर पच से थूककर वह आगे बढ गय और इतवारी बाबा अपनी सुलगी हुई बीडी के साथ जनता लाण्डरी के अंधेर तख्ते पर अकेले रह गये और बडी सजीदगी स यह सोचन लग कि पत्ता वही है, सुर्ती वही है, धागा वही है। फिर तीस बरस मे बीडी का दाम जमीन से आसमान पर क्या चला गया ?

इतवारी बाबा यह सोचत हुए लेट गय कि यदि उन्ह भी आम लोगा की तरह कपडा-लत्ता खरीदना पडता और घर गृहस्थी का बाझ उठाना होता ता हुलिए टट' हा चुका होता अब तक।—उनके ठीक सामन अंधेर रास्त पर

पहलवान चले जा रह थे अपनी बीडी पीते।

पहलवान ने बीडी फेंक दी। इतवारी के कहने के बाद से उस बीडी का मजा वाकई अजीब सीठा-सीठा-सा लगने लगा था। और पता नही बिल्लो ने कुरते और लुगी पर ठीक से इसत्री की कि नही। ए भायी कही ऐयसा न होय कि उहाँ ठीक समय पर न पहुच सकें। सरकारी मामला है। ज़रा देर हुई और पता चला कि नैनी[1] मे बयठे चक्की पीस रहे हैं।

यह डर बिल्कुल नया था। अंग्रेज़ा के जमाने म भी हजार तरह के डर थे पर यह नही था। एक अनदेखी हथकडी वातावरण मे झूल रही थी और किसी को पता नही था कि वह कब किसके हाथ मे पड जायेगी।

पहलवान को इस डर की पूरी चेतना नही थी फिर भी एक बचैनी सी तो थी ही। उन्हाने बण्डल से बीडी निकाली। फिर इरादा बदल गया। वही बीडी है ना। बीडी को उन्हाने बण्डल मे वापस रख दिया। कही दूर से किसी मुग के बाँग देने की आवाज़ आ रही थी।

साला।" पहलवान ने कहा। "इमरजेंसी लग गयी है तो साला बखत से पहले ही बाग देव लगा।" एक रिक्शे की घण्टी की आवाज पर वह मुडे। सामने अँधेरा था। उस अँधेरे से घण्टी की आवाज़ आ रही थी। फिर रिक्शे की परछाइ उभरी। पहल्वान एक तरफ हो गये। जब रिक्शा पास से गुजरने लगा तो बदर की आवाज़ आयी "अरे आप एतनी रात गये याहाँ क्या कर रहे हैं साहब?"

"तू कहाँ जा रह हो?" पहलवान ने पूछा।

एक दास्त की शादी है। पानीपत बरात जा रही है।"

"ताहरियो सादी होगी कि दोस्तने सादी मे सरीक हो होके जिन्दगी गुजार दोगे?"

रिक्शेवाला हँस पडा।

'चुप। भोसडी के।" पहलवान ने उसे डाट पिलायी। "इमरजेंसी म भी बेवक्त के रिक्सा चला रहा।" रिक्शेवाला सर खुजलाने लगा और पहलवान बदर से मुखातिब हो गये 'हम देख रहे कि अब हम्मे तोरी सादी के बारे मे कुछ करे को पडेगा। तोरे अब्बा से कुछ होय वाला ना है।"

"नही चा, यह बात नही है।" बदर ने कहा। "शम्सू चा और अब्बा मे आज बात हो गयी। अगले चोद की बारह को निकाह हो जायेगा इशाअल्लाह।"

---

[1] नैनी सेंट्रल जेल, एलाहाबाद

"चलो, भगवान तुम दोना को खुस रक्खे।" पहलवान न कहा। "तोरी गाडी का बखत हो गया कि दू मिनट है ?"

"काफी वक्त है अभी।"

पहलवान ने जी कडा करके बीडी सुलगा ही ली।

"भायी हम्मे इ बताव कि रेडियो पर बोला कयसे जाता है। तू तो कानी कै वेरी मुसहरा पढ चुके हो। मतलब कि वहुत जोर-जोर से बालना पडता होगा न ?"

'नही साहब। न ज़ोर स बोलना चाहिए न धीर स। बस जैसे आप बोलते हैं वसे ही बाल दीजिएगा।"

"ए भायी आदमी दूर होता है त हम चिल्ला के बोल्त है। करीब होता है तो धीर धीरे बोलते हैं।"

"जसे आप इस वक्त मुझस बातें कर रहे हैं।"

'अच्छा—" और ज़रा-सा चूतड उठाकर उन्हान पादना शुरू किया। रात क सन्नाटे मे यह आवाज़ जो एक दम से आयी तो रिक्शेवाला चौंक पडा और उसके चौंकने पर वदर को हँसी आ गयी और वह हँसत हुए बोला "वहाँ, रेडियो स्टेशन पर यह मत कीजिएगा।"

'क्यो।' पहलवान न कहा, 'हम्मे एक दम्मे स चूतिया समझ लिय हो का ?"

रिक्शा आग बढ गया। और पहलवान को फिर लुगी कुरत की समस्या ने आ दबोचा। तो उन्हान सोचा कि चलके बिल्लो से पूछ ही लेना चाहिए। बीडी फेंककर वह लम्बे-लम्बे डग भरते बिल्लो के घर की तरफ चल पडे।

पण्डित शिवशकर पाण्डेय मार्ग' पर रात उतनी अँधेरी नही थी। म्यान की बत्तियाँ जल रही थी। बस कही-कही, जहा बल्ब फ्यूज हो गये थे वहाँ रात के धब्बे-से ज़रूर थे। उनकी आहट पर एक आवारा कुत्त ने सर उठा उनकी तरफ देखा फिर कुछ सोचकर उसने भाकने का इरादा खत्म कर दिया। पहल-वान उसकी तरफ देखते हुए बिल्लो के घर की तरफ बढ गये।

दरवाजे पर रुककर वह ज़रा हिचकिचाये कि इतनी रात गये कुण्डी वजायें या न बजायें। और हो सकता है कि वह कुण्डी बजाये बिना लौट आय होते। पर अन्दर स बिल्लो और देश की बाता की आवाज़ आने लगी और उन्हाने कुण्डी बजा दी।

दरवाज़ा खुलने मे देर नही लगी। देश न दरवाज़ा खाला। वह पहलवान को देखकर चौंक पडा।

'ऐयसे बकर-बकर हमरा मुह देख की ज़रूरत ना है। पहलवान यह कहत

हुए घर मे आ गये । देश ने किवाड फिर अन्दर से लगा दिया। पहलवान ने देखा कि सामने दालान म बिल्लो हाथ मे चाय का प्याला लिये खडी है।

मामा को दखकर बिल्ला भी चकरा गयी। पर मामा आराम से चारपायी पर आल्थी पाल्थी मारकर बैठ गये।

देश बावरचीखाने से एक प्याली लेता हुआ आया। बिल्लो और देश मे से किसी ने यह पूछना मुनासिब न जाना कि इस वक्त क्या आये है। हालाकि दाना सोच यही रह थ और थाडे परशान भी थे। पर लगता था कि जैस पहलवान किसी जल्दी मे नही हैं। बात यह ह कि उन दाना का जागता पाकर खुद पहलवान इस सोच म पड गय थे कि यह दोना इतनी गयी रात तक जाग क्यो रह है। कही दोना म किसी बात पर झगडा तो नही हा गया ? तो वह इस बात पर झेंप-झेंपे से बैठे थे कि शायद बे मौका आ गय है। पर आ गय हैं तो एकदम स उठ के चले भी नही जा सकते। थोडी देर तो बैठना ही पडेगा। तो यह दिखाने के लिए वह लट गय कि इधर से गुज़र रहे थ इसलिए वहा भी आ गय।

बिल्लो न केतली से प्याली म चाय उँडेली और प्याली उनकी तरफ बढायी। चाय की प्याली लेन के लिए वह फिर उठ बठे और साँसर म चाय उँडेलने लग। फिर दा एक बार फूक मारकर उन्होन पहला सडाका भरा और देश को लगा जस उनके शडाके की आवाज कोस दो कोस तो जरूर गयी होगी।

'आज साली नीदे ना आती रही कोयी तरह।" पहलवान ने सासर का बडी एहतियात से चारपायी की पटटी पर टिकात हुए कहा। फिर बीडी के बण्डल के लिए उन्होने जेब म हाथ डाला। चारपायी हिली। चारपायी हिली तो साँसर भी हिला और देश ने जल्दी स झुककर हाथ लगा दिया। पहलवान ने बीडी सुल्गायी और एक लम्बा कश मारन क बाद बोले "तो हम चले गये इतवरिया कि हा। ऊ ससुर लगे ओ ही ईर घाट मीर घाट की हाके। तो हम अपनी जान बचा के भाग उहा से।" वह दश की तरफ मुडे जो साँसर सँभाले बैठा हुआ था और बोले रस्त मे का देखत है कि तोरे मास्टर वदर बारिया-बिस्तर सभाल्ऽ रक्स पर बैयठे चले जा रहें। हम पूछा। भयी किधिर चल्यो। तो बोले कि कोयी दोस्त की सादी म—हा, पानीपत जा रह। तो हम कहा कि जाते-जात ई बनात जाव कि रेडिया पर कैस बोला जाता है। बस ऊ सुरु हा गये कि न धीरे न तेज। ई तो बहुत चक्कर म फँस गय हमर लोग।

"चक्कर क्या है " दश ने कहना शुरू किया।

"चक्कर है कैयस नही।" बिल्लो ने बात काटी। "ई बखत हा गया एही

बात पर सोचते-सोचत ।'

पहलवान ने इतमीनान का सास लिया कि दोनो मे झगडा नही हुआ है।

"हमरे कुरत-लुगी पर इसतिरी कर दिये हो कि ना ?" पहलवान न पूछ ही लिया।

'साभे को कर दिया रहा।"

'हमरे खयाल मे तो नहाना धोना सुरू कर देना चाहिए।' देश न कहा।

"उहा साढे दस बजे पहुचे को है न।" बिल्ला न कहा। "ता ग्राधी रात स तैयारी सुरू करे की का जरूरत है ?'

"खैर आधी रात तो तुम गलत कह रही हो।' देश ने अपनी कलाई पर बँधी घडी दखते हुए कहा। 'साढे चार बज रहा। हम तो कहत ह मामा," वह मामा की तरफ मुड गया, "कि सरकारी मामला है। घण्टा भर पहिल पहुच म कोयी नुकसान नही है।'

"और का!' पहलवान ने कहा। "आकाशवाणी की घडी तेजो हो सकती है। ऐयसा न होय कि हम तो पहुचे उहाँ अपनी घडी दख के और पता चले कि उहा की घडी तो साढे बारह बजा रही। पता चला उहयो मे भीतर कर दिये गये।"

"हाँ तो अभयी काह ना चल चलें।' बिल्ला ने जल्कर कहा। 'घडी तेज हो जायेगी।' वह बरतन समेटती बावरचीखाने की तरफ चली गयी। पहलवान ने अपने सासर की तरफ देखा। देश अब तक उसे सँभाले हुए था। उन्हाने बीडी देश को थमाते हुए सॉसर उठा लिया और दूसरे शडाके मे सॉसर की चाय नीचे उतर गयी। और वह खडे हो गये और जरा जोर मे बोले 'हमरा लुगी कुरता दे दयो कि हम चल के तैयार होना सुरू करें। तू बैयठ के घडी दखो।'

बिल्ली बरतन खँगालने बठ चुकी थी। कलाई मे माथ पर आये हुए बात हटाती हुई बोली "हमरा हाथ बझा है। मामा का कपडा निकाल दयो। अरजट धोया है। डेढ रुपया धोलायी। एक रुपया इसतिरी करायी। अढायी रुपया ले लीहो।"

"हम घर से पैयसा लेके ना आय हैं।" मामा ने फरयाद की।

"अच्छा कल द दीहो बाबा।"

'पैयसा ना छोडेंवाली है।' दश ने भुनका। "हमसे ता पेसगी धरवाये लगी है।

'एही मारे हम बिआहे ना किया।' मामा ने कहा।

'का खुसुर-फुसुर हा रही ? बिल्लो ने पूछा।

"अरे नाही र ।' मामा ने कहा, "दुसरी बात है ।"

'का है दुसरी बात ?" बिल्लो ने पूछा ।

"तोको कैसे बतायें !" मामा ने बेचारगी से कहा, "मर्दानी बात है ।"

इस बीच म देश ने उनके कपड़े उन्हे थमा दिये और वह सर खुजलाते चले गये । देश बावरचीखाने मे जाकर बिल्लो के पास बैठ गया और बरतन धोने मे उसका हाथ बँटाने लगा ।

"अब जमीन पर ऐयसे बैठे म तकलीफ हो है ।" बिल्लो ने कहा ।

उसका पेट काफी निकल आया था । देश ने उस निकले हुए पेट की तरफ बड़े प्यार से देखत हुए कहा "हम्मे तो लग रहा कि भगवान हमरी और तोरी अपलिकेसन एक साथे मजूर कर दिहिन हैं ।"

"का ?"

"एतन डबल पेट म खाली एक वच्चा तो हो ना सकता ।'

बिल्लो ने जल्दी से पेट को साडी से छिपा लिया । और पेट को यू साडी से छिपाती हुई बिल्लो उसे तमाम हेमामालनियो, तमाम रेखाओ, तमाम राखियो और तमाम जीनत अमानो से कही ज्यादा खूबसूरत दिखायी दी और उसे इतना प्यार आया कि उसने उसे गोद म उठा लिया और उसकी फरयादा के बावजूद आँगन पार करके दालान तक ले गया और फिर उसने इसे इतनी आहिस्तगी से चारपायी पर रक्खा जसे बुढिया के काते की बनी हुई औरत हो

वह दोनो यह भूल गये कि उन्ह साढे दस बजे रेडियो स्टेशन पहुचना है ।

'हम सोच रह कि एको भी तो एक ठो कमरा चाहिए ।' देश ने कहा ।

कमरा का होगा !"

"क्या ?" देश ने कहा । "लडकी बडी होगी तो माँ-बाप के साथ रहेगी का ?'

लडकी होबे ना करिहे ।" बिल्लो बोली ।

"तू जिद बहुत करे लगी हो ।"

काह ना करें जिद ?"

देश के पास इस सवाल का क्या जवाब हो सकता था ? कुछ नही । तो वह चुप रहा गया और बिल्लो के निकले हुए पेट की तरफ देखने लगा और बिल्लो ने बडे प्यार से उसके मुह को दूसरी तरफ फेर दिया ।

"आज महनाज बाजी आयी रही ।"

"ऊ कसे रस्ता भूल पडी इधिर का ?"

"समझाये आयी रही कि अब तोरी नसबन्दी हो जाये को चाहिए । जोखन

चाचा तो ऊथ कांग्रेस की महल्ला कमेटी के सदर हो गए हैं। महनाज बाजी इहो बताती रही कि बाबू साहेब के पिता पण्डित बानी कौन की पचीसवीं बरसी मे सजेय गाँधीयो आयेवाले हैं। शम्सू चचा ऊ जसन कमेटी के बानी का हो गये हैं। टेलिवीजन वाले आके फोटो उतरिहे ऊ जसन का। लता मगेसकर बुलायी जा रही गाये के वास्ते और दलीपकुमार आयेवाले हैं पण्डितजी की फोटो को फूलमाला पहिनाये के वास्ते "

"हम ता सुना रहा कि सजय गाँधी आ रहे।'

'ऊ तो आ ही रह।" बिल्लो ने कहा 'उनका बहुत बड़ा जलूस निकले वाला है। महराज रीवा का हाथी आ रहा उनकी सवारी के वास्ते। रेडियो वाले ऊ जलूस और आम सभा का आँखो देखा हाल सुनैयह देस-भर को '

रेडिया की बात निकली तो उन्हे अपनी रिकार्डिंग याद आ गयी और वह फिर परशान हो गए।

'चले की तैयारी करे को चहिए अब।' बिल्लो ने कहा।

'अभईए से ?' देश ने पूछा।

'मामा ठीके कहत रह।" बिल्ला बोली "थोडी देर पहिले पहुचे म कौनो शान थोड़े घट जैयहे।"

देश का मूड तैयारी करने का नही था। वह तो अभी बहुत देर तक फूले हुए पेटवाली इस बिल्लो को चुपचाप देखते रहना चाहता था जो उसे आज भी और इस आलम मे भी दुनिया की सबसे खूबसूरत औरत दिखायी दे रही थी। पर वह यह भी जानता था कि बिल्लो की बात टाली भी नहीं जा सकती।

'पहिले तू नहा ल्यो।' देश ने कहा, 'हम तो मरद जात हैं। दुइ मिनट म तैयार हो जाँगे।'

बिल्लो यह बात मान गयी।

उसके चले जाने के बाद भी देश देर तक उस चारपाई पर प्यार से हाथ फेरता रहा जैसे बिल्लो लेटी हुई हो। उसे जिन्दगी से कोई शिकायत नही थी। उसका गैरेज मजे म चल रहा था। बैक का कर्ज उतरता जा रहा था। जनता लाण्ड्री भी धूम मचाये हुए थी। बस एक बेटी हो जाय तो उसकी जिन्दगी भरपूर हो जाये। किसी चीज की कमी ही न रह जाय। पछत वाले गुस्लखान से बिल्लो के गुनगुनाने की आवाज आ रही थी। गीत के बोल साफ नही सुनायी दे रहे थे। पर यह जरूर पता चल रहा था कि बिल्लो बहुत खुश है। और बिल्लो की खुशी के सिवा देश को चाहिए क्या था। वह उठा और पंजो के बल चलता हुआ गुस्लखाने की नीचे पर्दे की दीवार के पास रुका। बिल्लो

की गुनगुनाहट बन्द हो गयी थी और चूडियाँ तेजी से बजने लगी थी। शायद वह साबुन लगा रही थी। क्युटीकोरा साबुन की खुशबू उसके नथना को छूने लगी। वह पजा के बल उठकर गुस्लखाने म झाकने लगा।

बिल्लो अपने नगे बदन मे साबुन लगा रही थी। उसके नगे बदन के साथ उसका फूला हुआ पेट बडा अजीब लग रहा था। वह बठी भी कुछ अजब तरह से थी। फसकडी मार के क्योकि अब नीचे बैठने म उसे परेशानी होती थी।

बिल्लो देश की आखो से बेखबर बदन पर साबुन लगाती रही। फिर जरा जोर स बोली, "चूल्हे पर चाय का पानी चढा दो। हम दु मिनट मे निकल रह।"

'अच्छा।' देश ने कहा।

इस कदर पास से जो उसकी आवाज आयी तो बिल्लो ने चौंककर देखा और उमे सामने से झाकता पाकर घबरा गयी और उसने अपने बदन को दोनो हाथो से छिपाने की नाकाम कोशिश की। प्यार से शमायी हुई आवाज मे बोली 'बेसरम कही के।"

देश हँसता हुआ बावरचीखाने म चला गया और चूल्हा जलाने लगा। कोई मिनट भर के बाद बिल्लो तौलिये मे अपने लम्बे बालो को झटकती हुई निकली और आगन म पडे हुए बँसखट पर बैठकर बाल सुखाने लगी।

"तुह ऊ दिन याद है जे दिन तूसे कानी केकी साडी जल गयी रही जेका दाम भर को पडा रहा?"

"क्या?"

"ओ दिन हम तोसे झूठ बोले रहे।" देश ने कहा। "हमसे कोयी की गाडी का पुजा उर्जा ना टूटा रहा। हम महनाज के मियाँ के वास्ते रिस्टवाच खरीदे के वास्त झूठ बाले रह कि त ऐयसे तो खरीदे ना देवे"

देश समझ रहा था कि इतने बरसा बाद भी यह बात सुनकर बिल्लो दर गुजर करनेवाली नही है। पर यह कहकर वह अपनी छाती स एक बोझ हटाना चाहता था। उसने बोझ हटा दिया। पर बिल्लो के कहकहे के लिए तो वह तयार ही नही था। वह घबरा गया। उसने बिल्लो की तरफ देखा। वह हँसते-हँसत बहाल हुई जा रही थी।

"ए मे हँस्से की का बात है?" देश जरा सा बुरा मान गया।

'ओ दिन हमहू झूठ बोले रहे। साडी ओडी ना जल्ली रही। महनाज के मियाँ के वास्ते साइकिल खरीदना रहा कि तू तो साइकिल के नाम पर चिल-पो मचाये लगिहो।"

"ऐं।"

और फिर देश भी हँसने लगा।

"हम कै दिन से ई सोच रह कि अब अकेले काम ना होता। उस्ताद को भी साथ लगा लें। बाबू साहब को तो लीडर बनना रहा। बन गये। उस्ताद बिचारे वैसे ही गलत नम्बर की ऐनक लगाये घूम रह। एक दिन महनाज मिल गयी तो हम बहुत डाट पिलाया कि फैसन करके नसबन्दियें कराती फिरिहो कि उस्तादो की तरफ दखिहो कभी। एक ठो ऐनक बनवा दो। ता महनाज कहे लगी कि हम तो ऐनक की दुकान खुलवा दें अब्बा को पर वह मानें भी।"

'काह ना मानते ?'

"दमाद के पैसे से ऐनक ना लगा सकते ऊ।" देश ने कहा, 'और अब्दुल-हक ससुर पाकिस्तान मे जमे बैठे हैं। और अपने को हम का कह "

बिल्लो समझ गयी कि देश से शम्मू मिया के बिना जिया नही जा रहा है। तो उसने बात बदल दी। बोली, "जब तक पानी खौले खौले तुम नहा ल्यो।"

देश नहाने चला गया।

ओलती से उजाला आगन मे बरसने लगा और जमीन से आसमान तक एक दूधिया रोशनी फैल गयी। चिडिया घोसला से निकलकर आगन म उतर आयी और एक कव्वा रोज की तरह न जाने कहाँ से उडता हुआ आया और तार की अलगनी पर बठकर पहले तो तार पर चोंच घिसता रहा और फिर न जाने क्यो आवाजें देने लगा।

बिल्लो ने नयी साडी बाध ली जो खास रेडियो स्टेशन जाने के लिए बडी और छोटी तमाम दुकानो के चक्कर लगाकर खरीदी गयी थी। फिर वह चप्पल पहनी गयी जो साडी के रग से मैच करने के लिए शहनाज के कहने से खरीदी गयी थी। शहनाज खुद साथ गयी थी और चप्पलो को साडी के साथ लगा-लगाकर उसने बडी मुश्किल से एक चप्पल पसन्द की थी। फिर उसन पहली बार लिपस्टिक लगायी। यह लिपस्टिक और इसके साथ की कई चीजें आशाराम ने उसे शादी पर दी थी। लिपस्टिक लगाते-लगाते वह आशाराम को याद करके उदास हो गयी। उसे यकीन नही आ रहा था कि आशाराम जसा शरीफ लडका ऐसी अच्छी सरकार का तख्ता उलटने के लिए मस्जिद मे बम बनायेगा। पर लैला के मामूँ को झूठ बोलने की क्या जरूरत है ? कौन कहे कि आशाराम से उनकी कोई जाती लडाई है उसन आईने मे अपना मुह देखा। चेहरे पर थोडी सूजन थी। सूजन तो थोडी थोडी सारे बदन पर थी। पर सकीना ममानी कह रही थीं कि बच्चा होय म ऐयसा हो जाता है

देश चाय लेकर आ गया। वह उसकी तरफ देख के मुस्कुरायी। वह अपनी आखें मलने लगा और फिर उसे देखकर उसी से पूछने लगा, "मेम साहब, इहां हमरी घरवाली बयठी रही। ऊ कहां चली गयी ?"

'हम नही जानटा।" मेम साहब ने गरदन अकडाकर कहा और फिर दोनो हँसने लगे। और अभी अपनी हँसी के बीच मे थे कि कुण्डी बजी और देश चाय की प्याली बिल्लो को थमाकर दरवाज़ा खोलने चला गया।

दरवाजे पर बुरका पहने शहनाज़ खडी थी। नकाब उठा हुआ था।

अरे अम्मा।' देश न कहा।

कीडा पडे आपकी ज़बान मे। बोहार जायें आपकी अम्मा " शहनाज दुआएँ देती हुई अन्दर आ गयी और बुरका उतारती हुई बिल्लो से बोली, "अब्बा भेजिन हैं कि जाके बिल्लो को तैयार करवा दो। रेडियो स्टेशन का मामला है। देर नही होनी चाहिए पर आप तो तयार बैठी है।"

"उस्ताद भेजिन हैं ?" देश को यकीन न आया।

"नहीं तो क्या मुझको पागल कुत्ते ने काटा था कि मुहअँधेरे आ जाती!"

देश मुस्कुरा दिया। मास्टर बद्रुलहसन नायाबमछली शहरी के इश्क ने और कुछ सिखाया हो न सिखाया हो पर शहनाज़ को खडी बोली बोलना जरूर सिखा दिया था। और इस नयी भाषा के साथ शहनाज़ उसे कुछ अजीब सी लगन लगी थी। यह नयी भाषा सुनने मे अच्छी जरूर लगती है पर सुनने मे जमे अपनी नही लगती। बोलनेवाला भी जसे कोई और हो जाता है। महनाज न भी यूथ काग्रेस और नसबन्दी का मोर्चा सँभालने के बाद यही भाषा बोलना शुरू कर दिया था पर उसके बोलन में शहनाज के लहजे की सफाई नही थी। वह बोलती थी तो ऐसा लगता था जस हेमामालिनी का गाना लता मगेश्कर गा रही हैं।

"मामा की दुकान खुली कि नही ?" देश ने पूछा।

"आज कैसी दुकान!" शहनाज ने कहा, "उन्हे बाजी सिखला रही हैं कि कैस बोला जाता है रेडियो पर।"

बात यह है कि महनाज़ कटरा मीर बुलाकी' मे रेडियो की एक्सपर्ट थी। महिलाओ के प्रोग्राम मे कई बार 'नसबन्दी' के बारे म होनेवाली बातचीत मे हिस्सा ले चुकी थी। वमे मास्टर बदर भी कई बार रेडियो पर शेर सुना चुके थे पर महनाज़ यूथ कांग्रेस की 'लीडर' थी। उसन कटरे की तमाम जवान लडकियो और औरतो को यूथ काग्रेस मे भरती कर लिया था। एक दिन ता कटरे की औरतें बुरका पहन पहनकर और घूघट निकाल निकालकर कटरे की सफाई

पर उतर आयी। बाबू साहब ने प्रेस को बुला रक्खा था और देश-भर मे महल्ले की सफाई करनेवाली औरतो की तस्वीर छपी थी। औरतें तो नज़र नही आ रही थी, हाँ बुरके और घूघट जरूर थे। महनाज की तस्वीरें उनके इण्टरव्यु समेत उन्ही पत्र पत्रिकाओ म 'समाचार' के शुक्रिये के साथ अलग छपी थी यह तस्वीरें छपने के बाद से महनाज अपने आपको कटरा मीर बुलाकी की 'मिसेज़ गाधी' समझने लगी थी और वह चाहती थी कि महल्ले के लोग उसे यही कहकर छेडा करें

महनाज की रोशनी मे जोखन मियाँ दुकानदार भी नहाय खडे थे। दुकान पर बठने का उन्ह मौका ही नही मिलता था। वह नसबन्दी के लिए दौरे किया करते महनाज के साथ कभी लखनऊ, कभी रायबरेली, कभी बनारस

महनाज़ के असर के साथ-साथ उनका असर भी बढ रहा था। और महनाज़ तो अफसरो के तबादले के लिए सीधे मुख्यमन्त्री को फोन घुमा दिया करती थी। शहर मे उसका तूती बोल रहा था। लोग उससे डरते थे। हुक्काम उससे राय लेने आते थे। सुबह से उसका दरबार शुरू होता तो गयी रात चलता रहता। कइयो की तक्दीर बिगाडी जाती। कन्यो की नयी तक्दीर लिखी जाती

उस लगभग अनपढ महनाज़ का यह रुतबा न होता। पर हुआ यह कि अपनी एक तकरीर म सजय गाँधी ने उसका जिक्र कर दिया था। मिसाल देते-देते कह दिया था कि उत्तर प्रदेश की मुख्यमन्त्री कटरा मीर बुलाकी की महनाज़ जी भी हो सकती हैं सजय गाधी का यह मतलब हरगिज़ नही था पर यह 'खबर समाचारवाले ले उडे। आकाशवाणी ने इसे उछाला। लखनऊ टी वी पर समाचार के बीच महनाज की तस्वीर का इसशन आया और लोग समझ बैठे कि सजय गाँधी कह रहे हैं तो इसका मतलब यह है कि उत्तर प्रदेश की मुख्यमन्त्री तो वह होने ही वाली है। तो सरकारी एम० एल० ए० और एम० पी० लोग उसके गिर्द चक्कर काटने लगे और मुख्यमन्त्री की नीद हराम हो गयी। यह बात उसे बाबू गौरीशकर पाण्डेय एम० पी० ने बतायी कि उत्तर प्रदेश मे इस वक्त सबसे ज्यादा ताकतवर वही है। वह नही मानी, तो बाबू साहब ने कहा कि हाथ कगन को आरसी क्या है। घुमाव एक फोन मुख्यमन्त्री का। उन दिनो बाबू साहब डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट से बिगडे हुए थे इसलिए उन्होने फोन यह करवाया कि डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट नालायक है। यूथ काग्रेस के प्रोग्राम मे सरकारी सहायता नही देता इसलिए उसका तबादला किसी छोटे जिले म कर दिया जाय। शाम तक तार से तबादले का हुक्म आ गया और वह विचारा दुधोरिया हँका दिया गया।

परन्तु उस दिन के बाद से महनाज़ बाबू साहब के काबू मे भी नही आयी। अब वह बाबू साहब से पूछे बिना मुख्यमन्त्री को फोन करने लगी और पत्र-पत्रिकाओ मे आये दिन उसके बयान और इण्टरव्यु प्रकाशित होने लगे तो दिल्ली ने भी उसके सर पर हाथ रख दिया और ग्रुप कांग्रेस के बडे-बडे लीडरो से उसकी सतराजी शुरू हो गयी बम्बई के एक प्रोड्युसर ने उसे अपनी एक फिल्म मे हीरोइन का रोल भी आफर किया पर जोखन मियाँ इसके लिए तयार न हुए क्योकि फिल्म मे इतनी आमदनी कैसे हो सकती है। पर उस दिन एलाहाबाद के निरजन सिनेमा मे बीस मिनट तक तालियाँ बजती रही जिस दिन एक सरकारी डाक्युमेंटरी मे पहली बार महनाज़ दिखायी दी। डयूक आफ विडसर की तरह जोखन मिया पीछे-पीछे थे।

देखते देखते महनाज मे एक स्यासी समझ भी आ गयी और बाबू साहब डर कि कही वह आनेवाले चुनाव मे उनकी जगह पर पार्टी का टिक्ट न पा जाय। पर बिचारे मजबूर थे। कर ही क्या सकते थे। दरबारदारी करते रहते थे।

और यू देखते देखते कटरा मीर बुलाकी मे पहली दो मज़िलोवाली कोठी बनी जिसका नाम 'जोखन भवन' रखा गया जो थोडे ही दिना मे 'आनन्द भवन' से ज्यादा मशहूर हो गया। इसमे महनाज़ के आफिस का एक बडा कमरा था। मोटे गददो वाले सोफे, भदोयी की एक फैक्ट्री का दिया हुआ दबीज़ और मुलायम रेशावाला कालीन, दीवार पर सजय गाधी और मिसेज़ गाधी की तस्वीरें एक बडा मेज जिस पर दो इच मोटे काच का टॉप, एक चादी का कलमदान जिसकी दवाता मे रोशनाई कभी डाली ही नही गयी क्याकि वह 'मॉब्लाँ' कलम मे दस्तखत किया करती थी।

उसके मेज़ से ज़रा हटकर उसकी सेक्रेट्री का मेज था। अपनी घूमने वाली कुरसी पर बठी हुई लला महनाज़ को नये फशनो के बारे म बताती रहती थी। महनाज़ ने उसी से मेक-अप करने की कला सीखी थी। बालो मे तेल डालना उसने छोड दिया था। नाखून लम्बे हो गये थे और उसपर नाखूनो के रग की नेल पालिश हर वक्त चमकती रहती थी। हफ्ते मे एक रात मड पैक लगता। बाल शम्पू से धोये जाते। बिजली के ड्रायर से सुखाये जाते। कलज़ लगाए जात। रात को पहले क्लेंज़िग मिल्क से मेक-अप उतारा जाता, फिर चेहरे पर कोल्ड क्रीम लगायी जाती, चेहरे का मसाज किया जाता और तब लेटने की नौबत आती। सुबह को सिट-अप्स, गहरी सासो के पाच मिनट और फिर शीश आसन। भवें टुईजर से उखाडी जाती। फाउनडेशन लगता। मेकअप शुरू होता।

फिर साडी लपेटी जाती। मचिंग ब्लाउज, मचिंग चप्पल, मचिंग रूमाल मैचिंग नल पेंट मचिंग बिंदिया, मचिंग बैग दूसरा दिन शुरू हो जाता। इसकी सिफारिश करनी है। उसे तरक्की दिलवानी है। उसे डिसमिस करवाना है। इस अखबार को इण्टरव्यु देना है। उस साप्ताहिक को अपना लेख भेजना है

पर मस्जिद से बरआमद होनेवाले बमा के कारखाने के बारे मे बोलना उसन मुनासिब न जाना। लैला न भी मना किया। पर वह सिफ तमाशायी बनी बैठी भी नही रह सकती थी इसलिए उसने आकाशवाणी को हुक्म दिया कि कटरा मीर बुलाकी के लोगा से इमरजेंसी की तारीफ करवायी जाय और यू शम्मू मियाँ, बिल्लो और देश के नाम आकाशवाणी से बुलवा आ गया। बाद म महनाज ने मुनासिब जाना कि पहलवान को भी बुलवा लिया जाय। तो पहलवान भी बुलवा लिये गये।

"अरे आप घबराने क्यो है ?" महनाज ने पहलवान स शायद पचासवी बार कहा, और यह कहन मे उसने शायद पचासवी बार ही 'अरे और 'घबराते के 'र' को रोटी की फोपी की तरह रेल किया कि लैला अपने र को यू ही फापी बनाया करती थी। "आई मीन कि डाच यू बरी" उसने अग्रज़ी म भी समझा दिया और लला न बडी मुश्किल से हँसी रोकी।

शम्मू मियाँ भी आ गये। महनाज के आफिस के वातावरण मे शम्मू मियाँ कुछ ज्यादा ही गरीब नजर आये। महनाज जल गयी। वह अपने इस बवकूफ बाप से झल्लायी-भन्नायी-सी रहने लगी थी। आदमी को कुछ तो दूसरो का ख्याल करना चाहिए। इन्हे किस चीज की कमी है ? पर यह बेटी की चीज को हाथ नही लगा सकत। वह एक जुडिशल मैजिस्ट्रेट से महनाज की शादी लगा रही थी। तो न वह मानी और न यह माने।

सच्ची बात यह है कि शम्मू मियाँ को महनाज की यह तरक्की अच्छी नही *लगती थी। बेईमानी का पयमा कै दिन चलिह तो उन्हाने महनाज से मिलना-*जुलना भी कम कर दिया था क्याकि उसके आफिस का चपरासी उन्हे अजीब निगाहा म दखा करता था। वह तो पाँचा वक्त की नमाज मे यह दुआ माँगा करत थे कि सिविल लाइन वाला बँगला जल्दी से बन जाय और महनाज अपन बँगले म उठ जाय। पर हुआ क्या था कि बगला आधा बन चुका था कि जमीन के किसी वारिस न दावा ठाक दिया कि जमीन सरकार की थी ही नही तो उसन महनाज बेगम के हाथ क्यय गज के हिसाब म बच कस दी। जमीन का वारिस वह है और वह प्रार्थना करता है कि महनाज बेगम को बेदखल किया जाय

वह आख्री ता मीसा' म अन्दर कर दिया गया लकिन वह यूथ काँग्रेस के

किसी और नेता का रिश्तेदार था इसलिए पगडी उलझ गयी। वह छूट गया और महनाज ने उस मजिस्ट्रेट का तबादला करवा दिया जिसने उसे खुश करने के लिए उस आदमी को 'मीसा' में अन्दर कर दिया था। महनाज उस आदमी से मिलने उसके घर भी गयी। बाबू गौरीशंकर पाण्डेय साथ गये और उस आदमी को महनाज ने यकीन दिलाया कि उसकी गिरफ्तारी में उसका हाथ नहीं था। उस आदमी ने शायद यकीन भी कर लिया। पर वह जमीन छोडने पर तैयार न हुआ इसलिए मुकदमा चलता रहा। एक अदालत से वह हारा। दूसरी अदालत से वह जीत गया और अब केस हाई कोर्ट में था और बँगले की तामीर का काम रुका हुआ था और महनाज को मजबूरन उस गन्दे महल्ले मे रहना पड रहा था। वह तो बाबू साहब के कहने से किसी किराये के बँगले मे उठ गयी होती पर सला ने उसे समझाया कि यदि वह किसी किराये के बँगले मे उठी तो उसकी पोलिटिकल इमेज' पर बुरा असर पडेगा। लोग चुनाव के दिनो में कह सकते है कि वह गरीबो से भागती है। अपने बँगले मे उठने की बात और है। वह सैला की बात मानकर रुक गयी। पर कटरा मीर बुलाकी उर्फ कटरा श्रीमती गाँधी मे उसका जी नही लग रहा था। हर तरफ बदबू, हर तरफ गन्दगी जाहिलो का पडोस विदेशी मेहमानो को वह इस महल्ले में बुला नही सकती थी। अब बाबू शिवशंकर पाण्डेय की पच्चीसवी मे सजय गाँधी आ रहे हैं। जो उसका बँगला तयार हो चुका होता तो वह उन्हे डिनर पर बुलाती, पर यहाँ क्या बुलाय, बाँसमती चावल ढोलो की तरह दिखायी देंगे प्लेटो में

"आदाब अब्बा।" उसने शम्सू मियाँ को सलाम किया।

"जीती रहो।" शम्मू मियाँ ने दुआ दी।

"क्या कोई और कोट नही है आपके पास कि यह पहनकर आप आल इण्डिया रेडियो जा रहे हैं?"

"का खराबी है ई कोट मे?" शम्सू मियाँ ने अपने कोट की तरफ देखते हुए कहा, एक बटन गायब था। उसपर उन्होने जल्दी से हाथ रख लिया, "चलो पहलवान, अब चला जाये नही तो देर हो जैयहे।"

पहलवान उठ खडे हुए। शम्सू और पहलवान दरवाजे की तरफ मुडे और ठीक उसी वक्त बिल्लो के साथ-साथ देश दाखिल हुआ।

बाबू गौरीशंकर लाल पाण्डय एम० पी० के घरवाले डिनर की रात के बाद अब देश और शम्सू मियाँ का आमना सामना हुआ। इतने पास से कि दोनो ने एक-दूसरे की आखो की घबराहट देख ली।

"सलाम उस्ताद।" देश ने कहा।

'जीते रहो।" उस्ताद ने जवाब दिया।

वफ नही पिघली।

पहलवान ने दोना की तरफ देखा। बोले, "वस अव दूनो जने ई चूतिया चक्कर खतम करत जा।"

और वह दोनो शायद इसी इन्तिज़ार म थे कि कोई कहे तो वह यह 'चूतिया चक्कर' खत्म करदें। दोना ने वह 'चूतिया चक्कर' खत्म कर दिया।

शम्सु मियाँ की आँखें भीग गयी। देश झेंपकर इधर-उधर देखने लगा।

उन दोना ने एक दूसरे को सामने पाकर पूरी तरह यह महसूस किया कि वह एक-दूसरे के बगैर अधूरे थे। दोना को अब्दुलहक याद आ गया। देश आसू पी गया पर शम्सू मियाँ उसे लिपटाकर बच्चा की तरह रोने लगे।

सबने उन्ह रोने दिया। फिर वह खुद ही चुप हुए और आसू पोछत हुए पहलवान से बोले, "हमरे खयाल म अब चलना चाहिए।"

किसी ने जवाब नही दिया। लैला अपने नाखून को रेती से घिस रही थी। महनाज़ सामने रक्खे हुए एक सकुलर को 'पढ' रही थी। पहलवान, शम्सू मियाँ और बिल्लो को लकर देश महनाज़ के आफिस से निकल गया।

कमरे मे फिर भी सन्नाटा रहा। लला नाखून घिसती रही और महनाज़ सर्कुलर को पढती' रही।

आकाशव

"आपका नाम ?" प्रेमानारायण ने पूछा।

प्रेमा का तबादला एलाहाबाद कर दिया गया था क्योंकि खुर्शीद आ का खयाल था कि आशाराम कभी न कभी उससे मिलने की कोशिश करेगा। दिल्ली से उन पर दबाव पड रहा था कि आशाराम को गिरफ्तार जरूरी है। पर आशाराम मिले तब तो वह उसे गिरफ्तार करें! देश, पहलवान और महनाज के बावजूद शम्सू मियाँ पर कडी निगाह रख थी। पर देश किसी से मिल नहीं रहा था और उनकी समझ मे नही आ था कि वह दिल्ली को क्या जवाब दें। तो उन्होने यह तै किया कि सीधे लिया घी नही निकलेगा। आकाशवाणीवाला को उनके इस प्रोग्राम की नही थी इसीलिए बिल्लो से अपनी बातचीत रिकार्ड करत समय प्रेमान की आवाज मे कोई तनाव नही था।

"बिल्लो।" बिल्ला ने कहा।

"पूरा नाम क्या है ?" प्रेमा ने पूछा।

'पता नही। हम तो जबसे होस सँभाला है इहे नाम सुन रहे औ पर बोलत चले आ रहे।"

प्रेमा जवाब की इस सादगी पर मुस्कुरा दी।

'आप करती क्या है बिल्लो देवी ?"

कटरा श्रीमती गाँधी म हमरी जनता लाण्डरी है। हमरे पति को मन्त्री बक मे करजा दिलवा दिहिन है। तो उनकी इन्दिरा मोटर वकसाप

जीरो राड पर।'

'इमरजेंसी के बारे मे आपका क्या खयाल है बिल्लो देवी ?"

"बहुत अच्छा खयाल है। जब से इन्दिराजी इमरजसी लिआयी हैं दस म बहुत तरक्की हुई है। पुलिसवाले क्पडे की धोलायी देवे लगे हैं। चीनी और सोन के भाव मे फरक हो गया है। हमरी तो भगवान से एही पराथना है कि भगवान इन्दिराजी को जिन्दा रक्खे कि ऊ इमरजसी बनाय रह।'

रिकाडिग रूम की लाल बत्ती प्रेमा के इशारे पर बुझ गयी।

प्रेमा यही सवाल पूछते पूछते बोर हो गयी थी। आज यह आठवाँ बयान था। उसने मुश्किल से आती हुई जमाही रोकी। अब बस एक देशराज मिकैनिक रह गया है। उसका इण्टरव्यु रिकाड हो जाये तो वह कटीन मे बैठकर काफी की दो प्यालिया पिए कम स कम।

दरवाजा खुला। आकाशवाणी के प्रचार विभाग का एक आदमी देश को लेकर आया और बिल्लो को लेकर चला गया। प्रेमा न उस आदमी की तरफ किसी दिलचस्पी से नही देखा। वह तो बस यह जानती थी कि उसे उस आदमी से वही सवाल करने हैं जो दूसरो से कर चुकी है और उस यह भी मालूम था कि यह आदमी भी वही जवाब देगा जो दूसरे दे चुके हैं। फिर भी आनेवाले पर उसकी एक निगाह तो पड ही गयी थी। वह यह देखकर मुस्कुरा दी कि आनेवाले ने बिल्कुल नया जोडा पहन रखा है। जूते भी नये है और उसके बदन से किसी सस्ते सेंट की महक भी आ रही है। कान मे दबा हुआ इत्र का फाया भी उसने देख लिया। फिर वह आदमी बठ गया और वह उससे बेतअल्लुक बैठी बत्ती के लाल होने की राह देखती रही।

उसने रिकाडिग रूम की तरफ देखा। साउण्ड वाले ने तयार रहन का इशारा किया। प्रेमा ने गला साफ किया। देश न बहुत सा थूक घाट क अपना गला तर किया। बत्ती लाल हो गयी।

'आपका नाम ?' प्रेमा ग्रामोफोन रिकाड की तरह बजी।

'देशराज।" देश की आवाज काफी ऊँच सुरो मे निकली। फिर वह खुद ही झेंप भी गया।

इतना जोर स बोलन की जरूरत नही है। प्रेमा न कहा।

'का बतायें साहब ' देश सर खुजलाने लगा।

हां तो देशराजजी, यह बताइए कि आप करत क्या है ?"

'साहेब हम पहिले नौकरी करने रह। फिर इमरजसी आ गयी और हम्म बक मे कजा मिल गया। अब हमरी अपनी वकसाप है।'

"तब तो आपको इमरजेंसी से बडा फायदा हुआ ?"

"हम्मे ही थोडे फायदा हुआ ? सब गरीब जनता को फायदा हुआ। एक ठो हमरे दोस्त रह् आशाराम " देश बताये हुए जवाबो से बहक गया। प्रेमा ने उसकी तरफ देखा। तो यह आशाराम का दोस्त है। यह नये कपडे पहनकर रेडियो स्टेशन आनेवाला जाहिल गँवार आशाराम का दोस्त है। उसका जी चाहा कि वह देश से उसके दोस्त 'आशाराम' की बात करे। पर वह ड्यूटी पर थी। यहा उसे इस आदमी स इमरजेंसी की तारीफ करवानी थी। अभी उसके पास आशाराम के बार मे सोचने का वक्त नही था। उसने अपनी बडी बडी उदास आखो स देश की तरफ देखा। वह उसी की तरफ देख रहा था। बे-बाक आँखो से लेकिन उन आखा मे कोई पयाम नही था।

'आशाराम को अभी छोडिए दशराज जी, मैं "

'छोडें कैयसे साहब ? दश ने उसकी बात काटी, 'ई बात ठीक है कि ए बखत उनके नाम वारट है। पुलिस उनहे खोज रही। इमरजेंसी का फायदा उनहें देखायी ना दे रहा। पर हम लोग की दोस्ती बहुत पुरानी है साहब। सच पूछिए तो राजनीति का सौक हम्म उन्हीने सिखाया।'

प्रेमा को याद आ गया।

तो यह वह देश हैं। और वह गभवती औरत जो अभी-अभी बाहर गयी है वह उसकी घरवाली बिल्लो है।

लाल बत्ती बुझ गयी। प्रेमा चौक पडी। अभी तो बात खत्म नही हुई थी। फिर बत्ती बुझ क्यो गयी ? रिकाडिग रूम से एक आदमी उसे इशारा कर रहा था।

"मैं अभी आयी देशजी।" यह कहती हुई वह देश को उस कमरे म माइक्रोफोन के साथ अकेला छोडकर बाहर चली गयी। कॉरिडार मे एक आदमी खडा था।

"मेरा नाम खुर्शीद आलम है।" उसने अपना परिचय करवाया।

'कटरा मीर बुलाकी बम केस वाले खुर्शीद आलम साहब ?" प्रेमा ने पूछा।

"जी हाँ।'

प्रेमा ने इस डर से अपनी निगाहें झुका ली कि कही खुर्शीद आलम खाँ उसकी आँखो म अपन लिए भरी हुई नफरत देख न लें।

'यह जो आदमी है आपके साथ, देश, यह आशाराम का दोस्त है। रिकाडिग की फिक्र न कीजिए। ज़रा टोह लेने की कोशिश कीजिए, आशाराम के

बारे म।"

"जी ?"

"देखिए मिस नारायण," आलम साहब न कहा, "हमे मालूम है कि आप आशाराम से शादी करनेवाली थी। हमे यह भी मालूम है कि पोलिटिकल डिफरें-सज की वजह से आपने उन्ह अपने जीवन से निकाल दिया। मैं इस फसले पर आपको मुबारकबाद देता हू। आशाराम प्रधानमन्त्री का दुश्मन है यानी वतन का दुश्मन है। उसकी गिरफतारी मे मदद करना आपका फज है "

फज।

हर जमाने मे सरकारें इस शब्द का मतलब बदलती रहती है। कभी फज यह भी हो जाता है कि प्रेमिका अपने बेगुनाह प्रेमी के खिलाफ जासूसी करे। राजनीतिक मतभेद और मुखबिरी मे कुछ तो फक होना चाहिए। जो आदमी रिकाडिंग रूम मे बैठा उसका इन्तिजार कर रहा होगा उससे वह पहली बार मिली है। पर वह रेडिया स्टेशन और पुलिस स्टेशन म फक करता होगा। उसे यह कौन बताये कि रेडियो स्टेशन भी पुलिस स्टशन हो गया है और उसका बयान लिया जा रहा है

प्रेमा जिन्दगी म पहली बार अपनी निगाहो से गिरी। उसने सोचा कि उसे मिसेज गाधी के नाम एक बेनाम खत तो लिखना ही चाहिए कि खुर्शीद आलम जैसे पुलिस आफिसज उन्हे जनता से दूर ले जा रहे हैं

एकदम स उसने महसूस किया कि खुर्शीद आलम खा, बगर आखें झपकाये उसकी तरफ देख रह है। और वह डर गयी। मिसेज गाधी को बानाम खत लिखने का खयाल भी उसके दिल से निकल गया क्योकि उसने उडती-पडती सुनी थी कि यह राजनीतिक बन्दियो से बदसुलूकी करने का मौसम है। गायत्री देवी, राजमाता ग्वालियर, मृणाल गोरे नकमलिये प्रेमा काँप गयी। वह जानती थी कि वह आशाराम से बिछडने के दद के सिवा कोई दद झेल ही नही सकती

खुर्शीद आलम खाँ अब भी उसकी तरफ देख रहे थे।

कोशिश करती हूँ।" प्रेमा ने खुर्शीद आलम से कहा और उनकी तरफ देखे बिना रिकाडिग रूम की तरफ चली गयी।

दरवाजे के शीशा लगे गोल कटाव से देश नजर आ रहा था। वह उसी तरह अकडा हुआ बठा था जैसा वह उसे छोड गयी थी। वह दरवाजा खोलकर अन्दर चली गयी। सामने दीवार पर लगी हुई घडी की सेकेंड की सूई समय के गिद चक्कर काट-काटकर समय को चाटती चली जा रही थी। लाल बल्ब

बुझा हुआ था। वह अपनी कुरसी पर बैठ गयी। सामने रिकार्डिंग रूम मे हेड फोन लगाय खुर्शीद आलम खा बैठ हुए थे। देश की उनकी तरफ पीठ थी।

प्रेमा ने महसूस किया कि उसका गला सूख गया है। उसने थूक घोटकर गला तर किया।

"हा तो देशराजजी, हम लोग कहा पहुचे थे ?"

देश की समझ म सवाल ही नही आया। बोला, "तब से इहँई बैयठे हैं चुपचाप।"

प्रेमा से मुस्कुराया भी न गया। उसने आलम साहब की तरफ देखा। उनकी आखें उसी पर थी। वह घबराकर देश की तरफ देखने लगी।

'हम लोग आपके दोस्त आशाराम की बातें कर रह थे। प्रेमा को लगा, जैसे यह सवाल करनेवाली आवाज़ किसी और की थी।

"आप प्रमाजी है न ?" देश न पूछा।

प्रेमा धक से हो गयी।

"हम तब्ब से सोचत रह कि आपको कहा देखा है।" दश ने कहा, "आसा बाबू के कमरे मे आपकी एक ठो तस्वीर देखा रहा। आसाराम बाबू बहुत हीरा आदमी हैं प्रेमाजी, हम गरीब लोग के वास्त तकरीर तो बहुत लोग भाडा किये पर लडे खाली आसा बाबू, ऊ अगर हिम्मत न दिलाइन होता तो बिल्लो का घर ना बन सकता रहा ।"

बिल्ला कौन ?"

"हमरी घरवाली।" देश झेंप गया, "ठन गयी रही कि घर बनाये बिना बिआह ना करेंगे। सब लोग ओका मजाक उडाते रह। खाली आसा बाबू ओके साथ रहे। और साहब घर बन गया।"

"कभी तुमस मुलाकात होती है उनकी ?' प्रेमा ने सवाल किया। पर वह यह चाहती थी कि देश ताड जाय और इस सवाल का जवाब न द। पर खुर्शीद आलम खाँ उसी की तरफ देख रहे थे और वह देश को इशारे से मना भी नही कर सकती थी।

'एक मरतबा मिले रहे।" दश न कहा।

'और पूछो और पूछो," खुर्शीद आलम न इशारा किया।

'कहा मिले थे ?" प्रेमा रिकाड की तरह बज गयी।

'बाबूरामजी, मतलब आसा बाबू के दादा, तो उनह घर से निकाल दिहिन हैं। ऊ तो साफ कह दिहिन कि बिटिया रानी का दुसमन हमरा दुसमन है। पर एक दिन एक ठो लौंडा आके हमस कहिस कि आसा बाबू रात के

११-१२ बजे हमस मिला चाहते हैं टडन पारिक मे, तो हम उह्यी जाके मिले। आपो की बात किहिन, असिल मे हम कहा उनसे कि और कहा ता पुलिस आपका छोडेवाली ना है। प्रेमाजी के घर जाके छिप रहिए कुछ दिन, तो ऊ बहुत उदास हो गये। बोले, नही दस, हमरा और उनका रास्ता अलग हो गया है। हम कहा, का बात करते हैं साहब, बिल्लो हमसे रोजाना लडती है त का एका मतलब ई है कि ऊ हम्मे पिआरो ना करती। पिआर दुसरी चीज है। राजनीति दुसरी चीज है "

देश बोल रहा था। प्रेमा सुन रही थी। पर वह तो कनखियो स खुर्शीद आलम की तरफ देख भी रही थी और उसने देखा कि हेड फोन उतारकर वह कमर से चले गये।

"ता इमरजेंसी से आप खुश हैं?' प्रेमा ने सवाल किया।

"बहुत खुश हैं साहब।"

"आपका बहुत-बहुत शुक्रिया।" प्रेमा ने हाथ जोड लिये। "बाहर आपको चेक मिल जायेगा।"

"चेक कैसा साहब ? हम सच बोले का दाम ना ले सकते।'

देश चला गया।

प्रेमा अकेली रह गयी। थकी हुई, निढाल, जख्मो से चूर, अपनी निगाहो से गिरी हुई। उस यह सोचते डर लग रहा था कि अब देश का क्या बनेगा ? क्या गुजरेगी उस पर ? कितना दद झेल सकता है वह ?

दुख जमाने मे बहुत से है मुहब्बत के सिवा

कुहर के खेत म
सारी पगडण्डियाँ खो गयी।
कापला रुक गया।
क्या पता दिन है या रात है।
हर हथेली की आँखें खुली हैं, मगर
सूझता ही नही।
दूसरा हाथ है—या—कोई राहजन।
—धूप का कापला खेमा-जन हो गया।
कुहर खेमो प है।
कुहर खेमो मे है।
धूप की बूद जमने लगी।
—जम गयी।
धूप की बूद गुम हो गयी।
कुहर की यह खडी फस्ल अब देखिए,
कितने दिन मे कटे।
धूप का खेमा-जन कापला कब चले।

बिल्लो अधेरे आगन मे अकेली थी। रो नही रही थी। रो चुकी थी। मामा के बहुत कहने के बाद भी वह रात गुजारने उनके घर नही गयी कि क्या पता देश कब आ जाये। और मामा के बहुत कहने के बाद भी वह इस बात

पर तैयार नही हुई थी कि मामा रात को यही रह जायें।

वह हैरान थी कि देश चला कहा गया। बिना बताये हुए वह मामा की दुकान तक नही जाता था। उसन दरवाजे की तरफ देखा। दरवाजा भिड़ा हुआ था। मामा जाते-जाते भेड गये थे। कह गये थे कि वह अन्दर से कुण्डी लगा ले। पर उससे उठा ही नही गया।

बिल्लो तीन दिन से घर मे अकेली थी। सब हमदर्दी करने आ चुके थे। शहनाज़। सकीना बी। दाम्मू मियाँ। शहनाज़ तो लगभग दिन भर रही थी। शाम को बडी मुश्किल से गयी थी और सवेरे फिर आ गयी थी। एक बार महनाज भी आयी थी। पर वह बैठी नही थी। उसे किसी मीटिंग म जाना था और वह इस डर स भी नही बैठी थी कि उसकी साडी 'क्रश' हो जायेगी। लला भी उसके साथ आयी थी और बिल्लो न लला से कहा था 'ए बहिनी, तनी अपने अब्बा से कहा ना कोइ बखत जी लगा के कि हमरे आदमी को खोज दें।" लैला ने घबराकर वादा भी कर लिया था और महनाज ने भी कहा था कि वह डॉ० एम० साहब से कहगी। पर उसके बाद से न लैला आयी न महनाज़। और आज तो उसन शहनाज़ स श्रीमती गांधी के नाम अपनी तरफ से एक खत भी लिखवाया था

स्रीमती गांधी को मालूम हाय कि इहाँ सब खरियत है और भगवान की जात से उमीद है कि उहाँ भी सब खरियत हागी। खास बात इ है कि तीन दिन भया हम दूनो परानी रेडियो टेसन गये ग्रापकी इमरजसी की तारीफ करे। हम दूनो परानिया ने खूब-खूब तारीफ की। जब तारीफ करके बाहर निकले तो टेसनवाले लगे चेक थमाये। हम कहा कि हम चक ना लेंगे। नक्द दो। हमरा मरद तो पयसा लेवे पर तयार ना होना रहा कि हम सच बोले की मजूरी ना लेंगे। ऊ ता जब हम कहा कि स्रीमती गाधी जब खुद दे रही है तो हम मना कर वाले कौन। हम लोग मागा ना न रहा। उनका असीरबाद समझ के ले ल्यो। तब ऊ राजी भया। बोला, तु जब तक रसीद पर अँगूठा लगाव हम तनी पिसाब कर आयें। बस तबका गया ऊ अभी तक ना आया है। इन्दिराजी को इहा मालूम हो कि हमर आदमी को आप खुद सिफारिस करके बक से करज दिलाया है। और हमरे मरद ने अपनी वकसाप का नाम भी आपके नाम पर इन्दिरा मोटर वरकसाप रक्खा है। इहाँ के थेनदार असफाकुल्ला खाँ की बीवी स एक दिन कपडे की धुलायी पर हमरा झगडा हो गया रहा। तब्ब स जलती हैं हमस। आप बजरिया तार उनमे कहिये कि हमरे मरद को खाज दें। थाडे लिक्खे को बहुत जानिय और खत को तार समझिये। "

शहनाज़ लिखती जाती थी और भाषा ठीक करती जाती थी। पर जब बिल्लो ने खत सुनाने को कहा तो उसने फिर बोली में अनुवाद करके सुनाया। और खत की तरफ से इतमिनान हो जाने के बाद उसने उस खत पर अँगूठा लगा दिया था। उसे यकीन था कि उस खत को पढ़ते ही मिसेज़ गांधी अश्फ़ाकुल्लाह खाँ को तार देंगी कि देशराज को फौरन तलाश किया जाये। इस खयाल से उसे थोड़ी-सी तसकीन हुई और तब उसे याद आया कि परसों से उसने कुछ खाया ही नहीं है। कैसे खाती। पर मिसेज़ गाँधी पर उसके भरोसे ने उससे कहा कि जीने के लिए खाना ज़रूरी है। देश के लिए क्यों परेशान होती हो। देश तो मिल ही जायेगा। तो वह पलंग से उठी और दरवाज़े में कुण्डी लगाती हुई बावरचीखाने में चली गयी और चाय के लिए चूल्हा जलाने लगी। फिर चूल्हे पर केतली रखकर वह वहीं चूल्हे के पास बैठ गयी और आग का तमाशा देखने लगी और फिर यही सोचने लगी कि देश एकदम से गायब कहाँ हो गया—और यह बात उसे कभी मालूम ही न हो सकी कि देश को रेडियो स्टेशन के पेशाबखाने ही से खुर्शीद आलम खाँ ने लपक लिया था।

देश जब तक चौंके-चौंके वह पुलिस की बन्द गाड़ी में बन्द किया जा चुका था।

अरे। मुदा हम किया का है साहब।" उसने फरयाद की।

किसी ने जवाब नहीं दिया। पुलिस की बन्द गाड़ी चलती रही।

खुर्शीद आलम खाँ ने इन "कामों" के लिए एक बँगला सरकारी किराये पर ले रखा था। इसमें एक कमरा रेडियो स्टेशन के रिकार्डिंग थेटरों की तरह साउंड प्रूफ था। उसी साउंड प्रूफ कमरे में देश से उनकी पहली मुलाकात हुई। देश अब भी समझ रहा था कि ज़रूर कोई गलतफहमी हुई है इसलिए उसने खाँ साहब को सलाम किया। खाँ साहब ने जवाब नहीं दिया।

"तो आशाराम से तुम्हारी दोस्ती थी?" सवाल किया गया।

"हाँ साहब।"

"और यह जानते हुए भी कि सरकार उसे तलाश कर रही है तुम टंडन पार्क में जाकर उससे चुपचाप मिल आये?"

"हाँ साहब। ई गल्ती तो हमसे हो गयी।" देश ने कहा। "हम ऊ रात उनको बहुत समझाया कि सरकार की खिलाफत करना गल्त बात है। इमरजंसी से गरीब आदमी का बहुत भला भया है। पर ऊ मनबे ना किये। पर हिम्मत ना हारे हैं। "

"उसके बाद कब मिले तुम उससे?" सवाल ने उसकी बात काटी। और

इस बार खाँ साहब की आवाज़ में कोड़े की सड़ाका था।

देश ने उनकी आँखों में देखा। "देखिए साहब।" उसने कहा, "हम सरीफ आदमी हैं। स्रीमती गांधी खुदे अपने कल्म से लिख के हम्मे बंक से करज दिला इन हैं कि हम अपनी वकसाप खोल सकें। हम आपकी सेकाएत बोल देंगे उनसे।"

"जगदम्बा प्रसाद! इस बहनचोद की शिकायत इसकी गांड में घुसेड़ दो।" खुर्शीद आलम खाँ ने कहा।

बाबू जगदम्बा प्रसाद तो हुकम के गुलाम थे। वह देश की शिकायत देश की गांड में घुसाने के काम में लग गये। दो और सिपाहियों की मदद से जगदम्बा प्रसाद ने उसे नंगा किया। फिर वह लोग उस पर पिल पड़े। ठोकरें। लातें। डण्डे। थोड़ी देर तक तो देश को दर्द का एहसास रहा। फिर दर्द का एहसास मिट गया। हर चीज़ धुंधली धुंधली दिखायी देने लगी और फिर सूरज बिल्कुल डूब गया और दिन के सवा तीन बजे रात हो गयी।

उसे होश आया तो जहाँ-जहाँ तक उसका बदन था वहाँ वहाँ अब सिर्फ दर्द रह गया था। और उसकी ज़बान सूखकर तालू से जा मिली थी। उसने बड़ी मेहनत से ज़बान को तालू से जुदा किया। फिर ज़बान को होंठों पर फेरा। कोई फायदा नहीं हुआ। फिर उसने थूक घोटने की कोशिश की। पर मुंह में थूक था ही नहीं। तब उसने आँखें खोलीं। खुर्शीद आलम खाँ सामने बैठे सिग्रेट पी रहे थे और जगदम्बा प्रसाद पास खड़े हुए थे।

"देखो।" खुर्शीद आलम ने कहा। "शायद होश आ गया बहनचोद को।"

जगदम्बा प्रसाद ने बहनचोद की तरफ देखा।

"जी सरकार। होश आ गया बहनचोद को।"

"ज़रा पानी पिलाव साले को।" खाँ साहब ने कहा।

जगदम्बा प्रसाद ने देश के मुंह पर पानी के छींटे दिये और उसके मुंह में भी कुछ पानी टपकाया। देश ने आँखें खोलकर जगदम्बा प्रसाद की तरफ देखा और न जाने क्यों हज़ार मुंहे दर्द के चंगुल में होने के बावजूद वह मुसकुरा दिया और बोला "बिल्लो से कह दियो दीवानजी कि हम बहुत अराम से हैं। परेसान होये की जरूरत नहीं है।"

"अरे सरकार जो पूछ रहे बता के छुट्टी करो।" जगदम्बा प्रसाद ने कहा।

"क्या कह रहा है?" खाँ साहब ने पूछा।

"बताने को तैयार है साहब।" जगदम्बा प्रसाद ने देश को आँख मारते हुए खाँ साहब से कहा।

"दीवार से लगा के बिठला दो।" हुक्म दिया गया।

हुक्म पूरा कर दिया गया।

"टण्डन पार्क वाली मुलाकात के बाद तू कब मिला आशाराम से ?"

'ओके बाद उनस हमरी भेंट नहीं हुई साहब।"

"आशाराम कहा छिपा हुआ है ?" पल भर तक उसे घूरते रहने के बाद खाँ साहब ने सवाल किया।

'हम्म नही मालूम साहब।"

"जगदम्बा प्रसाद !"

जगदम्बा प्रसाद न अपना नाम खत्म होते होते देश के हाथ पर अपना एक भारी बूटवाला पाव रख दिया। देश तडप गया। पर उसम इतनी ताक्त नही थी कि हाथ को उस भारी पाववाले जूते के नीचे से निकाल सके।

खुर्शीद आलम खा उठकर उसके पास आ गये।

"आशाराम कहाँ है ?"

तक्लीफ स उसकी जान निक्ली जा रही थी। उसने सवाल ही नही सुना। वह तो बस बेबसी स जगदम्बा प्रसाद की तरफ देखता रहा और खा साहब ने उसके सीने पर सिग्रेट बुझा दी। वह जो तडपकर उछला तो उसका हाथ जगदम्बा प्रसाद के पाव के नीचे से निकल गया। और उनको झटका लगा और वह अपने बदन का बोझ न सँभाल पाय और गिर गये और बाकी दोनो सिपाही हँसने लगे और उस साउड प्रूफ कमरे मे उन कहकहो की आवाज सुनके खुर्शीद आलम खा के रोगटे खडे हो गये और फिर सिपाहियो को एकदम से खयाल आ गया कि वह अपने आफिसर के सामने हँसने की बदतमीजी कर रहे है तो वह एकदम मे चुप हो गये और उस साउड प्रूफ कमरे मे एकदम से बडा हैबतनाक सन्नाटा हो गया। और उस सन्नाटे मे देश के सिसकने की आवाज और भयानक लगने लगी।

"देखो देशराज," खा साहब ने कहा, "बता दोगे तो और तकलीफ नही होगी। नही बताओगे तो बदन की एक-एक हड्डी का सुर्मा बना दूगा।" उनकी आवाज मे नर्मी थी। देश सोच भी नही सकता था कि इस नर्मी के पीछे कोई ठोकर भी है। इसलिए जब एक नोकदार जूत की टो उसके पेट मे घुस-सी गयी तो वह चीख पडा और खाँ साहब ने पूछा "आशाराम कहा है ?"

देश न बडी हिकारत से खानसाहब की तरफ देखा और बोला 'नही बताऊँगा। उखाड लो जो उखाडा जाये।"

फिर जो कुछ हुआ उसे देश के लिए याद रखना मुश्किल हो गया।

जगदम्बा प्रसाद ने उसे घसीटकर दूसरी दीवार पर दे मारा। और फिर

तीनो सिपाही बड़ी मेहनत से 'पूछगछ' करने लगे। उसे उलटा लटका दिया गया। उसके पाखाने की जगह में पिसी हुई लाल मिर्च भर दी गयी। उस इलेक्ट्रिक के दाव दिये गये पर उसे भी जिद आ गयी थी कि वह अपने दोस्त का पता नही बतायेगा। वह न जाने कितनी बार बेहोश हुआ और उसे न जाने कितनी बार होश आया। उसने गिनना भी छोड दिया था। वह सिर्फ यह खेल खेल रहा था कि यह शर्त लगाता अपने आपसे कि ठोकर कहाँ पड़ेगी। या डण्डा कहाँ पड़ेगा। या सिग्रेट कहाँ बुझायी जायगी। और अगर उसका अन्दाजा सही निकलता तो उसे एक अजीब सी खुशी होती अब उसे यह सोचकर शर्म भी नही आती थी कि वह इतने लोगो के सामने नंगा है क्योंकि बदन तो था ही नही। बस एक अथाह नाकाबिले-बरदाश्त दर्द था और दहकती हुई आग-सी एक प्यास थी सामने किसी ने पानी का एक गिलास रख दिया। उसने कनखियो से तीनो सिपाहियो की तरफ देखा। वह घूमता रहे थे। खाँ साहब भी वही और देख रहे थे। उसने तै किया कि उछलकर गिलास पर जा पडे और एक साँस में सारा पानी पी जाय और ठण्डे गिलास को अपने गालो से लगा ले। पर जब उसने गिलास की तरफ उछलना चाहा तो पता चला कि वह उछल नही सकता। घुटनो के नीचे शायद हड्डियाँ टूट गयी थी। वह काई और आदमी बन गया और यह सोचने लगा कि वह कौन-सी चोटें होगी जिन्होंने हड्डियाँ तोडी होगी। उसने जैसे पलटकर 'पूछगछ' के सारे सीक्वेंस की तरफ देखा। स्लो मोशन फिल्म की तरह हर चोट आहिस्ता आहिस्ता उसके बदन की तरफ आयी और उसने देखा। फिर भी वह यह तै न कर सका कि किस चोट ने दीवार बनकर उस गिलास की तरफ जाने से रोक रक्खा है। पर प्यास फिर भी थी और पानी फिर भी सामने था। पल भर को उसका जी चाहा कि आशाराम का पता बताकर पानी का वह गिलास खरीद ले। हट साला गाडू उसने अपने आपको गाली दी। और कमजोरी का वह क्षण टल गया। एक गिलास पानी के लिए वह अपने दोस्त की जिन्दगी नही बेच सकता था। परन्तु प्यास? प्यास तो वैसी ही थी। लगता था कि दुनिया के तमाम रेगिस्तान सिमटकर उसके होठो पर आ गये हैं। तो अपनी प्यास की तरफ से ध्यान बँटाने के लिए वह अपनी छोटी छोटी यादो की रेजकारी गिनने लगा। आदमी के पास हजारो हजार यादें होती हैं। जब वह बिल्लो के साथ पहली बार सिनेमा देखने गया था। जब उसने शहनाज को पहली बार अम्मा कहा था। जब उसने पहली बार किसी कार के एंजिन को हाथ लगाया था जब उसने वह खटारा फाड खरीदी थी। जब उसने उसे अपने हाथो से ठीक किया था जब रागो ने उसे सुहाग

रात के एक खास पल म बिल्लो के साथ अकेला छोडकर कमरा बन्द कर दिया था। जब उसने फुटपाथ पर बिल्लो के साथ तस्वीर खिचवायी थी। जब उसने पहली बार यूनियन के जल्स म आत्माराम को हटाकर पहली तकरीर शुरू की थी

हजारा दीय जल गये और उसे अपने बदन का हर दद और साफ दिखायी देने लगा तो उसने घबराकर यादो को निकालकर दिल के दरवाजे की कुण्डी लगा दी और पानी के उस गिलास और अपनी प्यास के साथ अकेला रह गया।

गिलास उसी तरह सामने रक्खा हुआ था और तीना सिपाही उसी तरह जैसे उसे भूले हुए से थे और खुर्शीद आलम खा किसी और तरफ देख रहे थे।

तो वह बच्चो की तरह बकयाँ चलता हुआ धीरे धीर गिलास की तरफ रेंगने लगा। लगना था जैसे पानी का गिलास सकडा मील दूर है और जैसे यह दूरी अपनी खुरदुरी उँगलिया से उसके दुखते टपकत बदन पर तज दद का कोई लेप लगा रही है। पर वह हिम्मत न हारा क्याकि उसकी प्यास उसे घसीटती हुई गिलास की तरफ ले जा रही थी। दद को रोकन के लिए उसन दात होठा मे धँसा रक्खे थे दाँत बँम कम रह गये थे। पर जितने थे वह जसे उसकी प्यास स मुह छिपाने के लिए उसके हाठा मे छिपन की कोशिश करने लगे और उसका मुह फिर उसके गम नमकीन लहू से भर गया और उसे अपने बचपन का वह दिन याद आ गया जब उसकी उँगली मे सूई चुभ गयी थी, खून निकल आया था और उसने उँगली को चूम चूसकर खून का वहना बन्द किया था।

अब गिलास पास आ गया था। उसने अपना एक हाथ मुश्किल से उठाया और गिलास की तरफ बढाया गिलास पीछे सरक गया। उसने आखें उठायी। जगदम्बा प्रसाद गिलास को पकडे हुए मुसकुरा रहा था पर एक पल मे जगदम्बा प्रसाद, बाकी दोना सिपाही, खुर्शीद आलम खा, वह कमरा, बला का दद हर चीज गायब हो गयी। बस वह गिलास रह गया और उसकी प्यास रह गयी और वह रह गया। और वह फिर गिलास की तरफ बढा गिलास भी चलन लगा। पर गिलास गोलाई म चल रहा था। तो वह भी गोलाई म चलने लगा। चार जोडे टागो के, आठ जाडे जूतो के और एक गिलास पानी का। बक ग्राउड बदलता रहता। कभी भारी जूतोवाली टाँगें बक ग्राउड मे आती तो कभी काले नोकदार जूतावाली टाँगें। तो कभी वह टाग जिसकी पिण्डली की खाकी पटटी पर रोशनाई का एक दाग है। तो कभी उन जूता वाली टाँगें सामने आती जिनकी ठोकर ने उसके सामने के तीन दाँत ताडे थे और फिर वही भारी जूतोवाली टागें

बाबू जगदम्बा प्रसाद हेड कास्टबिल इस खेल से बोर हो गये तो उनकी

नजर परोवाले उस झाड़ पर पडी जो कमरे के एक कोने मे न जाने कब से रखा हुआ था। गिलास दूसरे कासटेबिल को थमाकर बाबू जगदम्बा प्रसाद उठकर परा के झाड़ वाले कोन म गए। खुर्शीद आलम खा भी हैरान कि यह उधर क्या गया। जगदम्बा प्रसाद ने पल-भर परा को देखा और फिर उन्होंने एक पर का चुनाव किया और उसे झाड़ से निकालकर वापस आये। खुर्शीद आलम खा अब भी हैरान थे। बाबू जगदम्बा प्रसाद ने वह पर देश के चूतड मे खोस दी जहा अब भी तीन दिन पहले भरी जानेवाली मिच की जलन मौजूद थी पर का रग गहरा नीला था तीना सिपाही ज़ोर ज़ोर से हँसने लगे और देश इस हँसी और चूतड मे उगे हुए मोर के पर और बदन के दद मे बपरवा पानी के गिलास के लिए उसके साथ-साथ दद और ज़िल्लत के उस कमरे मे बकैया चलता रहा[1]

गिलास रुक गया। देश का हाथ गिलास तक पहुच गया। पर किसी हाथ ने उस गिलास को बडी मजबूती से पकड रक्खा था। देश ने बडा जोर लगाया पर गिलास आजाद नही हुआ। कुछ पानी जरूर छलका। एक बूद उसके हाथ पर गिरी और उसका हाथ जैसे अपनी प्यास से जल गया।

"आशाराम कहा है?" न जाने कहा से न जाने किसकी आवाज आयी।

आशाराम? आशाराम कौन? देश ने अपने आपसे सवाल किया और चट से कोई चीज उसके दिमाग मे टूट गयी और फिर जसे प्यास भी खत्म हो गयी। उसने खुर्शीद आलम खा, जगदम्बा प्रसाद और दूसरे तीनो बेनाम कास-टेबिलो की तरफ देखा और चिल्लाया "बोलो श्रीमती गाधी की जय, बोलो श्रीमती गाधी की जय " उसे लगा कि उसकी आवाज से कायनात भर गयी है पर यह सिफ उसका खयाल था। उसके मुह से कोई आवाज ही नही निकल रही थी। उसके होठ जरूर हिल रहे थे। खुर्शीद आलम खा ने उसके होठो मे अपना कान लगा दिया और यह सुन सके कि देश क्या कह रहा है। मगर उन्हे अपने सुने पर यकीन न आया। उन्होने घबराकर अपने सिपाहियो और फिर देश की तरफ देखा। पर देश वहा था ही नही। देश ता उनकी तरफ देखकर मुसकुराया और फिर बकैया चलने लगा। अब उसके बदन मे कही दद नही था और वह लगातार वही बात कहे जा रहा था

"श्रीमती गाँधी की जय। श्रीमती गाधी की जय "

---

(१) यह टाचर मेरी ईजाद नहीं हैं। मझे यह काम नहीं आता। यह टार्चर मैंने दूसरी किताबो से निकाले हैं और इस यकीन के साथ निकाल हैं कि उन किताबों के लेखक बुरा नहा मानेंगे।

मेरे पते से गैर को क्यो तेरा घर मिले

देश न आशाराम का पता नही बताया। हालांकि वह देश का पता बताकर अपनी जान बचा सकता था। पर सादा आदमी था। और सादा आदमी दोस्तो से गददारी नही करत। लेकिन हकीकत यह है कि जो देश आशाराम का पता बता देता तब भी आशाराम खुर्शीद आलम खा के हाथ नही आता क्योकि वह उस पते पर था ही नही। वह कलकत्ते की एक जेल म था। मुहम्मद यूसुफ, कैदी नम्बर ३११ के नाम से।

आशाराम ईमानदार आदमी था। वह इमरजेसी के खिलाफ भी था पर उसने इमरजेंसी के खिलाफ कोई काम नही किया था क्योकि वह जानता था कि वह टाचर बरदाश्त नही कर सकता। उसने तो सी० पी० एम० भी छोड दी थी पर अपने गुरूर की वजह से बाबूराम जी को यह बता न सका था। कोई यह कहना नही चाहता कि वह कायर है। इसलिए जब उसके खिलाफ वारट कटा तो एक तरफ वह बहुत डरा पर दूसरी तरफ खुश भी हुआ कि सरकार न उसका कोई महत्व तो समझा। पर उसे यह पता नही था कि उसने किया क्या है। किस सिलसिले में पुलिस उसे तलाश कर रही है ? और ऐसा क्या हो गया है कि उसकी गिरफतारी के लिए दिल्ली से खुर्शीद आलम खाँ को बुलाना पडा ? फिर भी वटू का कहा मानकर वह अण्डर-ग्राउण्ड चला गया। पर रहा इलाहाबाद ही मे। लेकिन जब मस्जिद से बम का कारखाना बर आमद हो गया और उस सिलसिले म उसका नाम लिया जान लगा तो उसे पसीना आ गया और उसी रात टण्डन पाक मे देश से मिल कर वह कलकत्ते चला गया। उसने देश का अपना कलकत्ते का

पता भी दिया। उसे देश पर भरोसा था। फिर कलकत्ता जाते हुए उसे खयाल आया कि पुलिस उसका पीछा नही छोडेगी तो वह घबरा गया। रेल के डिब्बे मे उसी बम-काण्ड की बात हो रही थी। एक नौजवान आदमी उस बात पर हिकारत से हँस दिया और अगले स्टेशन पर उतार लिया गया तो वह डर से काँप गया। इमरजेंसी से पहले और इमरजेंसी के बाद की जेल म बडा फक हो गया था। वह राजनीतिक आदर्शों के नाम जेल जाने के लिए अब तयार नही था। तो कलकत्ते मे रेल स उतरने के बाद वह उस पत्ते पर गया ही नहीं जो देश को दे आया था। कई दिन परेशान रहा। सोता तो चौककर उठ जाता। लगता कि जैसे पुलिस आ गयी है। सोता रहता तो सपना देखता रहता कि वह पकडा जा रहा है और पुलिस पूछ गछ कर रही है। टाचर कर रही है और वह पहली ही चोट पर चीखकर जाग उठता और देखता कि अपने सडे हुए होटल के कमरे के अँधेरे मे वह अकेला है और मच्छर मच्छरदानी मे घुस आये हैं और फिर वह सवेरे तक जागता रहता। यह सपने इस हद तक उसके दिमाग पर हावी हो गय कि वह सोने से डरने लगा और हर आदमी उसे पुलिस का मुखबिर दिखायी देने लगा। वह अपनी परछायी से चौंकने लगा। अपने दिन की आवाज को पुलिस की दस्तक समझने लगा और उसे यकीन हो गया कि इस बेपनाह डर के साथ जीना मुश्किल है। तब उसे एक तरकीब सूझी। उसने सोचा कि सबमे ज्यादा सुरक्षित जगह जेल ही हो सकती है। पुलिस आशाराम को हर जगह खोजेगी परन्तु उसका ध्यान जेल की तरफ नही जायेगा। तो उसने बिला टिकट सफर किया। पकडा गया। सजा हो गयी और वह बहुत दिनो के बाद चैन की गहरी नीद सोया और बहुत दिनो के बाद उसे एक ऐसी रात मिली जिसके माथे पर उन डरावने सपना का गुदना नही गुदा हुआ था।

काफी दिना के बाद आशाराम सुबह को जागा तो उदन मे न साने की थकन नही थी। सेल के दरवाजे के बाहर सुबह हो चुकी थी। हाते की दीवार के पार पेड थे और उन पत्तो पर चिडियाँ चहचहा रही थी और धूप उनकी फुनगी पर बठी नीचे छिपे हुए अँधेरे को झुक झुककर देख रही थी—बहुत दिनो के बाद वह मुसकुराया और उसे देश याद आया और वह सोचने लगा कि देश क्या कर रहा होगा

देश उससे बहुत दूर इलाहाबाद के एक बँगले मे था। उसे कपडे पहना दिये गये थ। उसके जख्मो की मरहम पटटी करवा दी गयी थी। उसने हाथो की उँगलिया पर पट्टियाँ थी। उसके दाहिने पाव पर घुटने के नीचे तक प्लास्टर था। बायें पाव की एडी पर पट्टी थी। आखा मे कोई पहचान नही थी

और वह एक कोने मे बैठा मन्त्र जाप कर रहा था

"श्रीमती गाधी की जय। श्रीमती गाधी की जय "

खुर्शीद आलम खाँ और बाबू जगदम्बा प्रसाद उसके सामने लाचार से खडे थे।

"इसे तो अब यहाँ रखने से कोई फायदा नही।" खुर्शीद आलम खा ने कहा। 'दो चार दिन मे इसका प्लास्टर कट जाय तो रात को ले जाकर कटरे मे छोड आव "

जगदम्बा प्रसाद ने कोई जवाब नही दिया। उन्होने बस एडियाँ बजा दी।

"उस बहनचोद आशाराम के लिए कोई और तरकीब करनी पडेगी।" खुर्शीद आलम ने कहा। "साला जाज फनान्डिस हो गया है "

जो उन्हे मालूम होता कि आशाराम आराम से कलकत्ते की एक जेल मे बैठा रोटियाँ तोड रहा है तो उनका ब्लडप्रेशर अवश्य बढ गया होता।

सच्ची बात भी यही है कि जेल म आशाराम की बडे मजे मे गुजर रही थी कि एक दिन पुलिस आयी और उसी के सेल के एक कैदी को ठोकरें मारती हुई ले गयी। उसे बाद मे पता चला कि वह कैदी एक नकसलिया था और एक और नाम से जेल मे बन्द था। बाकी कैदियो ने उस नकसलिये की उस गिरफ्तारी को कोई महत्व नही दिया पर आशाराम ने उस रात फिर वही सपन देखे और पसीने मे तर ब तर जागा। और उसे फिर उस अनदेखे खौफ ने जकड लिया जिसने जिन्दगी का रूप बिगाड दिया। वह प्रेमा से एक डाइन बन गयी जो दाँत निपोडे, उसके सामन नगी खडी कहकहे लगा रही थी—यह हर पल का डर यह हर लमहे की बेयकीनी शायद पुलिस के टाचर मे ज्यादा दुखदायी थी—उसने यह सोचा कि जो वह अपने आपको पुलिस के हवाले कर देगा तो पुलिस उस पर दया खायगी ता एक दिन वह डरा-डरा जेलर के पास गया और यह उगल दिया कि कटरा मीर बुलाकी बम काण्ड का आशाराम वही है। उत्तर प्रदेश की पुलिस उसे तलाश कर रही है और वह किसी मजिस्ट्रेट के सामने अपना बयान देना चाहता है

यह उस दिन की बात है जिस दिन सकीना की मदद से बिल्लो की बेटी जन्मी और उसी रात को इतवारी बाबा न देखा कि कुछ लोग चोरो की तरह आये और एक गठरी-सी फेंककर चले गये। इतवारी बाबा डर के मारे आख बन्द किये पडे रहे। उन लोगो के जाने के बाद उन्होंने उस गठरी को देखने का फैसला किया। वह गठरी नही थी। देश था। वह बेहोश था। उसके सारे बदन पर मार के निशान थे। चेहरे पर घाव था। उँगलियो पर पट्टियाँ बँधी

हुई थी। पट्टियाँ साफ थीं जैसे अभी बाँधी गयी हों और एक पाँव की एड़ी पर भी पट्टी थी—और वह सो रहा था।

इतवारी बाबा चीखने लगे "ए पहलवान! अरे जल्दी से आव। देख के कोयी इहाँ फँस गया है... सम्मू मियाँ! ए जोखन... रामअँजोर, नरायन..." बाबा को सारी बस्ती के लोगों के नाम याद थे। वह आवाज़ें देते रहे और दद्द पड़ा सोता रहा और रात हैरान खड़ी यह तमाशा देखती रही।

धीरे-धीरे किवाड़ खुलने लगे। धीरे-धीरे लोग निकलने लगे। धीरे-धीरे दद्द के चारों तरफ भीड़ लग गयी। उस भीड़ में मास्टर बदर भी थे। और शम्मू मियाँ भी। पर बदर शम्मू मियाँ से आँखें चुरा रहा था क्योंकि पानीपत से वापसी के बाद उसने महनाज़ से शादी करने से इनकार कर दिया था। कटरेवालों के लिए यह खबर मस्जिद में बमों का कारखाना निकलने से ज्यादा धमाकेदार थी। कोई मान ही नहीं रहा था कि बदर ने इनकार किया होगा। और तो किसी की पूछने की हिम्मत न हुई पर मौलवी खैराती और महनाज़ ने ज़रूर पूछा और बदर ने दोनों को कोई जवाब नहीं दिया। और बरात से वापसी के चौथे दिन जब शहर में "नसबन्दी" के बारे में एक अखिल भारतीय मुशायरा हुआ जिसमें उर्दू हिंदी के कई प्रसिद्ध कथाकार अपनी कहानियाँ भी सुनानेवाले थे, बद्रुलहसन नायाब मछली शहरी इस मुशायरे के कन्वीनर थे। सारा शहर उस मुशायरे के पोस्टरों से भरा हुआ था। महनाज़ उसकी सिदारत करनेवाली थी और लैला की लिखी हुई तकरीर उसने ज़बानी याद भी कर ली थी। खुद बदर ने उस मुशायरे के लिए एक बड़ी ज़ोरदार नज़्म लिखी थी। शीर्षक था "इसलाम में नसबन्दी"। उसने नौशाद के एक पुराने फिल्मी गाने की धुन ज़रा इधर-उधर करके अपने गले में उतार भी ली थी। पानीपत के रास्ते में वहाँ तक वह उसी धुन की रिहर्सल करता गया जहाँ पुलिस ने बरातवाली बस रोकी और दूल्हा समेत तमाम बरातियों की "नसबन्दी" कर दी—बस उसी दिन वह अपनी नज़्म "इसलाम में नसबन्दी" की धुन भूल गया और इलाहाबाद आते-आते वह अपनी नज़्म भी भूल गया और जब नज़्म ही भूल गया तो मुशायरे में क्या जाता। मौल्वी खैराती ने बहुत कहा कि बेटा यह इमरजेंसी के दिन हैं। मुशायरे में न गय तो सरकार के दुश्मनों में नाम लिख लिया जायेगा। और अबके की दाद न फरयाद अन्धा मार बैठेगा। कहीं सुनवायी भी नहीं होगी। पर बद्रुल हसन नायाब मछली शहरी उस नसबन्दीवाले अखिल भारतीय मुशायरे में नहीं गये। महनाज़ बहुत खफा हुई और वह अश्फाकुल्लाह खाँ को फोन करने जा ही रही थी कि बदर को मीसा में गिरफ्तार कर लिया जाय कि शह-

नाज़ आ गयी थी और उस दिन दोनो बहनो में जबरदस्त लडायी हुई थी। शहनाज ने कह दिया था कि अगर बदर गिरफ्तार हुआ तो वह आत्महत्या कर लेगी—महनाज़ यूथ कांग्रेस की लीडर होने के साथ शहनाज़ की बहन भी थी और उसे शहनाज़ से मुहब्बत भी थी इसलिए उसने फोन नही किया। पर यह अलटिमटम अवश्य दे दिया कि जो हफ्ते भर के अन्दर-अन्दर बदर ने शहनाज से शादी न की तो वह उसे जेल मे सडवाये बिना नही मानेगी।

तो शहनाज़ को लाज-हया का ताक पर रखकर और पिछली मुलाकात की बेदर्दी और ज़िल्लत को भुलाकर फिर बदर के पास जाना पडा और इस मुलाकात के लिए वह पहली बार बदर के घर गयी।

बात यह है कि बदर के घर मे कोई औरत नही थी इसलिए महल्ले की औरतें उसके घर नही जाया करती थी। क्यो जाती और किससे मिलने जाती। लेकिन बदर तो अब घर से निकलता ही नही था। स्कूल जाता और फिर अपने आपको घर म बन्द कर लेता। तो शहनाज़ क्या करती। वह उसके घर म चली गयी। कई लोगो ने आपस मे हैरत का इजहार भी किया परन्तु शहनाज़ इन बाता से आगे निकल चुकी थी।

बदर उस वक्त घर मे अकेला था। पहले तो उसे यकीन न आया कि शहनाज़ उसके आँगन म खडी उसकी तरफ देख रही है।

"मैं शहनाज़ हू।" शहनाज़ ने कहा। "जिसे तुम गालिब और मीर और मोमिन की इश्किया शायरी पढाया करते थे"

"लोग तुम्ह यहाँ देखकर क्या कहेंगे?'

"यह कहेगे कि शायद मैं तुमसे फँस गयी हूँ और तब मजबूरन तुम्हे मुझसे शादी करनी पडेगी।"

"पर तुम मुझसे फँस नही सकती शहनाज़।" बदर ने बडी उदासी से कहा।

"वह तो मैं भी जानती हूँ।"

"जानती हो?" बदर डर गया और उसकी आँखा मे आये हुए डर को देखकर शहनाज़ हैरान रह गयी। बदर ने पूछा "क्या जानती हो?'

'यही कि मैं तुमसे फँसी हुई नही हूँ।" शहनाज ने कहा।

बदर की आँखो का डर खत्म हो गया। सिर्फ गहरी उदासी का रग कुछ और तेज़ हो गया।

"तुम्हारे मुशायरे मे न जाने से बाजी बहुत खफा हैं।" शहनाज ने कहा। "उन्हान कहलवाया है कि अगर सात दिन के अन्दर-अन्दर तुमने मुझसे शादी न कर ली तो वह तुम्हे मीसा मे अन्दर करवा देंगी। तुम्ह तो पता है कि आजकल

बाजी की कमान चढ़ी हुई है। मैं तुम्हारे आगे हाथ जोड़ती हूं। अपनी जान बचाने के लिए मुझसे ब्याह कर लो।"

बदर सन्नाटे मे आ गया। शहनाज़ की तरफ देखता रह गया।

'सोच क्या रहे हो ?" शहनाज़ ने सवाल किया।

"अपनी जान बचाने के लिए मैं तुम्हारी जान नही ले सकता।" हिम्मत करके उसने कह ही दिया।

"मेरी जान को क्या होनेवाला है।'

बदर के अन्दर एक अजीब सी झल्लाहट ने सर उठाना शुरू किया यह सामने खड़ी हुई लड़की समझती क्या नही कि मोमिन के शोख शेरो पर शर्मानि के आगे भी ज़िन्दगी है। कि बदर की नज़्म "नसबन्दी और इसलाम' तक ज़िन्दगी फैली हुई है। मुहब्बत से पानीपत तक ज़िन्दगी का खुला मदान है—

"मैं शादी नही कर सकता।" उसने कहा।

"क्यो नही कर सक्त ?"

"सजय का हुक्म नही है। बसीलाल ने मना किया है।"

"क्या ?"

'हा। और जब वह दोनो मुझे हुक्म दे रहे थे कि मैं शादी न करूँ तो मिसेज़ गाधी ने उन्ह मना भी नही किया। उनसे कहा भी नहीं कि इसे शादी से न रोको। यह शहनाज़ से प्यार करता है "

शहनाज़ घबरा गयी। बदर की बातें आज पहली बार उसको समझ मे नही आ रही थी और बदर अपनी वीरान आखो से उसकी तरफ देख रहा था। उसने एकदम से फसला किया कि शहनाज़ को जानने का पूरा हक है। तो वह बोला "बात यह है शहनाज़ कि जिस बस पर हम लोग दिल्ली से पानीपत जा रह थे उसे हरयाना पुलिस ने रोका। सड़क के किनार पेड़ो के नीचे नसबन्दी का खेमा था। हम लोग भेड़-बकरियो की तरह हँकाकर बस से उतारे गये। दूल्ह का बाप रोने लगा। तो थानदार ने कहा कि फिक्र न करो। हम जा हैं दूल्ह की मदद करने को और यह सुनकर तमाम सिपाही हँसने लगे थे। फिर किसी ने कुछ नहीं कहा। हम लोग एक लाइन मे खड़े कर दिये गये। हमारे नाम और पते लिखे गय। हम सबको तीस-तीस रुपये दिय गये" उसने जेब म हाथ डालकर दस-दस के तीन नोट निकाले जो बहुत चिमुड़े मिमुड़े हुए थे। शहनाज़ सन्नाटे म खड़ी की खड़ी रह गयी। उसे अपने सुने पर यक़ीन नहीं आ रहा था पर दस-दस के तीन चिमुड़े मिमुड़े नोट बदर के हाथ म थे और वह हाथ उसकी तरफ़ बढ़ा हुआ था जैसे कह रहा हो कि दस-दस के यह तीन नोट ले ला—

"मैं शादी नही कर सकता शहनाज !" बदर की आवाज़ जैसे कही बहुत दूर से आयी।

उसके बढे हुए हाथ म वह नोट अब भी थे।

शहनाज़ न हाथ बढाकर वह नोट ले लिये और फिर बडे गुरूर से बोली "मेरा मेहर आज अदा हो गया। शादी मैं तुम्ही से करूँगी।'

और इसस पहले कि बदर कुछ कह शहनाज चली गयी और बदर अकेला रह गया।

मोलवी खराती मस्जिद मे मगरिब की नमाज पढ रहे थे। शम्सू मियाँ वकशाप से वापस आ चुके थे। घर मे उदास बठ बीडी पी रहे थे और शहनाज़ के बारे म सोच रह थे और दिल ही दिल मे बदर को हज़ारो गालिया दे रह थे और अच्छे-अच्छे फ्राक पहने फत्तो और उम्मन आँगन मे खेल रही थी और उस कच्चे आगन और कच्ची, लोना लगी दीवारावाले घर मे अजीब लग रही थीं। उनके साथ उनकी आया भी थी जिसने सकीना से अच्छी साडी बाध रक्खी थी। और वही लोग को मिट्टी से खेलने पर डाट रही थी और सकीना की हिम्मत नही पड रही थी कि उस आया को डाट दे क्योकि वह अँगरेज़ी बोलती थी। बच्चियो को अँग्रेजी ही मे डाँट रही थी और नाना-नानी की समझ म यही नही आ रहा था कि वह बच्चियों से क्या कह रही है और बच्चिया उसे क्या जवाब दे रही हैं

शहनाज ने घर मे झाका। फिर न जाने क्या महनाज की बच्चियो को देख कर उसे पानीपत जानेवाली बरात याद आ गयी और उसन घर म जाकर मुह लपेटकर लेटने का इरादा खत्म कर दिया। वह बिल्लो की तरफ चली गयी जहा आज सुबह को बेटी पदा हुई थी।

हमेशा की तरह देश के घर जाते हुए शहनाज को खयाल आया कि घर मे पाँव धरते ही वह "अम्मा" कहकर लपकेगा और उसे कोसना शुरू करना पडेगा। देश की याद आने से वह उदास हो गयी। और पहलवान की दुकान की तरफ देखन की हिम्मत न कर सकी। पहलवान न उसे देख लिया। पर पहलवान देश के यकायक गायब हो जाने से बुझ से गये थे। यकायक बूढे भी हो गये थे। अब बात म बात निकाल कर वह पुरानी कहानिया भी नही सुनाया करते थे

शहनाज आगे बढ गयी।

बिल्लो के घर का दरवाज़ा खुला हुआ था। वह अन्दर चली गयी। इतवारी बाबा चूल्हा फूँक रहे थे। शहनाज़ बावरचीखाने म चली गयी।

"भाउज कैसी हैं ?"

"तोरी भाउज बहुत अकेली हैं ।" इतवारी बाबा ने कहा।

सभी अकेले हैं। शहनाज़ ने सोचा। शायद अकेलापन ही इस युग की एक अकेली सच्चाई है। कोई किसी के साथ नहीं है।

एक का किस्सा सबका किस्सा।
सबका किस्सा दर्दे-जुदायी।
सब तनहा हैं।
फूल अकेले,
खुशबू तनहा।
आस अकेली,
आँसू तनहा।
लफ्ज़ अकेले,
जादू तनहा।
यह दुनिया तनहा लोगों की इक महफ़िल है।
कृष्ण अकेला,
मधुबन तनहा।
गाय अकेली,
मक्खन तनहा।
हाथ अकेले,
दामन तनहा।
नींद अकेली आँगन तनहा।
सबका किस्सा दर्दे-जुदायी

इतवारी बाबा ने चाय बनायी। एक प्लेट में रात का कीमा निकाला। उस पर तह करके रात ही की दो रोटियाँ रक्खी और तब शहनाज़ से पूछा "चाय पीहो ?"

'जी न।" शहनाज़ ने कहा।

'तनी इ खाने की पलेटिया उठाय ल्यो।' बाबा ने कहा। शहनाज़ ने प्लेट उठाली। बासी रोटी। बासी कीमा। बासी ज़िन्दगी

बिल्लो अपनी बच्ची की तरफ देखकर रो रही थी। दरवाज़ा खुलने की आहट पर उसने जल्दी से आसू पोछ डाले और तब दरवाज़े की तरफ देखा। शहनाज़ खाने की प्लेट लिये अन्दर आ गयी। चाय की प्याली लिये बाबा आ गये। बिल्लो ने खाना चारपायी पर रखकर बच्ची को गोद में ले लिया। उसने

अब तक इतनी छोटी बच्ची को गोद मे नहीं लिया था। उसे डर लगा कि कही बच्ची चट से टूट न जाये। बच्ची रोने लगी।

"चुप हरामजादी।' बिल्लो ने बच्ची को प्यार से डाँटा। "जब से पैदा भयी है पिपिहरी व दे ना हो रही एकी।"

'बडी खूबसूरत बच्ची है।" शहनाज ने कहा।

"बिल्लो भी जब एतनी बडो रही तो हू-ब हू ऐयसिही रहो।" बाबा ने कहा।

पल भर को बिल्लो की आखों म भरा हुआ उदासी का गुबार साफ हो गया। वह मुस्कुरा दी। बोनी 'हमरी नाक तो ऐसनी फुनो ी जैसी कभई ना रही होहिह।"

शहनाज न व वरानी म बिल्लो के सरहाने रक्खा हुआ ट्रांजिस्टर चालू कर दिया। समाचार आ रहे थे।—प्रधानम त्री न जूनियर चैम्बस आफ कामस के सालाना जलसे को खिताब करते हुए कहा कि इस देश के दुश्मन, जो देश के अन्दर भी हैं और बाहर भी यह बात फना रहे हैं कि देश म जमहूरियत खत्म हो चुकी है। हमारा तरक्की करता हुआ देश उनके झूठ का पर्दा फाश करता है। जमहूरियत का मतलब यह नही कि मौकापरस्तो, स्मगलरो, फिरकापरस्त ताकतो को छूट दे दी जाये। यह आकाशवाणी है। आज कलकत्ता की एक जेल मे एक कैदी न कहा कि वह मुहम्मद यूसुफ नही बल्कि कटरा मीर बुलाकी बम केस का आशाराम है। इस खबर ने सरकारी हल्को में खुशी की एक लहर दौडा दी क्योकि पुलिस इस आदमी को महीनो से तलाश कर रही थी। जब हमारे नुमाइन्दे ने इलाहाबाद म डी० आइ० जी० खुर्शीद आलम खाँ से मुलाकात की जो बम काण्ड की तफ्तीश कर रहे थे, तो उन्होने कहा कि कलकत्ता पुलिस ने उन्हे खबर दी है कि आशाराम अप्रूवर बनना चाहता है क्योकि उसे यह यकीन हो गया है कि प्रधानमन्त्री देश को तरक्की के रास्ते पर ले जा रही हैं। उन्होंने हमारे नुमाइन्दे को यह भी बताया कि आशाराम सरकार का तख्ता उलटने की एक बडी साजिश का एक हिस्सा है और यह कि आशाराम के बयान के मुताबिक ई० एम० एस० नम्बूद्रीपाद, ज्योति बासू और जाज फर्नांडिस इस साजिश के करता धरता। खुर्शीद आलम खाँ आज यू० पी० सरकार के खास जहाज से कलकत्ता के लिए रवाना होते हुए हवाई अड्डे पर हमारे नुमाइन्दे स बातचीत कर रहे थे। आकाशवाणी से उर्दू मे खबरें खत्म हुइ। अब तबसिरा निगार से सियासी हालात पर एक तबसिरा सुनिये। बोलनेवाले हैं एलाहाबाद युनिवसटी के शोबये सियासियात के सद्र डाक्टर मुर्ली मनोहर

प्रेमा ने रेडियो बन्द कर दिया।

प्रेमा बहुत उदास थी। आशाराम की खबर ने उसकी उदासी और बढा दी थी। वह जानती थी कि आशाराम के राजनीतिक परिवर्तन का कारण उसकी राजनीतिक चेतना नही उसका डर है। आशाराम ईमानदार आदमी था। वह ईमानदारी से इमरजेंसी के खिलाफ था और अब जब प्रेमा की समझ मे यह बातें धीरे धीरे आने लगी थी तो आकाशवाणी उससे यह कह रही थी कि आशाराम ने अपनी राय बदल दी है। परन्तु चूकि वह खुद आकाशवाणी से इमरजेंसी की खूबसूरतियो की खबरें काफी दिनो से सुना रही थी इसलिए आकाशवाणी की खबरो पर से उसका भरोसा उठ चुका था। इसलिए वह यह जानना चाहती थी कि आशाराम ने टाचर के डर से खुद ही अपना बयान पुलिस का दिया है या यह बयान टाचर का नतीजा है?

देश के "गायब हो जाने के बाद ही से प्रेमा बहुत परेशान रहने लगी थी। वह जानती थी कि देश गायब नही हुआ है बल्कि खुर्शीद आलम खा के कब्जे मे है। और वह यह भी जानती थी कि खुर्शीद आलम खा उसके साथ क्या सुलूक कर रहे होगे। एक दिन जी कडा करके उसने रामदयी के कान बचाकर बाबूराम से यह कहा भी और बाबूराम सन्नाटे मे आ गये। क्या गांधीजी, जवाहरलाल पटेल, मौलाना आजाद, रफी अहमद क़िदवायी की काग्रेस के राज मे यह भी हो सकता है! पर प्रेमा कह रही है तो हुआ होगा। उन्होंने इन्दिरा गाधी को उसी रात एक खत लिखा। बेटी इन्दू, यह मैं क्या सुन रहा हू दिल्ली मे उस खत का कोई जवाब नही आया लेकिन बाबूराम ने सोचा कि शायद प्रियदर्शिनी को वह खत मिला ही नही वरना भला यह कैसे मुमकिन हो सकता है कि उसने जवाब न दिया हो

"पर आप यह मानते क्यो नही कि आशाराम ने यह बयान टाचर से टूटने के बाद दिया होगा?" प्रेमा ने पूछा।

"ज़िन्दगी मे उसने यही एक तो अक्लमन्दी का काम किया और इसे भी मैं उसकी डरपोकी मान लू?" बाबूराम ने कहा, "मैं यह नही कहता कि जो कुछ तुम मुझे बताती रहती हो वह गलत है। तुर्कमान गेट पर वही कुछ हुआ होगा, मुजफ्फरनगर म वह घटनाएँ ज़रूर घटी होगी पर प्रियदर्शिनी को किसी ने बताया ही न होगा।"

'बतायेगा कौन दादाजी। पत्र-पत्रिकाओ की जबान काटी जा चुकी है। आकाशवाणी नम्बर एक सफदरजग वाणी हो गया है। सजय गांधी वाणी हो गया है और "

"बाबूजी को इ सब बताये से का फायदा धीया।" रामदयी ने कहा।

बाबूराम सन्नाटे मे आ गये। रामदयी ने जिन्दगी मे पहली बार उनके विरोध मे आवाज उठायी थी। उन्होने मुडकर बहू की तरफ देखा। वह भी अपनी आवाज सुनकर घबरा सी गयी थी। फिर उन्होने प्रेमा की तरफ देखा। वह उन्ही की तरफ देख रही थी। बोली, "दादाजी मेरे और आशाराम के बीच मेरे विचारा की दीवार खडी हो गयी थी। मैं भी यही सोचती थी कि कांग्रेस के सिवा किसी के पास हमारे दुखो का इलाज हो ही नही सकता। आशाराम कहता था कि कांग्रस ? कांग्रेस अब है कहा ? वह तो सन् सतालीस में अग्रेजो से आखिरी शमनाक समझौता करके मर गयी थी। वह पण्डितजी को हिपॉक्रेट समझता था। तो मैं उससे अलग हो गयी लेकिन अब कभी-कभी मुझे लगता है कि शायद वह ठीक कहता था। और अब यकायक उसने अपनी राय बदल दी। वह कहता है कि इमरजेंसी ठीक है। सजय गाधी अवतार हैं। हम दोनो के बीच म वह दीवार फिर भी खडी है। मैं दीवार के इस पार से उस पार चली गयी हूँ और वह दीवार के उस पार से इस पार आ गया है। दीवार अपनी जगह पर है।"

घर मे सन्नाटा हो गया। बाबूराम, रामदयी और प्रेमा नारायण, सबके पास अपनी-अपनी निजी यादें थी। तीनो अपनी यादो की दलदल मे धँस गय

'सम्भव है कि मिसेज गाधी को यह सब बातें न मालूम हा।" प्रेमा ने अपनी आवाज को खोज लिया, "पर मुझे मालूम है कि देश आकाशवाणी के कम्पाउड से क्यो और कैसे गायब हा गया। और एक हद तक देश की गिरफ-तारी के लिए मैं भी जिम्मेदार हूँ।"

घर मे फिर सन्नाटा हो गया क्योंकि बाबूराम को अपनी आवाज नही मिली थी और रामदयी अब तक उस झटके से बाहर नही निकल सकी थी कि उसने अपने ससुर के विरोध मे आवाज उठायी थी।

सन्नाटे स घबराकर प्रेमा खडी हो गयी। फिर भी किसी ने कुछ नहीं कहा।

"चलती हूँ।" प्रेमा ने अपने आपसे कहा।

बाबूराम ने एक लम्बा सांस लिया। शायद यही प्रेमा की बात का जवाब था।

प्रेमा चली गयी।

बाबूराम के घर के बाहर "पण्डित गौरीशकर पाण्डेय माग" पर बडी रोशनी थी। न्यॉन के बल्ब जल रहे थे और रात दूधिया दिखायी दे रहा थी। सडक के दोनो तरफवाले घरो मे कम ताकत के बल्ब जल रहे थे। एक बठक मे चार

आदमी बठे कैरम बोड खोल रहे थे और जोर-जोर से बातें कर रहे थे और हँस रहे थे। एक घर के अन्दर से किसी औरत की आवाज आ रही थी। वह अपने बेटे को कोस रही थी किसी बात पर। पहलवान की दुकान पर हमेशा की तरह भीड थी पर प्रेमा को जो कहकहे याद थे, जो गालियाँ उसके कानो मे आज तक गूज रही थी उनकी जगह एक अजीब सा तनाव था। लोग बातें कर रहे थे पर लग रहा था, जैसे झूठ बोल रहे हो। एक वॉक्सवैगन "गली द्वारिका प्रसाद" मे मुडने की कोशिश करने लगी। उसम जोखन मियाँ थे। जो अब पट और बुशशट पहनने लगे थे। तीन उँगलियो मे दबी हुई लाल मुहम्मद बीडी की जगह "केंट" सिग्रेट पीने लगे थे जो उनके लिए बम्बई से मगवाया जाता था।

कार दुकान के सामने जो जरा धीमी हुई मुडने के लिए तो पहलवान की दुकान पर सन्नाटा हो गया। आवाजें जैसे होठो पर जम गयी। दुकान पर बठे हुए किसी आदमी को पूरी तरह यह नही मालूम था कि यह खामोशी डर की वजह से थी। डर जो खून की जगह रगो मे दौड रहा था।

प्रेमा जरा अँधेरे म हो गयी। वह यह नही चाहती थी कि जोखन मिया उसे देख लें क्योकि वह उनसे बातें करके बोर होना नही चाहती थी। बात यह है कि जोखन मिया को अब खूबसूरत लडकियाँ पसन्द आने लगी थी। और प्रेमा खूबसूरत थी।

एक दिन आकाशवाणी के लिए महनाज की एक तकरीर रिकाड करने प्रेमा उसके घर गयी और उसी दिन जोखन मियाँ को पसन्द आ गयी इमरजसी का एक फायदा तो यही बताया जा सकता है कि जोखन मियाँ, मैला कुरता पाजामा पहनकर अपनी खिचडी दाढी को खुजलाकर अल्लाह रसूल का नेम लेते हुए तराजू की डण्डी मारनेवाले जोखन मियाँ दाढी मुडवाकर पट शट पहनकर प्रेमा नारायण जैसी लडकियो को पसन्द करने लगे थे। उन्ह जब मौका मिलता, महनाज की आखें बचाकर, प्रेमा को फोन दाग देते। प्रेमा फोन की घण्टी से डरने लगी थी

वॉक्सवैगन गली के नुक्कड पर रुक गयी।

दुकान के तमाम लोगो ने सलाम किया। पर जोखन मियाँ ने देखा ही नही। ड्राइवर उतरा और प्रेमा के बदन पर कँचवे रेंगने लगे। ड्राइवर के उतरने का मतलब यह था कि उसे जोखन के साथ कार मे बैठकर उनके घर तक जाना पडेगा। फिर घर पहुचने से पहले जोखन मियाँ के बदन का अपने बदन से टकराना झेलना पडेगा फिर नसबन्दी पर महनाज की नयी तकरीर सुननी पडगी।

फिर इसी बॉक्सवगन पर अपन घर जाना पड़ेगा और यही जोखन मिया अपनी बदबूदार सास के साथ उसके साथ होगे और उनका बदन उसके बदन से टकराता रहेगा और वह बत्तख सी आवाज मे हँसते रहगे और अपनी आखो से उस नमा मरत रहगे और फिर दिल ही दिल म वह उसके बदन को निझोडना शुरू कर देंगे

लैला बड़े मजे ले-लेकर प्रेमा को जोखन और अपने इश्क की बातें बताया करती थी—और एक दिन जब सिफ यह अनुभव करने के लिए कि किसी जोखन जसे आदमी के साथ सोना कैसा लगता है, वह तैयार हो गयी और उसके तैयार होत ही जोखन के हाथ-पाव फूल गये। "कुछ कर ही न सका कमबख्त और मैं उसे गालियाँ देती हुई अपने कपडे पहनने लगी।"

"मिया बुला रह।" ड्राइवर ने कहा।

वह चुपचाप वैगन की तरफ चल पडी। वह कर ही क्या सकती थी।

"आइए-आइए प्रमा जी।" जोखन ने दरवाजा सरकाते हुए कहा, प्रेमा ने मुसकुराने की कोशिश की। सफल नही हुई। वह वैगन मे बैठ गयी। दरवाजा सरकक्र बन्द हो गया। वैगन "गली द्वारिका प्रसाद' के अँधेरे में आगे बढ गयी। जोखन का बदन प्रेमा के बदन से टकराने लगा। जोखन अपनी बत्तखों-जसी आवाजवाली हँसी हँसने लगा और प्रेमा के नथनो मे बत्तखों की बिसाँध भर गयी। उससे तो बत्तख के अण्डे भी नही खाये जाते थे।

'आप तो नजर ही नहीं आती।" जोखन न कहा।

"इतनी छोटी तो नही हुई हूँ।' प्रेमा ने जलकर कहा, पर जोखन मिया की नाक में आवाज और शब्दो के जलने की महक नही गयी। वह उसे प्रेमा का नम्बरा समझे और खुश हो गये। जोर से हँसने लगे और बेखयाली मे उनका हाथ प्रेमा की जाँघ पर जा गिरा और प्रेमा का सारा बदन गनगना गया जैसे उसकी जाघ पर कोई छिपकली गिर गयी हो। उसे मतली-सी आने लगी। और जोखन अपना हाथ हटाना जसे भूल ही गये।

"बी० सी० साहब तुम्हारी शिकायत कर रहे थे कि तुम आसाराम की माशूका हो इस वास्ते तुमको आकासबानी पर नही होना चाहिए। तो मैं उन्हे डपट दिया और महनाज से कहा कि फौरन से पेसतर सजय जी को खत लिखो कि प्रेमा जी और आसाराम में अब कोई तअल्लुक नही है। वह तो हम लोगो की परसनल फ्रेंड हैं। "

जोखन मियाँ जाने क्या-क्या बोल रहे थे। प्रेमा के कान जसे बन्द थे। उस तक जोखन की आवाज नही आ रही थी। उसे तो बस वह गन्दा हाथ

दिखायी दे रहा था जो उसकी जाघ पर रक्खा हुआ था। उस हाथ को हटाने के लिए उसे उस हाथ को हाथ लगाना पडता और वह उसे हाथ नही लगा सकती थी तो जरा एक तरफ सरक गयी और जोखन न उसकी आँखो मे भरी हुई घिन देख ली और बोला, "तो शुक्लाजी ने फरमाया कि आप तो सीधे आदमी हैं जोखन साहब। हमे पता चला है कि आपकी प्रेमा नराएन के० बी० ए० साजिस म सामिल हैं।"

अब जोखन की आवाज मे वह घिनावना लुजलुजापन भी नही था। वह प्रेमा को धमका रहा था और प्रेमा समझ भी रही थी। पर यह के० बी० ए० क्या है ? यह नाम तो उसने पहली बार सुना था। उसने जोखन की तरफ देखा। जोखन ने अब भी अपना हाथ उसकी जाँघ से नही हटाया था। प्रेमा ने उसका हाथ अपनी जाँघ से हटा दिया।

"मुझे यह बातें पसन्द नही हैं।"

घर के अन्दर जाने के बाद पता चला कि महनाज़ किसी मीटिंग मे गयी है। और फिर उसे यह मालूम हुआ कि वह जोखन मियाँ और उनके ड्राइवर सर्जू प्रसाद के साथ महनाज़ के कमरे मे अकेली है और जोखन मिया कमरे का दरवाज़ा बन्द कर रहे हैं और ड्राइवर मुसकुरा रहा है इसके बाद की बातें प्रेमा को अच्छी तरह याद नही थी। उसे इतना याद आ रहा था कि जब ड्राइवर उसके बदन को झिझोड रहा था और वह दीवान पर बेबस पडी हुई थी तो जसे कहीं बहुत दूर किसी फोन की घण्टी सी बजी थी और फिर दद की लहरो के बीच उस तक जोखन की आवाज आ रही थी। "लखलऊ चली गयी असफाकुल्लाह खाँ को लेके ? अच्छा अच्छा असफाकुल्लाह खा बाडी गाडी के वास्त गये हैं। मुखमन्तरी ससुर को कौन काम पड गया। उँह ! गाँड मरायँ मुखमन्तरी ' फिर साँसो की आवाज़ा के सिवा कोई आवाज नही रह गयी। कभी कभार कटरा मीर बुलाकी की कोई भूली भटकी आवाज आ जाती थी और बस। फिर सासो की आवाज खत्म हो गयी और जोखन और ड्राइवर के हँसने की आवाज आयी। वे किसी आपसी मज़ाक पर एक गन्दी, भिची हुई हँसी हँस रहे थे। फिर कमरे मे वह अकेली रह गयी। उसने आँखें खोली। कमरा वैसा ही था। हर तरफ उसके कपडे बिखरे हुए थे। वह उठी। दद की एक लहर भी उठी। वह उसे झेल गयी। उसे बडी प्यास लग रही थी। और उसे ऐसा लग रहा था कि जैसे उसकी आत्मा को एक बडे ही डरावने सन्नाटे ने जकड लिया है। उस सन्नाटे की दाढ़ी खिच   की तरह। बदन गँठा हुआ है सर्जू प्रसाद   तरह और   आशाराम की तरह

वह हैरान भी हुई कि आशाराम इन दोनो के साथ कहाँ आ गया वह उठी और नगी ही बाथरूम की तरफ गयी। वाशवेसिन मे ठण्डा पानी भरकर उसने खूब-खूब मुह पर छपके मारे। फिर उसन सोचा कि नहा लेना चाहिए। तो बाँथ टव मे लेट गयी। वह देर तक नहाती रही। पर बदन मे जोक की तरह चिपकी हुई गन्दगी जैसे साफ ही नहीं हो रही थी। तो आजिज़ आकर वह बाथरूम से निकल आयी। उसने एक साफ तौलिये से रगड रगडकर अपना बदन सुखाया। फिर आईने के सामने खडी हुई और अपने बदन को नगा देखकर उसे एकदम से याद आ गया कि उस पर क्या गुजर चुकी है। वह महनाज़ के कमरे म लौट आयी। सामने दीवार पर 'उन माँ बटे" की तस्वीर टँगी हुई थी। दोनो मुसकुरा रहे थे। उसने झुककर अपना अण्डरवियर उठाया। उसका अलास्टिक टूट चुका था। ब्लाउज के सारे हुक नुचे हुए थे। साडी मे दो जगह खोच लग गयी थी। उसने महनाज़ के कपडो की अलमारी खोली। अपने लिए एक साडी पसन्द करने लगी।

"तैयार हो गयी हो तो चलो छोड आयें जानी।' सर्जू प्रसाद की आवाज़ आयी।

प्रेमा ने पलट के देखा।

सर्जू प्रसाद दरवाज़े म खडा मुसकुरा रहा था। प्रेमा ने अभी ब्लाउज़ की केवल एक बाहु डाली थी। पर उसे शम नही आयी। बोली, "मैं खुद चली जाऊँगी।'

"मजा आया कि ना?"

प्रेमा न जवाब नही दिया। वह ब्लाउज़ पहनने लगी। सर्जू प्रसाद अन्दर आ गया और महनाज़ के पलग पर यू बैठ गया जैसे इस पलग से उसकी पुरानी मुलाकात हो। उस पलग से उसकी पुरानी मुलाकात थी भी।

"जोखन मियाँ तो अब खाली जवानी खरच के रह गये हैं। उनकी तरफ से हम्मे महनाजो के साथ इ काम करना पडता है। बाकी महनाज के साथ हम इ काम जाखन मिया के हुकुम से ना करते।' सर्जू हँसा। प्रेमा साडी बाधने लगी।

तैयार होने के बाद सर्जू प्रसाद की तरफ देखे बिना वह महनाज़ के कमरे से निकल गयी।

कटरा मीर बुलाकी मे अँधेरा था। प्रेमा उस अँधेरे मे चल पडी। कुछ आवारा कुत्ते भूक रहे थे। सामने एक भीड सी इकट्ठा थी। प्रेमा को आश्चय भी हुआ कि इतनी रात गये, इमरजेंसी के दिना मे भीड लगाने की हिम्मत कसे

दिखायी दे रहा था जो उसकी जाघ पर रक्खा हुआ था। उस हाथ को हटाने के लिए उसे उस हाथ को हाथ लगाना पडता और वह उसे हाथ नही लगा सकती थी तो जरा एक तरफ सरक गयी और जोखन ने उसकी आखा मे भरी हुई घिन देख ली और बोला, "तो शुक्लाजी ने फरमाया कि आप तो सीधे आदमी हैं जोखन साहब। हमे पता चला है कि आपकी प्रेमा नराएन के० बी० ए० साजिस मे सामिल हैं।"

अब जोखन की आवाज़ मे वह धिनावना लुजलुजापन भी नही था। वह प्रेमा को धमका रहा था और प्रेमा समझ भी रही थी। पर यह के० बी० ए० क्या है? यह नाम तो उसने पहली बार सुना था। उसने जोखन की तरफ देखा। जोखन ने अब भी अपना हाथ उसकी जांघ मे नही हटाया था। प्रेमा ने उसका हाथ अपनी जाँघ से हटा दिया।

"मुझे यह बातें पसन्द नही हैं।"

घर के अन्दर जाने के बाद पता चला कि महनाज़ किसी मीटिंग मे गयी है। और फिर उसे यह मालूम हुआ कि वह जोखन मियाँ और उनके ड्राइवर सर्जू प्रसाद के साथ महनाज़ के कमरे मे अकेली है और जोखन मिया कमरे का दरवाज़ा बन्द कर रहे हैं और ड्राइवर मुसकुरा रहा है इसके बाद की बातें प्रेमा को अच्छी तरह याद नही थी। उसे इतना याद आ रहा था कि जब ड्राइवर उसके बदन को झिझोड रहा था और वह दीवान पर बेबस पडी हुई थी तो जसे कहीं बहुत दूर किसी फोन की घण्टी-सी बजी थी और फिर दद की लहरो के बीच उस तक जोखन की आवाज़ आ रही थी। "नखलऊ चली गयी असफाकुल्लाह खाँ को लेके? अच्छा अच्छा असफाकुल्लाह खा वाडी गाडी के वास्त गये हैं। मुखमन्तरी ससुर को कौन काम पड गया। उँह! गांड मरायें मुखमन्तरी फिर साँसो की आवाज़ा के सिवा कोई आवाज़ नही रह गयी। कभी-कभार कटरा मीर बुलाकी की कोई भूली भटकी आवाज़ आ जाती थी और बस। फिर साँसो की आवाज़ खत्म हो गयी और जोखन और ड्राइवर के हँसने की आवाज़ आयी। वे किसी आपसी मज़ाक पर एक गन्दी, भिंची हुई हँसी हँस रहे थे। फिर कमरे मे वह अकेली रह गयी। उसने आँखें खोली। कमरा वैसा ही था। हर तरफ़ उसके कपडे बिखरे हुए थे। वह उठी। दद की एक लहर भी उठी। वह उसे झेल गयी। उसे बडी प्यास लग रही थी। और उसे ऐसा लग रहा था कि जसे उसकी आत्मा को एक बडे ही डरावन सन्नाटे न जकड लिया है। उस सन्नाटे की दाढ़ी खिचडी है। जोखन की तरह। बदन गँठा हुआ है सर्जू प्रसाद ड्राइवर की तरह और उसकी आँखें हैं आशाराम की तरह

• वह हैरान भी हुई कि आशाराम इन दोनो के साथ कहा आ गया वह उठी और नगी ही बाथरूम की तरफ गयी। वाशवेसिन मे ठण्डा पानी भरकर उसने खूब खूब मुह पर छपके मारे। फिर उसने सोचा कि नहा लेना चाहिए। तो बाथ टब मे लेट गयी। वह देर तक नहाती रही। पर बदन मे जोंक की तरह चिपकी हुई गन्दगी जैसे साफ ही नही हो रही थी। तो आजिज आकर वह बाथरूम से निकल आयी। उसने एक साफ तौलिये से रगड रगडकर अपना बदन सुखाया। फिर आईने के सामने खडी हुई और अपने बदन को नगा देखकर उसे एकदम से याद आ गया कि उस पर क्या गुजर चुकी है। वह महनाज़ के कमरे मे लौट आयी। सामने दीवार पर 'उन मा वेटे" की तस्वीर टँगी हुई थी। दोना मुसकुरा रहे थे। उसने झुककर अपना अण्डरवियर उठाया। उसका अलास्टिक टूट चुका था। ब्लाउज के सारे हुक नुचे हुए थे। साडी मे दो जगह खोच लग गयी थी। उसने महनाज के कपडो की अलमारी खोली। अपने लिए एक साडी पसन्द करने लगी।

"तैयार हो गयी हो तो चलो छोड आयें जानी।" सजू प्रसाद की आवाज़ आयी।

प्रेमा ने पलट के देखा।

सर्जू प्रसाद दरवाज़े मे खडा मुसकुरा रहा था। प्रेमा ने अभी ब्लाउज़ की केवल एक बाह डाली थी। पर उस शम नही आयी। बोली, "मैं खुद चली जाऊँगी।'

"मजा आया कि ना?"

प्रेमा न जवाब नही दिया। वह ब्लाउज़ पहनने लगी। सजू प्रसाद अन्दर आ गया और महनाज़ के पलग पर यू बैठ गया जसे इस पलग से उसकी पुरानी मुलाकात हो। उस पलग से उसकी पुरानी मुलाकात थी भी।

"जोखन मियाँ तो अब खाली जवानी खरच के रह गये हैं। उनकी तरफ़ से हम्मे महनाजो के साथ इ काम करना पडता है। बाकी महनाज के साथ हम इ काम जोखन मिया के हुकुम से ना करते।' सर्जू हँसा। प्रेमा साडी बाधने लगी।

तैयार होने के बाद सजू प्रसाद की तरफ देखे बिना वह महनाज़ के कमरे मे निकल गयी।

कटरा मीर बुलाकी मे अँधेरा था। प्रेमा उस अँधेरे म चल पडी। कुछ आवारा कुत्ते भूक रहे थे। सामने एक भीड सी इकट्ठा थी। प्रेमा को आश्चय भी हुआ कि इतनी रात गये, इमरजेंसी के दिना मे भीड लगाने की हिम्मत कैसे

की लोगो ने। तो वह उस भीड की तरफ चल पडी।

सामन देश था।

दश मे चारो तरफ कटरा मीर बुलाकी के लोग थे।

सब सन्नाटे मे थे।

प्रेमा मास्टर वदर के पास खडी हो गयी।

मास्टर बदर ने उसकी तरफ देखा। पर मास्टर वदर ने इतनी रात गये उसके यहाँ होने पर कोई आश्चय प्रकट नही किया। वह फिर देश की तरफ दखने लगा।

देश की आँखें बन्द थी। फिर धीरे धीर दश की आँखें खुली। उसने चारो तरफ देखा। चारो तरफ जाने पहचान लोग थे। पर उसन किसी का नही पहचाना। फिर उसकी आखो मे एक डर चमका और वह जोर जोर से चिल्लाने लगा, "स्रीमती गाँधी जिन्दाबाद, स्रीमती गाँधी जिन्दाबाद ' और फिर उसके होठो पर एक अजीब-सी मुसकुराहट आयी। शराब की खाली बोतल-सी मुसकुराहट। किसी अथहीन कविता सी मुसकुराहट। सरकार के किय हुए वादो-सी मुसकुराहट। कागज के फूल सी मुसकुराहट। मुसकुराहट जिसका कोई रग, कोई चरित्र और कोई अथ नही था।

देश के चारो तरफ खडे हुए लोग उस मुसकुराहट को दखकर डर गये।

हम तो ए बाबुल तोरे अगना की चिरैया

सारा कटरा मीर बुलाकी उर्फ कटरा श्रीमती गाधी बिल्लो के घर के सामने चुपचाप खड़ा था। सर झुकाये हुए। किसी मे इतनी हिम्मत नही थी कि उस दरवाजे की कुण्डी बजाये और बिल्लो से कहे कि उसका देश आ गया है।

देश के होठो पर फिर वही अर्थहीन मुस्कुराहट ग्रायी और उसने जोर से नारा लगाया 'श्रीमती गाधी जिन्दाबाद। श्रीमती गाधी जिन्दाबाद—"

रात के सन्नाटे मे यह आवाज न जाने कहाँ-कहाँ तक गयी। सामनेवाले घर का दरवाजा खुला और लुगी लपेटते हुए एक आदमी ने झाँककर देखा और लगी हुई खामोश भीड को देख वही आ गया।

"बिल्लो को कोई इनाम-उनाम मिला है का?" उसने बदर से पूछा। परन्तु इससे पहले कि बदर कुछ कहे उसकी निगाह देश पर पड गयी जो नारे लगाना बन्द करके अपनी अर्थहीन, खाली बोतल-सी मुस्कुराहट म लग गया था। वह आदमी सन्नाट मे आ गया और लुगी लपेटता चुपचाप अपने घर में चला गया और उसन दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया यही तो इमरजेंसी का कमाल था कि हर आदमी ने अन्दर से किवाड लगा रक्खे थे और सपनों पर दफा चवालीस लगा रक्खी थी कि पाँच सपने इकट्ठा न हो। रोजगार, शान्ति, बेखौफी, इत्मीनान और आजादी—पाँच सपनों के इकट्ठा होने को सरकार जुर्म मान रही थी और कटरा मीर बुलाकी चुप, सर झुकाये खड़ा था और बल्बो की दूधिया रोशनी में बिल्लो के घर के सामने खड़ा था और उस घर का दरवाजा अन्दर से बन्द था।

आखिर पहलवान ने हिम्मत की। आगे बढ़े और उन्होंने कुण्डी बजायी।

'बिल्लो, ए बिल्लो।" पहलवान ने आवाज़ दी।

बिल्लो की आख खुल गयी। पहलवान की आवाज़ फिर आयी। वह उठी। बच्ची मेल्ही। उसने उसे थपक दिया। पहलवान की आवाज फिर आयी। उसे हैरानी हो रही थी कि मामा इतनी रात गये क्यो पुकार रहे है और उनकी आवाज़ मे यह भीगी भीगी मिठास क्या है।

बिल्लो ने दरवाज़ा खोला। सामने लगी हुई भीड को देखकर वह डर गयी। सामने, भीड के आगे, उसकी आखो के बिल्कुल पास, मामा खडे थे। उदास। फिर मामा सामने से हट गये और उसकी नजर उस चीज पर पडी जो सडक पर पडी-पडी मुस्कुरा रही थी। और उस अर्थहीन मुस्कुराहट के उस पार देश था। उसका देश। देश उसका दोस्त। देश उसका प्रेमी। देश उसका पति। देश उसकी बच्ची का बाप। और उन सभी देशो की एक ही हालत थी। एक अर्थहीन मुस्कुराहट के सिवा हर चीज़ टूटी हुई, घायल

बिल्लो जैसे जम गयी। उसे अपनी आखो पर यकीन नही आ रहा था। अन्दर बच्ची जाग गयी थी और रो रही थी पर उसके रोने की आवाज़ बिल्लो की ठिठकन की दीवार नही पार कर पा रही थी—मामा ने उसके गले मे बाह डाल दी और वह उसे लिपटकर रोने लगी और देश मुस्कुराता रहा। वही अर्थहीन मुस्कुराहट और फिर उसने नारा मारा, "श्रीमती गांधी की जय" और फिर बच्चो की तरह हँसने लगा

अन्दर बच्ची रो रही थी। चौखट पर बिल्लो रो रही थी और चौखट के बाहर देश मुस्कुरा रहा था और बच्चो की तरह चारो हाथ पावो के बल घर की तरफ चल रहा था। बकैया। बच्चा की तरह। रोती हुई बिल्लो का पार करके वह आँगन मे उतर गया। फिर मामा बिल्लो को अन्दर ले गये और शम्सू मिया ने इतवारी के अन्दर आ जाने के बाद दरवाजा अन्दर मे बन्द कर दिया और लगी हुई भीड चुपचाप छँट गयी और न्यॉन बल्बा की दूधिया रोशनी मे नहायी हुई सडक अकेली रह गयी सडक पर न कोई राहगीर था, न रहबर न कोई तूफान। सारा तूफान तो सामनेवाले घर म था जिसमे अब तक बिल्लो अपनी आँखो की गवाही मानने पर तयार नही थी और उसकी बच्ची इतवारी बाबा की गोद मे रो रही थी और पहलवान चुपचाप आँगन म बठे बीडी पी रह थे और उन्हें अपना वह दोस्त याद आ रहा था जो अपने बच्चे को उनकी गोद म देकर अपनी पत्नी के साथ बूढ़े ताज़िये पर मानी हुई अपनी मन्नत उतारने चला गया था

पहलवान ने पलटकर देश की तरफ देखा। वह दालान मे बकैयाँ चल रहा

था और धीरे-धीरे किसी मन्त्र की तरह "स्रीमती गांधी जिन्दाबाद" का जाप कर रहा था। यह जाप कभी खुशामद बन जाता। कभी गुस्सा और कभी नफरत—दालान मे टँगा हुआ लाल मुहम्मद बीडी का कलेण्डर उसी जगह था और श्रीमती गाधी का फोटो उस कलेण्डर मे उसी तरह मुस्कुरा रहा था जसे उस तक देश की आवाज़ ही न जा रही हा और बिल्लो दालान के खम्बे से टिकी खडी हुई थी और अपनी आखो से देश के बदन पर पडी हुई दद की धूल साफ कर रही थी और ज़रूमो के निशानो पर गुजरे हुए दिनो की यादो का मरहम लगा रही थी देश थककर वही दालान के खडजेदार फश पर सो गया। बच्ची इतवारी बाबा की गोद मे सो गयी। पहलवान ने बीडी को मा की गाली देकर बुझा दिया।

"तू भी सो जाव बहिनी।" इतवारी बाबा ने कहा।

"आप लोग जाइए।" बिल्लो ने कहा।

"हमरे कहे का मतलब ई रहा कि "

"आप लोग जाइए।" बिल्लो ने फिर कहा।

पहलवान ने बेबसी मे इतवारी बाबा की तरफ देखा। इतवारी बाबा ने उनकी आँखो की बात का जवाब देने की जगह बच्ची को बिल्लो की गोद मे दे दिया और पहलवान की तरफ देखे बिना आँगन मे उतरकर दरवाजे की तरफ चल पडे। पहलवान भी उठ खडे हुए। दरवाज़ा खुला। दरवाज़ा बन्द हो गया और बिल्लो देश के साथ अकेली रह गयी।

बिल्लो ने बच्ची को बडी एहतियात से चारपाई पर लिटा दिया। बच्ची शायद मुस्कुरा दी। और तब वह सोये हुए देश के पास बैठ गयी और उसे देखने लगी और जब उसकी तरफ देखते रहना सम्भव न रह गया तो उससे लिपटकर बच्चो की तरह रोने लगी लाल मुहम्मद बीडीवाले कलेण्डर मे बैठी श्रीमती गाँधी ने इस पर भी ध्यान नही दिया। वह मुस्कुराती रही

बिल्लो की रात बडी मुश्किल से गुज़री।

सुबह हुई तो सन्नाटा टूट गया और घर मे भनसना हो गया। लोग देश को देखने आने लगे—देश एक आदमी से एक तमाशा बन गया। वह लोगो से बेखबर बकयाँ चलता रहा एक खूबसूरत, फूल सी बच्ची उसे बकयाँ चलता देखकर खिलखिला पडी और तमाम लोग उसकी तरफ देखने लगे। वह बिचारी घबरा गयी पर देश बकयाँ चलता रहा और अपने मन्त्र का जाप करता रहा—फिर एक एक करके औरतें बच्चा को घसीटती चली गयी। बच्चे जाना नही चाहते क्योंकि एक बडे आदमी को बकयाँ चलता देखने मे उन्ह बडा मज़ा आ रहा था।

परन्तु मौसा को और भी काम थे। घर में जाकर चूल्हा जलाना था। पतिया के लिए खाना पकाना था। सब्जी बेचनेवाली से लड़ना था। एक-दूसरे की पीठ पीछे एक दूसरे की बुराई करनी थी। बेटियों की जवानी की तरफ से परेशान होना था। औरतों के जाने के बाद पहलवान चाय लेकर आये। बिन्नो चाय का प्याला लेकर देव के पास बैठ गयी। 'श्रीमती गांधी भेजिन हैं।" उसने देव से कहा।

श्रीमती गांधी जिन्दाबाद। देव ने जवाब दिया।

हाँ हाँ। जिन्दाबाद,' बिन्नो ने कहा, "चाय पी ल्यो नहीं तो देख ल्यो ऊपर खड़ी देख रही। उसने कैलेण्डर की तरफ इशारा किया। मिसेज गांधी मुस्कुरा रही थीं। ना पीहो तो खफा हो जैयहै।"

यह बात नीचे देव तक पहुँच गयी। उसने पीछे और दाहिने-बायें देखा। मामा और बिन्नो के सिवा कोई नहीं था। वह चाय पीने लगा। उसके हाथ काँप रहे थे। बिन्नो उस समय न पिला रही थी और वह पी रहा था

अब ई बच्चा भी पाने को पहुँचा गुड्डे।' मामा ने कहा। बिन्नो ने कोई जवाब नहीं दिया। वह देव को चाय पिलाती रही और बिस्कुट के टुकड़े खिलाती रही। 'हमरी राय तो ई है कि तू अब पुरान घर से उठ चलो। हम एक-ठो कम्पू सिटी का घर लिया हुआ है। गर्मी में भाउज ऊ नहीं तो बरसात में पानी काफी देर टपकती है तीर ताप। वहाँ अकेली कइसे सँभालिहो तू बच्चन का।'

'हम ऐही रहेंगे।' बिन्नो ने जवाब दिया।

थोड़ी देर के लिए सन्नाटा हो गया। सिर्फ कप से चाय सुड़कने की आवाज आती रही।

'अपने-अपने की बात है।' पहलवान ने कहना शुरू किया, 'जगन्नाथप्रसाद कहत रहे कि ई सड़क थोड़ी हटवानी है। तो इधर उधर के घर गिराये जइहैं। तोरा घर भी आपै स्कीम में आ रहा।"

अब बिन्नो बोली।

पचासवी बरसी पर उनकी एक ठो मूर्ती लगेवाली है कोठे के मरदाने आगन मे। सजय गाधी आ रह मूर्ती की नकाब कुसायी करे। बहुत बडा जलूस निकलिहे। ई सडक मे ऊ जलूस ना समा सकता। "

"इ बाबू स्यूसकर के बाप का घर ना है कि गिरा दिया जैयहे। हम नकद दाम देके खरीदा है इ जमीन। हम मुह ना नोच लेंगे घर गिरायेवाले का।"

"स्रीमती गाधी जिन्दाबाद।" देश ने नारा लगाया और उसकी आवाज स बच्ची चिहुक के जाग गयी और रोने लगी। चाय का प्याला जमीन पर रखकर बिल्लो ने बच्ची को उठा लिया और उसे चुप करने के लिए उसन उसके मुँह म अपना दूध दे दिया

यह दिन उसके आराम करने के थे। उसने सुना था कि चालीस दिन की सौरी होती है। मेवे की तुर्री पिलायी जाती है। गोद का हलवा खिलाया जाता है। बदन की मालिश की जाती है उसे साडी मे कुछ गीलापन लगा खून फिर बहने लगा था। पहलवान ने उसे लिटा दिया और बाहर निकलकर चिल्लाने लगे, "नरेना। अबे ओ बेटीचोद नरेना। तनी लपक के मोली खैराती को बुला ला। कहिबे की बिल्लो की तबिअत खराब हो गयी है।"

'दुकान अकेली है।" नारायण ने कहा।

"अरे दुकान गयी तोरी मा की चूत मे साले।'

नारायण दुकान छोडकर भागा। मोल्वी खैराती अपना होम्योपथी का बक्सा ले के आ गये। बिल्लो लेटी हुई थी।

मोल्वी खैराती ने अपना दवाओ का बक्स चारपाई पर रक्खा और पहलवान की रक्खी हुई कुरसी पर बठ गये। बिल्लो का चेहरा सफद हो रहा था। देश जमीन पर पडा हुआ था और पानी के गिलास की तरफ देख रहा था। बच्ची सो रही थी। पहलवान जल्दी-जल्दी बीडी के कश ले रहे थे। रामदीन की अम्मा बच्ची की ढोडी मे कोई दवा लगा रही थी। इतवारी बाबा बावरचीखाने म थे और चूल्हे से धुआँ उठ रहा था।

मोल्वी खैराती ने नब्ज देखने की जगह रामदीन की अम्मा से बिल्लो का हाल सुनकर एक पुरानी-सी किताब खोली जो उनकी बगल मे दबी हुई आयी थी। उर्दू म छपी हुई किताब थी। वह तेजी से उसके पन्ने पलटने लगे। कही रुकते पर सारे सिम्टम न मिलने के कारण आगे बढ जात। आखिर एक पन्ना उन्हे ठीक मालूम हुआ। उन्होंने अपना बक्सा खोला। छोटी-छोटी शीशियाँ, नन्हीं-नन्ही गोलियो से भरी हुई, क़तार में लगी हुई थी। हर शीशी की काक पर एक नम्बर लिखा हुआ था। मोल्वी खैराती ने तीन शीशियाँ निकालीं।

कागज़ के चौकोर टुकड़े बक्से से एक खाने से निकाले। चार टुकड़े। उन टुकड़ो को उन्होंने चारपाई पर सलीके से रखा, फिर शीशिया से उन पर तीन-तीन गोलिया गिराने लगे। फिर उन्होंने बहुत सलीके से तीन टुकड़ो की पुड़ियाँ बनायी और चौथे कागज़ की दवा बिल्लो के मुह मे डाल दी और बिल्लो का मुह नन्ही-नन्ही गोलियो की मिठास से भर गया और उसे अपना बचपन याद आ गया जब वह मोल्वी साहब के घर यह गोलिया खाने जाया करती थी और वह उसके मुह मे यू ही गोलियाँ गिराकर उसका मुह चूम लिया करते थे। तब बदर की अम्मा जिन्दा थी। अपने बचपन को याद करके उसकी आँखें भर आयी। और उसने दीवार की तरफ करवट ले ली।

"उट्ठे मत देना।" मोल्वी साहब ने कहा, "आराम की सख्त जरूरत है। मगर कोई ऐसी परेशानी की बात नही है। रामदीन की अम्मा को कुछ दिन के लिए यही रख लीजिए। मालिश भी करेगी और बच्ची की देखभाल भी कर लेगी।'

मोल्वी साहब चले गये।

"आपो दुकान पर जाइए।" बिल्लो ने मामा से कहा।

'नरैना है दुकान पर।" मामा ने कहा।

"नरैना का देखिये दुकान।"

"अच्छा बाबा हम जाइत हैं। तू सुनेवाली थोडे हो कोई की।" पहलवान ने बीडी को आँगन मे फेंकते हुए कहा। फिर उन्होंने रामदीन की अम्माँ से कहा, "उट्ठे मत देना ऐको।"

वह चले गये।

रामदीन की अम्माँ बच्ची के साथ खटोले पर लेट गयी। इतवारी बाबा बावरचीखाने मे ऊँघने लगे। बिल्लो देश की तरफ देखने लगी। देश की आखें न जाने कहाँ थी।

' मामा कहते रहे कि सरकार हम लोगन को जमुना पार भेजेवाली है।' उसने देश से कहा। देश के होठो पर वही अर्थहीन, खाली बोतल-सी मुस्कुराहट आ गयी। "सजय गाँधी के जलूस के वास्ते ई सडक चौडी होयेवाली है।" उसने कहा। देश फिर मुस्कुरा दिया। "कुछ बोलिहो ना ?"

"श्रीमती गाँधी जिन्दाबाद।" देश बोला।

देश की इस बात का बिल्लो के पास कोई जवाब नही था। वह चुप हो गयी और मकडी के जाले की तरफ देखने लगी जो छत के एक कोने मे था और जिसमे एक मक्खी की लाश फँसी हुई थी और मकडी का पता नही था। फिर

उसकी निगाह जरा नीचे उतरी। दीवार पर देश के साथ उसकी तस्वीर थी। वही फुटपाथ पर, मोटर के कट-आउट के बैक ग्राउण्ड मे खिचवायी हुई तस्वीर। उसने देश की तरफ देखा और सोचा कि यह सामने बेबस पडा हुआ वह देश कैसे हो सकता है जिसके साथ उसने उस दिन यह तस्वीर खिचवायी थी एक परछायी सी सामने से गुजरी। बिल्लो ने सामने देखा। प्रेमा नारायण खडी थी। बिल्लो उसे देखकर वडी बहादुरी से मुस्कुरायी। प्रेमा अन्दर आ गयी। जवाब मे उसने भी मुस्कुराना चाहा पर उससे मुस्कुराया न गया।

"कैसी हो ?" उसने बडी बेवकूफी का सवाल किया क्योकि वह साफ देख रही थी कि वह अच्छी नही है। पर यह बातें हमारे समाज मे यू ही पूछ ली जाती हैं क्योकि पूछने के लिए कुछ होता ही नही।

"बैठिए।" बिल्लो ने कहा।

प्रेमा मोल्वी खराती वाली कुरसी पर बैठ गयी।

कमरे मे सन्नाटा हो गया।

फिर यकायक देश खिलखिलाकर बच्चा की तरह हँसने लगा।

बिल्लो और प्रेमा ने एक साथ उसकी तरफ देखा। वह उन दोनो से बेखबर था।

बिल्लो ने उस पर से आँखें हटा ली पर प्रेमा उसी की तरफ देखती रही। शायद वह उसके टूट फूटे बदन पर जगह जगह अपना नाम पढने की कोशिश कर रही थी। न जाने क्या देश ने उसकी तरफ देखा। उसकी आखो मे न कोई दद था, न कोई शिकायत। उसकी आखो मे न कोई जज्बा था, न कोई पहचान। न वे कुछ कह रही थी, न सुन रही थी दो वीराने थे जिनमे किसी खयाल की परछाईं भी नही थी प्रेमा को किसी पत्रिका मे पढी हुई एक नज्म से कुछ लाइनें याद आ गयी

खडी दोपहर दरवाज़े पर,
मन के अन्दर रात।
गूगा आँगन,
गूगा कमरा
करे न कोई बात।
किस आवाज की टहनी पर हम दिल की बात उतारें !
किस डाली पर झूलें,
किस पोखर को पत्थर मारें !
सारे रस्ते याद हैं हमको

हम कसे खो जायें ?
जब तक जागें,
अपने आपसे बात करें,
—सो जायें।

यह वीरान आखें क्या कभी बात ही नही करेंगी ? प्रेमा ने सोचा और उसे लगा कि जसे इस गूगेपन की जिम्मेदारी उसी के सर आती है। वह आकाश-वाणी पर समाचार सुनाने की नौकरी करती है। सरकार के लिए जासूसी करना उसके काम मे शामिल नही है। और वहा, बिल्लो के घर म, बिल्लो की बोलती हुइ और देश की गूगी आखो और सोया बच्ची और उसकी तरफ देखती हुई रामदीन की अम्मा और बावरचीखाने मे ऊँघते हुए इतवारी बाबा के सामने वह अपनी आखा से गिर गयी और उस बहुत चोट भी लगी। यह चोट कल रात महनाज के कमरे मे लगनेवाली चोट स अलग थी।

"मुझे पहचानते हो ?" प्रेमा न देश से पूछा।

देश न सर हिला दिया जैसे कोई किसी सवाल का जवाब मालूम होने पर खुशी से फूल के सर हिलाय।

"कौन हूँ मैं ?'

"स्रीमती गाधी।" देश ने कहा और हँसने लगा। जैसे कोई बच्चा किमी मुश्किल सवाल का जवाब देकर हँस दे।

"एही हाल है।" बिल्लो ने कहा "हर बात का जवाब स्रीमती।"

प्रेमा ने कुछ नही कहा।

"प्रेमा जी।" बिल्लो बोली, "हम इनके गायब होय के बारे मे भी स्रीमती गाँधी को सहनाजसे एक ठो खत लिखवाया रहा। लग रहा कि ऊ साइद मिलवे ना किया उनहे। मिलता तो ऊ जवाब जरूर देती। इन पर तो उनकी खास निगाह है। बरकसाप खोले को करज दिलवाइन रहा बब को खत लिख के। हमरी तरफ से एक ठो खत आज आप लिख दीजिए उनहे। हम और कुछ नही चाह रहें। खाली ऊ सी० आइ० डी० को बोल दें कि जो देस का इ हाल बनाया ओका नाम-पता मालूम किया जाये। कम से-कम हम ओको कोस तो लें प्रेमा जी ?"

"अच्छा।" प्रेमा ने कहा, "लिख दूगी।"

"खूब समझा के लिखियेगा।"

'लिख दूगी।"

बातें खत्म हो गयी। बिल्लो देश की तरफ देखने लगी। प्रेमा दश से आँखें

चुराने लगी।

"सुन रह कि आसा बाबू स्रीमती गाँधी के साथ आ गये।" बिल्लो ने कहा।

"हाँ।" प्रेमा ने जवाब दिया।

"का ऊ सचमुच सरकार का तखता उलटे की साजिस करते रहे ? हम उनहे ऐयसा त ना समझते रहे। खिलाफ त ऊ जरूर रहे पर सरकार के पास तखना कयसा होता है और कहाँ रक्खा रहता है कि जो चाह उहे उलटे की कोसिस करे लगे ? कहाँ देहली, कहाँ कटरा मीर बुलाकी। इहाँ से बैयठे बयठे कोई देहली का तखता कैयसे उलट सकता है ? सरकार का तखता का इहा एनाहा बाद मे है ?"

"हाँ।" प्रेमा ने कहा।

चाय की दो प्यालियाँ लेकर इतवारी बाबा आ गये। एक प्याली उन्होंने प्रेमा को दी। दूसरी की आधी उन्होंने बिल्लो को दी और आधी चाय सासर मे लेकर देश को पिलाने बैठ गये। बोले "ऐ रामदीन की अम्माँ। उहा जाके चाय पी ल्या।"

रामदीन की अम्मा चली गयी।

इतवारी न प्रेमा की तरफ देखा और कहा "सन बयालिस मे हम पुलिस के हाथ की मार खा चुके है। हमे खब पहचान है पुलिस की मार की। देस को पुलिस मारिस है।'

"तू तो सठिया गय हो।" बिल्लो ने कहा, "पुलिस काहे को मारिहे ? का किहिन हैं ई ? तखता उलटिन है सरकार का ? "

'पुलिस न इनस आशाराम का पता पूछा होगा बिल्लोजी।" प्रेमा ने कहा। और यह कहन के बाद उसके सीने से जैसे एक बोझ सरक गया। वह हलकी हो गयी। उस दिन आप भी रेडियो स्टेशन आयी थी ना "

"ऐ साहब, ऊ बिल्लो की तकरीर बजी ना आज तक।" इतवारी ने कहा।

"वह हुआ यह कि जिस वक्त बजनेवाली थी उसी वक्त श्रीमती गाधी ने बोलने का फसला कर लिया। बस बिल्लो की बात रह गयी। बज जायेगी किसी दिन।" प्रेमा न कहा और उसका दम घुटने लगा। उसने देश की तरफ देखा। वह उसकी तरफ देखकर उसी तरह मुस्कुरा रहा था। घडी देखती हुई वह उठ खडी हुई 'अब चलती हूँ। समाचार सुनाना है। फिर आती हू किसी वक्त। अपना और देश का ख़याल रखना।"

चाय की प्याली को चारपाई पर रखती हुई वह चली गयी। चाय वैसी की वैसी थी

रेडियो स्टशन के लोगो को प्रेमा मे कोई खास परिवतन नही दिखायी दिया । वह उसी तरह मुस्कुराती हुई समाचार लेकर रिकार्डिंग थेटर मे चली गयी । कुरसी पर बैठकर उसने माइक्रोफोन को ठीक किया । गला साफ किया और फिर लाल बत्ती के जलने की राह देखने लगी । रिकार्डिस्ट ने शीशे के उस पार से उसकी तरफ हमेशा की तरह एक दोस्ताना मुस्कुराहट भेजी । उसने भी जवाब मे एक दोस्ताना मुस्कुराहट भेज दी ।

लाल बत्ती जल गयी ।

"यह आकाशवाणी लखनऊ इलाहाबाद है । अब आप प्रेमा नारायण से स्थानीय समाचार सुनिए ।" रिकार्डिस्ट ने हेड फोन उतार दिये । आवाज का वाल्युम ठीक था । प्रेमा एक मँजी हुई न्यूज रीडर थी । तो उसन एक सिग्रेट सुलगा ली । उसे या किसी को खयाल भी नही था कि प्रेमा मन गढ़त समाचार सुनाना शुरू कर देगी । उसकी गिनती सिक्योरिटी रिस्को मे नही होती थी । रिकार्डिस्ट प्रमा की तरफ देखके मुस्कुराया । समाचार पढती हुई प्रेमा भी मुस्कुरा दी और फिर वह समाचार सुनाने लगी ।

"कटरा मीर बुलाकी का मोटर मिकैनिक देशराज, जो पिछले दिनो आकाशवाणी इलाहाबाद के कम्पाउण्ड से लापता हो गया था, रात के डेढ बजे कटरा मीर बुलाकी मे पडा पाया गया । उसके हाथ पाव पुलिस की मार खाते-खाते टूट गये हैं । उसका दिमाग खराब हो गया है । उसका जुम यह था कि उसे आशाराम का पता नही मालूम था "

ट्रासमीटर पल भर के लिए बन्द हो गया । और पल-भर के बाद एक और लडकी की आवाज आयी "हमे खेद है कि ट्रासमीटर मे खराबी पैदा हो जाने के कारण आप स्थानीय समाचार न सुन सके । अब सुनिए फिल्म 'जागति' मे मुहम्मद रफी को । गीतकार हैं मजरूह सुलतानपुरी "

जागति । क्या सन् ७६ मे हिंदुस्तान को कोई इसस बडी गाली दी जा सकती थी ? आकाशवाणी ने इस तरह की गालिया म बडी शुहरत पायी । आकाशवाणी स आदमी नही, रिकाड बजते थे । आवाजें अलग हुआ करती थी पर बात नम्बर एक सफ्दरजग करता था । मिसेज गाँधी को आवाजें बदलने में कैसा कमाल हासिल था ! और जब कोई आवाज जरा इधर उधर होती, बन्द कर दी जाती प्रेमा नारायण तो किसी गिनती शुमार मे नही थी ।

खुर्शीद आलम खाँ ने 'पूछगछ' की । और एक अदालत के कमरे मे बैठे हुए बूब से चलनेवाले एक बबुये या एक टॉवी-टॉवी गुडडे ने अपनी रटी हुई बात कह दी और प्रेमा जो कल तक न्यूज रीडर थी, एक न्यूज बन गयी । यह

खबर कही छपी नही क्योकि उन दिनो समाचार छपा ही नही करते थे।

पर प्रेमा को कोई पछतावा नही था। टाचर का डर भी जैसे खत्म हो गया था क्योकि उसने आशाराम ही से एक शेर सुन रक्खा था दर्द का हद से गुजरना है दवा हो जाना इस शेर का मतलब वह खुर्शीद आलम खा की पूछगछ के दिनो म समझ गयी थी। जो वह भी देश की तरह निहत्थी रही होती तो शायद पागल हो गयी होती क्योकि टाचर का मतलब उसने यह नही समझा था कि बाबू जगदम्बा प्रसाद जैसे लोग उसके बदन की किताब पर अँगूठा निशान मारेंगे। वह बहुत खूबसूरत थी इसलिए अफसरो और सिपाहियो सभी को पसन्द आयी और सभी ने अपनी-अपनी पसन्द उस पर आजमायी। जगदम्बा प्रसाद के मुँह से आती हुई बदबू को झेलना उसके लिए बहुत मुश्किल साबित हुआ और अपनी जिल्लत के उन क्षणो मे भी उसे कॉलगेट डेंटल क्रीम के बारे देखी हुई एक डाक्युमेंटरी फिल्म याद आ गयी और जब वह बिल्कुल खाली हो गयी तो जेल मे फेंक दी गयी।

जेल की वह कोठरी कोई तीस फिट लम्बी और पन्द्रह फिट चौडी रही होगी। उसमे न जाने कितनी औरतें ठुसी हुई थी। सबने उसकी तरफ देखा। उसने किसी की तरफ नही देखा। एक औरत उठी और सबके सामने उस तसली पर बैठ गयी जो एक कोने म रक्खी हुई थी। उसके पेशाब की आवाज प्रेमा तक आ रही थी। बिल्कुल साफ—जसे वह औरत उसके कानो मे पेशाब कर रही हो।

रात का वक्त था।

प्रेमा बहुत थकी हुई थी। वह पडकर सो जाना चाहती थी। पर उस सेल मे तो कही तिल धरने को जगह नही थी। उसने चेहरे बचाकर फिर सेल पर एक निगाह डाली। एक कोने म काफी जगह थी। सिफ एक औरत कम्बल ओढे सो रही थी। उसके हर तरफ काफी जगह खाली थी। तमाम कैदी औरतें उसकी निगाहो का पीछा कर रही थी और लगता था कि जैसे वह किसी बात के इन्तिजार मे हैं दूसरे कोने मे काफी जगह खाली थी। वहाँ एक लम्बी चौडी औरत बैठी प्रेमा को देख रही थी। उसे देखते ही प्रेमा के रोंगटे खडे हो गये। और उस औरत की आखो से बचने के लिए वह कम्बल ओढे सोयी हुई औरत के पास जाकर जल्दी से लेट गयी उसके लेटने की आहट पर कम्बलवाली औरत कसमसायी और उसने अपने चेहरे से कम्बल सरकाकर प्रेमा की तरफ देखा और प्रेमा चीखकर भागी। वह औरत कोढी थी। उसकी नाक गल चुकी थी। चेहरे पर जख्मो के चकत्ते थे। उँगलियाँ जसे थी ही नही कैदी औरतें हँसने लगी और कोने मे बैठी हुई औरत उठी। उसे उठता देखकर तमाम औरतें डरके चुप हा गयी। वह औरत

मुह छिपाये खिसकती हुई प्रेमा की तरफ बढी। तमाम औरतें सकते मे उसे देखती रही। उसने प्रेमा को दबोच लिया और जैसे उस पर कोई दौरा पड गया। वह प्रेमा के कपडे नोचने लगी—प्रेमा एक बार चीखी। और फिर खौफ से उसकी घिग्घी बँध गयी और वह बेबसी से दूसरी क़ैदी औरतो की तरफ़ देखती रही पर दूसरी औरतो म स कोई उसकी तरफ नही देख रहा था—उन्हें मालूम था कि हर नयी स्त्री को यह क्षण झेलने पडते हैं

उस लम्बी चौडी औरत का नाम भाग्यमती था। प्यार से भानो कही जाती थी। पढी लिखी थी। दिल्ली युनिवर्सिटी मे अंग्रेजी साहित्य पढाया करती थी। लिसबियन थी। अपनी तनहायी के अन्धे कुए मे कैद थी। उसे जिस लडकी से प्यार था उसकी शादी हो गयी और उसने उस लडकी को कत्ल कर दिया। अदालत मे उसे पागल साबित न किया जा सका। उम्रकद की सजा हुई। उम्रकद की सजा काट रही थी। जब कोई नयी कदी आती तो यह दीवानी हो जाती और इसमे बला की ताक्त आ जाती और यह उस नयी कैदी को दूसरी तमाम कैदी औरतो के सामने रेप करती। और फिर बिल्कुल सीधी हो जाती। मुस्कुराने भी लगती। जेल के अफसरो को यह बात मालूम थी। पर उन्ह इस बात पर कोई एतराज नही था। उन्ह पता था कि आज रात उस बरेक म क्या होगा। पहरे का सिपाही भी छुपकर यह तमाशा भी देख रहा था कि कल अपने साथियो को बता सके कि रात का तमाशा कसा रहा

प्रेमा आत्माराम बिल्लो, दरा, जगदम्बा प्रसाद के मुह की बदबू सब कुछ भूल गयी। दुनिया म भाग्यमती और उसकी आखो की वहशत और उसके प्यार की बबरता के सिवा कुछ था ही नही जैसे। भाग्यमती के मरने तक वह उसकी रखैल रही। भाग्यमती जब भी इशारा करती, वह डर से मर जाती और अपने-आपको भाग्यमती के हवाले कर देती बैरेक की तमाम औरतें उसकी जिल्लत का तमाशा देखती। न कुछ कहती, न कुछ करती। उनमे से सबको प्रेमा से हमदर्दी थी पर कोई उससे हमदर्दी कर नही सकता था क्योकि उसस हमदर्दी करन की सजा सख्त हुआ करती थी। एक औरत ने कभी हमदर्दी की थी। भाग्यमती न उसकी आँखें निकाल ली थी

बस वह कोढी औरत भाग्यमती से नही डरती थी क्योकि भाग्यमती ही उसस डरा करती थी। वह चुपचाप यह तमाशा देखा करती थी। एक दिन प्रेमा की बेबसी से उसकी आँखें मिल गयी—बरसो बाद किसी ने उसस कुछ कहा था। वह मुस्कुरायी। उसके गले हुए होंठों पर आयी हुई मुस्कुराहट किसी को नजर ही नही आयी। उसी रात तमाम कैदी औरतें एक चीख की

आवाज़ पर जाग उठी। धीमी रोशनी मे उन्होंने देखा कि कोढी औरत भाग्य-मती से लिपटी हुई है। और भाग्यमती चीख रही है फिर भाग्यमती की चीख़ बन्द हो गयी और किसी कैदी औरत तक अँधेरे मे उसका खून बह आया और वह अपने हाथ मे खून देखकर चीख उठी

उस कोढी औरत को उसी रात उस बैरक स हटा दिया गया। जाते-जाते उसने प्रेमा की तरफ देखा। शायद मुस्कुरायी भी। पर उसकी मुस्कुराहट प्रेमा को दिखायी नही दी। उसकी तबीयत गनगना गयी। उसने उसकी तरफ मे मुह फेर लिया और वह कोढी औरत अपनी मुस्कुराहट की लाश उठाय सिपा-हियो के साथ चली गयी—उस रात उस बैरेक की तमाम कैदी औरतें जागती रही। पर उस रात प्रेमा न जाने कितन दिना के बाद गहरी नीद सोयी

सपनों का खंडहर

बिल्लो को प्रेमा बराबर याद आती रही। पर वह पूछती किससे और उस जवाब कौन देता? महल्ले के लोग भी कितनी हमदर्दी करते। थक गये। उनके सामने उनकी अपनी ज़िन्दगियाँ और उनकी समस्याएँ थीं। बस शहनाज़ आती रही। इतवारी बाबा आते रहे और मामा तो खैर आते ही रहे। प्रेमा होती तो वह भी आती। इसका बिल्लो को यकीन था। शायद जल्दी में उसकी बदली हो गयी हो? फिर बिल्लो भी प्रेमा को भूल गयी। क्यों याद रखती? उसके सामने अपनी ज़िन्दगी पड़ी थी। जनता लाण्डरी बन्द हो चुकी थी। शम्सू मियाँ ने किराया नहीं माँगा था पर जो वह किराया माँगते भी तो क्या कर लेते? बिल्लो देती कहाँ से? तो उन्होंने एक दिन शहनाज़ के ज़रिये कहलवाया कि बिल्लो दुकान बेच क्यों नहीं देती। उसे पैसों की तंगी भी होगी। तो बिल्लो राज़ी हो गयी। लाण्डरी बिक गयी। ईदू धोबी ने ख़रीदी। लैला के घर के कपड़े वही धोने लगा था इसलिए लैला ने उसकी लाण्डरी का नाम अंग्रेज़ी में रक्खा। 'इक्लिप्स क्लीनज़'। और जिस दिन लाण्डरी का नाम बदला उसी दिन इतवारी बाबा ने उसके तख़्ते पर सोना छोड़ दिया।

बड़ी धूमधाम से 'इक्लिप्स क्लीनज़' का उद्घाटन हुआ। दिन भर रिकार्ड बजा किये। शाम को बाबू गौरीशंकर पाण्डेय एम० पी० ने लाण्डरी का उद्घाटन किया। दिन भर बिल्लो अपनी लाण्डरी के मरने पर होनेवाले समारोह के हंगामे की आवाज़ सुनती रही। माइक्रोफोन पर बाबू गौरीशंकर पाण्डेय के भाषण की आवाज़ भी आयी

"यह बडे, मतलब है, बडी खुशी की बात है कि आज श्री ईदू धोबी खुद अपनी दुकान के मालिक है, अर्थात् अब अपने लिए काम करेंगे। जो जीवन कोई गन्दा कपडा होता तो चन्द्रमाग्रहण धोनेवाली यह लाण्डरी जीवन को भी धो धुलाकर इस्त्री कर देती। इस अवसर पर मुझे यह कहने दीजिए कि यह सब श्रीमती गाधी और उनकी लायी हुई इमरजेंसी का चमत्कार है नही तो कहा एक साधारण भाई ईदू और कहा एक लाण्डरी का मालिक होना '

जब 'इन्लिप्स लाण्डरी के सामने मेहमान कोक पी रहे थे और बाबू साहब का भाषण सुन रहे थे तभी कारपोरेशन का चपरासी बिल्लो के घर नोटिस लाया। बिल्लो पढी लिखी नही थी। अंगूठा लगाने के बाद उसने चपरासी से कहा कि वही जरा सुना दे कि नोटिस काहे का है। टैक्स तो उसने बराबर भर दिया था। चपरासी ने नोटिस सुना दी कि हफ्ते भर के अन्दर अन्दर उसे जमुना पार सजयनगर मे उठ जाना चाहिए नही तो कारपोरेशन के आदमी आकर मकान खाली करवा लेंगे। उसके लिए सजयनगर म गली नम्बर पांच, मकान नम्बर ७४-बी अलॉट हुआ है।

मतलब जो खबर मामा को जगदम्बा प्रसाद ने दी थी वह ठीक थी। सजयनगर। गली नम्बर ५, मकान नम्बर ७४ बी।

चपरासी चला गया। वह अपनी दहलीज पर अकेली रह गयी।

बकैया चलता हुआ देश उसके पास आ गया। उसकी हालत पहले से कुछ बेहतर हो गयी थी। अब वह श्रीमती गांधी जिन्दाबाद नही कहता था। अपने नाम पर पलटकर देखना भी था। खाना भी खा लेना था। एक-आध लफ्ज बोल लेता था। हरी बढई न उसके लिए बडी अच्छी बैसाखी बना दी थी। कभी-कभार वह बसाखी लेकर चल भी लेता था। पर घर मे वह बकयाँ ही चलता था।

देश का ज्यादा वक्त अपनी बटी के पास गुजरा करता था। वह चुपचाप उसके खटोले की पट्टी से लगा उसे तका करता था और कभी-कभार उसके होठो पर वही खाली बोतल-सी मुस्कुराहट आ जाया करती थी।

"बिल्लो।" देश की आवाज आयी।

बिल्लो पलटी। देश उसकी तरफ देखकर मुस्कुरा दिया। और यह मुस्कुराहट खाली-वाली बोतल-सी नही थी। उस मुस्कुराहट म पुरान प्यार की खुशबू थी, पुरान प्यार का रग था। पर पल भर के बाद वह मुस्कुराहट खाली हो गयी।

"चाय पीहो?" बिल्लो ने पूछा।

देश ने सर हिला दिया।

"चलो रसोइये मे चलते है।" बिल्लो ने कहा, फिर उसने सहारा देकर उसे उठाया। दोनो बावरचीखाने की तरफ चलने लगे। बिल्लो ने उसे दीवार स टिका के बिठला दिया। चूल्हे की आग भडकाकर उसन केतली चढा दी।

"आज हमरी लाण्डरी बिका गयी।" बिल्लो ने कहा।

देश मुस्कुरा दिया।

"दिन भर से ओही की खुसी म गाना बजता रहा।"

देश मुस्कुरा दिया।

'तोरी मोटरियो बिका गयी।'

देश मुस्कुरा दिया।

'बक मे नाटिस आया है। मामा कहत रह कि कोई आसा ना है "

आशा।

देश चौंक पडा। उसकी आखो मे डर झाकने लगा।

"का भया?" बिल्लो घबराकर उसके पास आ गयी। पर उसका डर कम न हुआ। वह अपने बेकार हाथो की तरफ देखने लगा। फिर उसने अपने चेहरे के सूखे हुए घावा पर हाथ फेरा। डर बढ गया। बिल्लो न उसके गले मे बाँहें डाल दी। फिर पूछा, "का भया? डर लग रहा?'

दश ने सर हिला दिया।

"के से डर लग रहा?"

देश न कोई जवाब नहीं दिया।

"ऐयसा करो।' बिल्लो ने कहा "इन्दराजी को एक ठो चिटठी लिखवा दो कि तुहें इ हाल पर कौन पहुचाइस है। "

बिल्लो समझाती रही और देश की आखा पर चढा हुआ डर का रग और गहरा होता गया।

कि मामा आ गये।

बिल्लो ने नाटिस छिपा लिया।

केतली का पानी उबल रहा था। उसकी टोटी से भाप निकल रही थी।

मामा भी आकर वहाँ बैठ गय।

बिल्लो चाय बनाने लगी।

'हम सोच रहे कि आप दु-चार दिन के वास्त एको ल के मढिहाँउ चले जाइए। रामदीन की अम्माँ कहती रहीं कि उहाँ एक ठो बड अच्छे हकीम हैं।" उसने चाय बनात-बनाते मामा स कहा। फिर उसने चाय की प्याली देश के

सामने रख दी। उसने अपने ठूठ हाथो से प्याली उठायी और चाय पीने लगा।

"मामा के साथ जावें घूम आव दु चार दिन।" बिल्लो ने कहा।

देश मुस्कुरा दिया।

"वकुलत मिटाये के वास्ते चले जात हैं ले के। मुदा कोई फायदा नही अंगुली थोडे दिह् हकीम साव!"

बिल्लो ने कोई जवाब नही दिया।

दूसरे दिन मामा देश को लेकर चले गये और दूसरे ही दिन 'पण्डित शिव शकर पाण्डेय मार्ग' पर कारपोरेशन के ट्रक आने लगे और सडक का सामान ढेर करने लगे। दो बुलडोजर आये। उन्हें देखने के लिए आसपास के बच्चे जमा हो गये।

सडक के दोनो तरफ रहनेवालो को नोटिस मिला था। सब फरयाद कर रह थे। बिल्लो चुप थी। सब भाग-दौड कर रहे थे। वह अपनी दहलीज़ पर बठी ट्रको का आना जाना देख रही थी। जैसे उसने अपनी ज़िन्दगी मे इससे दिलचस्प कोई तमाशा ही न देखा हो।

फिर एक दिन रिक्शा करके वह जमुना पार सजयनगर देखने गयी। जिन्दगी मे पहली बार उसने रिक्शेवाले से मोल-तोल नही किया। बस उसे रोककर रिक्शे पर बठ गयी।

'जमुना पार, सजयनगर।" उसने कहा।

रिक्शा चल पडा। जाने पहचाने बाजार, जानी पहचानी सूरतें उसे अजीब लग रही थी। मामा की दुकान पर नारायण था। लोग बैठे चाय पी रह थे और दुकान पर रक्खे हुए रेडियो से फिल्मी गानो का कोई प्रोग्राम आ रहा था। शम्सू मिया ने एक तरफ झुककर नाक छिनकी और हमेशा की तरह दामन से नाक पाछ ली। जोखन मिया की वॉक्स वगन उसके रिक्शे के पास से धूल उडाती गुज़र गयी। एक तागे पर किसी फिल्म का इश्तिहार बाँटनेवाले हाथ मे माइक्रोफोन लिय बोल रहे थे और तागे के हुड पर रक्खा हुआ ऐमप्लिफायर चिल्ला रहा था "शोले। सलीम जावेद का शोले। यश चोपडा का शोले। धर्मेंद्र, सजीवकुमार और अमिताभ बच्चन का शोले। एलाहाबाद के दिल की धडकन। अमिताभ बच्चन। हमा मालिनी और जया भादुरी के साथ। गुलशन राय की पेश-कश। आपके पलेस थेटर मे रोजाना तीन शो। समय से पहले आइए कि निराश होकर लौटना न पडे—शोले। मुल्क के कोने कोने मे आग लगाकर आपके शहर एलाहाबाद मे आ गया है शोले तागे से आनेवाली आवाज काफी दूर तक उसका पीछा करती रही और फिर रिक्शा आग बढ गया और

आवाज पीछे रह गयी और बिल्लो अपनी यादो की गलिया से गुजरती रही

जमुना पार का सजयनगर बहुत बाड लगा था। पर उसे पाँचवी गली का उसका मकान नम्बर ७४-वी नहीं मिला क्योंकि न वहाँ कोई गली थी, न कोई मकान। कुछ आधी अधूरी मोपडियाँ जरूर इधर उधर बिखरी हुई थी और अपन घरो को छोडकर उठ आनेवाले लोग उनकी मरम्मत म लगे हुए थे।

एक बच्चा आकर उसके रिक्शे के पास खडा हो गया और जब वह उमकी तरफ देखकर मुस्कुरायी तो बच्चे ने कहा "इहाँ हमरा जी ना लग रहा। हम्मे अपने साथ ले चलिहो ?"

बिल्लो न कोई जवाब नही दिया। रिक्शेवाले से अलबत्ता बोली, "चलो भैया। "

रिक्शा मुडा। वापसी यात्रा शुरू हुई। बिल्लो ने पलट के देखा। वह बच्चा वहीं खडा जाते हुए रिक्शे को देख रहा था। फिर वही सडकें वही दुकानें, वही बाजार, वही लोग, वही आवाजें फिर वही कटरा मीर बुलाकी के दहान से गुजरती हुई पण्डित शिवशकर पाण्डेय माग', वही पहलवान का टी-स्टाल, टी-स्टाल पर बैठे हुए वही लोग और फिर वही दरवाजा जिसमे लगे हुए ताले की कुजी उसके पास थी। सामनेवाले मकान के सामने एक घर का सामान और उसमे रहनेवाली यादो का ढेर था। चटरजी साहब सजयनगर जाने की तैयारी कर रहे थे। उसने उनकी तरफ देखा तक नहीं। वह चुपचाप ताला खोलकर अन्दर चली गयी।

घर। हाउसफड की डाकखानेवाली किताब। एक-एक पैसे के खच पर देश से होनेवाले झगडे महनाज के दहेज के वास्ते खरीदी जानेवाली घडी और साइकिल का किस्सा उसकी बक की पासबुक। बक की पासबुक म एक रकम बनकर टँकी हुई जनता लाण्डरी

वह दालान मे बैठकर कारपोरेशन का इन्तिजार करने लगी। वह यह फैसला कर चुकी थी कि वह सजयनगर नही जायेगी। सजयनगर म जो उसे महल मिल रहा होता गली नम्बर पाँच म तब भी वह न जाती क्योंकि यह घर उसने बनाया था। यह जमीन उसने खरीदी थी। इस घर का उसने सपना देखा था।

वह कमरे मे गयी। अपनी और देव की वह माटर के कट-आउटवाली तस्वीर उसने उतारी। पल भर उस तस्वीर को देखती रही, फिर उस तस्वीर को पुराने अखबार मे लपेटकर वह बाहर निकली। आँगन म धूप मर चुकी थी।

उसने सब्जी काटने की छुरी से कच्चे आगन मे एक छोटा सा गढा खोदा और फिर उस गढे मे उस तस्वीर को फ्रेम समेत दफन कर दिया और फिर रगड-रगडकर अपने हाथ साफ करने लगी।

वह न जाने कब तक अपन हाथ साफ करती रहती पर शहनाज के आने से उसने अपना हाथ यू छिपाया जैसे रँगे हाथो चोरी करते पकड ली गयी हो। फिर उसने कनखियो से उस छोटी सी कब्र की तरफ देखा और डरी कि कही शहनाज़ उसे न देख ले।

शहनाज उसके पास आकर बैठ गयी।

"हम पूछित हैं कि बदर पगला गये हैं का ?" बिल्लो ने कहा।

चूकि करने के लिए कोई बात नही थी इसलिए उसने बदर की बात शुरू कर दी, क्योकि किसी-न किसी तरह वह उस कब्र को शहनाज़ से छिपाना चाहती थी। वह खडी हो गयी, "चलो भीतर चल के बैठें।"

"इहा ऐयसी अच्छी धूप है।" शहनाज ने महनाज के दिये हुए कार्डिगन के बटन बन्द करते हुए कहा।

अब बिल्लो क्या करती। रुक गयी। बैठ गयी और बेबसी से शहनाज़ की तरफ देखने लगी।

"कल कानी कै बरस के बाद भाई साहब का खत आया कराची से।" शहनाज़ ने कहा।

"का लिक्खिन हैं ? मजे मे है ना ?"

"पासपोट बनवाने की फिकिर मे हैं। लिखा है कि मेरी शादी की खबर भेजी जाये तो विज़ा मिलने मे आसानी होगी। अम्माँ मार घबरा रही कि एकके ठो कमरा है। ईद् स का कहें। और ईदू से कुछ न कह तो भाई साब को ठहरायें कहा !"

'मजयनगर। गली नम्बर पाँच। मकान नम्बर चौहत्तर-बी खाली पडा है।"

"क्या ?"

"अर वहिनी, कारपोरेसनवाले हम्मे नया घर दिहिन हैं कि ना ई घर के बदले मे ! हम आज देख आये हैं। जेतना बडा ई घर उतना बडा तो ओका हाल कमरा है। पखाना इतना बडा कि दू परानी चाहें तो रह लें ई तारे खूट म का बँधा रहवा हे हर बखत ?"

महनाज ने अपने खूट को प्यार भरे उदास हाथो स छुआ। और उसे लगा जैस उस खूँट मे कही से उसके आसुओ की नमी आ गयी है। उसने उसमे बँधी

हुई चीज को प्यार से छुआ।

"हमरा देन मेहर है।" उसने कहा, "बदर निकाह होये से पहले ही मेहर अदा कर दिहिन हैं।" यकायक वह खड़ी बोली भूल गयी।

'त्या निकाह से पहिले ही मेहर दे दिना के छुट्टी किहिन।" बिल्लो मुस्कुरायी, "का दिहिन?"

"एकइस रुपिया मेहर फातमी और नौ रुपिया मँगायी मत्ता।"

'मतलब ई कि बिआह करे पर राजी हो गय?'

'हाते कैसे नहीं? पिआर कोई मजाक थोड़े होता है भाउज!"

"इहो ठीके है।" बिल्लो ने कहा, "कब हो रहा बिआह?"

"इमरजेंसी उठे के दुसरे दिन," शहनाज ने कहा, 'फिर आपो लोग लौट आइयेगा अपन महल्ले में। अभयी आते रहे तो देखा कि चटरजी सवार होत रहे। मार भोयें भोयें रोत रह बिचारू।"

'हम ना रायेंगे।" बिल्लो ने कहा, "आज हम बजार गये रहे। ता तारे वास्ते दू ठो सारी लेत आय।" वह यह कहती हुई उठी और कमरे में चली गयी। दालान में लाल मुहम्मद बीडीवाली श्रीमती गांधी उसी तरह मुस्कुरा रही थी जैसे उन्होंने देखा ही न हो कि बिल्लो ने अभी थोड़ी देर पहले अपने घर के कच्चे आगन में अपने सपने की कब्र बनायी है। वह श्रीमती गांधी की तरफ देखे बिना कमरे में चली गयी। देश घर की सालगिरह मनाने के लिए अपनी घरवाली को नयी साड़ी पहनाना चाहता था। साड़ी वैसी की-वैसी बिल्लो के बक्स में रखी थी। बिल्लो ने चारपाई के नीचे से बक्स खींचा। ऊपर ही दो नयी साड़ियाँ रखी हुई थीं। उसने दोनों साड़ियाँ उठायी, बक्स को बन्द करके पलंग के नीचे ढकेला और तब चारपाई की तरफ देखे बिना वह कमरे से निकल गयी।

शहनाज आँगन में वहीं खटोले पर बैठी हुई थी।

बिल्लो ने दोनों साड़ियाँ उसे थमा दीं। शहनाज ने उसे सलाम किया। वह मुस्कुरा दी। शहनाज ने साड़ियाँ रैपर से निकाल के देखीं। खुश हो गयी। फिर साड़ियों को अपने बदन से लगाकर देखा। बहुत खुश हो गयी और फिर उसे एकदम से खयाल आ गया कि बिल्लो को शायद जाना पड़ेगा—जमुना पार। संजय कालोनी। गली नम्बर ५। मकान नम्बर ७४-बी।

वहाँ जाने के बजाय आप पहलवान खाँ के घर क्या नहीं उठ आतीं?'

'काहे को उठ आयें? जब सरकार हमें हमरे घर के बदले में पक्का घर दे रही तो हम काई और के घर में काहे को रहें?' बिल्लो ने पूछा।

'यहाँ जी लग जायेगा? हम लोग याद नहीं आयेंगे क्या?'

"अरे जी लगे मे का धरा है बहिनी !" बिल्लो ने कहा, "न लगे को होय तो घरो मे ना लगे । और जो लगे पर आ जाय तो जगलो म लग जाय ।"

"कब जाइएगा ?"

"ई ना बता सक्ति है हम ।" बिल्लो ने कहा, "हम ई ना चहते कि जाये के बखत सारा महल्ला खडा हो जाये बिदा करे के वास्ते । हम मामू को सलाम करे आयेंगे ।"

बातें खत्म हो गयी ।

फिर शहनाज चली गयी । और बिल्लो फिर अपने घर मे अपनी यादो और सपनो के साथ रह गयी।

एक अगारा है कि जमी है,
सामे का एक हलका-सा धब्बा भी नही है,
जिसकी गोद मे बैठ के कोई घास की उँगली म शबनम के कतरे चाटे
और ये सोचे
रेत के इस पीले कागज पर,
क्या अपनी तकदीर म उसने,
खुद ही इतनी प्यास लिखी थी ?

वह उठी । घर के बाहर निकली । शाम हो चली थी । लोग गम कोटो और स्वेटरो मे सिकुडते हुए आ-जा रहे थे । सूरजनाथ खवाचेवाले ने खवाचा लगा लिया था । गम-गम पकौडिया तल रहा था । खूट से पैसा खोलती वह सूरजनाथ के खवाचे के पास गयी । जिन्दगी मे पहली बार उसने दो रुपये की चाट खायी । आलू के कचालू । लाल मिच का पाउडर बुरका हुआ । बायें हाथ मे दोना । दाहिन हाथ मे नीम का छोटा सा तिनका । आस्तीन से नाक पोछती हुई वह खाय चली जा रही थी । फिर उसने गोलगप्प खाये । फिर पकौडिया की बारी आयी । मिच की तेजी स उसकी जबान जलने लगी तो वह मामा की दुकान पर चली गयी ।

मामा की दुकान पर भीड थी पर उसे वह दुकान खाली-खाली दिखायी दी, क्योकि मामा की जगह नारायण बठा हुआ था और उसके पीछे टँगी हुई गामा पहलवान की तस्वीर बिल्लो को बहुत उदास दिखायी दी । हनुमानजी के चेहरे पर रौनक नही थी। लगता था हाथ पर पहाड उठाये-उठाये वह थक गये हैं चूल्हा उदास था । चाय की प्यालियाँ परेशान थी । बस 'लाल मुहम्मद बीडी' के कैलेण्डर मे झाकती हुई श्रीमती गाधी की तस्वीर मुस्कुरा रही थी यह तस्वीर शायद कल बुलडोजरो को चलता देखकर भी मुस्कुराती

रहेगी।

बिल्ला ने कनखियो से दुकान के पास ही खडे ऊँघते हुए बुलडोजर को देखा। वह बिल्लो से बे परवा खडा था और एक बच्ची नाक सुडकती हुई उसे सबकी आँखें बचाकर बार-बार छू रही थी।

पहलवान का टी-स्टाल सडक से जरा हटा हुआ था इसलिए सडक की चौडाई और नगर की खूबसूरती की स्कीम मे नही आया था। बिल्ला सोचने लगी कि आसपास के घरो के गिर जाने के बाद यह अकेली दुकान कसी लगेगी। उसने आखें बन्द करके उस अकेली दुकान को देखना चाहा। पर कुछ दिखायी नही दिया तो वह चुपचाप 'गली द्वारिकाप्रसाद' म मुड गयी।

यह गली देश से अपनी महब्बत की तरह उसे जवानी याद थी। इस गली पर वह न जाने कितने हजार बार चली होगी। क्या यह गली उसे याद करेगी? क्या इस गली मे उतरनेवाली सुबह हवा से पूछेगी कि बिल्लो कहा है? क्या कल की रात इस गली मे रुककर जनता लाण्डरी से लौटकर घर जान के लिए उसकी राह देखेगी? क्या कुछ भी नही बदलेगा? उसकी आँखें उमड आयी। वह एक एक दीवार से मिली। एक एक दरवाज़े से रुखसत हुई। उसने एक एक घर मे जाकर बडो को सलाम किया। छोटो को प्यार किया। थक गयी। लौटने लगी तो उसने देखा कि बाबू जगदम्बा प्रसाद एक दीवार से लगे पेशाब कर रहे हैं।

"इ दीवार गिराये बिना तू ना मनिहो का?" उसने कहा।

जगदम्बा प्रसाद घबराकर खडे हो गये। उनके पीछे दीवार पर देवनागरी और फारसी लिपियो मे लिखा हुआ था

"श्री सजय गाधी का कहना है कि अपने नगर को साफ-सुथरा रखना हर नागरिक का कतव्य है।"

जगदम्बा प्रसाद ने दीवार की लिखावट पढी नही और बिल्लो को पढना आता ही नही था।

"कोई कहता रहा कि आज तू जा रही हो?" जगदम्बा प्रसाद ने कहा।

"कोई कौन कहवाला होता है?' बिल्लो न कहा, 'हम खुद कह रह कि हम जा रह।

देस की तबिअत कसी है अब?

"पहिले स ता बहुत फरक है।" बिल्लो ने कहा। फिर एकदम से बोली, "उनो इ इमरजसी जल्दी उठवाये की कोसिस करिये कि सहनाज और बदर का बिआह हो जाये।"

"अरे कौनो हम लगाया है इमरजसी कि उठाय दें।" जगदम्बा प्रसाद बोले, "उप्पर से हुकुम आया। लग गयी इमरजसी। उप्पर से हुकुम आय की देरी है। हट जयय्हे इमरजसी।"

बाबू जगदम्बा प्रसाद बीडी सुलगाते आगे बढ गये। बिल्लो अकेली अपने घर की तरफ चल पडी।

घर।

घर जिसमे यह उसकी आखिरी रात थी

वरना हर-हर कदम पे याँ घर था

बुलडोजरो की आँख साढे नौ बजे खुली क्योकि वह सरकारी बुलडोजर थे—कटरा मीर बुलाकी के लोग घरा से बाहर नही निकले। बच्चे तमाशा देखने जरूर आ गये। वह अपनी हैरान आखो से उन बुलडोजरो की तरफ देख रहे थे। बुलडोजर स्टार्ट हुए। आगे बढे। एक दाहिनी तरफ के मकानो की तरफ मुडा। दूसरा बायी तरफ के मकाना की तरफ। मलबा उठानेवाली ट्रकें तैयार हो गयी। मजदूर फावडे और टोकरिया सँभाले पहले घर के गिरने की राह देखने लगे थोडी देर के बाद जहा पण्डित शिवशकर पाण्डेय मार्ग' था वहा जमीन से आसमान तक धूल अट गयी। उन घरा की धूल जिसके रहनेवाले जमुना पार, सजयनगर की नम्बरी गलियो म बने हुए नम्बरी मकानो म उठ गये थे। दाहिनी तरफवाले बुलडोजर के डाइवर ने धूल से बचने के लिए मुह पर ढाटा बाध लिया था। बायी तरफवाला ड्राइवर धूप की ऐनक लगाये बैठा था। यह ऐनक उसका साला बम्बई से लाया था जहा वह कपडा मिल म काम करता था

दाहिनी तरफवाले डाइवर ने बुलडोजर का मुह एक घर की तरफ मोडा और दात पर दात जमाकर धूल के लिए तैयार हो गया। घर का किवाड बन्द था। जब बुलडोजर बिलकुल किवाड तक आ गया तो ड्राइवर ने धूल मे देखा कि दरवाजा शायद खुल गया है और चौखट पर कोई खडा है या शायद खडी है

"अरे हट बहनचोद " ड्राइवर ने घबराकर कहा। पर वह नही हटी और

फिर बुलडोजर घर के अन्दर दाखिल हो गया—तब तक ड्राइवर ने उसे रोक लिया। वह कूदा। धूल मे कुछ दिखायी नही दे रहा था। धूल का बादल दस-पाँच मिनट बाद जरा फटा तो ड्राइवर ने एक औरत की लाश देखी और उसके बुलडोजर मे फिल्मी सगीत सुनाते हुए ट्राजिस्टर से एक और आवाज आने लगी

"आपका नाम ?"

"बिल्लो।"

"पूरा नाम क्या है ?"

"पता नही। हम तो जब से होस सँभाला है इह नाम सुन रह। और एही पर बोलत चले आ रहें।"

"आप करती क्या हैं बिल्लो देवी ?"

'कटरा स्रीमती गाधी म हमरी जनता लाण्डरी है। हमरे पती को परधान मनतरी बक से करजा दिलवा दिहिन हैं ता उनकी इन्दिरा मोटर वर्कसाप चल रही जीरो रोड पर।"

"इमरजेंसी के बारे मे आपका क्या खयाल है बिल्लो देवी ?"

'बहुत अच्छा खयाल है। जब से इन्दिराजी देस मे इमरजसी लिआयी हैं, देस मे बहुत तरक्की हुई है। पुलिसवाले कपडे की धुलायी देवे लगे हैं। चीनी और सोने के भाव मे फरक हो गया है। हमरी तो भगवान से एही परारथना है कि भगवान इन्दिराजी को जिन्दा रक्खे कि ऊ इमरजसी बनाये रहें।"

बुलडोजर के ड्राइवर को यह नही मालूम था कि उसी औरत की आवाज है जो उसके बुलडोजर के नीचे आकर सामने पडी है। वह बिल्लो को नही जानता था। पर मैं बिल्लो को जानता हूँ। उसकी आवाज भी पहचानता हूँ

बुलडोजर के ड्राइवर ने ट्राजिस्टर बन्द कर दिया और बजता हुआ फिल्मी गाना बन्द हो गया।

फिर पुलिस आ गयी। पुलिस ने घेरा डाल दिया। लोग हटा दिये गये। हल्का सा लाठी चाज भी करना पडा पुलिस को क्योकि लोग हट नही रहे थे। और लोग हटत कैसे ? उन्हे भनक पड गयी थी कि कोई मर गया है।

बाद मे लोग यही कहते रह कि बिल्लो बुलडोजर के सामने आकर मर गयी। पर आकाशवाणी का कहना था कि यह खबर बिल्कुल गलत है। बुलडोजर के ड्राइवर का बयान भी आकाशवाणी के लखनऊ-इलाहाबाद स्टेशन से सुनवाया गया जिसमे उसने कसम खाकर कहा कि उसके बुलडोजर से कुचलकर कोई नही मरा—इमरजेंसी के दिन थे इसलिए कटरा मीर बुलाकी के लोग मान गये कि कोई नही मरा पर कोई मरा नही तो बिल्लो है कहाँ ? कटरा मीर

बुलाकी के लोगो ने यह सवाल किसी से नही किया क्योकि दिन इमरजेंसी के थे।

दो दिन मे सारे मकान गिर गये। मलवा उठ गया। सडक चौडी होने लगी भारी रोलर गिट्टी कुचलने लगे तारकोल बिछाया जाने लगा पहलवान की दुकान 'गली द्वारिकाप्रसाद' के नुक्कड पर अकेली खडी सडक का रग रूप निखरते देखती रही

यहा तक कि पहल्वान जब देश को लेकर लौटे तो उस चौडी सडक को देख कर चकरा गये। समझे कि वह गल्ती से किसी और महल्ले मे आ निकले हैं। पर अपनी दुकान देखकर उनकी जान मे जान मे आयी और यह देखकर वह रो पडे कि जहा देश का घर था वहाँ चमचमाती हुई सडक धूप मे पडी मेल्ह रही है। उन्होने देश की तरफ देखा। देश मुस्कुरा रहा था। वही खाली बोतल सी मुस्कुराहट। पहलवान न रिक्शा गली म मुडवा लिया।

उन्हें यह बात बहुत अजीब लगी कि महल्ल के लाग उनसे आँखें चुरा रह है।

"ए सम्मू—" उन्होंने शम्मू मियाँ को आवाज दी जो उनके रिक्शे को आता देखकर लपक के घर म घुसे जा रह थे।

बात यह थी कि कटरा मीर बुलाकी का कोई आदमी आगे बढकर पहलवान को यह खबर सुनाने पर तयार नही था कि बिल्लो मर चुकी है। लोग चाहते थे कि उन्हे यह खबर कोई और दे ले तो वह पुरमे मे जायें। पर अब पहलवान की आवाज सुनकर तो शम्सू मिया अन्दर जा नही सकते थे। लौट पडे।

"कब आये ?" उन्होने पहलवान से पूछा।

"चूतियापन्ती की बात तो करो जिन हमसे।" पहल्वान ने कहा।

"सलाम पहल्वान।" मास्टर बद्रुल हसन आ गये।

"जीते रहो भैया।"

"अब क्या हाल है इनका ?"

"हकीम साब की दवा से एतना फायदा तो जरूर भया कि एक दिन इ हम्मे पहचान लिहिन। मुदा फिर तुरन्त गोता मार गये। हकीम साब बोले हैं कि माजून खिलाये जाव। सफा होगी। मुदा बखत लगेगा।" वह शम्सू मियाँ की तरफ मुडे। "एक बात हमरी समझ मे न आ रही। बिल्लो तो हमसे कहिस रहा कि ओके घर के गिराये का नोटिसे ना आया है। फिर ओका घर कैयसे गिर गया ? और जब नोटिस आया तो तू खत लिख के हम्मे बुलवा काहे ना लियो ?"

"हम समझे रहे कि तूहे खबर होइहे।" शम्सू मियाँ ने कहा।

देश हँस पडा। सामने से एक बच्चा नग धडग चला आ रहा था।

"बिल्लो बिचारी को जाये मे बडी तक्लीफ भयी होगी। गोदी मे बच्ची, सर सामान तू लोग ओका पहुचाये गये रहे कि ना ?"

इस सवाल का जवाब किसी न नही दिया।

"बच्ची कहा है ?" शम्मू मियाँ ने एकदम से सवाल किया।

"तोरी अक्किल गाँड मराये चली गयी है का ! हम तो अभयी चले आ हैं। बच्ची बिल्लो के पास होइहै। बिल्लो कहाँ है ?"

पहलवान के इस सवाल का किसी ने जवाब नही दिया।

"बिल्लो ने तो कहा था कि देश भाई का दिल बहलाने के लिए बच्ची आपके साथ गयी है।' बदर ने कहा।

पहलवान ने मुडकर बद्र की तरफ देखा। उन्हे पहली बार डर लगा।

"बिल्लो कहा है ?"

देश ने नारा मारा "श्रीमती गाँधी जिन्दाबाद।"

"बात इ है कि " शम्सू मिया कहते-कहत रुक गये। उन्हे यह मालूम ही नही था कि बुलडोजर के आगे आकर मर जाने की बात कसे कही जाती है।

"मगर बच्ची " बदर ने घबराकर शम्सू मिया की तरफ देखा।

फत्तो दौडी दौडी आयी और पहलवान से लिपटकर यू बोली जैसे कोई बडी मजेदार खबर सुना रही हो। "बिल्लो खाला मर गयी "

देश ने नारा मारा, "श्रीमती गाँधी जिन्दाबाद "

"अबे चुप रह भोसडीवाले " पहलवान ने देश को मारना शुरू किया। देश जो अपने को बचा भी नही सकता था मार खाता रहा। बडी मुश्किल से बदर और शम्मू मियाँ न पहलवान पर काबू पाया। और देश को सीने से लगा कर पहलवान बच्चा की तरह रोन लगे। शम्सू मिया और बदर ने उन्ह रोने दिया। फत्तो उन्ह रोता देखकर हँसती हुई उम्मेन को यह बताने भाग गयी कि पहल्वान नाना एतने बडे होके रो रहे

धीरे धीरे सारा कटरा वही जमा हो गया। सब खामोश थे। बस पहलवान रो रहे थे। रिक्शेवाला परेशान हो रहा था कि सवारी का 'टैम' है। एक-एक सवारी मे इतनी देर लगेगी तो कसे काम चलेगा ! यह तो वह समझ गया था कि किसी की मौत हो गयी। पर उसे यह नही मालूम था कि मरनेवाली अपने घर के साथ बुलडाजर की चोट खाकर गिरी थी और घर ही के साथ मर गयी थी और तब उसकी गोद मे एक बच्ची भी थी

उस रात पहलवान के घर शम्सू मिया के घर से खाना आया कि यही रस्म है। जिस घर मे मौत हो जाती है उसमे सोग उठन तक चूल्हा नही जलता।

कटरा मीर बुलाकी के लोग एक एक करके आये और पहलवान के पास थोडी देर चुपचाप बैठकर चले गये सबके बाद आशाराम आया।

'ए बेटा !" पहलवान ने देश स कहा, "आसा बाबू आय हैं।"

"ना बतायेंगे।" देश ने बडी सख्ती से कहा, "आसा बाबू हमरे दोस्त हैं। हम उनका पता ना बतायेंगे। " आशाराम किसी और तरफ देखने लगा। देश बोलता रहा, "हम्मे ढेर मत परेसान करो लोग। हम स्रीमती गाँधी को खत लिख देंगे कि तू लोग हम्मे सता रहे हो तो ऊ तू लागन की ऐसी-तसी कर देंगी "

देश देर तक न जान क्या-क्या बोलता रहा। आशाराम के सिवा किसीकी समझ मे यह बात न आयी। और आशाराम चुप बैठा सुनता रहा देश के दद की पूरी कहानी। उसकी दोस्ती की पूरी कथा। उसके आत्मविश्वास का तमाम क़िस्सा फिर आशाराम चला गया क्योंकि इमरजेंसी के समथन मे उसे टण्डन पाक मे एक भाषण देना था। उस आम सभा की सिदारत करनेवाली थी महनाज।

देश को जैसे बहुत-सी भूली हुई बातें एक साथ याद आने लगी। एक भेडिया घसान था यादो का। बिल्लो से उसके इश्क की यादें। हाउस फण्ड की यादें। आशाराम से अपनी दोस्ती की यादें। बक से मिलनेवाले कज़ की यादें। अपने घर की यादें। सुहागरात की यादें। फुटपाथ पर खिंचनेवाली तस्वीर की यादें। अपनी कार की यादें और उस कार पर हानेवाली एक रात की सैर की यादें और इलाहाबाद के बँगले मे गुज़रनेवाले दिनो, महीनो सदियो की यादें। यह तमाम यादें एक-दूसरे मे गिडमिड थी। एक याद के तार दूसरी याद के तार से उलझे हुए थे। वह सारा-सारा दिन उन तारो को सुलझाने की कोशिश मे लगा रहता। बोलता रहता देखता रहता और जब किसी तरह कोई बात समझ मे न आती तो 'पण्डित शिवशकर पाण्डेय माग पर बैसाखी टेकता चला जाता और वहाँ बैठ जाता जहाँ उसका घर हुआ करता था। जहाँ उसकी बेटी पदा हुई थी। जहाँ उसने सुहागरात मनायी थी। जहाँ बिल्लो ने उसे सोता समझकर उसके सामने साडी बदली थी और कार को दखने बाहर निकल गयी थी परछाइयाँ सी आती और निकल जाती और वह बैठा-बैठा यह सोचता रह जाता कि वह यहाँ सडक पर बैठा क्या कर रहा है। खाने का वक्त आता तो मामा आते और उसे बहला-फुसलाकर ले जाते। वह न उठन की जिद करता तो मामा रोहँसे होकर उस माँ-बहन की गालियाँ दन लगत। इतवार का दिन होता तो इतवारी बाबा दिन दिन भर उसके पास बैठे रहत और उसस इधर-

उधर की बातें किया करते और सडक देश मे आँखें चुराकर चलती रहती। कोई रिक्शेवाला उसे गाली देकर हटने को कहता। बाबू गौरीशकर पाण्डेय एम० पी० की कार भी उससे कतराकर निकल जाती।

कि एक दिन आकाशवाणी ने ऐलान किया कि श्रीमती गाँधी ने देशद्रोहियो का मुँह बन्द करने के लिए आम चुनाव करने का फैसला किया है पहले तो किसी को इस खबर पर यकीन नही आया। पर सब कहन यही लगे कि चुनाव मे श्रीमती गाँधी सबको धो के रख देंगी

कि खबर आयी कि पुरानी काग्रेस, सोशलिस्ट, बी० एल० डी०, जनसघ और यग टक्स मिल के चुनाव लडेंगे। लोगो ने कहा कि मिल के लडें या अलग-अलग, नतीजा मालूम है। जीतेंगी मिसेज गाँधी।

कि खबर आयी कि दिल्ली की जामा मस्जिद का इमाम भी जनसघियो से मिल गया। लोगो ने कहा तो क्या हुआ ! जीतेगी श्रीमती गाधी की काग्रेस।

कि खबर आयी कि जगजीवनराम काग्रेस से अलग हो गये। और पहली बार लोगो को शक-सा हुआ कि शायद मिसेज गाधी हार भी जायें। मिसेज गाँधी हार भी सकती हैं और फिर खबर आयी कि बाबू गौरीशकर पाण्डेय काग्रेस से अलग हो गये और जनता पार्टी मे चले गये। फिर खबर आयी कि इस कास्टिचुऐंसी से बाबू साहब ही जनता के टिकट पर चुनाव लडेंगे।

और सबस बाद मे यह खबर आयी कि आशाराम इस कास्टिचुऐंसी से काग्रस के टिकट पर चुनाव लड रहे हैं।

और उन्नीस महीनो से हाथ बाधे खडे हुए देश ने सर उठाने का फैसला किया। पर डर अब भी ऐसा था कि सब कह रहे थे कि वह काग्रेस को वोट देंगे जमुना पार, सजयनगर वाले भी काग्रेस ही को वोट देनेवाले थे।

शहर म जुलूसो की बहार आ गयी। तकरीरो को तरसे हुए कान एक एक दिन मे दस-दस तकरीरें सुनने लगे। बहुत दिनो के बाद उन्होंने देखा कि लोग दिन-दहाडे, हाथ मे माइक्रोफोन लेकर श्रीमती गाधी और सजय गाँधी के खिलाफ बोल रहे है। जिन लोगो का नाम इज्जत से लेत भी डर लगता था कि कही कोई यह न लगा दे कि उन्ह बुरा भला कहा जा रहा था, उन वी० सी० शुक्लाओ, उन यशपाल कपूरो, उन बसीलालो को लाग सरे राह खडे होकर गालियाँ दे रह थे। धीरे धीर जेलो की कहानिया बाहर आने लगी।

प्रेमा आशाराम के खिलाफ काम कर रही थी। उसन देश की तस्वीर छापी और लिखा कि यह आदमी कौन ह और इस पर क्या गुज़री है। उसन लोगो को बिल्लो की कहानी सुनायी। उसने दुनिया की आँखो मे आखें डालकर

बताया कि उस पर क्या-क्या बीती हवा का रुख बदलने लगा।

पर बाबूराम 'आज़ाद' अपने घर से बाहर न निकले। उन्होंने जनता वालों से कह दिया कि वह पैदाइशी कांग्रेसी हैं और आखिरी वक्त में क्या खाक मुसलमां होंगे। पर वह आशाराम की कैन्वेसिंग करने नहीं निकले।

रामदयी, जिसे राजनीति की समझ बिल्कुल नहीं थी, अपने बेटे के जीतने की दुआएँ मांगने लगी।

देश की बातों और इन परिवर्तनों से बेतअल्लुक सड़क का कोना थामे अपनी यादों की उलझी हुई डोर सुलझाता रहा और चुनाव के हंगामों में कटरा मीर बुलाकी के लोग भी लगभग उसे भूल गये। बस बदर धाता रहा। इतवारी बाबा उसकी परछाईं बन रहे और पहलवान उसके लिए रोते रहे।

चुनाव से कोई पांच दिन पहले आशाराम अपने चुनाव के लिए चन्दा माँगने कटरा मीर बुलाकी में आया। महनाज़ के घर के सामने मैदान में सभा हुई। उसने कटरेवालों को बतलाया कि उन्हें अपोज़िशन के बहकावे में नहीं आना चाहिए। और फिर उसने अपने चुनाव के लिए चन्दे की अपील की।

सबसे पहले जोखन मियां ने एक हज़ार रुपया दिया। तमाम लोग चुप बैठे रहे। फिर अन्दर से शहनाज़ निकली। बुरका पहने हुए वह आशाराम के पास गयी। फिर उसने भीड़ में बैठे हुए बदर की तरफ देखा। फिर उसने अपना खूट खोला। उसमें दस दस के तीन चिमुड़े मिमुड़े नोट थे। वह नोट उसने आशाराम की तरफ बढ़ाते हुए कहा 'मेरी कुल पूंजी यही तीस रुपये हैं।" बदर के सिवा कोई न समझ सका कि उसने आशाराम के चुनाव के चन्दे में क्या दिया। बदर उठा और वहां से चला गया

आशाराम ने शुक्रिया अदा करके वह तीस रुपये ले लिये।

सभा खत्म हो गयी।

भीड़ छँट गयी।

लोग अपने अपने घरों को चले गये। बस बदर भटकता रहा। और उसी रात शहनाज़ से उसका निकाह हो गया। उस निकाह में देश भी लाया गया। वह चुपचाप बैठा मुस्कुराता रहा। वही खाली बोतल-सी मुस्कुराहट।

बदर और शहनाज़ की सुहागरात भी अजीब थी। बाहर मिरासनें तो नहीं गा रही थीं कि दम्मू मियाँ के बचपन के दोस्त भोलू पहलवान की भाजी अभी कुछ ही दिन पहले मरी थी हालाँकि आकाशवाणी का कहना था कि यह खबर गलत है। आशाराम ने अपनी कई-कई तकरीरों में भी यही कहा। पर कटरे के लोग जानते थे कि आकाशवाणी से झूठी खबरें भी आती हैं

तो नम्बू निवों के घर में बाकायदा न ढोल रखा गया, न गीत गाये गये। फिर भी कुछ सहेलियाँ अपनी तरफ से टेन्टों कर रही थी और अन्दर कमरे में शहनाज दुल्हन बनी बदर की राह देख रही थी। बदर आया। उसने टोपी और शेरवानी के साथ-साथ होठों को फैलाती हुई मुस्कुराहट भी उतार दी और फिर अपने नंगे हाथ लेकर शहनाज के पास गया।

'अनुमायी मैं तुम्हें अपना वोट देता हूँ," बदर ने कहा, 'उस कांग्रेस के खिलाफ़ दे आना।'

बदर के प्राइमरी स्कूल में पोलिंग स्टेशन था। उससे थोड़ी दूर पर दो तम्बू गड़े थे। एक कांग्रेस का। दूसरा बाबू गौरीशंकर पाण्डेय का।

भीड़ कांग्रेस के तम्बू पर ज्यादा थी क्योंकि लोग रिस्क लेना नहीं चाहते थे। वोट चाहे किसी को दें। पर लोग पर्ची गाय बछड़ेवाली लेना चाहते थे

देश भीड़ देखकर वहां आ गया।

उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि बात क्या है? क्या इतने लोग इकट्ठा हैं? पर यह भीड़ और धक्कम-पेल देखकर वह खुश बहुत था। ऐसा लग रहा था जैसे इस शोर ने उसके बदन का दर्द भी दिया हो। कभी कभार इस शोर का भूलकर वह अपने-आपसे बातें करने लगता

बाबूराम दिन के कोई ढाई बजे रामदयी को लेकर वोट देने आये। उन्होंने कांग्रेस के तम्बू से अपना नम्बर निकलवाया। उसी वक्त पोलिंग स्टेशन का दौरा करता आशाराम भी आ गया। उसने दादा को सलाम किया। बाबूराम जी टाल गये। न जाने क्या आशाराम को जीने की दुआ देने को उनका जी न चाहा। वह जाने के लिए मुड़े। रामदयी बेटे को देखती हुई पीछे रह गयी। पर बाबूरामजी रामदयी के इन्तिजार में रुके नहीं। वह तम्बू से बाहर निकल गये।

वहाँ देश खड़ा था। वह बाबूराम की तरफ देखकर मुस्कुराया। वही खाली बोतल-सी मुस्कुराहट। बाबूरामजी ने नजर भरकर देश की तरफ देखा।

'गड़बड़ करोगे तो श्रीमती गाँधी का लिख दूँगा" देश ने कहा।

बाबूरामजी के हाथ में कांग्रेस कम्प की बनाया हुई पर्ची थी।

"श्रीमती गाँधी जिन्दाबाद।' देश ने कहा। फिर वह हँसा और फिर वह अपनी बैसाखी टेकता आगे चला गया। बाबूरामजी वहीं खड़े देखते रह गये।

देश को पता भी नहीं था कि वह बाबूरामजी को किस दलदल में ढकेलकर चला आया है।

बाबूरामजी आगे बढ़कर क्यू में खड़े हो गये। क्यु धीरे-धीरे आगे सरकने

लगा। रामदयी भी आ गयी पर अब बाबूराम और रामदयी के बीच म कई लोग थे। बाबूराम ने पलटकर देखा भी नही कि रामदयी आयी या नही। यह अपने साथ अकेले रहने का क्षण था और अकेले फमला करने की घडी थी।

न जाने कहा से देश के हँसने की आवाज आयी।

क्यु और आगे सरक गया।

देश के हँसने की आवाज कुछ पीछे रह गयी।

पोलिंग आफिसर बाबूरामजी को जानता था। वह उन्ह देखकर मुस्कुराया। चारो पोलिंग एजेंट भी उन्हे जानते थे। वह भी मुस्कुराये। बाबूरामजी किसी मुस्कुराहट के जवाब मे नही मुस्कुराये। उन्ह ऐसा लग रहा था जैसे हिन्दुस्तान की तकदीर उनके अकेले वोट से बँधी हुई है। अपनी, अपने पिता की सारी जिन्दगी सामने थी। आशाराम की जिन्दगी भी सामने थी और उनके हाथ मे उनका बैलेट पेपर था और वह पोलिंग बूथ मे अकेले थे। दो निशान थे। एक वोट था। बाबूरामजी उन निशानो के साथ अकेले थे और परछाइयो मे घिरे हुए थे। फिर सारी परछाइयाँ गायब हो गयी। केवल देश रह गया। देश और देशराज। शायद दोनो एक ही थे। और फिर केवल देश की मुस्कुराहट रह गयी। वही खाली बोतल सी मुस्कुराहट और उन्होंने बाबू गौरीशकर शाण्डेय के निशान पर ठप्पा लगा दिया

यह वोट देने के बाद उन्हें ऐसी थकन महसूस हुई जो स्वतत्रता सघष के बाद भी नही महसूस हुई थी। वह पोलिंग बूथ से बाहर निकल आये। और उन्हे लगा जैसे वह जेल से बाहर आये हा। खुली फिजा मे वह लम्बे लम्बे साँस लेने लगे और उन्होंने देखा कि आशाराम की माँ, उनकी बहू रामदयी क्यु के साथ आगे बढ रही है।

बहुत दिनो के बाद वह मुस्कुराये और रामदयी की राह देखे बिना घर की तरफ चल पडे।

जीत की घडी

'पण्डित शिवशकर मार्ग' खुशी से पागल हो रहा था। आशाराम हार गया था। बाबू गौरीशकर पाण्डेय जीत गये थे। उस दिन जितना बडा जुलूस निकला उतना बडा तो सजय गाँधी का भी नही निकला था जब वह पण्डित शिवशकर पाण्डेय की मूर्ति की नकाब-कुशायी करने आये थे।

बाबूरामजी पण्डित गौरीशकर पाण्डेय एम० पी० (जनता पार्टी) के साथ फूलो से सजे हुए ट्रक पर थे। पहलवान भी ट्रक ही पर थे और खुशी से बीडी के लम्बे-लम्बे कश ले रहे थे। इतवारी बाबा ट्रक के आगे नाच रहे थे। भीड गला फाड के नारे लगा रही थी

बाबू गौरीशकर पाण्डेय—जिन्दाबाद।

काग्रेस फार डिमाक्रेसी—जिन्दाबाद।

जनता पार्टी—जिन्दाबाद।

बाबू जगजीवनराम की—जय।

भारत माता की—जय।

लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण—जिन्दाबाद।

इन लोगो की आवाज अपनी नम-नम उँगलियो से उन्नीस महीनों के लगाये हुए जख्मो पर मरहम लगा रही थी। उन्नीस महीनो के सन्नाटे की दीवार टूट रही थी। उन्नीस महीनो से झुकी हुई गरदनें सीधी हो रही थी। कि जलूस पहलवान की दुकान पार करके 'गली द्वारिकाप्रसाद' के नुक्कड से आगे बढा और वह जगह आ गयी जहा पहले बिल्ला और देश का घर हुआ

करता था। जुलूस के तमाम लोगो को यह बात नही मालूम थी। जो जानते थे वह सडक के उस हिस्से मे आँखें बचा के गुजर जाने की जल्दी करने लगे। और वहा चुपचाप बठा हुआ देश भीड, नाचती गाती भीड को देखकर खुश हो गया और नाचते हुए इतवारी बाबा के साथ अपनी बसाखी समेत नाचने लगा—उसे नाचता देखकर गला फाडता हुआ मजमा धीरे धीरे चुप होने लगा। पहले आगेवाले लोग चुप हुए फिर उनके पीछे—धीरे धीरे वह लोग भी चुप हो गये जो देश का नाच नही देख सकते थे ट्रक रेंग रही थी। बाबू गौरीशकर पाण्डेय ने अपने गले का हार देश की तरफ उछाला। हार ठीक उसके गले मे पडा। लोग तालिया बजाने लगे। सैकडो हाथ। देश भी ताली बजाने लगा। पर ताली बजाने के लिए दो हाथो की जरूरत पडती है। देश ने बैसाखी छोड दी। वह लडखडाया और इससे पहले कि ट्रक रुके और लोग समझें कि क्या हो रहा है वह ट्रक के नीचे आ गया

उस रात आकाशवाणी की न्युज बुलेटीन मे और खबरो के साथ यह खबर आयी कि

इलाहाबाद म एक दुघटना हो गयी। खबर मिली है कि जब जनता पार्टी के टिकट पर चुने हुए एम० पी० श्री गौरीशकर पाण्डेय की जीत का जुलूस निकल रहा था तब एक अपाहिज नाचते नाचते ट्रक के नीचे आ गया और मर गया। याद रहे कि श्री गौरीशकर लाल पाण्डेय एम० पी ने कटरा मीर बुलाकी बम केस के एप्रूवर श्री आशाराम को दो लाख अस्सी हजार नौ सौ पसठ वोटा से पराजित किया है